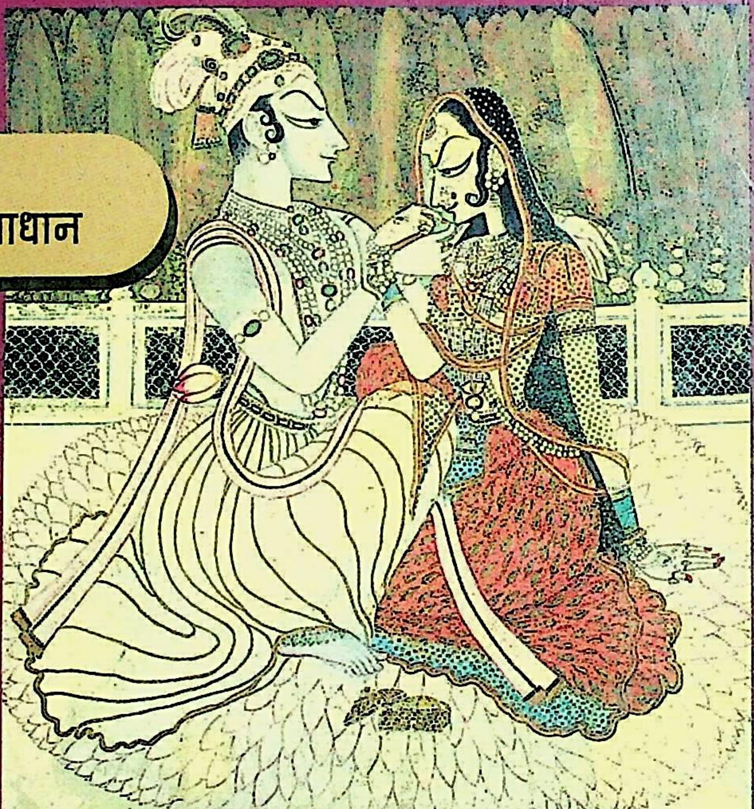
होम्योपैथिक चिकित्सा

550

यौन रोग

उपचार
एवं समाधान





डॉ. श्रीमती र[illegible] सिंह

समर्पित



रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥

मैं जो भी कर्म करती हूँ वो सब आप ही की उपासना है।

होमियोपैथिक चिकित्सा

यौन रोग

उपचार एवं समाधान

●

लेखिका
डॉ. श्रीमती साधना सिंह

●

प्रकाशक
साधना पब्लिकेशन
210, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल-462 011. (म.प्र.)

प्रथम संस्करण 1997

मूल्य
अस्सी रुपये मात्र पये

वर्किंग सेक्सन
श्री अरविंद सिंह
श्री अजय सिंह
श्री सुशील कुमार जगत

प्रकाशक
साधना पब्लिकेशन
शॉप नं. 3, प्लाट नं. 210,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल-462 011.
दूरभाष : (0755) 591143.

मुद्रक
सहयोग ऑफसेट
227, हरेगोपाल कॉम्पलेक्स,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल-462 011.
दूरभाष : (0755) 551868.

प्रस्तावना

एक पूर्णकालिक होमियोपैथिक चिकित्सक के रूप में पिछले ग्यारह वर्षों के कठोर चिकित्सीय कार्यकाल के दौरान मैंने विभिन्न रोगों से ग्रसित हजारों व्यक्तियों का होमियोपैथिक औषधियों के द्वारा इलाज किया एवं उनके सतत् संपर्क में आने पर मैंने अंतरात्मा से यह महसूस किया कि समस्या का निदान करने से पूर्व सर्वप्रथम रोगी व्यक्ति को उसकी बीमारी के बारे में संपूर्ण ज्ञान देना अति आवश्यक है। इससे ग्रसित व्यक्ति मानसिक रूप से रोग निवारण के प्रति सबल होता है एवं चिकित्सक और रोगी के बीच एक विश्वास कायम होता है जिससे कि रोग निवारण अधिक आसान हो जाता है। अन्य रोगों की अपेक्षा यौन संबंधित समस्याओं से ग्रसित व्यक्ति ज्यादा परेशान एवं व्यथित होता है। विभिन्न कारणों से या यों समझ लीजिए उसके मन में बैठी व्यर्थ की ग्लानि, भय और शर्म के कारण वह चिकित्सक से भी ठीक से अपने रोग का वर्णन करने में सकुचाता है। यही कारण है कि यौन रोग से ग्रसित व्यक्ति का चिकित्सा के नाम पर सबसे ज्यादा शोषणं होता है। इस पुस्तक को लिखने का मुख्य उद्देश्य जन-साधारण को यह सिद्ध करने का है कि होमियोपैथिक पद्धति एक हानिरहित चिकित्सा प्रणाली है एवं इसका लक्षणानुसार सेवन करने से रोग को जड़मूल से नष्ट किया जा सकता है।

प्रकृति ने सभी जीव-जन्तुओं एवं प्राणियों में काम क्रिया को मूलतः प्रजनन के लिए प्रदान किया है जिससे कि जीवन चक्र निरंतर चलता रहे। मनुष्यों में मैथुन क्रिया प्रजनन के अलावा आनंद प्राप्ति का एक अति महत्वपूर्ण साधन है। यौन शक्ति का ठीक से क्रियान्यवयन न हो पाने की दशा में मानव शरीर के अंदर कई प्रकार के मनोविकार, कुण्ठायें, मानसिक एवं शारीरिक व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं।

संसार के सभी समाज इस विषय पर बहुत गंभीर हैं। यौन शक्ति के अति उपयोग से भी नित नई सामाजिक, मानसिक और शारीरिक समस्याऐं उत्पन्न होने लग जाती हैं। उदाहरण के लिए पाश्चात्य मुल्कों में होने वाली तरह-तरह की मानसिक बीमारियां, पागलपन, आत्महत्या, एड्स इत्यादि ये सब पाश्चात्य मुल्कों में यौन शक्ति के विकृत अति उपयोग की ही देन हैं। यौन शक्ति के अति उपयोग

से कई अन्य प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक समस्याऐं भी उत्पन्न हो सकती हैं जैसे कि नपुन्सकता, लिंग में शिथिलता आ जाना, शरीर में कमजोरी महसूस होना, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, संभोग के प्रति निरसता, मानसिक अवसाद इत्यादि। स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ मनुष्य के लिए यौन संबंधों पर गंभीर एवं शोधपूर्ण चिंतन नितांत आवश्यक है।

इस पुस्तक के द्वारा मैं सिर्फ एक बात लोगों तक पहुँचाना चाहती हूँ कि घबराइए मत, यौन रोग भी अन्य समस्याओं के समान ही हैं एवं समय पर उचित औषधियों के द्वारा ये पूरी तरह जड़मूल से नष्ट किए जा सकते हैं।

होमियोपैथिक का मूलभूत सिद्धांत केंद्र से परिधि की ओर है। इसी सिद्धांत पर आधारित होने के कारण इस पद्धति में रोग कुछ समय के लिए दबकर पुनः किसी भयंकर उपद्रव के रूप में खड़े होने की अपेक्षा धीरे-धीरे जड़मूल से नष्ट हो जाता है। जिस प्रकार शरीर का प्रत्येक अंग जीवन में कभी न कभी रोग ग्रस्त या संक्रमित हो सकता है ठीक उसी प्रकार हमारे यौनांग भी लापरवाही, दुरूपयोग या अन्य कारणों से रोग ग्रस्त हो सकते हैं। इसमें अनावश्यक रूप से भयभीत होने की जरूरत नहीं है बल्कि समस्या को सहजतापूर्वक समझकर निदान कराने की जरूरत है। यौन समस्याओं के बारे में इतना ज्यादा भ्रम फैला हुआ है कि साधारण से यौन रोग जैसे कि शीघ्रपतन, श्वेतप्रदर, मासिक-धर्म की अनियमितता, स्वप्नदोष इत्यादि के कारण रोगी अपना आत्मबल खो बैठता है एवं अंदर ही अंदर कुण्ठित होने लगता है।

किसी यौन रोग के उत्पन्न होने के क्या कारण हो सकते हैं, वह कैसे उत्पन्न होता है, उसके क्या लक्षण हैं तथा उसकी रोकथाम एवं निदान कैसे किया जाता है, रोग की उचित समय पर चिकित्सा न होने पर शरीर में क्या-क्या उपद्रव खड़े होते हैं इन सब बातों का समावेश इस पुस्तक में विस्तृत रूप से किया गया है।

पिछले छः सात वर्षों से मैं देश की सर्वश्रेष्ठ एवं सबसे ज्यादा संख्या में प्रसारित होने वाली स्वास्थ्य पत्रिका निरोगधाम में निरंतर अपने अनुभव एवं चिकित्सा संबंधी लेख देती आ रही हूँ। निरोगधाम पत्रिका के कारण बड़ी संख्या में विभिन्न अंचलों से आये रोगियों की समस्या का निदान करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं इस पुस्तक को लिखने में मुझे पूज्यनीय श्री डॉ. प्रेमदत्त पाण्डे

जी का मार्गदर्शन, सहयोग एवं आशीर्वाद निरंतर प्राप्त होता रहा है। जिसके लिए मैं हृदय से उनका आभार प्रकट करती हूँ। वे वास्तव में श्रद्धेय हैं।

इस पुस्तक में मैंने यही कोशिश की है कि उन्हीं औषधियों के बारे में ज्यादा लिखा जाय जो कि मेरे अनुभव के आधार पर यौन जनित समस्याओं में ज्यादा सफल एवं अचूक सिद्ध हुई हैं।

एक पूर्णकालिक चिकित्सक होने के नाते मैंने इस पुस्तक में लिखी गई सामग्री को स्पष्ट, सटीक एवं सरल रखने की कोशिश की है जिससे कि आम आदमी भी इसे पढ़कर इसका उपयोग कर सके।

इस पुस्तक को पढ़ने से यौन संबंधी समस्याओं के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ेगी एवं यह लाखों युवक-युवतियों का मार्गदर्शन करेगी ऐसी मुझे पूर्ण आशा है।

डॉ. श्रीमती साधना सिंह
साधना होम्यो क्लीनिक
शॉप नं. 25, सुभाष मार्केट, शिवाजी नगर,
भोपाल-462 016. दूरभाष : 554925

अनुक्रमणिका

अध्याय-1

स्वप्नदोष

यौन रोगों के अंतर्गत स्वप्नदोष एक बहुत ही आम समस्या है। इसे अंग्रेजी में स्पर्माटोरिया भी कहा जाता है। वैसे तो स्वप्नदोष की बीमारी स्त्री-पुरूष दोनों में ही पायी जाती है परंतु मुख्य रूप से स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों में यह समस्या अधिक देखी गई है। सामान्यत: स्त्री-पुरूष में यह संभोग जैसी शारीरिक क्रिया की चरम अवस्था पर वीर्य स्खलन होता है। वीर्य का स्खलित होना सहवास की चरम सीमा का द्योतक है। इस प्रक्रिया में स्त्री-पुरूष दोनों ही पूर्ण रूप से शारीरिक और मानसिक तल पर एक साथ सम्मिलित रहते हैं और दोनों का ही मुख्य लक्ष्य संभोग की चरम अवस्था पर पहुँचकर आनंद को प्राप्त करना होता है। परंतु स्वप्रदोष एक ऐसी असामान्य स्थिति है जिसमें स्त्री-पुरूष दोनों में से एक शारीरिक तौर पर पूर्ण रूप से अनुपस्थित रहता है। पर फिर भी वीर्य स्खलन जैसे चरम बिंदू पर रोगी पहुँच जाता है। इसी असामान्य अवस्था को स्वप्रदोष कहते हैं।

सामान्यत: स्वप्रदोष अनैच्छिक ही होता है परंतु कई बार यह ऐच्छिक भी हो सकता है। इस प्रक्रिया में रोगी मानसिक रूप से पूरी तरह क्रियाशील होता है परंतु शरीरिक पक्ष की अनुपस्थिति होने के कारण वो कभी भी सहवास की वास्तविक संतुष्टि प्राप्त नहीं कर पाता। स्वप्रदोष मानसिक दुर्बलता, कुण्ठित व्यक्तित्व एवं अध्यात्मिक दुर्बलता का प्रतीक है।

समस्त मानव शरीर का निचोड़ वीर्य कहलाता है एवं वीर्य का मुख्य कार्य एक नये मानव शरीर की उत्पत्ति करना होता है। परंतु सरल अर्थों में हम वीर्य को मानव बीज कह सकते हैं। इसके अत्यधिक निषेचन या निष्कासन से रोगी के अंदर कई प्रकार की मानसिक एवं शारीरिक कमजोरियां आ जाती हैं। अत: स्वप्रदोष को एक मानसिक और शारीरिक व्याधि के रूप में लेना चाहिए और इस समस्या का जड़ मूल से निराकरण कराना चाहिए।

युवावस्था में प्राकृतिक नियमों को तोड़ने के कारण ये बीमारी होती है। स्वप्रदोष के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि पेट में निरंतर कब्ज बने रहना,

नाड़ी तंत्र की दुर्बलता, अश्लील पुस्तकों एवं गंदी फिल्मों को देखना इत्यादि। अश्लील पुस्तकों के पठन-पाठन एवं गंदी फिल्मों को देखने से हमारे अवचेतन मस्तिष्क पर बहुत ही विपरीत प्रभाव पड़ता है जिसके कारण यौन ग्रंथियां अत्यधिक क्रियाशील हो जाती हैं और रात्रि के समय निद्रित अवस्था में स्वप्नदोष होने की संभावनाऐं बन जाती हैं। कई बार अचानक भय ग्रस्त हो जाने के कारण हमारे शरीर में अत्यधिक शिथिलता आ जाती है एवं इस शिथिलता के कारण भी स्वप्नदोष हो सकता है। प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध देर से शादी होना, सामाजिक नियमों के कारण स्त्री-पुरूष में कृत्रिम दूरी होना जिसके कारण दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति तीव्र आकर्षण बनना इत्यादि कारणों से भी स्वप्नदोष हो सकता है। अत्यधिक उत्तेजक, मिर्च मसालों से परिपूर्ण गरिष्ठ एवं विलासितापूर्ण भोजन भी रात्रि के समय अनैच्छिक वीर्य स्खलन का कारण बन सकता है।

ऐसा देखा गया है कि मांसाहार एवं तामसिक भोजन का सेवन करने वालों में स्वप्नदोष की बीमारी अधिक संख्या में देखने को मिलती है। स्वप्नदोष सिर्फ युवाओं का ही रोग नहीं है। कभी-कभी विवाहित स्त्री-पुरूष जो कि नियमित रूप से संभोग करने के आदि होते हैं उनके शरीर में कुछ समय पश्चात प्रतिदिन एक नियमित मात्रा में वीर्य बनना शरू हो जाता है। अगर किसी कारण वश वे संभोग नहीं कर पाते तो रात्रि में सोते वक्त अचानक ही स्वप्नदोष हो जाता है। कुछ रोगी विपरीत लिंग के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं एवं उनके मन मस्तिष्क में निरंतर काम संबंधी कल्पनाऐं एवं विचार चलते रहते हैं। ऐसे रोगियों का किसी विपरीत लिंग के संपर्क में आते ही स्वप्नदोष हो जाता है। स्वप्नदोष के कई अन्य भी कारण हो सकते हैं जैसे कि प्रमेह रोग, सूजाक, अत्यधिक मानसिक तनाव, पेट में कृमि इत्यादि।

ऐसा देखा गया है कि गर्मियों में स्वप्नदोष की बीमारी ज्यादा बढ़ जाती है। स्वप्नदोष के कारण रोगी में निम्नलिखित लक्षण दिखाई देते हैं जैसे कि उत्साहहीनता, किसी काम में मन न लगना, गालों का पिचक जाना, चेहरे पर पीलापन आ जाना, बालों का असमय सफेद होना, त्वचा का खुस्क पड़ जाना, पेट फूलना इत्यादि। ब्लड प्रेशर का बढ़ जाना एवं हृदय का तेजी से धड़कना स्वप्नदोष के रोगियों के मुख्य लक्षण हैं। स्वप्नदोष के कारण शीघ्रपतन, नपुन्सकता, वीर्य में पतलापन, पक्षाघात एवं जोड़ों का कमजोर हो जाना जैसी बीमारियां हो सकती हैं। चूंकि इस रोग में रोगी मानसिक रूप से पूरी तरह क्रियाशील होता

है इसीलिए उसे सबसे पहले उन कारकों से हटना चाहिए जो कि उसके अंदर काम की भावना को तीव्रता प्रदान करते हैं। अपने विचारों को शुद्ध एवं सात्विक रखते हुए कामोत्तेजक भोजन, अश्लील साहित्य एवं एकाकीपन से बचना चाहिए। स्वप्नदोष के रोगियों को खाली एवं एकाकी नहीं रहना चाहिए एवं अपना मन किसी क्रियात्मक कार्य में लगाना चाहिए। नियमित रूप से व्यायाम, योग इत्यादि करने से और संतुलित भोजन लेने से इस रोग पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

महिने में एक या दो बार अगर सामान्य प्रक्रिया के तहत रात्रि को सोते समय पूर्ण परिपक्व स्त्री–पुरूष में वीर्य स्खलन हो जाता है तो यह कोई बीमारी नहीं है। ये पूर्ण रूप से प्राकृतिक क्रिया है जिसके तहत युवा शरीर में वीर्य का उत्पादन होता है और सामान्य तरीके से इसका निष्कासन हो जाता है। ये मानव का आवश्यक अंग है।

होमियोपैथिक औषधियों का सेवन करते समय रोगी के लिए कच्चा प्याज, लहसुन, लौंग, हींग, इलायची, पान मसाले, सिगरेट, शराब, तंबाखू, पिपरमेंट, मांसाहार इत्यादि पदार्थों का सेवन पूर्ण रूप से निषेध है।

स्वप्नदोष से ग्रसित होने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- ❑ शारीरिक रूप से दुबला–पतला होना एवं हस्त–मैथुन की आदत से ग्रसित होना, स्वप्नदोष के बाद शारीरिक कमजोरी महसूस होना, नाभि–स्थल के नीचे के शरीर में शिथिलता आ जाना, कमर में दर्द होना, लिंग और अंडकोषों पर नसें उभर आना जैसे लक्षणों में **एसिड फॉस मदर टिंचर** की पांच बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में मिलाकर रात्रि के समय भोजन लेते समय सेवन करने से लाभ मिलता है एवं स्वप्नदोष के कारण उत्पन्न हुए उपसर्ग जैसे कि स्मरण शक्ति कमजोर हो जाना, पैरों का शिथिल हो जाना, अंडकोषों का लटक जाना, मन में खिन्नता इत्यादि ठीक हो जातें हैं।

- ❑ रोगी का नियमित रूप से शराब का सेवन करना, काम में मन नहीं लगना, एकाकी जीवन जीने का आदी होना, संभोग के समय लिंग में अचानक शिथिलता आ जाना एवं स्वप्नदोष से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका** 30 अत्यंत लाभकारी औषधि है।

- स्वप्नदोष के बाद लिंग में तकलीफ होना, आँखों के नीचे काले धब्बे आ जाना, आँखों की तकलीफ महसूस होना, अनिद्रा एवं स्नायविक दुर्बलता जैसे लक्षणों में **काली फॉस** 6× का दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- शरीर में अम्ल की मात्रा का बढ़ जाना एवं पेट में कृमि होने के कारण स्वप्नदोष हो जाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम फॉस** 6× या 12× का दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- अत्यधिक हस्त-मैथुन एवं स्त्री सहवास के कारण स्वप्नदोष से ग्रसित हो जाना, रोगी का हमेशा काम क्रीड़ाओं के बारे में सोचते रहना, स्वप्नदोष के बाद ठंडक महसूस करना जैसे लक्षणों में **साइलीशिया** 12× लाभकारी औषधि है।

- लिंग से निरंतर थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पतला वीर्य स्त्राव होते रहना, अंडकोषों में सिकुड़न आ जाना जैसे लक्षणों में स्वप्नदोष होने पर **केल्केरिया फ्लोर** 6× **या** 3× दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- आम तौर पर प्रत्येक रात्रि को तीव्र कामोत्तेजना आना एवं स्वप्नदोष हो जाना, शौच करते समय पतला वीर्य अनैच्छिक रूप से निकलते रहना जैसे लक्षणों में **साइलीशिया** 30 लाभदायक औषधि है।

- थोड़ा सा भी शारीरिक श्रम करने पर शरीर में शिथिलता आ जाना, लिंगोत्थान के बिना ही शीघ्रपतन हो जाना, लिंग का निस्तेज एवं ठंडा रहना जैसे लक्षणों में **जेल्सीमियम** 30 लाभदायक औषधि है।

- रात्रि के समय मलद्वार में भयंकर खुजली चलना एवं पेट में कृमि इत्यादि होने के कारण स्वप्नदोष से ग्रसित हो जना जैसे लक्षणों में **सिना** 200 लाभदायक औषधि है।

- रोगी का सूजाक से ग्रसित होने के कारण स्वप्नदोष होना, पेशाब करने में तकलीफ महसूस होना, हस्त-मैथुन की आदत से ग्रसित होना, स्वभाव से अत्यधिक कामुक होना जैसे लक्षणों में **केन्थ्रिस** 1×, 3 लाभदायक औषधि है।

- नियमित रूप से मद्यपान एवं मांसाहार का सेवन करना, अश्लील स्वप्न देखने

के बाद स्वप्रदोष हो जाना, पेट का कब्ज से ग्रसित होना, अंडकोषों में ऐंठन एवं दर्द महसूस होना, प्रातःकाल कामोत्तेजना का अत्यधिक बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 200** लाभदायक औषधि है।

- काम वासना का अत्यधिक बढ़ा हुआ होना एवं विपरीत लिंग के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होना, मात्र स्त्री चिंतन से ही वीर्य स्खलित होने लगना, स्वभाव से चिड़चिड़ा एवं अशांत होना, पेट की बीमारियों से ग्रसित होना, यकृत का ठीक से काम न करना, प्रतिदिन स्वप्रदोष होना एवं स्वप्रदोष के बाद भी काम वासना का शांत न होना जैसे लक्षणों में **कोनायम 30, 200** लाभकारी औषधि है।

- स्वभाव से सदैव अप्रसन्न रहना, किसी काम में मन न लगना, संभोग के समय वीर्य स्खलित नहीं होना, लिंग की दुर्बलता एवं नपुन्सकता होते हुए भी प्रबल कामेच्छा बनी रहना जैसे लक्षणों में स्वप्रदोष हो जाने की स्थिति में **एग्नस केक्टस क्यू** की पांच बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर रात्रि के समय सेवन करने से लाभ मिलता है।

- स्वप्रदोष के पश्चात हड़बड़ाकर उठ बैठना, हृदय का तेजी से धड़कना एवं शरीर में कम्पन के साथ-साथ घबराहट महसूस होना जैसे लक्षणों में **बेराइटा कार्ब 6** का सेवन करना चाहिए।

- शरीर के विभिन्न अंगों में मस्से इत्यादि ऊग आना, बवासीर से ग्रसित होना, वेश्यागमन के कारण लिंग में सूजाक जैसे गुप्त रोग हो जाना, लिंग में विकृति आ जाना जैसे लक्षणों में स्वप्रदोष से ग्रसित होने पर **थूजा मदर टिंचर** की तीन से चार बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर रात्रि के समय सेवन करने से लाभ मिलता है।

- बिना अश्लील स्वप्न आये ही स्वप्रदोष हो जाना, अति मैथुन से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **केलेडियम 30** लाभकारी औषधि है।

- जननेन्द्रिय का अत्यधिक शिथिल हो जाना, रात्रि में कई बार स्वप्रदोष हो जाना, घुटनों में विकृति एवं कमजोरी आ जाना जैसे लक्षणों में **डायस्कोरिया मदर टिंचर** की कुछ बूंदें एवं 30 मात्रा में लेना लाभदायक है।

- **एसिड फॉस मदर टिंचर** के प्रति संवेदनशील रोगियों के लिए **डिजिटेलिस 2×, 3×** भी लाभकारी हो सकती है। इस औषधि का उपयोग **एसिड फॉस क्यू** से संपूर्ण लाभ न मिलने की स्थिति में किया जाता है। उपरोक्त औषधि विशेषकर उन व्यक्तियों के लिए लाभदायक है जो हृदय संबंधी समस्याओं से ग्रसित हैं।

- स्वप्नदोष के बाद कमर में दर्द होना, संभोग के समय सांस का फूल जाना, चेहरे का निस्तेज होना, गालों का पिचका हुआ होना, आँखों के चारों ओर काले धब्बे आ जाना जैसे लक्षणों में **स्टैफिसेग्रिया 30** लाभदायक औषधि है।

- अश्लील वार्तालाप एवं सामान्य उत्तेजना आने पर भी वीर्य स्खलित हो जाना जैसे लक्षणों में **न्युफर लूटियम** 6 लाभदायक औषधि है।

- प्रौढ़ावस्था में लिंगेन्द्रिय संवेदनहीनता के कारण स्वप्नदोष हो जाने जैसे लक्षण में **लायकोपोडियम** 30 लाभदायक औषधि है।

- लिंग पर अर्बुद या मवाद युक्त फोड़े फुंसी, घाव इत्यादि हो जाने के कारण लंबे समय तक संभोग न कर पाना, मूत्र यंत्र में प्रदाह उत्पन्न हो जाना, लिंग का विकृत हो जाना जैसे लक्षणों के कारण स्वप्नदोष से ग्रसित होने पर **केनाबिस सैटाइवा** 1× लाभदायक औषधि है ।

- निरंतर मानसिक चिंताओं से घिरे रहना, अत्यधिक स्त्री संभोग या अप्राकृतिक मैथुन के कारण यौन शक्ति का ह्रास हो जाना, लिंग में कड़ापन न आना, सांस फूल जाना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- मिर्गी या अन्य किसी मानसिक बीमारी के कारण स्वप्नदोष होने की प्रवृत्ति में **क्यूप्रम मेट** 6 और **अर्जेण्टम नाइट्रिकम** 6 लाभदायक औषधि है।

- प्रात:काल नियमित रूप से स्वप्रदोष होने पर **ग्रेफाइटिस 30** एवं **पल्सेटिला** 30 लाभदायक औषधि है ।

- जननेन्द्रिय में हमेशा उत्तेजना बनी रहना एवं खुरखुराहट चलना, सिर की तरफ रक्त संचार ज्यादा होना, चेहरे का लाल हो जाना, स्वप्रदोष के बाद अत्यधिक कमजोरी महसूस होना, कान में विचित्र आवाजें सुनाई देना जैसे लक्षणों में **चायना** 30 लाभदायक औषधि है।

- महिलाओं में स्वप्नदोष की प्रवृत्ति होने पर **चायना 30** का सेवन सर्वश्रेष्ठ है।

- रोगी का मानसिक एवं शारीरिक रूप से पूर्णत: स्वस्थ्य होना एवं सात्विक जीवन बिताने पर भी स्वप्नदोष हो जाना, शरीर में सामान्य से अधिक मात्रा में वीर्य बनना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभकारी औषधि है।

अध्याय-2

हस्त-मैथुन

मैथुन शब्द का तात्पर्य दो विपरीत लिंगों का आपस में समागमन एवं वीर्य स्खलन जैसी चरम स्थिति को प्राप्त करना है। प्रकृति ने सभी जीव-जंतुओं एवं प्राणियों में इस क्रिया को मूलतः प्रजनन के लिए प्रदान किया है जिससे कि जीवन चक्र निरंतर चलता रहे। मनुष्यों में मैथुन क्रिया प्रजनन के अलावा आनंद प्राप्ति का एक अति महत्वपूर्ण साधन है। मानव योनि को छोड़कर सभी जीव-जंतु एक निश्चित अवधि, ऋतु, काल में ही संभोग करते हैं। ठीक इसके विपरीत मनुष्य में संभोग की असीमित क्षमता है एवं उनमें संभोग की अवधि काफी लंबी होती है। मनुष्यों में संभोग किसी ऋतु चक्र एवं काल से बंधा हुआ नहीं है। मनुष्य सामान्यतः 11-12 वर्ष की उम्र से 70 वर्ष की उम्र तक संभोग कर सकता है ऐसा किसी अन्य प्राणियों में नहीं पाया जाता। इन्हीं सब कारणों से ऐसा देखा गया है कि सामाजिक व्यवस्था एवं नियमों के कारण अगर मानव के अंदर की काम पिपासा दब जाती है तो समाज में तरह-तरह की यौन भ्रांतियां एवं विकृतियां उत्पन्न हो जाती है।

यौन शक्ति का ठीक से क्रियान्वयन न हो पाने की दशा में मानव शरीर के अंदर कई प्रकार के मनोविकार, कुण्ठायें, मानसिक एवं शारीरिक व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं। मानव विकास में यौन शक्ति सबसे अहम भूमिका निभाती है। इसलिए इसे जड़ मूल से समझना एवं इसके असामान्य होने पर उत्पन्न हुए रोगों का निदान सामाजिक दृष्टि से नितांत आवश्यक है।

संसार के सभी समाज इस विषय पर बहुत गंभीर हैं। यौन शक्ति के अति उपयोग से भी नित नई सामाजिक, मानसिक और शारीरिक समस्याऐं उत्पन्न होने लग जाती हैं। उदाहरण के लिए पाश्चात्य मुल्कों में होने वाली तरह-तरह की मानसिक बीमारियां, पागलपन, आत्महत्या, एड्स इत्यादि ये सब पाश्चात्य मुल्कों में यौन शक्ति के विकृत एवं अति उपयोग की ही देन है। यौन शक्ति के अति उपयोग से कई अन्य प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक समस्याऐं भी उत्पन्न हो सकती हैं जैसे कि नपुन्सकता, लिंग में शिथिलता आ जाना, शरीर में कमजोरी

महसूस होना, शीघ्रपतन, स्वप्रदोष, संभोग के प्रति निरसता, मानसिक अवसाद इत्यादि।

स्वस्थ्य समाज एवं स्वस्थ्य मनुष्य के लिए यौन संबंधों पर गंभीरता एवं शोधपूर्ण चिंतन नितान्त आवश्यक है। हस्त-मैथुन का तात्पर्य है कि स्त्री या पुरूष जो कि इस रोग से ग्रसित हैं। एक विपरीत लिंग की भौतिक अनुपस्थिति में कृत्रिम रूप से आनंद प्राप्त करने के लिए हाथ या किसी अन्य साधन से मैथुन क्रिया संपन्न करता है।

सामान्यतः स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों में यह रोग अधिक संख्या में देखने को मिलता है। किशोर अवस्था की प्राप्ति करते ही मानव मस्तिष्क में काम की तरंगें जोर पकड़ने लगती हैं एवं लिंग पर जरा सा भी स्पर्श होने पर वह व्याकुल हो उठता है। जाने अनजाने में लिंग को निरंतर स्पर्श करते रहने से उसे उत्तेजना एवं आनंद की प्राप्ति होने लगती है। लिंग के घर्षण की इस प्रक्रिया का चरम बिंदू वीर्य स्खलन होता है। इस तरह मैथुन जैसी प्राकृतिक क्रिया हस्त-मैथुन के द्वारा अप्राकृतिक तरीके से संपन्न होने लगती है। एक बात हमें स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि प्राकृतिक क्रिया की अपेक्षा कोई भी अप्राकृतिक क्रिया थोड़े समय बाद दुष्परिणाम देती ही हैं। चाहे कितने भी तर्क हम अपनी गलतियों को छिपाने के लिए प्रस्तुत करें। अप्राकृतिक क्रिया अप्राकृतिक ही है एवं प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध है। इसलिए हस्त-मैथुन के दुष्परिणाम तो होते ही हैं। ईश्वर ने लिंग का निर्माण अप्राकृतिक मैथुन के लिए नहीं किया है।

मानव शरीर के किसी भी अंग का अत्यधिक और गलत तरीके से उपयोग होने पर वह अंग विभिन्न प्रकार की व्याधियों से ग्रसित हो जाता है। उदाहरण के लिए गलत तरीके से अत्यधिक पठन-पाठन करना, कम रोशनी में पठन-पाठन करना और आँखों को बिना आराम दिए लंबे समय तक अध्ययन करने से आँखों की ज्योति प्रभावित हो सकती है। जिसके कारण कम उम्र में चश्में का इस्तेमाल करना पड़ सकता है। ठीक इसी प्रकार अप्राकृतिक तरीके जैसे हस्त-मैथुन इत्यादि करने से मानव लिंग निश्चित तौर पर विकार-युक्त हो जाता है। पुरूषों में हस्त-मैथुन के अलावा बिस्तर, तकिए, गद्दे, इत्यादि वस्तुओं के घर्षण के द्वारा भी किया जाता है।

कभी-कभी सामाजिक मान्यताओं के क़ारण पुरूष को नारी का स्वाभाविक

संसर्ग नहीं मिल पाता एवं आज के युग में आर्थिक कारणों से बड़ी उम्र में विवाह होना भी हस्त-मैथुन के मुख्य कारण हैं। निरंतर कामुक साहित्य पढ़ना, गंदी फिल्में देखना एवं चारों ओर कामोत्तेजक वातावरण होने के कारण मन में काम भावनाऐं बहुत ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इन काम भावनाओं को अस्थाई तौर पर शांत करने का हस्त-मैथुन एक सुलभ और सुगम साधन है। विवाहित पुरूषों में भी पत्नी के उपलब्ध न होने पर हस्त-मैथुन करने की आदत पड़ जाती है।

मानव लिंग की त्वचा बहुत ही संवेदनशील होती है। उसे ठीक तरीके से साफ न रखने पर वहां पर किसी भी प्रकार का त्वचा रोग, फोड़े फुंसी इत्यादि हो सकते हैं। जिसके कारण लिंग पर निरंतर खुजली चलने लगती है। लिंग को बार-बार खुजलाने एवं स्पर्श करने के कारण भी हस्त-मैथुन की आदत पड़ सकती है। हस्त-मैथुन से ग्रसित व्यक्ति एकाकी प्रकृति का होता है। सामान्यत: वह इस क्रिया को घर में अकेला होने पर, बाथरूम में या किसी निर्जन स्थान पर ही करता है। हस्त-मैथुन से ग्रसित रोगी को एकांत से बचना चाहिए एवं अपने आपको रचनात्मक कार्यों में लगाना चाहिए। हस्त-मैथुन से ग्रसित व्यक्ति हमेशा अपने इस दुष्कार्य के कारण कुण्ठा और ग्लानि से भरा रहता है एवं उसके मन में कहीं न कहीं इस दुष्कार्य के उचित न होने की ग्रंथि बनी रहती है। लंबे समय तक हस्त-मैथुन की प्रवृत्ति होने के कारण रोगी के अंदर निम्नलिखित लक्षण प्रकट होने लगते हैं जैसे कि स्वभाव में चिड़चिड़ाहट, याददाश्त में कमजोरी आना, लिंगेन्द्रिय का शिथिल पड़ जाना एवं सिर में निरंतर दर्द बना रहना इत्यादि। कुछ रोगी दिन में चार से पांच बार तक भी हस्त-मैथुन करने लगते हैं जिनके कारण उसके शरीर में बहुत सी मानसिक एवं शारीरिक क्षमताओं का ह्यस हो जाता है। बहुत से हस्त-मैथुन के रोगी साबुन एवं तेल का भी इस्तेमाल करते हैं जिसके कारण कुछ समय पश्चात लिंगेन्द्रिय में त्वचा के विकार उत्पन्न होने लगते हैं। प्रारंभ में हस्त-मैथुन की अवधि सामान्य होती है। फिर धीरे-धीरे मैथुन की क्षमता का ह्यस होने लगता है और रोगी शीघ्रपतन से ग्रसित हो जाता है। स्त्री-पुरूष के वैवाहिक संबंधों के खराब होने का एक बहुत बड़ा कारण शीघ्रपतन है। कई बार हाथों के अत्यधिक दबाव एवं कामोत्तेजक दवाऐं लेकर हस्त-मैथुन करने के कारण लिंग के आकार में विकृति आ जाती है। लंबे समय से हस्त-मैथुन की आदत से व्यक्ति वैवाहिक जीवन प्राप्त होने पर स्त्री सुख का आनंद नहीं ले पाता। इसलिए हस्त-मैथुन से ग्रसित रोगी अक्सर विवाह करने से भी

कतराते हैं। वैवाहिक जीवन में स्त्री भी पुरूष से यह अपेक्षा रखती है कि वह उसे संभोग के समय पूर्ण संतुष्टि प्रदान करे परंतु हस्त-मैथुन का रोगी तो सिर्फ स्वः क्रिया में ही विश्वास रखता है। इसलिए वह स्त्री पक्ष की भावना से पूर्णतः अनभिज्ञ रहता है। जिसके कारण स्त्री अतृप्त ही रह जाती है और पुरूष के अंदर हीन ग्रंथि का निर्माण हो जाता है। पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों में हस्त-मैथुन कम संख्या में पाया जाता है। स्त्रियों में हस्त-मैथुन के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि अधिक उम्र तक शादी न हो पाना, मासिक धर्म अनियमित होना, योनि में अत्यधिक संवेदनशीलता आ जाना, मासिक धर्म खत्म होने के बाद संभोग की तीव्र इच्छा होना, हिस्टीरिया की बीमारी से ग्रसित होना, अश्लील पुस्तकों एवं गंदी फिल्मों को देखना, पति का शीघ्रपतन, नपुन्सकता इत्यादि से ग्रसित होना इत्यादि।

सामान्यतः स्त्रियां अंगुली, मोमबत्ती, गाजर या लिंग के आकार की किसी अन्य वस्तु को योनि मार्ग में डालकर हस्त-मैथुन करती हैं। पाश्चात्य देशों में तो हस्त-मैथुन में सहायक तरह-तरह के यंत्रों का इस्तेमाल होने लगा है। सामाजिक बंधनों के कारण अविवाहित महिलाऐं कामेच्छा जाग्रत होने पर हस्त-मैथुन या इससे मिलते-जुलते अप्राकृतिक मैथुन को अपनी कामेच्छा शांत करने का एक सुगम एवं आसान उपाय समझती हैं क्योंकि हस्त-मैथुन के कारण वे पुरूष संसर्ग से बच जाती हैं और उनके गर्भवती होने का खतरा टल जाता है। स्त्रियों में हस्त-मैथुन के कारण उनके योनि मार्ग एवं गर्भाशय के चोट ग्रस्त हो जाने की संभावना बनी रहती है। हस्त-मैथुन के कारण योनि का आंतरिक भाग विभिन्न प्रकार की बीमारियों से संक्रमित हो सकता है एवं योनि से रक्त स्त्राव की संभावना भी बन सकती है। कठोर वस्तु से हस्त-मैथुन करने के कारण स्त्रियों के योनि मार्ग में असंवेदनशीलता आ जाती है। जिसके कारण विवाहोपरांत पुरूष लिंग का स्पर्श संभोग के समय पता नहीं लगता। मैथुन क्रिया दो विपरीत लिंगों के बीच होती है एवं इसमें दोनों सहयोगी आनंद प्राप्त करते हैं। परंतु ठीक इसके विपरीत हस्त-मैथुन में एक ही पक्ष सम्मिलित रहता है। यही फर्क आगे चलकर स्वस्थ्य वैवाहिक जीवन में मुसीबत की जड़ बन जाता है। पुरूषों में स्वप्नदोष, शीघ्रपतन जैसी गंभीर यौन समस्याऐं मूलतः हस्त-मैथुन की ही देन है। लंबे समय तक हस्त-मैथुन की आदत से ग्रसित होने के कारण अकारण ही शौच जाते समय या पेशाब करते समय वीर्य स्खलित होने लगता है।

हस्थ-मैथुन के निम्नलिखित दुष्परिणाम हैं जैसे कि-

बालों का जल्दी सफेद होना, आँखों के नीचे कालापन आना, गालों का पिचक जाना, चेहरे का तेजहीन हो जाना, रीढ़ की हड्डी और कमर में दर्द बना रहना, याददाश्त कम हो जाना, मूत्र में जलन एवं शरीर के जोड़ों विशेषकर घुटनों का कमजोर हो जाना इत्यादि-इत्यादि।

हस्त-मैथुन की आदत से ग्रसित होने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना हितकर है।

- ❑ मन मस्तिष्क में निरंतर काम भावना बनी रहना, लिंगेन्द्रिय में तीव्र उत्तेजना आना, मल त्याग करते समय अकारण ही वीर्य स्त्राव होते रहना, हस्त-मैथुन के कारण स्मरण शक्ति का ह्यस हो जाना जैसे लक्षणों में **पिकरिक एसिड 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ लंबे समय से हस्त-मैथुन की प्रवृत्ति से ग्रस्त होना, शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का ह्यस हो जाना जैसे लक्षणों में **बल्लिस पेरेलिस 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ स्त्री संसर्ग के प्रति उदासीन होना एवं विवाहित होने पर भी हस्त-मैथुन की आदत से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **ऑस्टिलेगो 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ हस्त-मैथुन के कारण गालों का पिचक जाना, शरीर में दर्द बने रहना, दिमागी तौर पर शिथिल हो जाना, निराशाजनक विचार आना, सदैव भयभीत रहना एवं हमेशा काम संबंधित विचारों में डूबे रहना जैसे लक्षणों में **स्टैफिसेग्रिया 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ हस्त-मैथुन के कारण रोगी को नींद न आना, भूख न लगना, सदैव कुण्ठित रहना, मन में हीन भावना आ जाना एवं शारीरिक रूप से अत्यधिक कमजोरी महसूस करना जैसे लक्षणों में **एसिड फॉस मदर टिंचर** की पांच से दस बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में मिलाकर प्रतिदिन भोजन करने के बाद सेवन करने से रोगी पुन: स्वस्थ्य हो जाता है। उपरोक्त औषधि स्त्री-पुरूष दोनों के लिए हितकर है।

- हस्त-मैथुन से ग्रसित व्यक्ति का शीत प्रधान होना, हाथ-पाँव से चिपचिपा एवं ठंडा पसीना आना, सिर एवं रीढ़ की हड्डी में निरंतर दर्द बने रहना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।
- हस्त-मैथुन की पुरानी आदत छुड़ाने के लिए **केल्केरिया फॉस** 6× व **काली फॉस** 6× दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।
- हस्त-मैथुन से ग्रसित होना एवं शरीर में अम्ल की प्रधानता हो जाने जैसे लक्षणों में **नेट्रम फॉस** 6× दिन में चार बार लेना हितकर है।
- पुरूषों में हस्त-मैथुन की इच्छा एवं मन में उठने वाली तीव्र काम भावना को शांत करने के लिए **केनाबिस सैटाइवा 6** श्रेष्ठ औषधि है।
- स्त्रियों में विवाहोपरांत विशेषकर गर्भावस्था के दौरान या किसी यौन विकार के कारण हस्त-मैथुन की तीव्र इच्छा होने पर **पल्सेटिला 6** लाभदायक औषधि है।
- निरंतर हस्त-मैथुन करने से लिंगेन्द्रिय का शिथिल एवं शक्तिहीन हो जाना, पेट में कब्ज बने रहना एवं वीर्य में पतलापन आ जाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 30** का सेवन करना चाहिए।
- हस्त-मैथुन के कारण अंडकोषों एवं वीर्य-नली में प्रदाह उत्पन्न हो जाना, शारीरिक रूप से सुस्त हो जाना, पैर के निचले हिस्से में दर्द बने रहना एवं बार-बार कामोन्मादी हो जाना जैसे लक्षणों में **साइना 3×** का सेवन करना चाहिए।
- हस्त-मैथुन से ग्रसित रोगी का विषाद से भर जाना, स्मरण शक्ति कम हो जाना, दृष्टि दोष आ जाना जैसे लक्षणों में **केलि ब्रोम क्यू** का सेवन हितकर होता है।
- अत्यधिक हस्त-मैथुन के कारण स्नायविक दुर्बलता आ जाना, लिंगेन्द्रिय में ढीलापन आ जाना, शीघ्रपतन से ग्रसित हो जाना, रक्त की कमी आ जाना जैसे लक्षणों में **एनाकार्डियम 3** हितकर औषधि है।
- मासिक धर्म का अनियमित होना, ऋतुकाल का सामान्य से अधिक होना

एवं श्वेतप्रदर से ग्रसित होना जैसे लक्षणों वाली स्त्रियों में हस्त-मैथुन की इच्छा को शांत करने के लिए **ग्रेटिओला 3, 30** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

- ❑ बाल्यावस्था में लिंग से छेड़छाड़ करने की प्रवृत्ति होने पर **ड्यूरम 1 एम.** एवं **ब्यूफो 30** श्रेष्ठ औषधि है।
- ❑ लिंगेन्द्रिय का अति संवेदनशील हो जाना, लिंग में निरंतर कंपन होते रहना जैसे लक्षणों में **ओरीगनम 3** स्त्री-पुरूष दोनों के लिए हस्त-मैथुन की इच्छा एवं कामोत्तेजक विचारों को शांत करने की उपयुक्त औषधि है।
- ❑ हस्त-मैथुन के बाद शरीर में ठंडक महसूस होना, हृदय की धड़कन बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **डिजिटेलिस 30** लाभदायक औषधि है।

अध्याय-3

शीघ्रपतन

संभोग दो विपरीत लिंगों के मिलन की वह क्रिया है। जिसमें दोनों पक्ष शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर सम्मिलित होकर आनंद की प्राप्ति करते हैं और जिससे मानव मस्तिष्क में उठने वाली काम की तीव्र इच्छा अस्थाई रूप से संतुष्ट होती है। सेक्स मनुष्य के लिए उतना ही जरूरी है जितना कि रोटी कपड़ा और मकान। यह ईश्वर द्वारा मानव को प्रदत्त आनंद प्राप्ति का एक साधन है। इसकी प्राप्ति न होने पर मानव जीवन अधूरा रह जाता है और जीवन में विभिन्न प्रकार की असमानताऐं आ जाती हैं। एक सामान्य और स्वस्थ्य जीवन जीने के लिए सेक्स अति आवश्यक है। मनुष्य के एक सामाजिक प्राणी होने के नाते उसके कृत्यों और कर्मों से समाज पूरी तरह प्रभावित होता है। अगर मनुष्य के अंदर काम संबंधित इच्छा की पूर्ति नहीं होती और वह इस इच्छा को किसी कारण वश दबाता है तो इसका समाज पर बहुत ही विपरीत असर पड़ता है। समाज में फैले विभिन्न अपराध जैसे बलात्कार, समलैंगिकता, छेड़छाड़ एवं हिंसा इत्यादि के पीछे मूलतः अतृप्त काम वासना ही कारण है। स्त्रियों के प्रति तिरस्कार एवं घृणापूर्ण व्यवहार पुरूषों के अंदर दबी हीन काम वासना ग्रंथि के कारण ही होता है। ठीक इसी प्रकार स्त्री पक्ष का चिड़चिड़ा होना, ईर्ष्या एवं द्वेषपूर्ण व्यवहार भी अतृप्त काम वासना का प्रतीक है। युवाओं में बढ़ रही अनैतिकता एवं हिंसा की प्रवृत्ति का मुख्य कारण आज के सामाजिक वातावरण में अत्यधिक कामोन्माद की भावना का जाग्रत होना एवं उसका पूर्ण न होना है। हिस्टीरिया जैसी बीमारी में यह सर्वविदित है कि विवाह उपरांत यह बीमारी अपने आप समाप्त हो जाती है।

आज के युग में पति-पत्नी के झगड़े, तलाक, मानसिक अवसाद, निरसता जैसी मानसिक बीमारियों की जड़ में मूलतः अतृप्त काम वासना ही है। ऐसा विश्व के सभी मनोवैज्ञानिकों एवं तर्क चिंतकों का मानना है। संभोग के समय स्त्री-पुरूष दोनों ही आनंद की चरम सीमा पाना चाहते हैं। साथ ही हम ऐसा भी कह सकते हैं कि संभोग एक रासायनिक एवं बायोलॉजीकल क्रिया है। अगर किसी कारण वश संभोग के समय पुरूष का वीर्य स्त्री के चरम अवस्था तक

पहुँचने से पहले ही स्खलित हो जाता है जिसके कारण पुरूष संभोग करने में असमर्थ हो जाता है और स्त्री संभोग की चरम अवस्था तक नहीं पहुँच पाती तो उसे शीघ्रपतन की अवस्था कहा जाता है। ऐसा केवल पुरूषों के साथ ही नहीं होता बल्कि स्त्रियों के साथ भी हो सकता है। परंतु शीघ्रपतन मुख्य रूप से पुरूषों की समस्या है क्योंकि स्त्री तो स्खलन के बाद भी शारीरिक रूप से सहयोग कर सकती है। ठीक इसके विपरीत पुरूषों में वीर्य स्खलन के बाद लिंग में कड़ापन खत्म होने लगता है और वह संभोग करने में असमर्थ हो जाता है जिसके कारण रति क्रिया अधूरी रह जाती है। ऐसी अवस्था में कई बार पुरूषों को अप्राकृतिक कृत्यों के द्वारा स्त्री को स्खलित करना पड़ता है। अगर वह ऐसा न करे तो स्त्री एक कामोन्मादि के समान व्यवहार करने लग सकती है। कभी-कभी अतृप्त लालसा वाले स्त्री-पुरूष कामान्द होकर परागमन भी कर लेते हैं।

कई बार इस अतृप्त इच्छा की पूर्ति के लिए वे अप्राकृतिक तरीके जैसे हस्त-मैथुन इत्यादि भी करने लगते हैं। अतृप्त कामेच्छा के कारण स्त्री-पुरूष में कई प्रकार के लक्षण दिखाई पड़ते हैं जैसे कि कुण्ठित हो जाना, सेक्स के प्रति उदासीनता आ जाना, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाना एवं विभिन्न प्रकार की मानसिक बीमारियों से ग्रसित हो जाना इत्यादि।

संभोग का समय कितना होना चाहिए इसका कोई मापदंड नहीं है। इसमें कई स्थितियां निर्णायक होती हैं जैसे कि प्रत्येक स्त्री की अपनी शारीरिक बनावट, अनुवांशिकता, खान-पान, मानसिक स्थिति एवं उम्र के हिसाब से चर्मोत्कर्ष पर पहुँचने में एक निश्चित समय लेती है। ठीक उसी प्रकार पुरूष के लिंग की बनावट, उसका शारीरिक स्वास्थ्य, अनुवांशिकता, मुख्य रूप से उसकी मानसिक स्थिति, काम के प्रति मन में बैठी ग्रंथियां एवं स्त्री-पुरूष के बीच सहयोगपूर्ण व्यवहार इत्यादि ही स्वस्थ्य संभोग जिसमें स्त्री-पुरूष दोनों स्खलित हों और साथ-साथ संतुष्टि प्राप्त करें निर्णायक होते हैं। सामान्य अवस्था में पांच से दस मिनिट की मैथुन क्रिया में वीर्य स्खलित होता है। इससे ज्यादा या कम की स्थिति असामान्य है। होमियोपैथिक चिकित्सा में किसी भी बीमारी का निदान के लिए रोगी का पूर्ण इतिहास विस्तार-पूर्वक जान लेना अति आवश्यक है। तभी उसका निदान संभव हो पाता है। कुछ पुरूषों में शीघ्रपतन की बीमारी हस्त-मैथुन के कारण, उसके लैंगिक तंत्रिका तंत्र के अत्यधिक संवेदनशील हो जाने के कारण भी हो जाती है। शीघ्रपतन नपुन्सकता की प्रथम अवस्था है।

स्त्री-पुरूष के गुप्तांगों में सिफिलिस, सूजाक इत्यादि जैसे गंभीर यौन रोगों के कारण भी शीघ्रपतन की बीमारी हो जाती है। मन में नियमित रूप से संभोग की तीव्र इच्छा होना और संभोग न हो पाने की स्थिति में शीघ्रपतन होने लगता है। पुरूषों में पहली बार मैथुन करते समय शीघ्रपतन हो सकता है। परंतु दूसरी बार या तीसरी बार में सामान्य मैथुन होने लगता है। शारीरिक रूप से कमजोर रोगी के मन में आत्मविश्वास की नितान्त कमी हो जाती है जिसके कारण भी शीघ्रपतन हो सकता है। कुछ रोगियों में ऐसा देखने में भी आया है कि वे अधिकतर समय सिर्फ सेक्स के बारे में ही सोचते रहते हैं और संभोग के समय तक वे अपनी इतनी मानसिक ऊर्जा खर्च कर चुके होते हैं कि स्त्री के संपर्क में आते ही उनके आत्मविश्वास में इतनी कमी आ जाती है कि वे संभोग के कुछ क्षण बाद ही वे स्खलित हो जाते हैं। लंबे समय तक एक ही आसन में संभोग करने के कारण भी पुरूष शीघ्रपतन से ग्रसित हो सकता है। संभोग से पूर्व की क्रियाऐं जैसे आलिंगन, चुंबन इत्यादि के दौरान ही अत्यधिक कामोन्मादि हो जाना, संभोग के समय में स्त्री की उदासीनता, अरूचि एवं तिरस्कारपूर्ण व्यवहार भी शीघ्रपतन के कारण हो सकते हैं।

युवकों में अप्रामाणिक यौन साहित्य, धर्माचार्यों की ऊट-पटांग बातें उनके मन में सेक्स के प्रति भय का निर्माण कर देती हैं। अशिक्षित लोगों द्वारा सेक्स को एक गिरी हुई अधम और पाप जैसी संज्ञा देने पर बच्चों के मन में सेक्स के प्रति गलत धारणाऐं बैठ जाती हैं। जिसके कारण युवावस्था में आने पर उनका वैवाहिक जीवन नष्ट हो सकता है। आजकल बाजारों में उपलब्ध बाजीकरण औषधियां और विभिन्न प्रकार के स्प्रे, यौन-वर्धक उपाय शुरू-शुरू में तो अस्थाई लाभ देते हैं पर मात्र वर्ष भर के अंदर शीघ्रपतन तो दूर नपुन्सकता का कारण बन जाते हैं कुछ रोगी जन्मजात स्नायु रोगों से ग्रसित होते हैं एवं उनमें शीघ्रपतन एक अनुवांशिक बीमारी होती है। मानसिक तनाव, शारीरिक रूप से अत्यधिक कार्य आज के समाज में शीघ्रपतन का मुख्य कारण हैं। मादक पदार्थ जैसे-शराब, अफीम, गांजा, ड्रग्स का सेवन स्नायु को बुरी तरह प्रभावित कर देते हैं और शीघ्रपतन का कारण बन जाते हैं। कुछ स्त्रियां असामान्य रूप से क़ामुक होती हैं और वे स्खलित होने की स्थिति तक बहुत देर में पहुँचती हैं। जबकि पुरूष सामान्य समय में स्खलित होता है। ऐसी स्थिति में स्त्री का व्यवहार ही असामान्य कहा जाएगा और उसे ही रोग निदान की आवश्यकता होगी। अगर स्त्री की योनि बहुत ज्यादा सकरी हो जिसके कारण लिंग का प्रवेश आसानी से नहीं हो पाता

और ऐसी दशा में शीघ्रपतन होने पर स्त्री को ही समुचित निदान की जरूरत है। संभोग की गलत तकनीकें अपनाना, पुरूष के मन में संभोग के समय वीर्य स्खलित होने का ख्याल आना या संभोग को मात्र एक कार्य समझकर आधे-अधूरे मन से करना शीघ्रपतन के कारण हो सकते हैं। शीघ्रपतन के रोगियों को दो संभोग क्रियाओं के बीच अधिक अंतर नहीं रखना चाहिए। मन के ऊपर किसी अनावश्यक भय, ग्रंथि का बोझ नहीं रखना चाहिए एवं पेट में कब्ज न हो इस स्थिति का भी ध्यान रखना चाहिए। संभोग उसी स्त्री से करें जो आपको समझती हो और पूर्ण सहयोग करती हो। वेश्या, कालगर्ल या अपनी उम्र से बड़ी स्त्रियों से बचना चाहिए। वीर्य-वर्धक पदार्थ जैसे मांसाहार, उड़द इत्यादि का सेवन न करें। एक ही आसन में मैथुन न करें। मानसिक तनाव कम करने के लिए संपूर्ण एवं गहरी नींद सबसे अच्छा साधन है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि नशबंदी जैसे-आप्रेशन के बाद पुरूषों में काम क्षमता लंबे समय तक के लिए बढ़ जाती है और वे देर से स्खलित होते हैं। संभोग से पहले अश्लील फिल्में, साहित्य हमारे मस्तिष्क के काम केंद्र को अत्यधिक संवेदनशील बना देते हैं जिसके कारण शीघ्रपतन हो सकता है। अगर स्त्री की योनि सकरी है तो तरल पदार्थ के उपयोग करने से संभोग की समय अवधि बढ़ जाती है। ठीक इसी प्रकार पुरूषों को चाहिए कि वे अगर शीघ्रपतन के रोगी हों तो स्त्री पक्ष को संभोग से पहले उत्तेजित कर लें ताकि वह संभोग क्रिया की काल-अवधि में ही स्खलित हो सकें। सामान्यत: स्त्रियां पुरूष की अपेक्षा देर से उत्तेजित होती हैं।

शीघ्रपतन से ग्रसित होने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- लिंगेन्द्रिय में कमजोरी महसूस होना एवं शारीरिक रूप से थकान आना, संभोग के समय अचानक ही लिंग का ढीला पड़ जाना जैसे लक्षणों में **ऐसिड फॉस 30** लाभदायक औषधि है।

- लिंग का योनि मार्ग से स्पर्श होने पर ही वीर्य स्खलन होने जैसे लक्षणों में **सल्फर 200** लाभदायक औषधि है।

- वीर्य का पतला एवं गंधहीन होना और शीघ्रपतन से ग्रसित रोगी के अंदर सेक्स के प्रति विचारों में वृद्धि हो जाना एवं इसके साथ ही लैंगिक क्षमता

में कमी आना जैसे लक्षणों में **स्टैफिसेग्रिया 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- ❑ संभोग के बाद कमजोरी महसूस करना एवं विकृतिपूर्ण व्यवहार करने वाले रोगियों के लिए **केल्केरिया कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ स्त्रियों को देखते ही लिंग में कड़ापन आ जाना और वीर्य स्खलन होने की स्थिति बनने पर **कोनायम 6** लाभकारी औषधि है।
- ❑ शीघ्रपतन से ग्रसित रोगी के अंदर मिर्गी के लक्षण दिखाई पड़ने पर **क्यूप्रम मेट 6, अर्जेण्टम नाइट्रिकम 6** लाभकारी औषधि है।
- ❑ शीघ्रपतन के साथ-साथ गंभीर कब्ज से ग्रसित होना, मल का कड़ा एवं टुकड़ों-टुकड़ों में होना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ युवावस्था में संभोग के बाद शक्तिहीनता महसूस होना एवं कमर और घुटनों में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **स्टैफिसेग्रिया 30** औषधि का सेवन करना चाहिए।
- ❑ वीर्य-पात के बाद शीघ्रपतन के रोगियों को पेशाब जाते समय कष्ट महसूस होना जैसे लक्षणों में **केन्थिरस 2×** लाभदायक औषधि है।
- ❑ अत्यधिक मैथुन के कारण लिंग में आयी कमजोरी की स्थिति में **लायकोपोडियम 30** एवं **ऐसिड नाइट्रिक 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ उपरोक्त लक्षणों में **लायकोपोडियम 30** से लाभ न हो तो **एग्नस कास्ट 30** हितकर औषधि है।
- ❑ कभी-कभी रोगी में आंशिक रूप से कुछ समय के लिए शीघ्रपतन की स्थिति निर्मित हो जाती है ऐसी स्थिति में **केल्केरिया कार्ब 6** हितकर औषधि है।
- ❑ अधेड़ उम्र के रोगियों के लिए **सेबाल सेरूलेटा क्यू मदर टिंचर** की पांच बूंद एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर सेवन करते रहने से लाभ होता है।

- अपूर्ण मैथुन के रोगियों के लिए **फास्फोरस 30** उपयुक्त औषधि है।
- मानसिक संताप, किसी शोकाकुल घटना या मानसिक दबाव की स्थिति में शीघ्रपतन जैसी बीमारी होने पर **एग्नस कास्ट क्यू, 6** लाभदायक औषधि है।
- किसी कारण वश जननेन्द्रिय में एकदम दुर्बलता आ गई हो तो **जेल्सीमियम 1×, 3** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

अध्याय-4

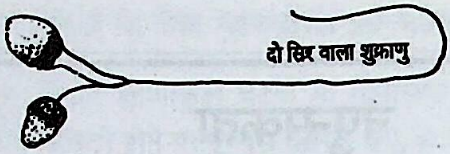
नपुन्सकता

स्त्री-पुरूष की मैथुन क्रिया में पुरूष पक्ष जब किसी कारण वश संभोग क्रिया को पूर्ण नहीं कर पाता या वह किसी असमर्थता-वश स्त्री से संभोग नहीं कर पाता तो ऐसी स्थिति नपुन्सकता कहलाती है। मूलरूप से हम यह कह सकते हैं कि जब पुरूष का लिंग संभोग क्रिया करने में असमर्थ हो चाहे मानसिक रूप से उसके अंदर संभोग की कितनी भी तीव्र इच्छा हो तो वह नपुन्सक ही कहलाता है।

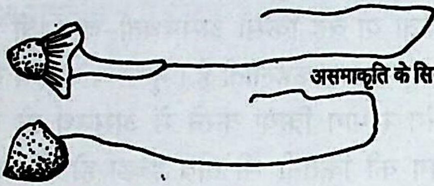
लिंग में पूर्ण रूप से उत्थान न होना, स्त्री को देखते ही स्खलित हो जाना, पुरूष का पूर्ण रूप से उत्तेजित न होना इत्यादि नपुन्सकता की निशानी है। नपुन्सकता की स्थिति में पुरूष के जननांग का उपयोग सिर्फ मूत्र निष्कासन के लिए ही रह जाता है और वह संभोग के लिए अनुपयोगी हो जाता है।

सामान्य अवस्था में स्त्री के संसर्ग में आते ही पुरूष के मस्तिष्क में काम का उद्दीपन होने लगता है। मस्तिष्क में उत्पन्न हुए इन उद्दीपनों से यौन केंद्र क्रियाशील हो जाता है। इन यौन केंद्रों से निकले संवेग तंत्रिकाओं के द्वारा मेरूदंड के माध्यम से लिंग में रक्त संचार बढ़ा देते हैं। जिसके कारण लिंग में उत्थान और कड़ापन आने लगता है और वह कुछ ही मिनटों में संभोग क्रिया के लिए तैयार हो जाता है। नपुन्सकता की स्थिति में यह क्रिया किसी कारण वश नहीं हो पाती या आंशिक रूप में होती है।

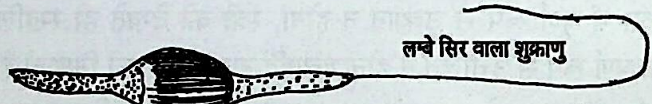
पुरूष के वीर्य स्खलन के बाद स्त्री को संतुष्टि न होना, संभोग के दौरान लिंग में अत्यधिक दर्द होना जिससे कि संभोग क्रिया बीच में ही खत्म हो जाए पुरूष में नपुन्सकता के लक्षण हैं। अक्सर ऐसा देखा गया है कि करीब 70 फीसदी मामलों में नपुन्सकता मानसिक और आंशिक होती है। कुछ रोगियों में पिट्यूटरी ग्लैंड य दोनों शुक्र ग्रंथियां जन्म-जात ठीक रूप से काम नहीं करती या शुक्र ग्रंथियों में किसी अनुवांशिक दोष के कारण ईस्ट्रोस्टोरेन हार्मोन नहीं बनता ऐसी नपुन्सकता पूर्ण नपुन्सकता कहलाती है।



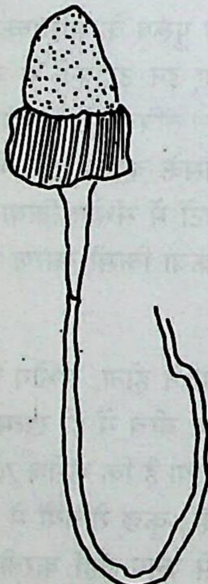
दो सिर वाला शुक्राणु



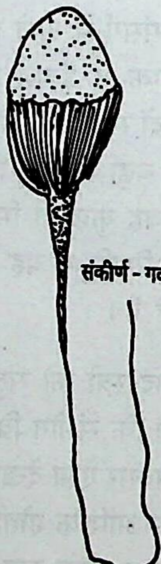
असमाकृति के सिर वाले शुक्राणु



लम्बे सिर वाला शुक्राणु



दो दुम वाला शुक्राणु



संकीर्ण - गर्दन वाला शुक्राणु



बहुत चौड़े सिर वाला शुक्राणु

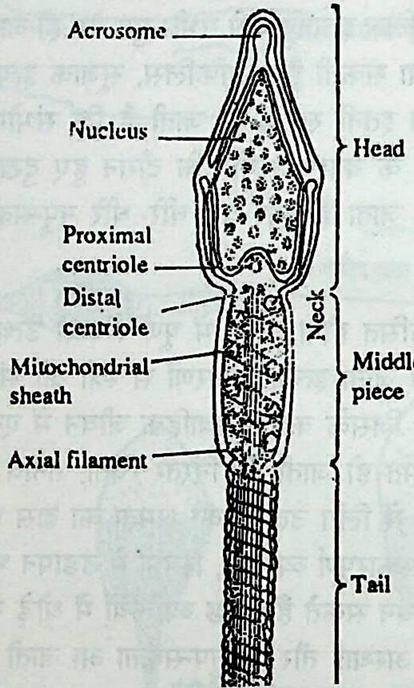
शुक्र ग्रंथियों या लिंग के पूर्ण रूप से विकसित नहीं होने पर भी व्यक्ति पूर्ण नपुन्सक कहलाता है। कभी-कभी लिंग का स्वरूप अनुवांशिक कारणों से विकृतिपूर्ण होता है जैसे कि- लिंग का टेढ़ा होना, अत्यधिक पतला होना या बीच से पतला होना इत्यादि। इन सब कारणों से वह संभोग के लिए उपयुक्त नहीं होता। हस्त-मैथुन या अप्राकृतिक मैथुन के कारण भी लिंग में दोष उत्पन्न हो सकते हैं। सामान्य संभोग के लिए लिंग एवं योनि दोनों का स्वस्थ्य एवं पुष्ट होना अति आवश्यक है। वैश्यागमन, बहुस्त्रीगमन एवं समलैंगिक होने के कारण लिंग में सूजाक, सिफिलिस इत्यादि जैसे गंभीर गुप्त रोग हो जाते हैं। जिनके कारण भी लिंग में विकृति आ सकती है। सिफिलिस, सूजाक इत्यादि रोगों के कारण लिंग की बाहरी त्वचा इतनी खराब हो जाती है कि संभोग करना नामुमकिन हो जाता है। इन रोगों के कारण संभोग के दौरान हुए दुखदायी कष्टों से रोगी बुरी तरह भयभीत हो जाता है और वह धीरे-धीरे नपुन्सकता की ओर प्रवृत्त होने लगता है।

लिंग का अविकसित होना, लिंग में पूर्ण रूप से उत्थान न होना, संभोग के समय शीघ्रपतन हो जाना इत्यादि कारणों से स्त्री को संभोग के दौरान पूर्ण संतुष्टि नहीं मिल पाती जिसके कारण वैवाहिक जीवन में एक बड़ी विकट एवं असामान्य स्थिति निर्मित हो जाती है। निंरतर चिंता, तनाव एवं भय से ग्रसित रहने के कारण पुरूषों में लिंग उत्थान की क्षमता का ह्रास होने लगता है। स्त्री का असहयोग एवं तिरस्कारपूर्ण व्यवहार, स्त्रियों में ठंडापन भी पुरूषों में अस्थाई नपुन्सकता का कारण बन सकते हैं। कुछ व्यक्तियों में थोड़े समय के लिए बिना किसी ज्ञात कारण के अस्थाई तौर पर नुपन्सकता आ जाती है परंतु कुछ समय उपरांत यह स्वयं ही ठीक हो जाती है।

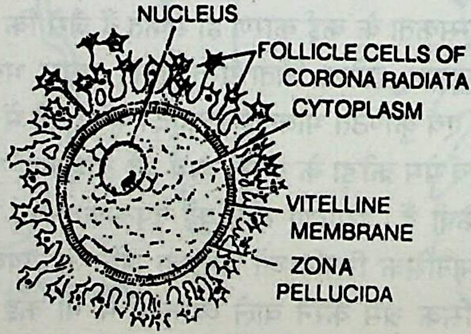
मानसिक नपुन्सकता के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि अत्यधिक विषाद, स्वभाव में चिड़चिड़ापन, हमेशा चिंता ग्रस्त रहना, अज्ञात भय से ग्रसित रहना, शोकाकुल हो जाना एवं कुण्ठित भावनाऐं इत्यादि। पति-पत्नी में आपसी सामन्जस्य न होने के कारण एवं प्रेम क्रीड़ा के दौरान व्यर्थ की आशंकाऐं पुरूष में नपुन्सकता का कारण बन सकती हैं। इसलिए रोगी की नपुन्सकता का इलाज करते समय सर्वप्रथम उसकी मानसिक स्थिति को समझना अति अवश्यक है। बहुत ज्यादा शारीरिक एवं मानसिक श्रम करने वाले व्यक्तियों में भी कई बार शीघ्रपतन की प्रवृत्ति आ जाती है। पुरूष के मन मस्तिष्क में स्त्री के प्रति किसी विशेष स्वरूप

का बैठ जाना जैसे कि स्त्री को अराध्य के रूप में देखना, स्त्री के साथ संभोग करना दुष्कर्म एवं पाप है इत्यादि बेकार की बातें भी नपुन्सकता का कारण बन सकती हैं। हमारे यहां सेक्स के बारे में उपलब्ध अधिकांश साहित्य मन मस्तिष्क में सेक्स के प्रति ऊल-जलूल एवं वहमपूर्ण आशंकाऐं ही पैदा करता है। इन साहित्यों को पढ़ने से मन में कई प्रकार के मनो-विकारों की ग्रंथियां बन जाती है जो कि धीरे-धीरे पुरुष को नपुन्सकता की ओर ले जाती है।

Mammalian sperm



Detailed structure of a human sperm.



Microlecithal and isolecithal ovum of Man.

अंडकोषों में सृजन, अंडकोषों का चोट ग्रस्त हो जाना, लिंग में सृजन, लिंग का कैंसर इत्यादि पुरूष को पूर्ण रूप में नपुन्सक बना देते हैं। ऐसी स्थिति में जब तक उपरोक्त बीमारियों का निदान नहीं किया जाता नपुन्सकता ठीक नहीं हो सकती। पुरूष के नपुन्सकता से ग्रसित होने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि यौन अंगों में चोट लग जाना, रीढ़ की हड्डी में विकृति आ जाना या उसका क्षति-ग्रस्त हो जाना, तंत्रिका तंत्र में हुई क्षति, पक्षाघात, मस्तिष्क में ट्यूमर हो जाना या किसी शल्यचिकित्सा का दुष्परिणाम इत्यादि।

शरीर में हार्मोन्स की गड़बड़ी के कारण कभी-कभी रोगी का वजन अचानक बढ़ या घट जाता है। ऐसी स्थिति में आयी नपुन्सकता में सर्वप्रथम इस व्याधि का उपचार करना चाहिए। आज के समाज में लगातार यौन वर्धक दवाओं का उपयोग, अत्यधिक धूम्रपान, शराब एवं मादक पदार्थों का सेवन कुछ ही समय में एक संपूर्ण व्यक्ति को नपुन्सक में बदल देता है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि जीवन के मध्यकाल में पुरूषों के अंदर अस्थाई तौर पर कुछ वर्षों के लिए नपुन्सकता आ जाती है जो कि उचित इलाज के कारण धीरे-धीरे स्वत: ही ठीक हो जाती है एवं व्यक्ति लंबे समय तक पुरूषत्व के साथ जीवन व्यतीत करता है। वृद्धावस्था में सभी अंग प्रत्यंगों की क्षमताओं में धीरे-धीरे ह्रास होने लगता है एवं शुक्र ग्रंथियों में टेस्टोस्टेरोन हर्मोन जो कि मुख्य रूप से पुरूषत्व का कारण है कम मात्रा में बनने लगता है। इससे भी पुरूषों में धीरे-धीरे नपुन्सकता आने लगती है। कभी-कभी पति पत्नी के संबंधों में उदासीनता एवं एक दूसरे के प्रति रूचि न रह पाने के कारण भी संभोग क्रिया पूर्ण रूप से नहीं हो पाती। अधिक धार्मिक साहित्य पढ़ने वाले या बहुत ज्यादा धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति धार्मिक कट्टरता एवं संस्कारों के अवचेतन मस्तिष्क में स्थापित हो जाने के कारण संभोग में अक्षम साबित हो सकते हैं। जीवन में अति किसी भी वस्तु की ठीक नहीं होती ठीक वैसे ही युवावस्था में अत्यधिक हस्त मैथुन या स्त्रीगमन के कारण भी लिंग में शिथिलता आ सकती है। उच्च रक्त चाप एवं हृदय संबंधित बीमारियां भी पुरूषों के अंदर नपुन्सकता का कारण बन सकती है।

किडनी संबंधित रोग, पथरी, मूत्र विकार, किडनी में सृजन आ जाना, उसका ठीक से कार्य न करना एवं मधुमेह जैसी बीमारियां भी नपुन्सकता का कारण हो सकती है। अगर रोगी मधुमेह से ग्रसित है और अपने अंदर पुरूषत्व की कमी पाता है तो सर्वप्रथम उसे मधुमेह का पूर्ण निदान कराना चाहिए।

होमियोपैथिक चिकित्सा का सिद्धांत केंद्र से परिधि की ओर है। अगर मधुमेह ठीक नहीं होगा तो नपुन्सकता अस्थाई रूप से तो दूर की जा सकती है पर कुछ समय पश्चात वह पुनः और गंभीर हो जायेगी।

पुरूष अगर शारीरिक रूप से मैथुन करने में पूर्ण समर्थ है पर संतान उत्पत्ति नहीं कर पा रहा क्योंकि उसके वीर्य में शुक्र कीट सामान्य संख्या में नहीं होते या बिल्कुल नहीं हैं तो वह भी नपुन्सक कहलायेगा। यह एक थोड़ा सा अलग विषय है जिसका विस्तृत वर्णन करना आवश्यक है।

पुरूषों में नपुन्सकता की स्थिति आने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- ❑ रोगी में काम वासना का अभाव न होना परंतु मैथुन करने में असमर्थ होना, लिंग का शिथिल होना एवं पूर्ण उत्थान न ले पाना, रोगी का हस्त-मैथुन एवं बहुमैथुन का आदी होना एवं शीघ्रपतन से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **लायकोपोडियम 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- ❑ संभोग क्रिया के बाद अत्यधिक शारीरिक दर्द महसूस होना, बहुत ज्यादा कमजोरी आ जाना एवं संभोग क्रिया के बीच में ही लिंग में उत्तेजना का ह्रास हो जाना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30, 200** अमृत-दायक सिद्ध होती है।
- ❑ प्रौढ़ उम्र में आयी नपुन्सकता में **एग्नस कास्ट** 2×, 6 का सेवन हितकर होता है।
- ❑ संभोग के समय लिंग में उत्तेजना का अभाव होना एवं लिंग का बिना स्खलन हुए ही शिथिल हो जाना जैसे लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 30, 200** का सेवन करना चाहिए।
- ❑ स्नायु रोग से ग्रसित होना, स्वभाव में चिड़चिड़ापन, मल-मूत्र त्याग करते समय अकारण ही वीर्य टपकना, लिंग का सिकुड़ जाना, रीढ़ की हड्डी में निरंतर दर्द बने रहना एवं रात्रि के समय स्वप्रदोष हो जाना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ मानसिक अवसाद से घिरे रहना, हमेशा चिंता ग्रस्त एवं तनाव में रहना,

अकारण ही वीर्य स्त्राव होते रहना जैसे लक्षणों में **सेलेनियम 200** लाभदायक औषधि है।

- स्त्री सानिध्य पाते ही शीघ्रपतन हो जाना, वीर्य में शुक्र-कीटों का अभाव होना एवं वीर्य में पतलापन आ जाना जैसे लक्षणों में रोगी के लिए **कोनायम 200** का सेवन हितकर है।
- लिंग में निरंतर खुरखुरी होते रहना, निद्रित अवस्था में लिंगोत्थान होना परंतु चैतन्य अवस्था में लिंग का निष्क्रिय रहना, लिंग एवं अंडकोषों में निरंतर खुजली चलते रहना जैसे लक्षणों में **केलेडियम 3, 6** लाभकारी औषधि है।
- अंडकोषों में कड़ापन आ जाना, अंडकोषों में पानी भर जाना, वीर्य में शुक्र कीटों का अभाव पाया जाना जैसे लक्षणों में आयी नपुन्सकता का उपचार **आयोडिनम 3, 30** के उपयोग से संभव है।
- संभोग की इच्छा का पूर्ण अभाव एवं लिंग के हमेशा शिथिल रहने की अवस्था में **न्यूफर लूटियम क्यू** की पांच बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर रात्रि के समय सेवन करना लाभदायक है।
- स्नायविक दुर्बलता या प्रोस्टेट ग्लैंड में गड़बड़ी के कारण पुरूषत्व की कमी हो जाने की दशा में **डेमियाना मदर टिंचर** की दस बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर रात्रि को भोजन के बाद लेने से लाभ मिलता हैं।
- स्त्री में संभोग के प्रति इच्छा का सर्वथा अभाव होना एवं उसका संतान उत्पन्न करने में समर्थ नहीं होने की स्थिति में **ओनसमोडियम सी.एम.** विशेष लाभदयक औषधि है।
- पीठ और गर्दन झुकाकर चलने वाला रोगी जिसमें आत्मबल की अत्यधिक कमी हो,जंघाओं एवं छाती का अविकसित होना जैसे लक्षणों में **स्टैफिसेग्रिया 3, 30** अत्यधिक लाभकारी औषधि है।
- अत्यधिक शारीरिक कार्य करने से उत्पन्न हुई नपुन्सकता की स्थिति में **एवाइना सैटाइवा क्यू** की पांच बूंद एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर रात्रि में भोजन के बाद सेवन करने से लाभ मिलता है।
- रोगी का शारीरिक रूप से दुबला-पतला होना, लिंग में संवेदनशीलता की

कमी होना जैसे लक्षणों में **सेबाल सेरूलेटा क्यू** की पांच बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर दिन में दो बार सेवन करना हितकर है।

❑ किसी शारीरिक चोट के कारण आयी नपुन्सकता में **अर्निका 30, 200** एकमात्र लाभदायक औषधि है।

❑ रीढ़ की हड्डी में आयी विकृति एवं स्लिप्ड डिस्क होने के कारण आयी नपुन्सकता में **हाईपेरिकम 1×** लाभकारी औषधि है।

❑ अत्यधिक कमजोरी महसूस होना, रोगी का हस्त-मैथुन की आदत से ग्रसित होना एवं गुप्त रोगों के कारण आयी नपुन्सकता में **केल्केरिया फॉस 6×** या 12× दिन में चार बार सेवन करने से लाभ मिलता है।

❑ आँखों के चारों तरफ काले धब्बे आ जाना, मानसिक एवं शारीरिक कमजोरी महसूस करना, संभोग की लालसा होने पर भी लिंगोत्थान न होना, हस्त-मैथुन एवं गुप्त रोगों से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **काली फॉस 6×** एवं 12× का सेवन करना हितकर होता है।

❑ युवावस्था में अत्यधिक स्त्री गमन के कारण जीवन के मध्यकाल में कामेच्छा का समाप्त हो जाना, अकारण ही स्वप्रदोष होना एवं वीर्य का पानी की तरह पतला हो जाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 12×** या **30×** का दिन में तीन बार सेवन करना हितकर है।

❑ संभोग के समय वीर्य का शीघ्र स्खलित हो जाना, नियमित रूप से स्वप्रदोष होना, पेट में कब्ज रहना एवं शरीर में अम्लता का बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम फॉस 3×** दिन में तीन बार सेवन करना हितकर है।

❑ माथे एवं पैरों में पसीना आना, संभोग की लालसा न होना, गुप्त रोगों से ग्रसित होना एवं वीर्य के साथ रक्त आना जैसे लक्षणों में **साइलीशिया** 6× या 12× दिन में तीन बार सेवन करना हितकर है।

अध्याय-5

पुरुषों में बांझपन

ऐसी स्थिति जिसमें पुरूष किसी विकार वश संतान उत्पत्ति करने में असमर्थ हो उसे पुरूषों में बांझपन कहते हैं। कुछ दशक पहले तक संतान उत्पत्ति न होने की स्थिति में सिर्फ स्त्रियों को ही दोषी माना जाता था। परंतु आधुनिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि करीब 60% मामलों में संतान उत्पत्ति न होने की स्थिति का दोषी पुरूष ही है। बांझपन का पुरूष की मैथुन शक्ति से कोई विशेष संबंध नहीं है। पुरूष के पूर्ण रूप से मैथुन करने में समर्थ होने पर भी वह संतान उत्पन्न करने की क्षमता रखता हो ऐसा जरूरी नहीं है।

पुरूषों में बंध्यता के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि वीर्य में अनुवांशिक गड़बड़ी होना, वीर्य का सामान्य न होना, वीर्य के आयतन का कम होना, पुरूष के वीर्य में अम्ल की मात्रा ज्यादा होना जिसके कारण उसमें उपस्थित शुक्राणुओं का मर जाना एवं वीर्य का विषैला या प्रदूषित होना इत्यादि।

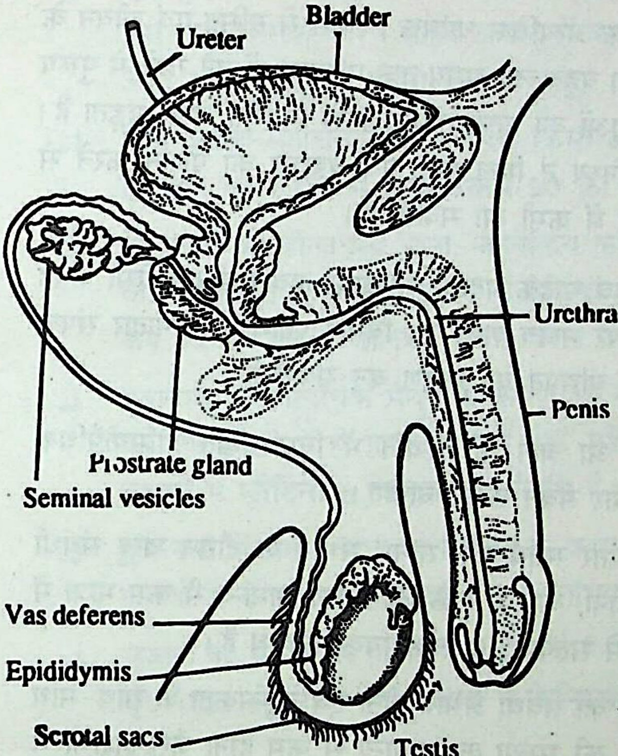
सामान्यत: ऐसा देखा गया है कि एक मिली. वीर्य में लगभग 15 करोड़ शुक्राणु होते हैं और संभोग के समय स्खलित हुए वीर्य में लगभग 50 से 60 करोड़ के आसपास शुक्राणु होते हैं। अगर किसी कारण वश प्रति मिली.ली. वीर्य में 6 करोड़ से कम शुक्राणु हों तो ऐसी स्थिति को अल्प शुक्राणुता कहा जाता है। स्त्री के गर्भाशय में पुरूष का एक शुक्राणु भी स्त्री के डिंब से मिलन कर गर्भ ठहरा सकता है। शेष शुक्राणु तो यात्रा में ही नष्ट हो जाते हैं या उनका कोई उपयोग ही नही होता। फिर भी सामान्य अवस्था में एक मिली.ली. वीर्य में सात से पंद्रह करोड़ शुक्राणुओं का संतान उत्पत्ति के लिए होना आवश्यक है।

संतानोत्पत्ति न होने की दशा में सर्वप्रथम किसी अत्याधुनिक नैदानिक सेंटर में पुरूष को अपने वीर्य की संपूर्ण जांच करा लेनी चाहिए। जिससे कि समस्या का वास्तविक कारण स्पष्ट हो सके। अल्प शुक्राणुहीनता की दशा में होमियोपैथिक चिकित्सा के द्वारा शुक्राणुओं की संख्या आसानी से बढ़ाई जा सकती है। इस बीमारी पर काफी गंभीर शोध हुआ है एवं अत्यंत उत्साहवर्धक नतीजे प्राप्त हुए हैं।

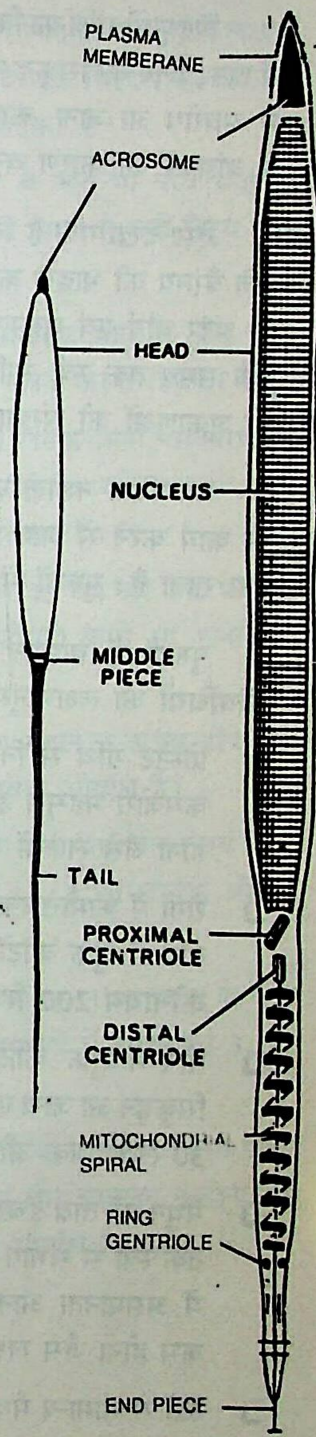
पुरूष के वीर्य में शुक्राणुओं का पूरी तरह से अभाव होना शुक्राणुहीनता कहलाती है। यह स्थिति अल्प शुक्राणुहीनता की अपेक्षा ज्यादा गंभीर है। पुरूष के वीर्य में शुक्राणुहीनता कई कारणों से हो सकती है। जैसे कि शुक्र ग्रंथि का अभाव होना, शुक्राशय एवं प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ जाना एवं चोट ग्रस्त हो जाना, किसी गंभीर मानसिक बीमारी से ग्रसित होना, दुर्घटना या शल्य चिकित्सा के कारण शुक्र ग्रंथि का क्षति-ग्रस्त हो जाना इत्यादि। प्रत्येक अवस्था में भिन्न-भिन्न औषधियों से ही उपचार संभव है। अंडकोष की किसी गंभीर बीमारी के कारण भी शुक्राणुहीनता आ सकती है।

गर्भ ठहरने के लिए पुरूष के वीर्य में उपस्थित 80% शुक्राणु सामान्य होने चाहिए। अगर 20% से ज्यादा शुक्राणु असामान्य एवं विकृतिपूर्ण हैं तो गर्भ ठहरना संभव नहीं हैं। शुक्राणुओं में विभिन्न प्रकार की विकृतियां हो सकती हैं। जैसे कि उनका दो सिर वाला होना, दो पूंछें होना, सकरी गर्दन होना, सिर अत्यधिक चौड़ा होना, दुम का कुण्डलित होना, सिर का बहुत ज्यादा लंबा होना एवं बिना आकार लिए हुए होना इत्यादि।

कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि एक अवस्था तक पुरूषों में वीर्य का निर्माण सामान्य होता है परंतु अचानक ही किसी कारण वश उनके वीर्य में शुक्राणुओं की कमी हो जाती है या वीर्य कम मात्रा में बनने लगता है। ऐसा भी देखा गया है कि एक संतान उत्पत्ति के बाद अचानक ही वीर्य में शुक्राणुओं की कमी आ जाती है एवं पुरूष में बांझपन के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। स्वप्दोष, शीघ्रपतन, लिंग की शिथिलता, आधा अधूरा लिंगोत्थान इत्यादि जैसी यौन समस्याओं के कारण भी पुरूषों में बांझपन आ सकता है। इन बीमारियों की चरम अवस्था में पुरूष का लिंग संभोग के दौरान पूर्ण उत्थान नहीं ले पाता या बिना स्खलित हुए ही उसमें शिथिलता आ जाती है। ऐसी अवस्था में स्त्री-पुरूष की रति क्रिया संपूर्ण नहीं हो पाती और पुरूष का वीर्य जो कि शुक्राणुओं को गर्भाशय तक पहुँचाता है योनि मार्ग में ही नहीं पहुँच पाता। लंबे समय तक परिवार नियोजन या इससे संबंधित औषधियों का सेवन करने से पुरूष के अंदर शुक्राणुओं की संख्या सामान्य से कम हो सकती है। पुरूषों में गंभीर गुप्त रोग जैसे कि गर्मी की बीमारी, सिफिलिस, सूजाक, बाघी इत्यादि उसकी संतानोत्पत्ति की क्षमता पर विपरीत असर डालते हैं। गंभीर ज्वर जैसे कि तपेदिक, काला बुखार, बिगड़ा हुआ न्यूमोनिया, बड़ी माता, बिगड़ा हुआ ज्वर एवं विष इत्यादि आंशिक या पूर्ण रूप से शुक्र जनन क्षमता में बाधा कारक हैं।



Reproductive organs of the male human body



Electron microscopic structure of mammalia spern

पिट्यूटरी ग्रंथि का किसी कारण वश काम न करना, लिंग का शैशव अवस्था में होना, लिंग का सिकुड़ जाना, लिंग का खंडित हो जाना, इपिडीडिमिस नलिका में अवरोध आ जाना, काउपर ग्रंथियों में स्त्राव का अभाव हो जाना भी पुरूष में बांझपन का कारण बन सकते हैं।

ऐसा देखा गया है कि अत्यधिक धार्मिक विचारों से ग्रसित एवं जीवन के प्रति वैराग्य की भावना का बहुत लंबे समय तक मस्तिष्क में बने रहने से पुरूष के अंदर वीर्य एवं शुक्राणुओं की उत्पादन क्षमता पर विपरीत असर पड़ता है। लंबे समय तक स्त्री सानिध्य न मिल पाना एवं ब्रह्मचर का पालन करने से भी शुक्राणुओं की संख्या में कमी आ सकती है।

अत्यधिक नशीले एवं मादक पदार्थों का सेवन एवं कई बार ऐसी जगह पर कार्य करने से जहां पर मानव शरीर का विषैले पदार्थों से लगातार संपर्क बना रहता है। पुरूषों में बांझपन का कारण बन सकते हैं।

पुरूषों में बांझपन आ जाने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- प्रोस्टेट ग्रंथि से निरंतर स्त्राव होते रहना, संभोग के दौरान स्नायु संबंधी कमजोरी महसूस होना, वीर्य में शुक्र-कीटों का सामान्य से कम मात्रा में होना जैसे लक्षणों मे **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।
- रोगी में कामोत्तेजना का सर्वथा अभाव होना एवं नपुन्सकता के साथ-साथ वीर्य में शुक्र कीटों की संख्या का सामान्य से कम होना जैसे लक्षणों में **कोनायम 200** हितकर औषधि है।
- वीर्य में शुक्र-कीटों की संख्या का सामान्य से कम होना, अंडकोषों में सिकुड़न आ जाना एवं रोगी का अति कामुक होना जैसे लक्षणों में **स्ट्रिकनिनम 30** लाभदायक औषधि है।
- मैथुन की तीव्र इच्छा होने पर भी किसी परिस्थिति वश रोगी का लंबे समय तक स्त्री से संभोग न हो पाना जिसके कारण वीर्य का निर्माण की प्रक्रिया में असमानता आना एवं वीर्य में शुक्र-कीटों की संख्या का सामान्य से कम होना जैसे लक्षणों में **चिनिनम सल्फ 30** लाभकारी औषधि है।
- स्त्री से सामान्य मैथुन न कर पाना, लिंग में पूर्ण उत्थान न आना, शीघ्रपतन

से ग्रसित होना एवं प्रोम्स्टेट ग्लैंड का अत्यधिक ग्रसित हो जाना जैसे लक्षणों में **डेमियाना क्यू (मदर टिंचर)** की दस बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर दिन में तीन बार सेवन करना हितकर है।

- ऐसे पुरूष जिनमें मैथुन क्रिया समाप्त हो जाने के बाद भी वीर्य स्खलित नहीं होता जिसके कारण संतान उत्पत्ति में बाधा आती है उन्हें **नैट्रम म्यूर 30, 200** का सेवन करना हितकर है।
- लिंग अथवा संतानोत्पत्ति में सहायक किसी आंतरिक भाग के चोट ग्रस्त हो जाने की स्थिति में **हाइपेरिकम 30** का सेवन करना हितकर है।
- अंडकोषों का ढीला पड़ जाना, जननेन्द्रिय का लटक जाना, अकारण ही वीर्य-पात होते रहना जैसे लक्षणों में **ऐसिड फॉस 3×** की दस बूंदें आधे कप स्वच्छ जल में डालकर सेवन करना हितकर है।
- युवावस्था में अत्यधिक मैथुन के कारण 35 से 40 वर्ष की उम्र में लिंग का पूर्ण उत्थान न हो पाना, वीर्य में शुक्र-कीटों की कमी आ जाना जैसे लक्षणों में **प्लैटिना 6** लाभदायक औषधि है।
- मूत्र नली में जलन, घाव या विकृति के कारण संतान न उत्पन्न होने जैसे लक्षणों में **केनाबिस सैटाइवा 1×, 3** लाभदायक औषधि है।
- सूजाक की बीमारी से ग्रसित रोगी जिसके लिंग में निरंतर जलन एवं बूंद बूंद पेशाब होते रहने जैसे लक्षणों में **केन्थिरस 1×, 3** लाभदायक औषधि है।
- वीर्य में शुक्र-कीटों का अभाव होना, अंडकोष में सूजन आ जाना या कड़ा पड़ जाना, अंडकोषों में पानी भर जाना जैसे लक्षणों में **आयोडम 3, 30** लाभकारी औषधि है।
- संभोग की अदम्य इच्छा होते हुए भी संभोग क्रिया के दौरान किसी प्रकार की उत्तेजना न आना अथवा संभोग के दौरान वीर्य स्खलन न होना जैसे लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 200, 30** लाभकारी औषधि है।

अध्याय-6

पुरुषों में लिंग की बीमारियां

पुरूषों में नाभि-स्थल के नीचे एवं दोनों जंघाओं के बीच तीन से चार इंच लंबा अस्थिविहीन अंग लिंग कहलाता है। मस्तिष्क में कामोत्तेजक विचारों या भावनाओं के संचार से पुरूष के शरीर में रक्त संचार का प्रवाह लिंग की तरफ बढ़ जाता है जिसके कारण यह पूर्ण रूप से तन जाता है। सामान्यत: एक तने हुए लिंग की लंबाई 5.5 से 6 इंच तक हो जाती है। संभोग के दौरान चरम स्थिति आने की अवस्था में वीर्य लिंग से ही स्खलित होकर स्त्री के योनि मार्ग में जाता है। मानव मूत्र का निष्कासन भी लिंग का प्रमुख कार्य है। लिंग का पिछला हिस्सा जो कि अंडकोषों से जुड़ा हुआ होता है मूल भाग कहलाता है एवं लिंग का अग्र भाग जो कि किसी त्वचा से ढका हुआ नहीं होता मुण्ड कहलाता है। मुण्ड एवं मूल भाग के बीच का हिस्सा दण्ड कहलाता है।

लिंग का अग्र भाग (मुण्ड) मानव शरीर के अत्यधिक कोमल एवं संवेदनशील अंगों में गिना जाता है। इस भाग की त्वचा इतनी ज्यादा संवेदनशील होती है कि थोड़े से स्पर्श से ही मस्तिष्क में काम केंद्र क्रियाशील होने लगते हैं एवं जिसके फलस्वरूप लिंग में तनाव और कड़ापन आने लगता है। शिथिल अवस्था में लिंग का अग्र भाग (मुण्ड) त्वचा के आवरण से ढका रहता है। 12-13 वर्ष की अवस्था तक पुरूषों में लिंग के पूर्ण रूप से विकसित न होने की स्थिति में मुण्ड त्वचा से घिरा रहता है, परंतु तरूण अवस्था के आते ही ज्यों ही यौन ग्रंथियों एवं यौन अंगों का विकास तेजी से शुरू होता है मुण्ड के ऊपर की त्वचा जो कि नीचे की ओर हल्की सी जुड़ी हुई होती है स्वत: ही लिंग में उत्तेजना आने पर टूटकर अलग हो जाती है। जिसके कारण मुण्ड पूर्ण रूप से बंधन मुक्त हो जाता है और फिर उत्तेजना की स्थिति में मुण्ड के ऊपर किसी भी प्रकार का त्वचा आवरण नहीं बचता।

लिंग का अग्र भाग मुण्ड आकार प्रकार में सुपारी के समान दिखाई पड़ता है। यह मांस पेशियों की एक स्पंजीय संरचना है। इस संरचना के भीतर बहुत से कोष्ठ होते हैं जो कि उत्तेजना की स्थिति में रक्त से भर जाने के कारण फूल

जाते हैं। कभी-कभी पुरूष के युवा हो जाने के बाद भी मुण्ड त्वचा बंधन से मुक्त नहीं हो पाता जिसके कारण उत्तेजना की स्थिति में रोगी को असहाय कष्ट का सामना करना पड़ता है। ऐसी दशा में शल्यक्रिया के द्वारा इस बंधन को काट दिया जाता है।

त्वचा का वह आवरण जो कि मुण्ड को शिथिल अवस्था में ढके रखता है मुण्डावरक कहलाता है। मुण्डावरक एवं मुण्ड के बीच ठीक से साफ-सफाई के अभाव में एक सफेद रंग का पदार्थ एवं कीटाणु जमा हो सकते हैं। जिसके कारण लिंग में दुर्गन्ध एवं किसी भी प्रकार के त्वचा रोग होने की संभावना बनी रहती है।

लिंग हमारे शरीर से मूत्र एवं वीर्य निष्कासन का यंत्र हैं अत: इसकी साफ-सफाई एवं उचित देखभाल अत्यधिक आवश्यक है।

कई प्रकार के रोग जैसे खुजली, त्वचा रोग, एक्जिमा, सूजाक, सिफिलिस, रक्त में विकार इत्यादि लैंगिक कारणों से लिंग मार्ग के द्वारा शरीर में प्रविष्ट हो जाते हैं। एड्स जैसी लाइलाज बीमारी भी मुख्य रूप से लिंग के द्वारा मानव शरीर में प्रविष्ट होती हैं।

किसी कारण वश मुण्ड एवं मुण्डचर्म में सूजन, दर्द या मवाद उत्पन्न होना शिश्न मुण्ड शोथ कहलाता है। संभोग के समय लिंग पूरी तरह से स्त्री की योनि के अंदर होता है और अगर स्त्री की योनि किसी गुप्त रोग से संक्रमित है तो मुण्ड एवं मुण्डचर्म दोनों ही संक्रमित हो सकते हैं। लिंग की त्वचा अत्यंत ही पतली होती है एवं इसके नीचे किसी भी प्रकार का वसा नहीं होता। शिथिल अवस्था में मुण्डचर्म का कार्य मुण्ड को ढके रहना है जिसके कारण मुण्ड अकारण ही होने वाले घर्षण इत्यादि से बचा रहता है।

किसी कारण वश लिंग की बीमारी से ग्रसित होने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

❑ मुण्डावरक का ठीक से पीछे की ओर न हट पाने की स्थिति में **मर्क आयोड 2×** के सेवन से लिंग के नीचे का त्वचा बंधन स्वत: ही उत्तेजना की स्थिति में टूट जाता है।

❑ **मर्क कोर 30** लिंग के ऊपर की त्वचा में दरारें पड़ जाने एवं कट जाने

की स्थिति में लाभदायक औषधि है।

- संभोग के बाद मुण्ड के ऊपर की त्वचा का लाल पड़ जाना एवं दर्द महसूस होने पर **रस टॉक्स 30** लाभदायक औषधि है।

- मुण्डावरक में अत्यधिक प्रदाह होने की अवस्था में **केनाबिस 3×** लाभदायक औषधि है।

- मुण्ड पर सूजन आ जाना एवं मुण्डावरक का पीछे की ओर न होना जैसे लक्षणों में **नाइट्रिक ऐसिड 6** लाभदायक औषधि है।

- मुण्डावरक का संक्रमित हो जाना एवं मवाद आने जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- लिंग की त्वचा में हुए संक्रमण से मवाद आना एवं टपकन के साथ तीव्र दर्द महसूस होना, रोगी का अत्यधिक भयभीत हो जाना जैसे लक्षणों में **हिपर सल्फ 30** लाभकारी औषधि है।

- मुण्ड़ावरक पर मस्से ऊग आने की स्थिति में **सिन्नेबेरिस 3×** लाभदायक औषधि है।

- लिंगेन्द्रिय पर फफोले या पानी युक्त छाले पड़ जाने पर **ग्रेफाइटिस 30** लाभकारी औषधि है।

- मुण्डावरक में किसी कारण वश विकृति आ जाना जिसके कारण उसका लिंग के अग्र भाग को ठीक से नहीं ढक पाना जैसे लक्षणों में **कोलोसिन्थ 6** लाभकारी औषधि है।

- मुण्डावरक का दुर्घटनावश क्षति-ग्रस्त हो जाना एवं उसमें मवाद आ जाना जैसे लक्षणों में **नाईट्रिक ऐसिड 6** उपयोगी औषधि है साथ ही **केलेन्डुला मदर टिंचर** को पानी में डालकर लिंग को निरंतर साफ करते रहना चाहिए।

- मुण्डावरक पर मस्सा या फुंसियां हो जाने की स्थिति में **थूजा 30** का सेवन करना लाभदायक होता है।

- प्रमेह के कारण मुण्डावरक और मुण्डचर्म में दर्द महसूस होना, मवाद आ

जाना, त्वचा का लाल पड़ जाना इत्यादि लक्षणों में **केन्थिस 30** अति उत्तम औषधि है।

- मूत्र त्याग करते समय दुर्गन्ध आना, मूत्र नली के अंदर जलन और खुजली महसूस होना आदि लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 30, 200** लाभकारी औषधि है।
- अकारण ही लिंग में खुजली होते रहने की दशा में **सिन्नेबेरिस 30** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- यौन रोगों के कारण लिंग में सड़न उत्पन्न होने की आशंका होने पर **लेकेसिस 30** एवं **आर्सेनिक 30** उपयुक्त औषधि है।
- किसी रासायनिक पदार्थ अथवा विष के कारण लिंग की त्वचा का रोग ग्रस्त हो जाने की स्थिति में **ब्रायोनिया 30** तथा **एकोन 30** उत्तम औषधि है।
- लिंग की त्वचा अगर चोट ग्रस्त हो जाती है तो **अर्निका 30** लाभकारी औषधि है।
- प्रात:काल लिंग के आंतरिक भाग में जलन एवं खुजली महसूस होने पर **मेग्नेशिया म्यूर 200** का सेवन करना हितकर होता है।
- लिंग के ऊपर खुजली महसूस होना एवं लिंग की त्वचा पर दानें पड़ जाना जैसे लक्षणों में **क्रोटन 30** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- संभोग के समय मुण्डावरक का मृज जाना एवं लिंग में जलन महसूस होना जैसे लक्षणों में **क्रियोजेट 200** लाभकारी औषधि है।
- मुण्ड एवं मुण्डावरक का असंवेदनशील हो जाना, संभोग के समय किसी भी प्रकार की अनुभूति महसूस नहीं होना जैसे लक्षणों में **कोकाथीकोकेन 30** लाभकारी औषधि है साथ ही **लायकोपोडियम** एवं **एगनस केक्टस 6** का लक्षणानुसार सेवन भी हितकर है।
- बच्चों में अकारण ही लिंग खींचने की आदत पड़ जाने पर **मर्कसोल 30** औषधि का सेवन करना हितकर होता है।

- मुण्ड एवं मुण्डावरक पर अल्सर हो जाना, तीखी चुभन महसूस होना, लिंग पर सदैव खुजली चलना एवं रोगी का गनोरिया से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **नाइट्रिक ऐसिड 200** का सेवन करना चाहिए।

- लिंग पर तीव्र खुजली चलना, मुण्ड का सुर्ख लाल पड़ जाना, लिंग का शिथिल अवस्था में भी बढ़ा हुआ एवं सूजन युक्त होना, लिंग में पसीना आना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया सेग 30** का सेवन हितकर है।

- लिंग की त्वचा में फटन पड़ जाने के कारण जलन महसूस होना, मुण्डावरक का हर्पीज से ग्रसित होना एवं दुर्गन्ध-पूर्ण होना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक एल्ब 200** लाभकारी औषधि है।

- लिंग के अग्र भाग एवं मुण्डावरक में टीस युक्त जलन महसूस होने की दशा में **बर्बेरिस बल्गेरिस 30** का सेवन हितकर है।

- लिंग में अकारण ही तनाव पैदा हो जाना एवं संभोग के बाद भी लंबे समय तक तनाव बने रहने के कारण कष्ट महसूस होना जैसे लक्षणों में **केम्फर 30** का सेवन करना हितकर है।

- संभोग के पश्चात शिश्न मुण्ड में उग्र वेदना होने की दशा में **पेरेराब्रेवा 30** लाभदायक औषधि है।

- संभोग के बाद पेशाब करने पर तीव्र दर्द महसूस होना एवं जलन पड़ना पेशाब बूंद-बूंद टपकना, पीठ के बल लेटने पर स्थिति बदतर हो जाना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 200** लाभदायक औषधि है।

- लिंग के अग्र भाग की त्वचा पर सूजन युक्त मस्से हो जाना एवं उनमें से रक्त निकलना जैसे लक्षणों में **चिमेफिला 30** का सेवन हितकर है।

अध्याय-7

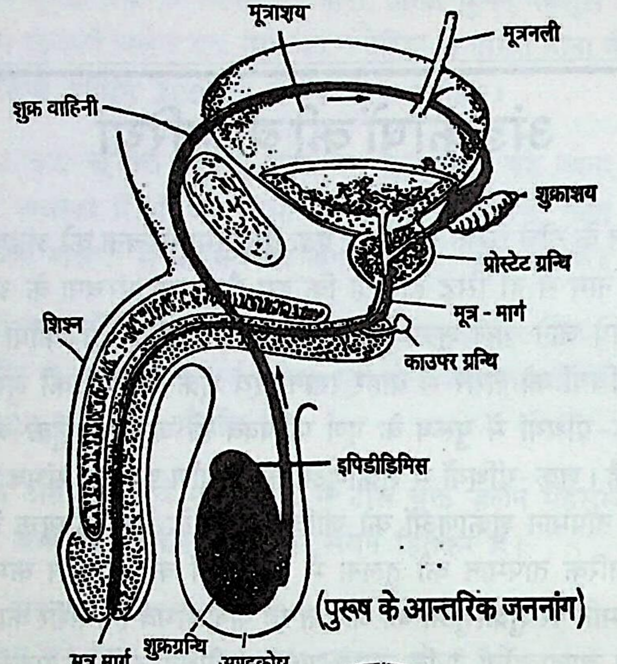
अंडकोषों की बीमारियां

लिंगमूल के नीचे स्थित त्वचा की एक थैलीनुमा संरचना को अंडकोष कहते हैं। जैसा कि नाम से ही सिद्ध होता है कि इस थैलीनुमा संरचना के अंदर पुरूष के वीर्य में पाये जाने वाले शुक्राणुओं का निर्माण होता है। अंडकोषों का मुख्य कार्य शुक्र-ग्रंथियों को शरीर से बाहर रखना एवं शुक्र-ग्रंथियों की सुरक्षा करना है। इन्हीं शुक्र-ग्रंथियों में पुरूष के पूर्ण परिपक्व हो जाने पर शुक्र-कीटों का निर्माण होता है। शुक्र-ग्रंथियों में शुक्राणुओं का निर्माण इसलिए संभव है क्योंकि अंडकोष का तापमान शुक्राणुओं को जीवित रखने के लिए उपयुक्त है। मानव शरीर के आंतरिक तापमान की तुलना में अंडकोषों का तापमान कम होता है और इसी तापमान पर शुक्राणुओं का जीवित रह पाना संभव है। शरीर का आंतरिक तापमान इतना ज्यादा होता है कि उसमें शुक्राणु जीवित नहीं रह सकते। अक्सर ऐसा देखा गया है कि अंडकोष का दांया हिस्सा बायें हिस्से की अपेक्षा कुछ ज्यादा लंबा और लटका हुआ होता है।

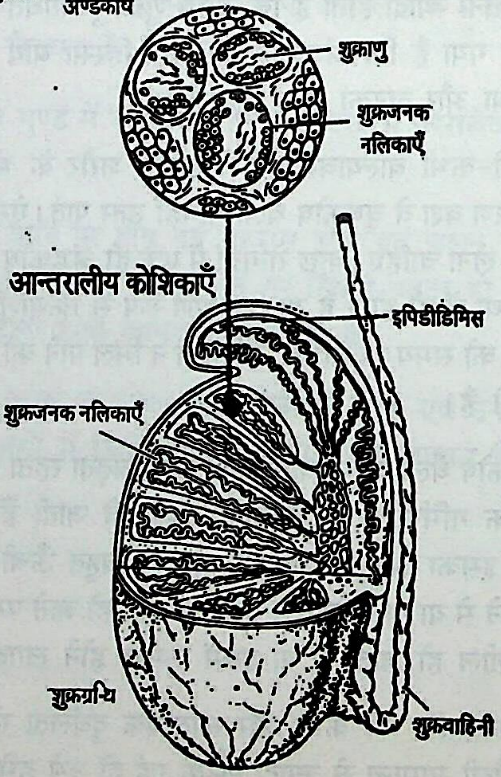
कभी-कभी बाल्यावस्था में अंडकोष शरीर के भीतर ही रह जाते हैं या किसी कारण वश वे वृषकोष थैली में नहीं उतर पाते। ऐसी स्थिति में तुरंत डॉक्टर से परामर्श लेना चाहिए। कुछ रोगियों में एक ही अंडकोष होता है। दूसरा अंडकोष सुप्त अवस्था में ही होता है या फिर पूर्ण रूप से क्रियाशील नहीं होता। इस तरह के रोगियों को समय पर उचित चिकित्सा न मिल पाने की दशा में स्थाई नपुन्सकता आ सकती है।

वृषकोष थैली का आकार प्राय: घटता बढ़ता रहता है। सामान्यत: ऐसा देखा गया है कि गर्मियों में ये लटककर लंबी हो जाती हैं और सर्दी, बरसात के मौसम में इसका आकार सिकुड़ जाता है। बहुत ऊँची इमारत पर खड़े होकर नीचे झाँकने से या किसी कारण वश भय ग्रस्त हो जाने पर वृषकोष थैली अचानक ही क्रियाशील हो जाती है या इसमें कम्पन होने लगता है।

जीवन शक्ति की कमी और स्नायविक दुर्बलता से ग्रसित व्यक्ति जिसकी वृषकोष थैली सामान्य से ज्यादा लटक गई हों उसे हमेशा कसकर लंगोट पहने



(पुरूष के आन्तरिक जननांग)



रहना चाहिए। शौच करते समय वृषकोष थैली का जमीन से स्पर्श करना या सामान्य अवस्था में वृषकोष थैली की लंबाई का लिंग से दुगना हो जाना जैसे लक्षणों में व्यक्ति को तुरंत किसी यौन विशेषज्ञों से सलाह लेनी चाहिए।

वृषकोष थैली की त्वचा अत्यंत नाजुक और संवेदनशील होती है। अतः इसकी उचित साफ-सफाई और देखभाल न करने की स्थिति में इसमें कई प्रकार के संक्रमण, त्वचा का रंग परिवर्तन, फोड़े फुंसी एवं खुजली इत्यादि हो सकती हैं एवं इन रोगों का उचित इलाज के अभाव में ये बड़ी समस्या में परिवर्तित हो सकती हैं। इन रोगों के कारण वृषकोष थैली के भीतर स्थित शुक्र-ग्रंथियां एवं इपिडीडिमिस ग्रंथि भी प्रभावित हो सकती है। वृषकोष थैली की त्वचा पूर्ण रूप से चर्बी रहित होती है। कई बार गुप्त रोगों के कारण अंडकोष की त्वचा में प्रदाह उत्पन्न हो जाता है एवं खुजलाने पर पानी जैसा स्त्राव निकलता है। जिसके कारण अंडकोष सूजकर बड़े हो जाते हैं।

अंडकोषों में तकलीफ महसूस होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना हितकर है।

❑ पूर्व में जननेन्द्रिय का सूजाक, सिफिलिस जैसी बीमारियों से ग्रसित होना एवं उपरोक्त यौन संबंधी बीमारियों को दबाने के लिए तेज दवाओं का इस्तेमाल करने के कारण अंडकोषों में प्रदाह और कड़पन आ जाना, रात्रि के समय रोगी को अंडकोष में अत्यधिक पीड़ा महसूस होना जैसे लक्षणों में **क्लेमेट्रिस 30** लाभदायक औषधि है।

❑ यौन रोगों के कारण अंडकोषों की त्वचा का संक्रमित हो जाना, अंडकोषों की त्वचा में प्रदाह उत्पन्न हो जाना एवं खुजलाने पर पानी जैसे स्त्राव निकलना, अंडकोषों का सूजकर बड़ा हो जाना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 6, 30** लाभदायक औषधि है।

❑ अंडकोषों में सूजन और प्रदाह के कारण रोगी का तीव्र ज्वर से ग्रसित होने की दशा में **एकोनाइट 200** लाभदायक औषधि है।

❑ अंडकोषों का बड़ा हो जाना, उसमें असंवेदनशीलता आ जाना, त्वचा का काला पड़ जाना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** लाभदायक औषधि है।

❑ पानी में भीग जाने के कारण या शीत लग जाने के कारण अंडकोषों का

बड़ा हो जाना एवं उनमें प्रदाह उत्पन्न हो जाना जैसे लक्षणों में **जेल्सीमियम** 30 लाभदायक औषधि है।

- ❑ वीर्य वाहिनी नली में अत्यधिक दर्द, सूजाक जैसी बीमारियों को तेज औषधियों से दबा देने के कारण अंडकोषों में अत्यधिक प्रदाह एवं कड़ापन आ जाना और रात्रि के समय रोगी की स्थिति अत्यधिक पीड़ा दायक हो जाना जैसे लक्षणों में **क्लेमेट्रिस** 30 लाभकारी औषधि है।
- ❑ अंडकोषों में ललामी लिए हुए सूजन होना, रोगी को गर्मी का अनुभव होना एवं असहनीय दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना** 30 लाभदायक औषधि है।
- ❑ अंडकोषों में प्रदाह हो जाने के कारण रोगी का पौरूषहीन महसूस करना जैसे लक्षणों में **कोनायम** 3 लाभदायक औषधि है।
- ❑ काफी लंबे समय से अंडकोषों के प्रदाह से ग्रसित रोगी जिसके दायें अंडकोष में निरंतर दर्द बना रहता है उसके लिए **आरम मेट** 30 लाभकारी औषधि है।

अंडकोषों में जल संचय के कारण ये गुब्बारे के समान फूल जाते हैं एवं रोग की स्थिति चंद्रकलाओं से प्रभावित होती रहती है। इस रोग से ग्रसित व्यक्ति के अंडकोषों में जल संचय एकादशी से पूर्णिमा तक अचानक बढ़ने लगता है और फिर स्वत: ही धीरे-धीरे कम हो जाता है। कभी-कभी इस रोग में रोगी को दर्द भी नहीं होता। कुछ लोगों में यह बीमारी वंशानुगत भी होती है। चोट लगने के कारण, घुड़सवारी एवं अधिक साईकिल चलाने के कारण भी यह रोग हो सकता है।

- ❑ लड़कों में कन्याओं जैसे लक्षण प्रकट होना एवं अंडकोषों का नीचे की ओर न उतरना जैसे लक्षणों में **आरम म्यूर** की पांच बूंदे रोजाना दिन में दो बार एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर सेवन करने से शीघ्र लाभ मिलता है।
- ❑ अंड ग्रंथियों का ऊपर की ओर चढ़ा हुआ होना, अंडकोषों में दर्द एवं सूजन होना, बायीं ओर के अंडकोष की स्थिति ज्यादा बदतर होना जैसे लक्षणों में **रोडोडेंडरोन** 30 लाभकारी औषधि है।

- अंडकोषों की थैली का एक्जिमा एवं हर्पीज से ग्रसित होना एवं तीव्र खुजली चलना जैसे लक्षणों में **ऐसिड फॉस 30** का सेवन हितकर है।

- अंडकोषों की त्वचा पर भयंकर खुजली चलना, रोगी को हमेशा अंडकोषों को खुजलाने की आदत पड़ जाना, अंडकोषों की त्वचा का सुर्ख लाल हो जाना जैसे लक्षणों में **एम्ब्राग्रेसिया** 30 लाभदायक औषधि है।

- अंडकोषों से पसीना आना, निरंतर खुजली चलते रहना, अंडकोषों की त्वचा का मोटा हो जाना, सुर्ख लाल होकर सूज जाना जैसे लक्षणों में **केलेडियम सेग** 30 लाभकारी औषधि है।

- अंडकोषों में शोथ व सूजन आ जाने के कारण चलने में तकलीफ महसूस होना एवं असहनीय दर्द होना जैसे लक्षणों में **हेमामेलिस** 200 लाभकारी औषधि है।

- आँखों के ऊपर की हड्डियों में दर्द के साथ-साथ अंडकोषों में दर्द रहने की स्थिति में **लायकोपस वर्ज** 30 लाभदायक औषधि है।

- रोगी को ऐसी अनुभूति होना मानों कि अंडकोषों को कोई ऊपर की तरफ खींच रहा है। **ओलियम ऐनिमैलि** 30 का सेवन शीघ्र लाभ प्रदान करता है।

- अंडकोषों की रक्त वाहिनियों में असामान्य रक्त संचय हो जाने के कारण उनका बढ़ जाना या फैल जाना एवं संवेदनशीलता की कमी आ जाने की स्थिति में **कोनायम** 200 लाभदायक औषधि है।

- अंडकोषों की थैली पर फोड़े हो जाना एवं निरंतर पसीना आते रहना जैसे लक्षणों में **क्यूप्रम आर्सेनिटम** 200 लाभदायक औषधि है।

- अंडकोषों का जन्मजात रूप से विकसित न होने की स्थिति में **आरम मेट 3** अंडकोषों के विकास में सहायक सिद्ध होती हैं।

- बाल्यावस्था में वंशानुगत कारणों से अंडकोषों में वृद्धि होने पर **एब्रोटेनम 30** लाभकारी औषधि है।

- अंडकोष के बायें हिस्से में अपेक्षाकृत ज्यादा वृद्धि हो जाने की स्थिति में **पल्सेटिला 3, 30** लाभकारी औषधि है।

- शीत ऋतु के दौरान अंडकोषों के आकार में वृद्धि होने पर **रस टॉक्स 30** अति उत्तम औषधि है।

- अंडकोषों में वृद्धि की बीमारी का पूर्णिमा या अमावस्या के दिन विशेष रूप से बढ़ जाना एवं चंद्रकला के अनुसार अंडकोषों की वृद्धि का घटना बढ़ना जैसे लक्षणों में **सिलिका 30** लाभदायक औषधि है।

- चींटी, मधुमक्खी या कीट इत्यादि के अंडकोषों में डंक मारने के कारण उनके विष द्वारा आयी सूजन और वृद्धि होने से या अत्यधिक जलन होने जैसे लक्षणों में **ऐपिस 30** लाभदायक औषधि है।

- रोगी के अंडकोषों में वृद्धि सूजाक जैसी बीमारी के लंबे समय तक बने रहने के कारण होने पर **फास्फोरस 30** लाभकारी औषधि है।

- रोगी को बहुत ज्यादा भूख लगना एवं अंडकोषों की वृद्धि के कारण किसी भी प्रकार का दर्द महसूस न हो तो **आयोडिनम 30** लाभकारी औषधि है।

- रोगी का शरीरिक रूप से दुबला-पतला होना, जननांगों की त्वचा का किसी गंभीर त्वचा संक्रमण से ग्रसित होना, भोजन के वक्त सिर में अत्यधिक पसीना आना एवं अंडकोषों में जल संचय के कारण उनके आकार में वृद्धि हो जाना जैसे लक्षणों में **साइलीशिया 6** लाभदायक औषधि है।

- जल संचयित अंडकोष की त्वचा का मवाद भरे फोड़े फुंसियों से ग्रसित हो तो ऐसी स्थिति में **ग्रेफाइटिस 30** लाभकारी औषधि है।

- किसी दुर्घटना अथवा चोट के कारण अंडकोष में वृद्धि हो जाने पर **अर्निका 30** लाभदायक औषधि है।

  कई बार अंडकोषों में भरे जल संचय को शल्यक्रिया या सुई के द्वारा छेदकर भी बाहर निकाल दिया जाता है।

- अंडकोषों में हानि रहित तरल पदार्थ का जमा हो जाना, बिना दर्द के सूजन हो जाना, चलने फिरने में परेशानी होना एवं अंडकोषों में कठोरता आ जाना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया फ्लोर 30** लाभदायक औषधि है।

- अंडकोषों का हाइड्रोसिल की बीमारी से ग्रसित हो जाना एवं अंडकोष ब्लैडर

की तरह बढ़ा हुआ प्रतीत होना जैसे लक्षणों में **डिजिटेलिस 30** लाभदायक औषधि है।

- अंडकोषों का हाइड्रोसिल से ग्रसित होना एवं लिंग में भी सूजन आ जाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम सल्फ** 6× या 12× दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए।

- अंडकोष में सूजन एवं खुजली महसूस होना, अमावस्या या पूर्णिमा को रोग का बढ़ जाना, माथे पर दुर्गन्ध पसीना आना जैसे लक्षणों में **साइलीशिया 30×** लाभदायक औषधि है।

- स्त्राव का पानी के समान पतला हो जाना, पेट में कब्ज होना, प्यास ज्यादा लगना जैसे लक्षणों में हाइड्रोसिल होने पर **नैट्रम म्यूर** 6× या 12× दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- किसी अन्य दवा के सेवन से समग्र लाभ न मिलने पर **केल्केरिया फॉस** 6× या 12× दिन में चार बार सेवन करनी चाहिए।

- सूजाक रोग के दब जाने के कारण अंडकोष में सूजन आना, जीभ पर राख के समान सफेद रंग की परत जम जाना जैसे लक्षणों में **काली म्यूर** 12× दिन में चार बार सेवन करनी चाहिए।

- अंडकोषों में कड़ापन आ जाना एवं प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया फ्लोर** 12× का सेवन करना हितकर है।

- प्रथम बार अंडकोष में सूजन आना, दायें अंडकोष का ज्यादा प्रभावित होना, लाल रंग का प्रदाह एवं हिलने-डुलने में रोग का बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **फेरम फॉस** 6× दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

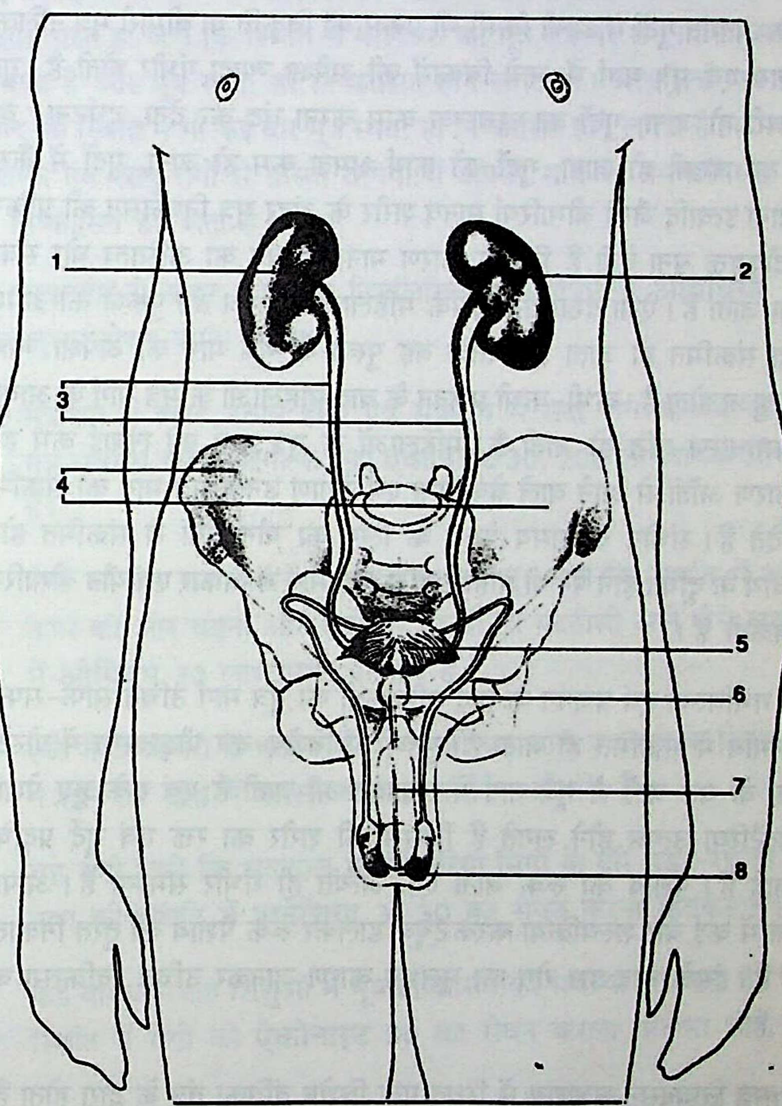
मूत्र विकार

मानव शरीर के निष्कासन तंत्रों में मूत्र तंत्र अति महत्वपूर्ण तंत्र है। मूत्र तंत्र गुर्दे, मूत्र वाहिनियां, मूत्राशय एवं मूत्र मार्ग का संयोजन है। मूत्र तंत्र का मुख्य कार्य मानव शरीर के लिए अनुपयोगी तरल पदार्थ एवं अपाच्य रासायनिक तत्वों को शरीर से बाहर निकालना है। हमारे शरीर का संतुलन बनाये रखने के लिए एक निश्चित मात्रा में पानी एवं द्रव्यों की आवश्यकता होती है। अधिक मात्रा में पानी पी लेने अथवा सेवन कर लेने से वह स्वत: ही मूत्र तंत्र के द्वारा शरीर से निष्कासित हो जाता है।

हमारे शरीर द्वारा ग्रहण किया गया भोजन एवं तरल पदार्थ विभिन्न ऐन्जाइमों से क्रिया कर ऊर्जा बनाते हैं एवं बचे हुए अनुपयोगी रासायनिक तत्व रक्त प्रवाह के साथ गुर्दों तक पहुँच जाते हैं। गुर्दों का मुख्य कार्य शरीर के लिए उपयोगी पोषक तत्वों को छानना और अनुपयोगी तत्वों को मूत्र वाहिनियों के द्वारा मूत्राशय में भेज देना है। अनुपयोगी जल जिसमें कि शरीर के लिए अनावश्यक नमक, अम्ल, इत्यादि मिश्रित होता है उसे पेशाब या मूत्र कहते हैं।

पेशाब मूत्र मार्ग के द्वारा शरीर से बाहर निकल जाता है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव शरीर में निरंतर चलाने वाली प्रक्रिया है। अगर इसमें कहीं भी किसी प्रकार का अवरोध या विकार उत्पन्न हो जाता है तो मानव जीवन खतरे में पड़ सकता है। गुर्दे मानव शरीर के अंदर रक्त में जल, नमक व अम्ल को एक उचित व स्थिर सीमा तक व्यवस्थित रखते हैं। सामान्यत: मानव शरीर के अंदर दो गुर्दे होते हैं जो कि बीन के समान दिखाई देते हैं एवं इनके अंदर लाखों फिल्टर इकाइयाँ होती हैं। ये इकाइयाँ रक्त के शुद्धिकरण का काम करती हैं। मूत्र वाहिनियां प्रत्येक गुर्दे से जुड़ी संकीर्ण सकरी नलियां हैं। जो कि मूत्राशय में पेशाब ले जाकर छोड़ देती हैं। मूत्राशय पेट के नीचे एक प्रकार का भंडारन है। मूत्राशय में संवेदनशील तंत्रिकाओं का जाल बिछा होता है। जो कि मूत्र इक्ट्ठा होने पर मस्तिष्क को मूत्र के दबाव का संकेत भेजती हैं। जिससे हमारे अंदर मूत्र त्याग की इच्छा उत्पन्न होती है एवं इसके उपरांत समय-समय पर मूत्र मार्ग

के द्वारा मूत्र का शरीर से लिंग के माध्यम से निष्कासन होता रहता है। सामान्यत: मानव शरीर डेढ़ से दो लीटर तक मूत्र का प्रतिदिन निष्कासन करता है।



1. दाहिना गुर्दा 2. बायां गुर्दा
3. मूत्र वाहिनी 4. नितम्ब अस्थि
5. मूत्राशय 6. प्रोस्टेट ग्रंथि
7. मूत्र मार्ग 8. मूत्र मार्ग मुख

पुरूषों के मूत्र मार्ग की लंबाई महिलाओं के मूत्र मार्ग से ज्यादा लंबी होती है। पुरूषों का मूत्र मार्ग प्रोस्टेट ग्लैण्ड व लिंग से होकर गुजरता है एवं इसी मूत्र मार्ग से मानव शरीर के अंदर बने वीर्य का निष्कासन भी होता है। मूत्र तंत्र के अंतर्गत गुर्दों में आयी किसी भी प्रकार की विकृति या बीमारी मूत्र नलिका, मूत्राशय एवं मूत्र मार्ग में आये विकारों की अपेक्षा ज्यादा गंभीर होती है। गुर्दों में पथरी हो जाना, गुर्दों का अचानक काम करना बंद कर देना, दुर्घटना- वश गुर्दों का जख्मी हो जाना, गुर्दों की कार्य क्षमता कम हो जाना, गुर्दों में कैंसर हो जाना इत्यादि जैसी बीमारियां मानव शरीर के अंदर मूत्र निष्कासन की प्रक्रिया को दोषयुक्त बना देती हैं जिसके कारण मानव जीवन का अस्तित्व घोर संकट में आ जाता है। ऐसा देखा गया है कि महिलाओं का मूत्र तंत्र पुरूषों की अपेक्षा ज्यादा संक्रमित हो जाता है क्योंकि वह पुरूष के मूत्र मार्ग की अपेक्षा ज्यादा खुला हुआ होता है। कभी-कभी प्रजनन के बाद महिलाओं के मूत्र मार्ग के आकार में असाधारण वृद्धि हो जाती है। महिलाओं के मूत्र मार्ग की लंबाई कम होने के कारण आँतों से आने वाले बेक्टैरिया एवं रोगाणु उनके मूत्र मार्ग को संक्रमित कर देते हैं। संभोग के समय पुरूष के लिंग का यौन रोगों से संक्रमित होना एवं वीर्य के दूषित होने पर भी महिलाओं के मूत्र मार्ग में विकार एवं यौन बीमारियां हो सकती हैं।

गर्भावस्था एवं प्रजनन के बाद महिलाओं का मूत्र मार्ग उचित साफ-सफाई के अभाव में संक्रमित हो जाता है। पुरूषों में विशेष-कर प्रौढ़ावस्था में प्रोस्टेट ग्लैण्ड के बढ़ जाने से मूत्र मार्ग में रूकावट आ जाती है एवं रूके हुए पेशाब से बेक्टैरिया उत्पन्न होने लगते हैं जिससे की शरीर का रक्त एवं गुर्दे प्रदूषित हो जाते हैं। पेशाब का रूक जाना एक अत्यंत ही गंभीर समस्या है। आपात स्थिति में कई बार शल्यक्रिया करके ट्यूब डालकर रूके पेशाब को तुरंत निकाला जाता है। इसके बाद इस रोग का मूलभूत कारण जानकर उचित चिकित्सा की जाती है।

मूत्र निष्कासन मूत्राशय में स्थित एक विशेष तंत्रिका तंत्र के द्वारा होता है। यह एक प्रतिवर्त क्रिया है। मूत्र नलिकाओं द्वारा मूत्राशय में मूत्र इकट्ठा करते रहने से मूत्राशय में दबाव निर्मित हो जाता है और इस दबाव को मूत्राशय में स्थित विशेष तंत्रिकाऐं संवेगों के द्वारा सेरिब्रम के फ्रंट लोब में पहुँचाती है जिसके फलस्वरूप प्रेरक तंत्रिकाओं द्वारा मूत्राशय को संकुचित होने के आदेश मिलते

हैं और कुछ ही क्षणों में मूत्राशय संकुचित हो जाता है एवं आतंरिक और बाहरी मूत्रमार्गीय क्षेत्र खुल जाते हैं। तदोपरांत मूत्र का शरीर से निष्कासन हो जाता है। इन तंत्रिकाओं के असंवेदनशील हो जाने पर या किसी हिस्से का चोट ग्रस्त या क्षति ग्रस्त हो जाने कि स्थिति में मस्तिष्क का मूत्र तंत्र पर से नियंत्रण समाप्त हो जाता है और मूत्र स्वत: ही निष्कासित होने लगता है। अत्यधिक भय एवं विषाद की स्थिति में भी कई बार मूत्र स्वत: ही निष्कासित होने लगता है। कमजोर मस्तिष्क एवं स्नायु रोगों से ग्रसित रोगियों में अक्सर रात्रि के समय बिस्तर पर मूत्र निष्कासित हो जाता है।

मूत्र तंत्र में प्रदाह होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- मूत्राशय में प्रदाह उत्पन्न होना एवं मूत्राशय में सर्दी लग जाने के कारण मूत्र अवरोध होने पर रोगी के लिए **एकोनाइट 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- रोगी का मूत्र नाश रोग से ग्रसित होना एवं मूत्र नाश कि स्थिति में आँखें ऊपर की ओर चढ़ना और चेहरे पर हल्की सी मदहोशी आने जैसे लक्षणों में **ओपियम 30** लाभदायक औषधि है।
- हैजे जैसी बीमारी के कारण शरीर में गर्मी बढ़ जाना एवं मूत्र के निष्कासन न होने कि दशा में **काली बाई 6** सर्वोत्तम औषधि है।
- वह रोगी जिसे कि भूतकाल में हिस्टीरिया मिर्गी के दौरे पड़ते रहे हों मूत्र नाश की स्थिति में **इग्नेशिया 3, 30** का सेवन करना हितकर है।
- कई बार जन्मजात शिशुओं में मूत्र निष्कासन की समस्या आ जाती है। ऐसी स्थिति में रोगी को **ऐकोनाइट 30** का सेवन कराना हितकर होता है।
- मूत्र मार्ग में पस इत्यादि के अटक जाने की स्थिति में केनेबिस **सैटाइवा 3** लाभदायक औषधि है।
- धार--युक्त मूत्र निष्कासन न होने की दशा में अथवा बूंद-बूंद पेशाब आने की स्थिति में **कास्टिकम 6** लाभदायक औषधि है।

- मूत्र रोध के वह रोगी जो कि पेट में अत्यधिक गैस बनने की बीमारी से ग्रसित हों उनके लिऐ **जेल्सीमियम 3, 30** लाभकारी औषधि है।

- मूत्राशय की थैलियों में लकवा सा हो जाना एवं पेशाब करने के लिए अत्यधिक जोर लगाने वाले रोगियों के लिए **एल्युमिना 200** लाभदायक औषधि है।

- पेशाब का रंग गंदला हो जाने पर, उसमें फास्फेट की अत्यधिक मात्रा आने पर **बेलाडोना 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- पेशाब में खून के थक्के आने पर एवं दर्द के साथ रूक-रूक कर पेशाब होने कि स्थिति में **केक्टस 30** लाभप्रद औषधि है।

- मूत्राशय का मूत्र से भरे होने की अनुभूति होने पर एथं मूत्र मार्ग में आंतरिक जलन पैदा होना जैसे लक्षणों में **केम्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- पेशाब में शक्कर, गंदलापन, बदबू एवं लिस-लिसापन हो जाने की स्थिति में रोगी को **चिमेफिला सल्फ 30** हितकर औषधि है। प्राय: ऐसा देखा गया है कि चिमेफिला सल्फ उन रोगियों के लिए विशेष हितकर है जो कि अत्यधिक मद्यपान करते हैं एवं मूत्र संबंधी बीमारियों से ग्रसित हैं।

- प्रोस्टेट ग्लैण्ड का बढ़ जाना एवं रोगी को लगातार पेशाब जाने की इच्छा होते रहने जैसे लक्षणों में **डिजिटेलिस 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- रोगी का मन मस्तिष्क तीव्र रूप से भय ग्रसित हो गया हो जिसके कारण पेशाब न उतर रही हो तो उसके लिए **ओपियम 200** लाभदायक औषधि है।

- प्रेस्टेट गलैण्ड का अत्यधिक बढ़ जाना, रोगी का पीठ के बल न लेट पाना, पेशाब करते समय असहनीय पीड़ा होने जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- पेशाब रूक जाने की स्थिति में अगर मूत्राशय में अत्यधिक दबाव पैदा हो जाए और रोगी बेहोशी कि स्थिति में आने लगे तो उसे **हेलिबोरस 3** औषधि का सेवन कराना चाहिए।

- युवावस्था में प्रोस्टेट वृद्धि के रोगियों जिन्हें की अचानक रात्रि में पेशाब न होने की स्थिति पैदा हो जाए तो **कार्बोलिक ऐसिड 1×** लाभकारी औषधि है।

- युवावस्था में अचानक गुर्दे काम करना बंद कर दें, पेशाब में खून के कतरे आने लगें और मांस पेशियों में अचानक ही स्पंदन पैदा हो जाए तो **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।

- मूत्र रोध के कारण अगर रोगी कोमा की स्थिति में आ जाता है तो **क्यूप्रम. ऐसिटिकम 2×** दस-दस मिनिट के अंतर से रोगी को देना चाहिए। अगर इससे कोई लाभ न हो तो **ओपियम 3×** या **अर्टिका यूरेन्स** की तीन बूंदें तीन-तीन घंटे के अंतर से देना हितकर होता है।

मूत्ररोध

मूत्ररोध वह स्थिति है जिसमें कि मानव शरीर का मूत्र यंत्र पेशाब का निर्माण तो ठीक तरीके से करता है परंतु मूत्र तंत्र में किसी अवरोध, व्याधि या विकृति के कारण मूत्र शरीर से बाहर नहीं निकल पाता। ऐसी अवस्था में मूत्र रोगी के रक्त में जा मिलता है जिससे कि रक्त के यूरिया, अन्य दूषित पदार्थ एवं अम्ल की मात्रा सामान्य से अधिक हो जाती है। ऐसी स्थिति में रोगी का चेहरा फूल जाता है और अंग-प्रत्यंग में अचानक ही सूजन आ जाती है। शरीर के आंतरिक तापमान में वृद्धि हो जाती है। अचानक ही तीव्र सिर दर्द, वमन एवं बेहोशी जैसी स्थिति बन जाती है।

मूत्ररोध से ग्रसित हो जाने कि स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना हितकर है।

- मूत्ररोध के कारण हाथ पाँव में दर्द, चक्कर आना, पेशाब में ऐसिटोन तथा अम्ल की वृद्धि हो जाने जैसे लक्षणों में **क्यूप्रम आर्सेनिकम 30** लाभकारी औषधि है।

- मूत्राशय में सर्दी बैठ जाना, चोट लग जाना, मूत्र मार्ग का संक्रमित हो जाना, प्रोस्टेट ग्लैण्ड में सूजन, पथरी या सूजाक जैसे रोगों के कारण मूत्राशय में प्रदाह उत्पन्न हो जाना, प्रदाह के कारण पेशाब ठीक से नहीं उतरना, पेशाब करते समय जलन महसूस होना, मूत्र में रक्त अथवा पस का आ जाना, पेशाब का गंदला हो जाना, शरीर के निचले हिस्से में दर्द एवं ज्वर महसूस होना, रोगी को बार-बार पेशाब जाने की इच्छा महसूस होना, पेशाब के बाद मूत्र मार्ग के अंदर जलन के साथ कुछ चुभता हुआ महसूस होना जैसे लक्षणों में **बर्बेरिस क्यू** लाभदायक औषधि है।

- **ऐपिस 30** उन रोगियों के लिए लाभदायक है जिन्हें कि रूक-रूक कर अधिक तापमान लिए हुए पेशाब हो रही हो।

- किसी आघात अथवा अत्यधिक मानसिक वाचालता या किसी विवाद के कारण रोगी में पेशाब रूक जाने की स्थिति में **ऐकोनाइट 200** लाभकारी औषधि है।

- रोगी को वर्षा में अत्यधिक भीग जाने के कारण पेशाब न उतरने संबंधी तकलीफ होना जैसे लक्षण में **बेलाडोना 200** लाभदायक औषधि है।

- रोगी को शीत लग जाने के कारण पेशाब न उतरने की स्थिति में **डल्कामारा 3** लाभंदायक औषधि है।

- पथरी के कारण भयंकर दर्द रहना एवं मूत्र अवरोध की स्थिति में **पेरेराब्रेबा 6** लाभदायक औषधि है।

- ऐसे रोगी जिन्हें मूत्र निष्कासन के लिए बहुत ज्यादा जोर लगाना पड़ता है जिससे उन्हें अकारण ही शौच हो जाती है जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभकारी औषधि है।

- रात को सोते समय अचानक पेशाब हो जाने वाले रोगी के लिए **सेनेगा क्यू,** 30 लाभदायक औषधि है।

- पेशाब में डोरीदार श्लेष्मा का निकलना, मूत्र द्वार के बीच के स्थान में सूजन आना जैसे लक्षणों में **चिमिफिला 200** सर्वोत्तम औषधि है।

- बार-बार पेशाब आना, खांसने अथवा छींकने या जोर से हॅसने के कारण पेशाब आ जाने जैसे लक्षणों में रोगी को **कास्टिकम 30** का सेवन कराना चाहिए।

- ऐसे रोगी जिन्हें मूत्र के साथ रेत निकलती हो एवं जो बैठकर पेशाब नहीं कर पाते, रात्रि के समय बिस्तर पर अनजाने में मूत्र निकल जाता है, मूत्र त्याग के बाद दर्द का अनुभव जैसे लक्षणों में **सारसापेरिला 6** लाभदायक औषधि है।

- मूत्ररोध के रोगी जो कि बवासीर से पीड़ित हों एवं मूत्र त्याग करते समय दर्द से कांप उठना जैसे लक्षण में **पेट्रोलियम 3** लाभदायक औषधि है।

- मूत्राशय किसी चोट के कारण क्षति ग्रस्त हो गया हो जिसके कारण कि रोगी को मूत्र त्यागने में कठिनाई महसूस होती हो तो ऐसी दशा में रोगी को **अर्निका 30** का सेवन कराना हितकर होगा।

- नव-विवाहिता स्त्री जिसे कि अत्यधिक संभोग के कारण मूत्र त्याग करते समय जलन या दर्द महसूस होता हो उसके लिए **स्टैफिसेग्रिया 30** लाभदायक औषधि है।

- मूत्ररोध का वह रोगी जो कि उष्ण प्रकृति का है एवं जरा सी भी गर्मी सहन नहीं कर पाता, रात्रि के समय स्पर्श भी असहनीय हो जाता हो इन सब लक्षणों में **लेकेसिस 200** लाभकारी औषधि है।

- बाल्यावस्था में स्वप्न देखने की स्थिति में पेशाब हो जाने जैसे लक्षण में **क्रियोजेट 200** लाभदायक औषधि है।

- वह रोगी जो कि शुक्र-क्षय रोग से भी ग्रसित है और जिन्हें अपने आप पेशाब निकल जाती है उन रोगियों के लिए **ऐसिड फॉस 30** लाभदायक औषधि है।

- पानी पीने के तुरंत बाद पेशाब जाने की तीव्र इच्छा होने जैसे लक्षण में **केलि ब्रोम 6** लाभप्रद औषधि है।

मूत्र संबंधित अन्य बीमारियां

औषधियां :

- प्रोस्टेट ग्लैण्ड में अति वृद्धि हो जाना, नया मूत्र रक्त दोष से ग्रसित होना, पेशाब का रूक जाना, मूत्र का निष्कासन बहुत धीरे-धीरे एवं कठिनाई में होना जैसे लक्षणों में **मोरफिनम 30** लाभदायक औषधि है।

- गुर्दों का पथरी से ग्रसित होना, पेशाब में खून आना, उजले एवं बारीक नमक का अत्यधिक जमाव होना, पेशाब जाने की बार-बार इच्छा होना, मूत्र मार्ग में जलन तथा दर्द महसूस होना, कूल्हों में तेज दर्द होना जैसे लक्षणों में **हाइड्रेन्जिया मदर टिंचर** की 5 बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर दिन में चार बार सेवन करने से लाभ मिलता है।

- पेशाब करते समय मूत्र मार्ग में जलन होना, रंगहीन पेशाब का अत्यधिक मात्रा में होना, पेशाब रोकने में कठिनाई महसूस होना जैसे लक्षणों में **सल्फर** 200 का सेवन हितकर है।

- गुर्दों के आसपास जलन के साथ दर्द महसूस होना, विशेष रूप से दाहिने गुर्दे में सूजन आ जाने जैसे लक्षणों में **टेरेबिन्थिना 30** लाभदायक औषधि है।

- बार-बार पेशाब होना एवं पेशाब के बाद मूत्र मार्ग के छेद में टीस भरी जलन महसूस होना जैसे लक्षणों में **एस्पेरेगस 30** लाभदायक औषधि है।

- बच्चों का बिस्तर गीला करना, भूरे रंग की पेशाब होना, पेशाब से धृणित दुर्गन्ध आना जैसे लक्षणों में **बैंजोइक ऐसिड 30** लाभदायक औषधि है।

- पेशाब का रंग गहरा होना एवं घोड़े की पेशाब सी गंध आना, टीस के साथ दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **नाइट्रिक ऐसिड 30** लाभदायक औषधि है।

- गुर्दे से मूत्राशय तक तेज दर्द महसूस होना, पेशाब में पथरी के कारण रक्त आना, ईट के रंग की पेशाब होना जैसे लक्षणों में **कॉक्कस कैक्टाई 30** लाभदायक औषधि है।

- शक्कर के साथ अत्यधिक पेशाब होना, तेज प्यास लगना, ठंडे पेय से आमाशय का भारी हो जाना, अल्सर में गैंगरीन हो जाना एवं अत्यधिक कमजोरी महसूस होना जैसे लक्षणों में **ऐसिटिक ऐसिड 30** लाभदायक औषधि है।

- पेशाब में भरपूर शक्कर आना, रोगी का मधुमेह से ग्रसित होना, जोर से प्यास और भूख लगना, जोड़ों में अत्यधिक दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **लैक्टिक ऐसिड 200** लाभदायक औषधि है।

- रोगी की लगातार लार बहते रहना, मधुमेह की बीमारी से ग्रसित होना, पीले रंग का एल्ब्यूमिन युक्त पेशाब होना जैसे लक्षणों में **रस ऐरोमैटिक मदर टिंचर** की दस बूंदें 1 गिलास स्वच्छ जल में डालकर सेवन करना चाहिए।

- मधुमेह में अल्सर हो जाना, प्रचुर मात्रा में पेशाब होना, तेज प्यास लगना, अत्यधिक कमजोरी महसूस होना जैसे लक्षणों में **साइजाइजियम जेम्बोलन मदर टिंचर** की दस बूंदे एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर दिन में चार बार सेवन करना चाहिए। उपरोक्त दवा लेने से पेशाब तथा रक्त में शक्कर की मात्रा में काफी कमी आ जाती है।

- पेशाब का रंग बहुत गहरा होना, रोगी का मधुमेह एवं पीलिया जैसे रोगों से ग्रसित होना, पेशाब में पित्त एवं शक्कर की मात्रा का बढ़ा हुआ होना जैसे लक्षणों में **चिओनेनथस 30** लाभदायक औषधि है।

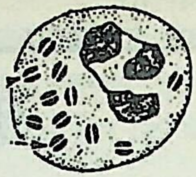
अध्याय-10

सूजाक(गनोरिया)

अन्य रजित रोगों के समान सूजाक भी गोनोकोकस नामक विषैले जीवाणु से संक्रमित होने के कारण उत्पन्न होता है। यह जीवाणु मूत्र मार्ग की श्लेष्मिक झिल्ली को प्रथम अवस्था में प्रभावित करता है। जिसके कारण श्लेष्मिक झिल्ली में सूजन उत्पन्न हो जाती है एवं मूत्र मार्ग में आंतरिक प्रदाह प्रारंभ हो जाता है और एक प्रकार का गंदला स्त्राव मूत्र छिद्र से होने लगता है। यह स्त्राव इतना गाढ़ा होता है कि आंतरिक वस्त्रों पर पीले धब्बे पड़ जाते हैं एवं कई बार मूत्र मार्ग से रक्त भी आने लगता है। रोगी को असाधारण दर्द एवं कष्ट महसूस होने लगता है एवं उसे मूत्र त्याग में अत्यधिक परेशानी होती है। इस रोग से सर्वप्रथम मूत्र नली प्रभावित होती है और उसके बाद श्लेष्मिक झिल्ली, अंडकोष, शुक्रग्रंथियां इत्यादि भी प्रभावित हो जाती हैं। स्त्रियों में भी मूत्र नली के अलावा जननेन्द्रिय झिल्ली, डिंबकोष, योनि कपाट इत्यादि प्रभावित हो जाते हैं। पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों में यह रोग अधिक कष्ट कारक होता है क्योंकि स्त्रियों के मूत्र मार्ग की बनावट छोटी होती है। अन्य गुप्त रोगों के समान यह रोग भी छूत का रोग है। संभोग के अलावा समलैंगिक मैथुनता, गुदा मैथुन, सूजाक से ग्रस्त रोगी के कपड़े, साबुन, तेल, बिस्तर, तौलिया, अंडरवियर, इत्यादि इस्तेमाल करने से यह रोग फैल सकता है। इसका मुख्य कारण वेश्यागमन है।

सिफिलिस के समान यह रोग भी अनुवांशिक है। माता-पिता के कारण बच्चों में भी यह बीमारी आ सकती है। सिफिलिस और सूजाक में यह अंतर हैं कि सिफिलिस में त्वचा के ऊपरी हिस्से पर सर्वप्रथम फोड़े जैसा घाव उत्पन्न हो जाता है पर सूजाक में जननेन्द्रियों का आंतरिक भाग प्रभावित होता है एवं बाहर से देखने में यह रोग दिखाई नहीं पड़ता। गंभीर अवस्था में सूजाक से ग्रसित रोगी की आँखें, मुख, गुर्दे, लीवर, अंडकोष इत्यादि भी प्रभावित हो जाते हैं।

सूजाक के जीवाणु हमेशा जोड़े में पाये जाते हैं एवं सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखने में यह गुर्दे के समान दिखाई पड़ते हैं। गंभीर अवस्था में सूजाक से पीड़ित रोगी



सूजाक के जीवाणु नाइसीरिया गोनोरिह्

में लिंगोत्थान बहुत कष्टपूर्वक होता है। उसकी जांघों में गठानें आ जाती हैं, मूत्र छिद्र लाल हो जाता है एवं उसमें सूजन आ जाती है। संपूर्ण लिंग छूने पर भी दर्द करने लगता है और मूत्रमार्ग से रेशेदार गंदला एवं मवाद लिए स्त्राव होने लगता है। रोग की प्रथम अवस्था में रोगी में बहुत ज्यादा कामोत्जेना एवं सहवास की इच्छा प्रकट होती है। यह रोग दिन के समय अत्यधिक बढ़ जाता है। स्त्रियों में सूजाक की प्रथम अवस्था में स्त्री के अंदर अत्यधिक संभोग की इच्छा उत्पन्न होने लगती है परंतु योनि के सूजे हुए होने के कारण उसे संभोग के समय अत्यधिक कष्ट होता है।

सूजाक से ग्रसित स्त्री-पुरूष के मूत्रमार्ग में असहनीय खुजली होती है जिसे वह रोक नहीं पाता और हमेशा अपनी जननेंन्द्रिय को खुजलाता रहता है। उचित चिकित्सा होने पर 5-6 सप्ताह में यह रोग एकदम ठीक हो जाता है अन्यथा पुराना होने पर यह आँखों और कंठ को प्रभावित कर देता है एवं पेट के अंदर कब्ज और गैस बनना जैसा विकार भी उत्पन्न कर देता है।

सूजाक से ग्रसित रोगी को निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- ❑ रोग की प्रथम अवस्था में बूंद-बूंद पेशाब आना, रोगी को निरंतर ज्वर बने रहना, मूत्र-त्याग में तकलीफ एवं जलन जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभदायक औषधि है। ऐकोनाइट देने के बाद अगर रोगी में कुछ सुधार आता है तो उसे **केनेबिस सैटाइवा क्यू** की 5 से 10 बूंद एक गिलास पानी के साथ दिन में 3 बार देना विशेष लाभदायक होता है।
- ❑ सूजाक रोग के संक्रमण के दो हफ्ते बाद अगर रोगी के लिंग से होने वाला स्त्राव गंदला एवं गाढ़ा न हो तो ऐसी दशा में **पल्सेटिला 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ रोगी की मूत्र नलिका में सूजन एवं सिकुड़ जाने की स्थिति में रोगी के लिए **केमोमिला 30** लाभदायक औषधि है।

- रोग की प्रथम अवस्था में अंडकोषों में सूजन आ जाना, प्रोस्टेट ग्लैण्ड का बढ़ जाना, मूत्र नली के मुख का चिपचिपे स्त्राव के कारण चिपक जाना, पेशाब करते समय मूत्र नली के अंदर गर्मी महसूस होना जैसे लक्षणों में **थूजा 30, 200** लाभकारी औषधि है।

- सूजाक से ग्रसित रोगी के शरीर का निचला हिस्सा दर्द से प्रभावित है तो उसे **पल्सेटिला 30** का सेवन करना हितकर होता है।

- सूजाक ग्रसित रोगी के लिंग का कड़ा पड़ जाना, लिंग के अग्र भाग का फूल जाना, पेशाब का धार युक्त न होना, अंडकोषों में ऐंठन जैसे लक्षणों में **मर्क कोर 6** हितकर औषधि है।

- लिंग के आगे की त्वचा में निरंतर खुजली होते रहना, स्त्राव का दूधिया होना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** लाभदायक औषधि है।

- रोगी को बार-बार पेशाब आना जैसे लक्षण में केलि आयोड 30 लाभदायक औषधि है।

- रोगी के अंडकोषों में साधारण वृद्धि हो जाना, मलद्वार में खुजली चलना, बूंद-बूंद स्त्राव होना जैसे लक्षणों में **अर्जेण्टम नाइट्रिकम 30 या 200** लाभदायक औषधि है।

- मूत्र त्याग के बाद ऐसा लगना जैसे कि कुछ पेशाब अंदर ही रह गयी है। रोगी को **मेडोराइनम 30** औषधि का सेवन करना चाहिए।

- सल्फर युक्त ऐलोपैथी दवायें लेकर सूजाक जैसी बीमारी को त्वरित दबाना एवं बाद में पुन: दुर्गन्ध युक्त स्त्राव होना जैसे लक्षणों में **हिपर सल्फ 30** लाभदायक औषधि है।

- स्त्रियों में योनि के स्त्राव के साथ वायु का निकलना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक एल्ब 6, 30** सर्वोत्तम औषधि है।

- वृद्धावस्था में सूजाक से पीड़ित रोगी के लिए **पेट्रोलियम** लाभदायक औषधि है।

- ❑ ऐसे रोगी जिन्हें सूजाक की बीमारी ठीक होने के कुछ समय बाद पुनः हो जाती है और जो धार युक्त मूत्र त्याग नहीं कर सकते ऐसे रोगियों के लिए **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ सूजाक के कारण हमेशा लिंगोत्थान होते रहना जैसी स्थिति में **एगारिकस 6** लाभदायक औषधि है।

- ❑ सूजाक के कारण अंडकोषों का ठंडा पड़ जाना एवं मूत्र छिद्र से मलाई के समान स्त्राव होना इत्यादि लक्षणों में **केप्सीकम 6** लाभदायक औषधि है।

- ❑ सूजाक के ऐसे रोगी जिन्हें मूत्र नलिका में पेशाब करते वक्त मधुमक्खी या चींटी काटने जैसा दर्द महसूस होता हो उनके लिए **एपिस मेल 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ **कार्बोवेज 30** स्त्रियों के लिए लाभदायक औषधि है।

- ❑ मुण्डावरक त्वचा का फूलं जाना एवं पेशाब करने में अमोनिया की दुर्गन्ध आना जैसे लक्षणों में **नेफ्तलीन 3×** लाभकारी औषधि है।

- ❑ सूजाक के कारण जननेन्द्रिय की त्वचा के सड़ जाने पर **एग्नस कास्ट 30** लाभप्रद औषधि है।

- ❑ सूजाक से ग्रसित रोगी को स्वप्नदोष के लक्षण प्रकट होते हों तो उसे **गुयेकम 6** का सेवन करना चाहिए।

- ❑ रोगी जिन्हें सूजाक के अलावा मस्से तथा बवासीर जैसी बीमारियां भी हों और जिनकी पेशाब से पशुओं के मूत्र जैसी दुर्गन्ध आती हो उनके लिए **नाईट्रिक ऐसिड 30** लाभदायक औषधि है।

सूजाक के रोगियों को प्याज, उत्तेजक, मसालेदार वस्तुएं, मांसाहार, दही, चटनी, दूध से बनी वस्तुएं, डिब्बा बंद भोजन, सोडा वाटर, शराब एवं मद्यपान का सेवन नहीं करना चाहिए। कम से कम 6 महिने तक स्त्री संभोग पूर्ण रूप से निषेध है। अत्यधिक परिश्रम, रात्रि जागरण एवं दुपहिया वाहनों का उपयोग नहीं करना चाहिए। मिश्री का शर्बत एवं नींबू का रस लाभदायक

है। ऐसा भोजन नहीं करना चाहिए जिससे कब्ज एवं गैस उत्पन्न हो। हरी सब्जी एवं रेशेयुक्त भोजन को ही प्राथमिकता देनी चाहिए। **केलेन्डुला मदर टिंचर** की पिचकारी से जननेन्द्रिय की सफाई करना चाहिए।

- ❑ स्त्रियों को भयावह दर्द के साथ सूजाक से ग्रसित होना, अत्यधिक मात्रा में स्त्राव होना, संपूर्ण मूत्र मार्ग में निरंतर जलन होते रहना, योनि से पीले रंग का मवाद आना एवं बेचैनी महसूस होना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक सल्फ फ्लैवम 30** लाभकारी औषधि है।

- ❑ जननांगों में निरंतर खुजली चलते रहना, स्त्री का लंबे समय से सूजाक से ग्रसित होना, पीले एवं हरे रंग का योनि स्त्राव होना, पुरूष के शिश्न मुण्ड में सूजन आ जाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम सल्फ 200** लाभदायक औषाधि है।

- ❑ सूजाक की बीमारी का पुराना पड़ जाना, मूत्र मार्ग से रक्त मिश्रित पीबदार स्त्राव होना एवं स्त्राव से बदबू आना जैसे लक्षणों में **साइलीशिया 1000** की 1 खुराक दिन में एक बार सेवन करना चाहिए। यह पुराने सूजाक की सर्वोत्तम औषधि है।

- ❑ मूत्र मार्ग से सफेद रंग का गाढ़ा स्त्राव होना एवं मूत्र तंत्र में सूजन आ जाना जैसे लक्षणों में **काली म्यूर 3x या 6x** का दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- ❑ मूत्र मार्ग से पीले रंग का गाढ़ा ग्लीड आना एवं जननेन्द्रिय में सूजन का न होना जैसे लक्षणों में **नैट्रम फॉस 6x** का दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- ❑ रोग की प्रथम अवस्था में मूत्र नली में प्रदाह एवं दर्द महसूस होना, लाल रंग का पेशाब होना एवं रोगी का ज्वर से ग्रसित हो जाना जैसे लक्षणों में **फेरम फॉस 6x** का दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- ❑ मूत्र नली में सुई गढ़ने जैसा दर्द होना एवं जलन के साथ रक्त स्त्राव होना जैसे लक्षणों में **काली फॉस 6 x** का दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

अध्याय-11

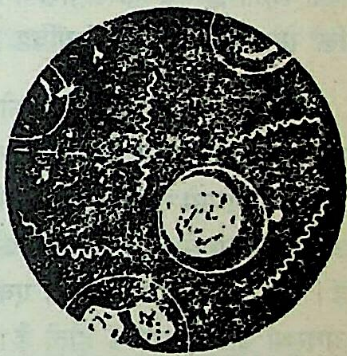
सिफिलिस

वह रोग जो स्त्री पुरूष के संभोग के कारण संक्रमित होते हैं और मुख्य रूप से गुप्तांगों के द्वारा मानव शरीर में प्रविष्ट होते हैं उन्हें रजित रोग कहते हैं।। सिफिलिस का रोग घुमावदार, संकीर्ण एवं अत्यधिक गतिशील जीवाणु ट्रेपोनेमा पैलीडम्र के द्वारा उत्पन्न होता है। ये जीवाणु सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखने पर लंबे वं चमकदार दिखाई देते हैं एवं एक स्वस्थ्य व्यक्ति में लैंगिक संसर्ग के द्वारा प्रविष्ट हो जाते हैं। इस रोग का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। पंद्रहवी शताब्दी के आसपास यह यूरोप के कुछ देशों में देखा गया था। हमारे देश में विदेशियों के आगमन के बाद ही इस रोग का फैलाव हुआ है। इस रोग को हिन्दी में गर्मी की बीमारी भी कहते हैं। सिफिलिस एक गंभीर एवं चिरकालिक रोग है एवं इसका निदान एक बार में नहीं हो पाता। प्रारंभ में तो यह गुप्तांगों को ही प्रभावित करता है पर धीरे-धीरे यह शरीर के अंग प्रत्यंग एवं मस्तिष्क को भी रोग ग्रस्त कर देता है। कई बार यह सुप्त अवस्था में शरीर के अंदर पड़ा रहता है और समय-समय पर प्रकट होकर शरीर को विषैला बना देता है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाला रोग है। अगर माँ बाप को सिफिलिस है तो गर्भ में पल रहे शिशु में भी सिफिलिस के उपसर्ग आ जाते हैं और वह जन्मजात ही इस रोग से पीड़ित हो जाता है। इस रोग की कई अवस्थाऐं हैं। प्रथम अवस्था में ये लिंग को ही प्रभावित करता है पर द्वितीय और तृतीय अवस्था के आने पर कैंसर, सफेद दाग, ट्यूमर, ब्लड कैंसर, पक्षाघात, हड्डियों का गलना जैसे गंभीर रोगों का कारण बन जाता है।

सिफिलिस के जीवाणु बाहरी तापमान में जीवित नहीं रह पाते। हाथों को या लिंग को एंटीसेप्टिक घोल अथवा साबुन से संभोग के बाद धोते रहने से इन रोगों के उत्पन्न होने की आशंका काफी हद तक कम हो जाती है। यह रोग स्त्री-पुरूष दोनों में समान रूप से पाया जाता है पर पुरूषों में इसका उपद्रव अत्यधिक होता है। कई बार इसके विकृत हो जाने की स्थिति में पुरूष का लिंग गल जाता है या इतना विकृत हो जाता है कि उसको शल्यक्रिया के द्वारा काटने के अलावा कोई उपाय नहीं रह जाता।

इस रोग के मुख्य कारण ऐसे व्यक्ति से संभोग करना जो कि इस रोग से ग्रसित हैं, अप्राकृतिक मैथुन जैसे- गुदा मैथुन, पशुओं के साथ मैथुन एवं समलैंगिक मैथुन, वेश्यागमन, विदेशी पर्यटकों के साथ संभोग इत्यादि है।

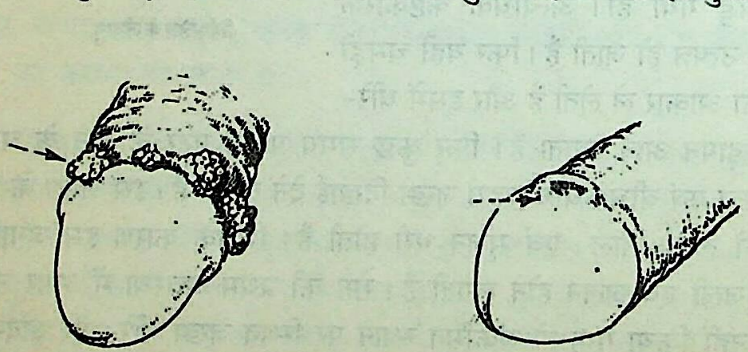
सिफिलिस के जीवाणु कई बार इससे ग्रसित रोगी के तौलिए, साबुन, कपड़े, सिफिलिस के रोगी का चुंबन लेने से, सिगरेट, कलम इत्यादि से भी संक्रमित हो सकता है। सिफिलिस से ग्रसित स्त्री के साथ संभोग करने अथवा सिफिलिस से ग्रसित पुरूष के साथ संभोग करने पर स्त्री-पुरूष की जननेन्द्रिय में लगभग 15 दिन के अंतराल में ऊपरी भाग पर एक लाल छाले के समान आकृति उत्पन्न हो जाती है। पुरूषों में यह छाला लिंग के ऊपर, अंडकोषों की त्वचा के ऊपर एवं कई बार जंघाओं पर उत्पन्न हो जाता है। स्त्रियों में प्रथम बार उपदंश का विष एक लाल छाले के रूप में योनि के मुख पर उत्पन्न होता है।


सिफिलिस के जीवाणु

प्रथम अवस्था में लिंग के ऊपर की चमड़ी जहां पर सिफिलिस का प्रभाव नजर आता है छिली हुई दिखाई देती है। उसके बाद इसका विष रक्त के द्वारा संपूर्ण शरीर में फैल जाता है। सिफिलिस के रोगी के लक्षण कई बार उसके होंठों पर, हाथों की अंगुलियों के बीच, कंठ में छाले के रूप में दिखाई देते हैं। रोग की प्रथम अवस्था में रोगी के लिंग स्थान पर जहां पर चमड़ी छिली हुई अथवा लाल पड़ गयी हो। अत्यधिक कष्टकारक खुजली उत्पन्न हो जाती है। फिर यही चमड़ी छाले का आकार ले लेती है और इसमें धीरे-धीरे कड़ापन आने लगता है। फिर कुछ समय पश्चात मटर के दाने के बराबर एक सख्त एवं बीचों-बीच गहरा जख्म दिखाई देने लगता है। इस जख्म के चारों ओर की त्वचा लाल एवं सूजन भरी होती है। जिसके कारण इस जगह पर दर्द, खुजली एवं जलन होने लगती है। रोग की प्रथम अवस्था में अगर उचित इलाज नहीं किया गया तो संक्रमित स्थान पर स्थित जख्म धीरे-धीरे अंदर की ओर गहरा होने लगता है एवं योनि अथवा लिंग के उस भाग को सड़ाने लगता है। जिसके कारण या तो लिंग उपरोक्त स्थान से गल सकता है अथवा संपूर्ण

शरीर में विष फैलने कि स्थिति में उसे शल्यक्रिया के द्वारा काटना भी पड़ सकता है। इससे रोगी की मृत्यु भी हो सकती है। हेनिमन के अनुसार अगर रोग ग्रस्त घाव सूखने लगे और वहां की चमड़ी अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ जाय तो समझना चाहिए कि रोग का निदान हो गया है। परंतु वहां की चमड़ी कड़ी अथवा नीली पड़ जाए तो समझना चाहिए कि रोग ठीक नहीं हो रहा है एवं उसका निदान निरंतर करना चाहिए। सिफिलिस रोग की प्रथम अवस्था 2-3 महिने की होती है। इसके बाद द्वितीय अवस्था प्रारंभ हो जाती है जिसमें कि लिंग स्थान के अलावा रोगी के गले में भी घाव हो जाते हैं। उसके सभी निष्कासन तंत्र जैसे कि गुदा मार्ग की चमड़ी, होठों का ऊपरी हिस्सा, नासिका का बाहरी भाग, कर्ण का बाहरी कोमल हिस्सा, आँखों की पलकें एवं अंगुलियों के बीच की कोमल त्वचा में भी घाव होने लगते हैं। रोगी को अत्यधिक गर्मी का अनुभव होने लगता है। श्वास नलिका भी क्षति-ग्रस्त हो जाती है। हमेशा जोड़ों में दर्द बना रहता है एवं मांस पेशियां शिथिल हो जाती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि रोग संपूर्ण शरीर में प्रविष्ट हो जाता है।

यहां तक की मस्तिष्क की कोशिकायें भी प्रभावित होने लगती हैं। शरीर की संपूर्ण त्वचा पर चकत्ते निकल आते हैं और चमड़ी जगह-जगह से फटने लगती है जंघायें एवं काँखों में फुंसियां उत्पन्न होने लगती है। मूत्र में से एल्ब्युमिन अधिक मात्रा में आने लगता है और अंत में गुर्दे व लीवर भी प्रभावित होने लगते हैं। रोग की द्वितीय अवस्था एक से पांच वर्ष तक चलती है। रोग की तृतीय अवस्था अत्यंत घातक होती है। कभी-कभी सिफिलिस का रोग दस से बीस वर्षों तक सुप्त पड़ा रहता है पर अचानक उपयुक्त माहौल पाते ही पुनः जाग्रत



शिश्न का अंकुरकार्बुद

हो जाता है। तृतीय अवस्था में रोगी के शरीर में इसके लक्षण अक्सर एक ही भाग में देखे गये हैं। इस अवस्था में हुए जख्म अत्यधिक विषैले होते हैं। इनका विष आसानी से दूर नहीं होता। इस अवस्था में सिफिलिस के रोगाणु मस्तिष्क के आंतरिक भागों को भी प्रभावित कर देते हैं एवं संपूर्ण स्नायु-मंडल भी क्षति-ग्रस्त हो जाता है। शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति भी क्षीण हो जाती है। इस अवस्था में गुर्दे, लीवर, मेरूदंड में भी जख्म हो जाते हैं। अंडकोष और मस्तिष्क में ट्यूमर बढ़ जाते हैं एवं रोगी कैंसर, तपेदिक, ट्यूमर, हड्डियों का गलना, मांस पेशियों की शिथिलता, सफेद दाग, कब्ज रोग, शरीर के अंग प्रत्यंगों के गलने एवं विभिन्न प्रकार के कष्टकारक असाध्य रोगों से पीड़ित हो जाता है।

सिफिलिस के लक्षण दिखाई देने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- रोग की प्रथम अवस्था में रोगी को 15 दिन में एक बार **सिफलिनम 200** लगातार 2-3 महिने तक देना चाहिए। **सिफलिनम,** सिफिलिस के विष से ही बनाई जाती है।

- यदि रोगी के अंदर युवावस्था में वेश्यागमन, कुसंगति के कारण सिफिलिस के लक्षण दिखाई देते हैं तो **मर्कसोल 6×** देना चाहिए। परंतु रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता अगर कमजोर है तो उसे उच्च शक्ति में मर्कसोल देना चाहिए।

- रोग की प्रथम अवस्था में सिफिलिस का घाव लाल रंग का होता है एवं निदान न होने की स्थिति में वह अंदर की ओर गहरा हो जाता है। उसमें मवाद भी आने लगता है। ऐसी स्थिति में घाव चारों ओर बढ़ जाता है और लिंग का आकार फूलगोभी के समान हो जाता है। इस स्थिति में अगर फोड़ा सड़ने लगता है या गेंगरीन की स्थिति बनने लगे तो **नाइट्रिक ऐसिड 30** लाभकारी औषधि है। उपरोक्त दशा वाले रोगी को निरंतर ही घाव से ग्रसित स्थान का किसी ऐंटीसेप्टिक घोल से सफाई करते रहना चाहिए तथा आयडोफार्म पाउडर का छिड़काव करते रहना चाहिए।

- यदि रोगी के अंदर सिफिलिस के कारण मुण्डचर्म की त्वचा पर सूजन आ जाती है तो **गुएकम 30** का उपयोग करना हितकर होता है।

- जख्म में से पीब निकलने के लक्षण होने पर **आर्सेनिक एल्ब 30** का सेवन करना लाभदायक होता है।

- यदि रोगी के अंदर सूजाक एवं सिफिलिस दोनों का ही विष मौजूद हो तो ऐसे लक्षणों में **सिना बेरिस 3×** लाभदायक औषधि है।

- सिफिलिस के कारण मस्सा हो जाने पर **थूजा 30** का उपयोग करना हितकर होता है।

- सिफिलिस के कारण हुए जख्म के दर्द को कम करने के लिए **बेलाडोना 1×** लाभदायक औषधि है। यदि जख्म से ग्रसित स्थान गलने या सड़ने लगे तो उस स्थान को नाइट्रिक एसिड से धोते रहना चाहिए। जख्म सूखने की स्थिति में आयडोफार्म पाउडर को छिड़कते रहना चाहिए।

- सिफिलिस की प्रथम अवस्था में जख्म को निरंतर **केलेन्डुला मदर टिंचर** से साफ करते रहना चाहिए।

  सिफिलिस के रोगी को किसी भी प्रकार के संभोग से पूरी तरह दूर रहना चाहिए। मन में अध्यात्मिक प्रवृत्ति धारण करना चाहिए। अश्लील एवं कामुक साहित्य या इस प्रकार की संगत से बचना चाहिए। शरीर की नित्य साफ-सफाई अत्यधिक जरूरी है। खटाई, मद्यपान, मांसाहार, तंबाखू, मिठाई, अत्यधिक मसालेदार एवं तैलिय भोजन से बचना चाहिए।

- रोग की द्वितीय अवस्था में जब रोग ग्रस्त जख्म से दुर्गन्ध, मवाद इत्यादि का स्त्राव होने लगे, श्वास नलिका एवं कंठ मार्ग में भी जख्म उत्पन्न हो जाये, शरीर में निरंतर ज्वर बने रहे तो ऐसे लक्षणों में **मर्कसोल 30** लाभदायक औषधि है।

- होठों पर सूजन आना, तालू में घाव हो जाना, शरीर में कहीं भी हुए जख्मों का जल्दी ठीक न होना, मुँह से सोते वक्त विषैली लार का निरंतर बहते रहना जिससे कि होठों पर छोटी-छोटी फुंसियां का एक साथ ऊग आना जैसे लक्षणों में **मर्क कोर 3** लाभप्रद औषधि है।

- शरीर के बालों का अत्यधिक झड़ने की दशा में **आयोड 2×** लाभदायक औषधि है।

- कई बार रोगी ऐलोपैथी में उन दवाओं का सेवन कर लेते हैं जिनमें कि सल्फर की मात्रा होती है। जिसके कारण रोग कुछ समय के लिए दब जाता है पर वह ठीक नहीं होता एवं शरीर के किसी अन्य हिस्से में सिफिलिस के दोष दिखाई देने लगते हैं ऐसी स्थिति में रोगी को **हिपर सल्फ 30** का सेवन करना चाहिए।

- शरीर में गठानें पड़ जाना एवं जांघों, गर्दन के पिछले हिस्से, भुजाओं के बीच रात्रि के समय गठानों के कारण दर्द होना, ज्वर आ जाना जैसे लक्षणों में **मर्क बाईबस** 3× लाभदायक औषधि है।

- सिफिलिस विष के कारण रात्रि के समय टांगों में ऐंठन पड़ना, पैरों के तलुओं में अत्यधिक बेचैनी महसूस होना जैसे लक्षणों में **मेजेरियम 30** एवं **ऐसाफेटिडा 30** लाभदायक औषधि है।

- यदि सिफिलिस विष के कारण उत्पन्न हुए मस्सों में पस पड़ जाए तो **साइलीसिया 30** का सेवन करना हितकर है।

- सिफिलिस विष के कारण नाखूनों का अंदर की तरफमुड़ जाना जैसे लक्षण में **कोलोट्रापिस क्यू** की 5 बूंद दिन में 2–3 बार लगातार देते रहना चाहिए।

- अंडकोषों का कड़ा हो जाना या फैल जाना, कंठ में गिलठियाँ हो जाना, नासिका का पक जाना जैसे लक्षणों में **सिनाबेरिस** 3× लाभदायक औषधि है।

- मस्तिष्क में ट्यूमर, हड्डियों में सड़ान उत्पन्न होना, असहनीय सिर दर्द, रोगी का एकाकी, निराश एवं आत्महत्या करने जैसी मानसिक स्थिति में **आरम मेटालिकम 30** लाभदायक औषधि है।

- सिफिलिस विष के कारण मुख एवं गले में दाने ऊग जाना एवं मुख से निरंतर दुर्गन्ध आते रहना, दाँतों में पाइरिया हो जाना जैसे लक्षणों में **केलि बाई 3** लाभदायक औषधि है।

- वंशानुगत सिफिलिस दोषों से पीड़ित रोगी के लिए **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- जख्म में से पीब निकलने के लक्षण होने पर **आर्सेनिक एल्ब 30** का सेवन करना लाभदायक होता है।

- यदि रोगी के अंदर सूजाक एवं सिफिलिस दोनों का ही विष मौजूद हो तो ऐसे लक्षणों में **सिना बेरिस 3×** लाभदायक औषधि है।

- सिफिलिस के कारण मस्सा हो जाने पर **थूजा 30** का उपयोग करना हितकर होता है।

- सिफिलिस के कारण हुए जख्म के दर्द को कम करने के लिए **बेलाडोना 1×** लाभदायक औषधि है। यदि जख्म से ग्रसित स्थान गलने या सड़ने लगे तो उस स्थान को नाइट्रिक एसिड से धोते रहना चाहिए। जख्म सूखने की स्थिति में आयडोफार्म पाउडर को छिड़कते रहना चाहिए।

- सिफिलिस की प्रथम अवस्था में जख्म को निरंतर **केलेन्डुला मदर टिंचर** से साफ करते रहना चाहिए।

सिफिलिस के रोगी को किसी भी प्रकार के संभोग से पूरी तरह दूर रहना चाहिए। मन में अध्यात्मिक प्रवृत्ति धारण करना चाहिए। अश्लील एवं कामुक साहित्य या इस प्रकार की संगत से बचना चाहिए। शरीर की नित्य साफ-सफाई अत्यधिक जरूरी है। खटाई, मद्यपान, मांसाहार, तंबाखू, मिठाई, अत्यधिक मसालेदार एवं तैलिय भोजन से बचना चाहिए।

- रोग की द्वितीय अवस्था में जब रोग ग्रस्त जख्म से दुर्गन्ध, मवाद इत्यादि का स्त्राव होने लगे, श्वास नलिका एवं कंठ मार्ग में भी जख्म उत्पन्न हो जाये, शरीर में निरंतर ज्वर बने रहे तो ऐसे लक्षणों में **मर्कसोल 30** लाभदायक औषधि है।

- होठों पर सूजन आना, तालू में घाव हो जाना, शरीर में कहीं भी हुए जख्मों का जल्दी ठीक न होना, मुँह से सोते वक्त विषैली लार का निरंतर बहते रहना जिससे कि होठों पर छोटी-छोटी फुंसियां का एक साथ ऊग आना जैसे लक्षणों में **मर्क कोर 3** लाभप्रद औषधि है।

- शरीर के बालों का अत्यधिक झड़ने की दशा में **आयोड 2×** लाभदायक औषधि है।

- कई बार रोगी ऐलोपैथी में उन दवाओं का सेवन कर लेते हैं जिनमें कि सल्फर की मात्रा होती है। जिसके कारण रोग कुछ समय के लिए दब जाता है पर वह ठीक नहीं होता एवं शरीर के किसी अन्य हिस्से में सिफिलिस के दोष दिखाई देने लगते हैं ऐसी स्थिति में रोगी को **हिपर सल्फ 30** का सेवन करना चाहिए।

- शरीर में गठानें पड़ जाना एवं जांघों, गर्दन के पिछले हिस्से, भुजाओं के बीच रात्रि के समय गठानों के कारण दर्द होना, ज्वर आ जाना जैसे लक्षणों में **मर्क बाईबस 3×** लाभदायक औषधि है।

- सिफिलिस विष के कारण रात्रि के समय टांगों में ऐंठन पड़ना, पैरों के तलुओं में अत्यधिक बेचैनी महसूस होना जैसे लक्षणों में **मेजेरियम 30** एवं **ऐसाफेटिडा 30** लाभदायक औषधि है।

- यदि सिफिलिस विष के कारण उत्पन्न हुए मस्सों में पस पड़ जाए तो **साइलीसिया 30** का सेवन करना हितकर है।

- सिफिलिस विष के कारण नाखूनों का अंदर की तरफमुड़ जाना जैसे लक्षण में **कोलोट्रापिस क्यू** की 5 बूंद दिन में 2–3 बार लगातार देते रहना चाहिए।

- अंडकोषों का कड़ा हो जाना या फैल जाना, कंठ में गिलठियाँ हो जाना, नासिका का पक जाना जैसे लक्षणों में **सिनाबेरिस 3×** लाभदायक औषधि है।

- मस्तिष्क में ट्यूमर, हड्डियों में सड़ान उत्पन्न होना, असहनीय सिर दर्द, रोगी का एकाकी, निराश एवं आत्महत्या करने जैसी मानसिक स्थिति में **आरम मेटालिकम 30** लाभदायक औषधि है।

- सिफिलिस विष के कारण मुख एवं गले में दाने ऊग जाना एवं मुख से निरंतर दुर्गन्ध आते रहना, दाँतों में पाइरिया हो जाना जैसे लक्षणों में **केलि बाई 3** लाभदायक औषधि है।

- वंशानुगत सिफिलिस दोषों से पीड़ित रोगी के लिए **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

सिफिलिस से ग्रसित व्यक्तियों को अत्यधिक रात्रि जागरण नहीं करना चाहिए। ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए जिससे किस्नायु तंत्र पर अत्यधिक दबाव पड़े। सल्फर युक्त भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए। रोगी का निवास स्थान स्वच्छ एवं प्रदूषण रहित हो। साबुन एवं सौन्दर्य प्रसाधन का उपयोग निषेध है। सिन्थैटिक कपड़ो का उपयोग तुरंत बंद कर देना चाहिए। शुद्ध वायु का सेवन करना चाहिए एवं राजसिक प्रवृत्तियों एवं भावों से दूर रहकर सात्विक कार्य करना चाहिए।

- रोग की तृतीय अवस्था जिसमें अस्थियों के भीतर असहनीय दर्द महसूस हो, नाक की हड्डी का तिरछा हो जाना, नाक एवं कान की हड्डियों का गलने लगना जैसे लक्षणों में **केलि आयोड 30** लाभदायक औषधि है।

- जीभ के ऊपर या जीभ के किनारों पर जख्म बन जाना जैसे लक्षणों में **बोरिक ऐसिड 3** लाभदायक औषधि है।

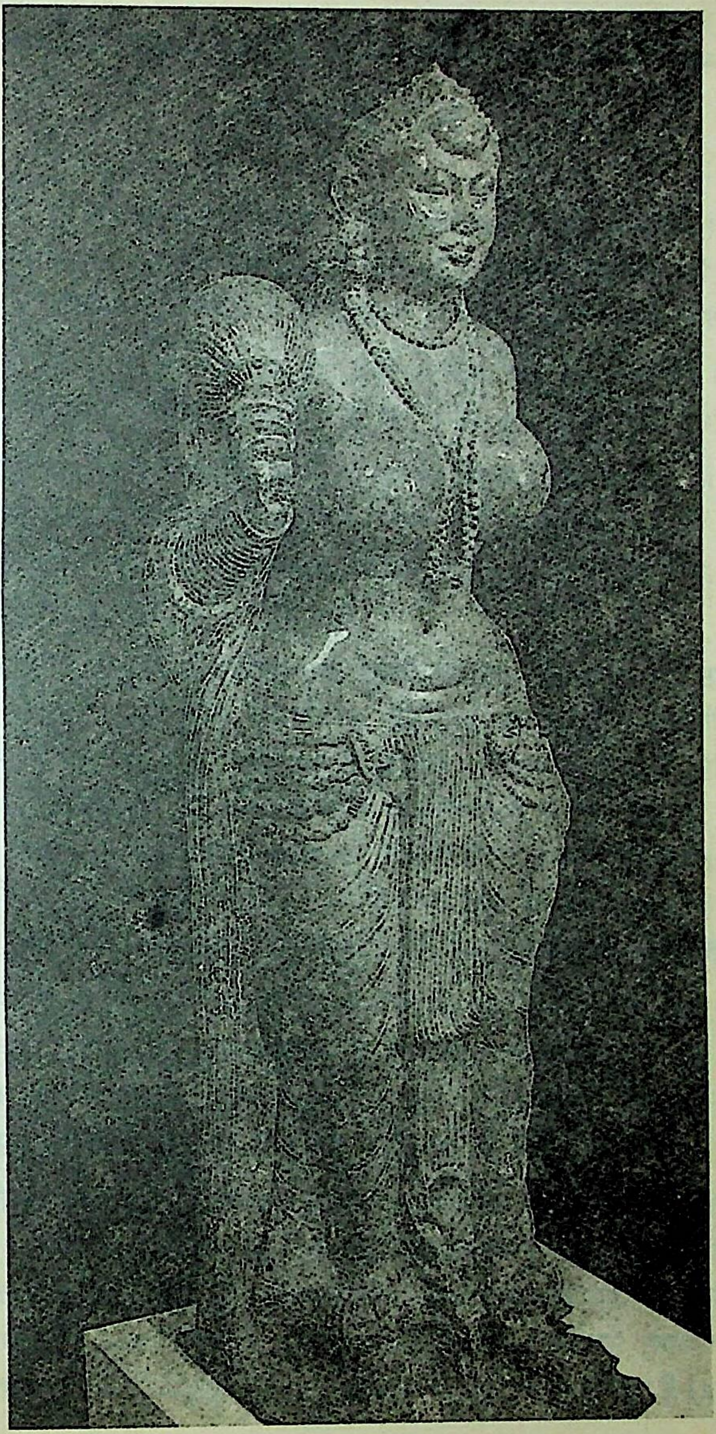
- **केलि आयोड 30** से लाभ न होने पर **आरम मेट 3** उपयोगी औषधि सिद्ध होती है।

- शरीर के ऊपर बड़ी-बड़ी गठानें ऊग आने के लक्षण में **सिलिका 3** लाभकारी औषधि है।

- सिफिलिस से ग्रसित रोगी के कोमलांगों में सड़ान एवं पीब युक्त फोड़े फुंसियों के हो जाने जैसे लक्षणों में **लायकोपोडियम 12** या **ग्रेफाइटिस 12** लाभप्रद औषधि है।

- सिफिलिस से प्रभावित माता या पिता को अपने गर्भस्थ शिशु को सिफिलिस विष से बचाने के लिए माता को **सिफलिनस 30** का सेवन करना चाहिए।

- शिशु को सिफिलिस विष के दोषों से मुक्त रखने के लिए **मर्कसोल 6** लाभदायक औषधि है।



अध्याय-12

मासिक धर्म

स्त्री ज्यों ही युवावस्था में प्रवेश करती है उसकी योनि से श्लेष्मा तथा अन्य पदार्थ से मिश्रित रक्त स्त्राव प्रारंभ हो जाता है। इसे युवती में मासिक धर्म आना कहते हैं। मासिक धर्म स्त्रियों में सामान्यत: 20 दिन के अंतराल से होता है।

स्त्री के जीवन में सर्वप्रथम होने वाले मासिक धर्म को रजोदर्शन कहते हैं एवं इसके होते ही यह प्रकट होता है कि कन्या अब युवती होने लगी है।

रजोदर्शन के साथ ही स्त्री के अंदर विभिन्न दैहिक विकास प्रारंभ हो जाते हैं जैसे कि कंठ की आवाज में बदलाव, स्तनों में उभार आना, योनि के ऊपर बालों का ऊग आना एवं गर्भाशय का विकसित होकर गर्भधारण करने के लिए तैयार हो जाना इत्यादि।

सामान्यत: स्त्रियों में मासिक धर्म पहली बार 12 से 16 वर्ष की उम्र में शुरू हो जाता है। ऐसा देखा गया है कि ठंडे देशों की अपेक्षा गर्म देशों की स्त्रियों में मासिक धर्म कम उम्र में शुरू हो जाता है। सामान्य अवस्था में मासिक धर्म 45 से 50 वर्ष की उम्र तक स्त्रियों में होता रहता है इसका अर्थ यह हुआ कि इस अवस्था तक स्त्री गर्भ धारण कर सकती है। इसके बाद मासिक धर्म स्वत: ही बंद हो जाता है। मासिक धर्म का बंद होना इस बात का संकेत है कि स्त्री अब गर्भ धारण नहीं कर सकती। इसे रज:निवृत्तिकाल कहते हैं।

सामान्य मासिक धर्म 28 दिन के अंतराल के बाद 4 से 5 दिन तक होता है परंतु कुछ स्त्रियों में किन्हीं मानसिक या शारीरिक कारण वश यह पांच दिन से ज्यादा या कम भी हो सकता है। मासिक धर्म की अवधि में स्त्री की योनि से लगभग 250 से 600 ग्राम तक रक्त का स्त्राव हो जाता है।

स्त्री के गर्भ धारण करने की अवस्था में मासिक धर्म स्वत: ही बंद हो जाता है एवं प्रसव के पश्चात यह पुन: सामान्य हो जाता है। मासिक धर्म के समय स्त्रियों में असाधारण मानसिक परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं। मासिक धर्म के समय कमर, पैरों एवं नितंबों में भारीपन महसूस होना एक आम समस्या है। कभी-कभी स्वभाव में अशांति एवं चिड़चिड़ापन भी देखने को मिलता है। इसके

साथ ही जननेन्द्रियों में भी परिवर्तन आ जाता है। मासिक धर्म के समय डिंब ग्रंथि, गर्भाशय एवं डिंब प्रणालियों में रक्त संचार बढ़ जाता है और गर्भाशय का आकार भी पहले की अपेक्षा बढ़ जाता है। वास्तव में मासिक धर्म उस समय होता है जब डिंब के पकने का समय आ जाता है। यह पका हुआ डिंब फिर डिंब प्रणाली में आ जाता है और यहां पर उसके आकार में बढ़ोत्तरी होती है।

डिंब माह में सिर्फ एक बार स्त्री के रज:स्वला होने पर ही पकते हैं। डिंब का डिंब प्रणाली में आ जाने के बाद डिंब ग्रंथियां पुन: सिकुड़कर छोटी हो जाती हैं और डिंब का निकलना भी रूक जाता है। मासिक धर्म के समय रक्त संचार के कारण गर्भाशय की श्लेष्मिक संरचना में अनुकूल परिवर्तन आ जाता है जिससे कि उसमें गर्भ ठहर सके। सामान्यत: 28 दिन में एक डिंब ही डिंब प्रणाली में आता है और इस समय यदि पुरूष के शुक्र कीट का मिलन स्त्री के डिंब से हो जाता है तो गर्भ ठहर सकता है। गर्भ नहीं ठहर पाने की अवस्था में डिंब मूत्र मार्ग से शरीर के बाहर पेशाब के साथ निकल जाता है।

मासिक धर्म के चार दिन स्त्रियों में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इस समय उन्हें अपना मानसिक संतुलन एवं स्वास्थ्य बनाये रखना चाहिए। मासिक धर्म के समय संभोग पूर्णत: निषेध है। इस काल में संभोग करने से स्त्री के मासिक धर्म में गड़बड़ी आ सकती है एवं स्त्री-पुरूष के यौन अंगों पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। इस काल में अगर संभोग करने से गर्भ ठहर भी गया तो उसके खंडित हो जाने की पूर्ण आशंका बनी रहती है या फिर होने वाले शिशु में विकृति एवं अधूरापन भी आ सकता है। मासिक धर्म के समय स्त्रियों को अत्यधिक शारीरिक कार्य नहीं करना चाहिए एवं शरीर के तापमान को व्यवस्थित रखना चाहिए। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि मासिक धर्म के समय अधिक ठंड लग जाने से यह अचानक ही बंद हो जाता है।

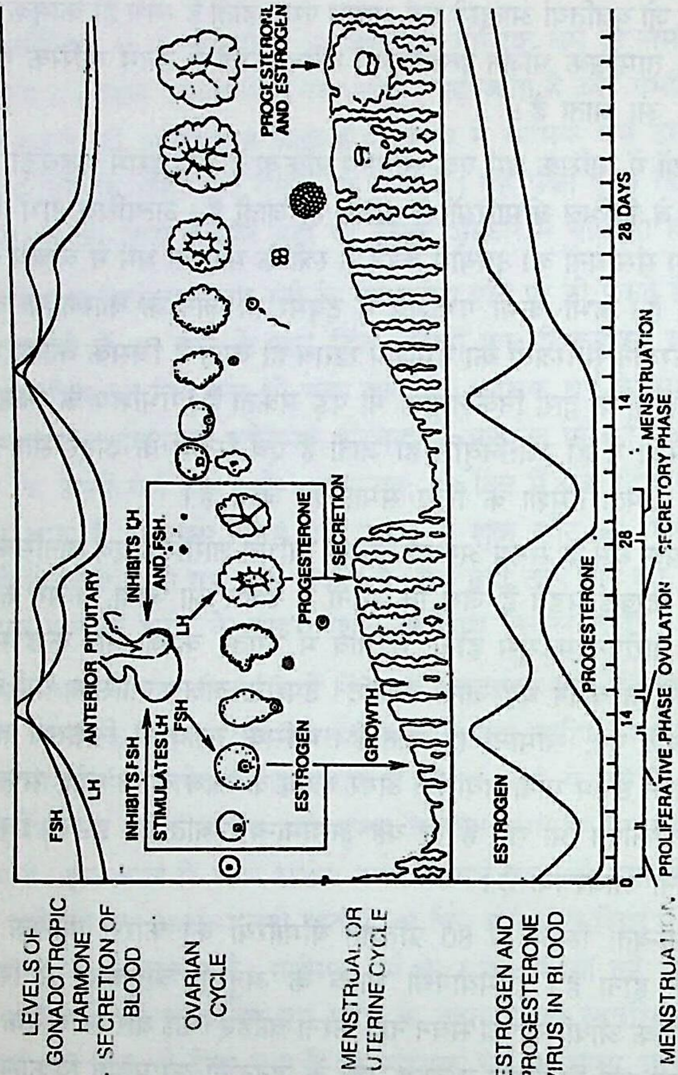
मासिक धर्म के बाद 15 दिन का समय पुष्पकाल कहलाता है। इस समय संभोग करने से स्त्री के गर्भवती होने की संभावना अधिक होती है। जैसे-जैसे दूसरे मासिक धर्म का समय निकट आने लगता है गर्भ ठहरने की संभावना क्षीण होती जाती है। जिन स्त्रियों का शरीर स्वस्थ्य एवं रिष्ट-पुष्ट होता है उनमें मासिक धर्म 20 दिन के अंतराल में अवश्य आ जाता है एवं यह पांच दिन तक बना रहता है। स्त्री के दुर्बल एवं रूग्ण होने पर मासिक धर्म दो-तीन महिने में एक बार होता है एवं आठ से दस दिन तक चलता रहता है। परिश्रमी स्त्रियों

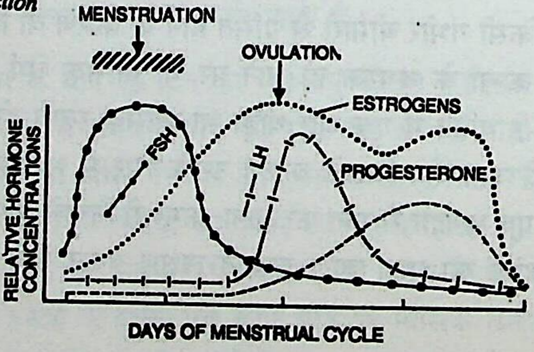
की अपेक्षा जो युवतियां आलसी एवं आराम पंसद होती हैं साथ ही कामुक साहित्य, मसालेदार, तामसिक भोजन इत्यादि का सेवन करती हैं उनमें मासिक धर्म छोटी उम्र में ही आ जाता है।

स्त्रियों में मासिक धर्म एक सामान्य प्रक्रिया है परंतु इसमें गड़बड़ी आ जाने के कारण वे विभिन्न बीमारियों से ग्रसित हो जाती हैं। अत्यधिक गर्भ-निरोधक गोलियां या संसाधनों का उपयोग करने से स्त्री के मासिक धर्म में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है। कभी-कभी गर्भाशय में ट्यूमर हो जाने के कारण या कई बार गर्भपात करवाने से स्त्रियों का गर्भाशय खराब हो जाता है जिसके कारण गर्भाशय को शल्यक्रिया के द्वारा निकलवाना भी पड़ सकता है। गर्भाशय के निकल जाने पर युवावस्था में ही रज:निवृत्ति हो जाती हैं एवं स्त्रियों के अंदर संतान उत्पन्न करने की क्षमता हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है।

मासिक धर्म के समय अस्थाई तौर पर विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक लक्षण स्त्रियों में दिखाई पड़ते हैं जैसे कि स्तनों में उभार आ जाना, कमर के निचले हिस्से में भारीपन महसूस होना, स्वभाव में उग्रता, कब्ज और कुछ समय के लिए शरीर का वजन बढ़ जाना इत्यादि। उपरोक्त लक्षण मासिक धर्म के खत्म होने के बाद पुन: सामान्य हो जाते हैं। मासिक स्त्राव से निकलने वाले रक्त का रंग लाल उत्तम माना गया है। अगर स्त्राव के साथ काले थक्के, सफेद पदार्थ या कुछ पीलापन आ रहा है तो यह असामान्य स्थिति है। इसका चिकित्सीय निदान लेना आवश्यक है।

सामान्यत: स्त्रियों में 80 प्रतिशत बीमारियों का कारण मासिक धर्म का अनियमित होना है। होमियोपैथी शास्त्र के अनुसार ऋतुकाल में स्त्रियों को होमियोपैथिक औषधियों का सेवन नहीं करना चाहिए। कई बार स्नायविक दुर्बलता, गर्भाशय का पूर्ण विकसित न होना, स्त्री के जननांगों का पर्याप्त विकास न होना, रक्त की कमी, किसी गंभीर बीमारी से ग्रसित होने के कारण या फिर अनुवांशिक दोष के कारण कन्या के वयस्क हो जाने पर भी मासिक धर्म शुरू नहीं होता या फिर उसे 2-3 महिने में एक बार थोड़ा सा मासिक स्त्राव होता है और फिर अचानक बंद हो जाता है। जिसके कारण उसके सिर में भारीपन, श्वास लेने में तकलीफ, नाक एवं मलद्वार से रक्त का आना, कमर से निचले हिस्सों में असहनीय दर्द, पेट एवं जांघों का फूल जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।





. Hormonal control of menstrual cycle in human female.

मासिक धर्म सामान्य न होने पर स्त्रियों को निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- ❑ शारीरिक तौर पर मोटा एवं थुलथुलापन होना, स्वभाव से उग्र होना एवं त्वचा का श्याम वर्ण होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** मासिक धर्म देर से आने पर अत्यधिक लाभदायक औषधि है। उपरोक्त औषधि के प्रति सुग्राही स्त्री थोड़ी सी भी गर्मी सहन नहीं कर पाती।

- ❑ शीत प्रधान एवं शरीर से दुबली--पतली होना, श्वेतप्रदर से ग्रसित होना एवं मासिक धर्म विलंब से आना जैसे लक्षणों में **सीपिया 200** लाभदायक औषधि है।

- ❑ प्रथम रजोदर्शन होने के बाद किसी मानसिक आघात या न्यूमोनिया जैसी बीमारी के कारण मासिक धर्म अचानक रूक जाने पर **ऐकोनाइट 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ शरीर में रक्त की कमी होना, बायें स्तन में हमेशा दर्द बने रहना एवं डिंबकोष की स्नायविक कमजोरी के कारण रज:स्त्राव न होने की दशा में **सिमिसिफ्यूगा 6×** लाभदायक औषधि है।

- ❑ कब्ज एवं बवासीर से ग्रसित होना, रज:स्त्राव ठीक से न होना एवं स्वभाव से चिड़चिड़ा होने जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ योनि मार्ग से ऋतु स्त्राव न होकर नाक से रक्त आना, कब्ज की शिकायत रहना, अत्यधिक प्यास लगना, रोगिणी को सदैव एकांत में रहने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ कफ की प्रधानता, सिर में सदैव गर्मी महसूस होना जैसे लक्षणों वाली स्त्री के मासिक धर्म देर से आने की स्थिति में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ तलपेट में दर्द, यात्रा के समय जी मचलाना, श्वास लेने में कष्ट महसूस होना जैसे लक्षणों या किसी अन्य स्नायविक दुर्बलता से पीड़ित स्त्री के लिए **काक्यूलस 30** ऋतु स्त्राव में देरी की स्थिति में लाभदायक औषधि हैं।

- ❑ चेहरे का निस्तेज रहना, हमेशा पतले दस्त आते रहना, यकृत एवं प्लीहा की बीमारी से ग्रसित दुबली-पतली स्त्री के मासिक धर्म न आने की स्थिति में **आर्सेनिक 30** लाभकारी औषधि है।

- ❑ डिंबकोष का प्रदाह, मस्तिष्क की तरफ अत्यधिक रक्त संचार होना, चेहरे का लाल पड़ जाना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ वे स्त्रियाँ जिन्हें 1-2 बार मासिक धर्म होकर अचानक ही बंद हो जाए परंतु उन्हें ऐसा महसूस हो कि मासिक धर्म होने वाला है। उनके लिए **सेनिसियो 30** औषधि का सेवन लाभप्रद है।

- ❑ खून की कमी, सदा आलस्य बने रहना, सिर की तरफ रक्त का अत्यधिक प्रवाह जैसे लक्षणों में **फेरस फॉस 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ मुँह का स्वाद हमेशा खट्टा रहना, खट्टी डकार एवं उल्टियां होना, मीठा खाने की अत्यधिक इच्छा, योनि में शुष्कता, योनि से वायु निकलना जैसे लक्षणों में अगर स्त्री का मासिक स्त्राव देर से होता है तो **लायकोपोडियम 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ क्षय रोग के कारण रजोरोध की स्थिति में **बेसिलिनम 200, आयोडिनम 6, केल्केरिया फॉस 12×** लाभदायक औषधि है।

रजोकाल में ठंडे पानी से स्नान करना, अत्यधिक पढ़ना, लिखना, गरम एवं उत्तेजक पदार्थों का सेवन वर्जित है।

रजोरोध

रज:स्त्राव के प्रारंभ होकर अचानक ही एक या दो दिन में बंद हो जाने की अवस्था को अपूर्ण रज:स्त्राव कहते हैं। अपूर्ण रज:स्त्राव के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि ऋतुकाल में अचानक भीग जाना, शोकाकुल एवं भय ग्रस्त हो जाना, अत्यधिक शीतल पेय का सेवन करना, ठंडे प्रदेशों की यात्रा करना इत्यादि।

ऋतुकाल में संभोग करने से भी रज:स्त्राव अचानक बंद हो सकता है। ऋतुकाल के दौरान अत्यधिक मानसिक तनाव एवं स्थान परिवर्तन भी रजोरोध का कारण हो सकते हैं।

रजोरोध की स्थिति आ जाने पर निम्नलिखित **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- ❑ स्त्री में शोकाकुलता, खिन्नता या भ्रमण के कारण रजोरोध हो जाना एवं स्त्री की प्रकृति स्वच्छंद होना जैसे लक्षणों में **साइक्लेमेन 3×** लाभकारी औषधि है।
- ❑ रजोरोध के कारण आँखों के आगे अंधेरा छा जाना, सिर में भारीपन एवं गर्भाशय में तीव्र वेदना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30, 200** लाभप्रद औषधि है।
- ❑ सर्दी अथवा ठंड लग जाने के कारण हुए रजोरोध में **एकोनाईट 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ रजोरोध के कारण छाती में दर्द, सूखी खांसी, नाक से रक्त आना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ श्वेतप्रदर से ग्रसित होना, स्वभाव से एकाकी होना, शारीरिक रूप से दुबली-पतली होना एवं रजोरोध के कारण तलपेट में अत्यधिक दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ रोगिणी का स्वभाव से कोमल एवं संवेदनशील होना और रजोरोध की स्थिति

में अत्यधिक मानसिक वाचालता आ जाने के कारण उसका अकारण ही रोते रहना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 200** लाभदायक औषधि है।

- अत्यधिक मानसिक तनाव के कारण हुए रजोरोध में **इग्नेशिया 6** हितकर औषधि है।
- बहुत देर में ऋतु होना, अत्यंत दर्द एवं पीले रंग का स्त्राव से ग्रसित रोगिणी के लिए **ग्रेफाइटिस 200** लाभदायक औषधि है।
- पतले दस्तों के साथ रजोरोध होने पर **फेरम फॉस 6** हितकर औषधि है।
- ऋतु स्त्राव न होने के कारण मन में चिन्ता और भय बने रहना, ऋतु आने से पहले प्रसव के समान तीव्र दर्द होना, मस्तिष्क में रक्त का संचार बढ़ जाना, सिर का चकराना, रोगिणी का अत्यधिक आलस्य-पूर्ण होना तथा ऋतुकाल में अपने तलपेट को दबाकर आगे की ओर झुककर चलना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 6** लाभदायक औषधि है।
- डिंबाशय के प्रदाह के कारण उत्पन्न हुए रजोरोध में ऋतु स्त्राव का अचानक बंद हो जाना तथा स्त्राव का दो तीन दिन बंद रहने के बाद पुनः प्रकट हो जाना, रजस्त्राव का रंग काला होना, स्नायु संबंधी गड़बड़ी जैसे लक्षणों में **एपिस मेलिफोलियम 6** लाभदायक औषधि है।
- रजोरोध के कारण गलगण्ड से ग्रसित होना, चेहरे का रंग नीला पड़ जाना, रक्त की कमी के कारण चेहरा फूला हुआ दिखाई देना, जननेन्द्रिय की दुर्बलता आदि लक्षणों में **फेरम 30** लाभदायक औषधि है।
- किसी अज्ञात कारण वश हुए रजोरोध, कलेजे के बायीं और सुई के चुभने के समान वेदना होना, रात्रि के समय अत्यधिक पसीना आना, रोगिणी का श्वेतप्रदर से ग्रसित होना, डिंबाशय का प्रदाह से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **आस्टिलेगो 3×** लाभकारी औषधि है।
- रजोरोध से ग्रसित स्त्री के सिर में अत्यधिक तेज दर्द होना, सिर में चक्कर आना, नाक से स्त्राव होना, सोकर उठने के बाद सुस्ती अधिक लगना जैसे लक्षणों में **लेकेसिस 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- स्त्री को हर समय औंघाई आते रहना, गंभीर कब्ज रोग से ग्रसित होना, रोगिणी को गर्म पसीना आना, किसी भय के कारण हुए रजोरोध में **ओपियम 6** लाभकारी औषधि है।

अनियमित ऋतु स्त्राव

किसी मानसिक या शारीरिक समस्या से ग्रसित होने के कारण कुछ स्त्रियों में ऋतु स्त्राव 28 दिनों में न होकर 15-15 दिनों में ही होने लगता है और फिर अचानक 2-3 महिनों के लिए बंद हो जाता है। ऐसा भी देखा गया है कि कुछ स्त्रियों में 10-15 दिनों तक लगातार थोड़ा-थोड़ा ऋतु स्त्राव होता रहता है। इस प्रकार के ऋतु स्त्राव को अनियमित ऋतु कहते हैं।

मासिक धर्म के अनियमित हो जाने के बहुत से कारण हो सकते हैं।

जैसे कि-

- हारमोनल गोलियाँ लेना।
- तेज दवाइयों का सेवन करना, गर्भ निरोधक गोलियों के कारण भी मासिक धर्म का चक्र अनियमित हो जाता है। अत्यधिक गर्म एवं मादक पदार्थ जैसे शराब, अफीम, तंबाखू इत्यादि का सेवन करना, प्रथम बार सहवास करने के कारण भी नवविवाहिता स्त्रियों में मासिक धर्म का चक्र अनियमित हो जाता है। अत्यधिक मैथुन करना एवं अप्राकृतिक मैथुन के कारण भी ऋतु स्त्राव अनियमित हो जाता है। मासिक धर्म का स्त्री की मानसिक दशा से सीधा-सीधा संबंध है। अत्यधिक शोकाकुल वातावरण में निवास करना, घर में कलहपूर्ण वातावरण होना, मानसिक तनाव से ग्रस्त रहना एवं कार्य का अत्यधिक बोझ भी स्त्री के मासिक धर्म को अनियमित कर देता है।

औषधियां :

- शरीर से दुबली-पतली स्त्री को थोड़ा सा भी शारीरिक श्रम करने के बाद अथवा पखाना करते समय कांखने पर या जोर लगाने से ऋतु स्त्राव हो जाना जैसे लक्षणों में **एम्ब्राग्रेसिया 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु स्त्राव के समय स्त्री का स्वभाव अत्यंत क्रोधी प्रकृति का होना, ऋतु स्त्राव का समय पर न होना, ऋतु स्त्राव का गाढ़ा और थक्केदार होना एवं रूक-रूक कर होना जैसे लक्षणों में **कमोमिला 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- स्त्री को प्रथम ऋतु में अधिक कष्ट होना, स्त्राव थोड़ा-थोड़ा और रूक-रूक कर होना, स्त्राव में बाद बड़े-बड़े दुर्गन्ध-युक्त थक्के निकलना, योनि में अत्यधिक खुजली होना, ऋतु स्त्राव के समय पीठ एवं जननांगों में काटने जैसा दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **कास्टिकम 30** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु स्त्राव आने के पहले अकड़न के साथ दर्द होना, खड़े होते ही जोर का स्त्राव आरंभ हो जाना, ऋतुकाल से पहले कमजोरी महसूस होना, पेट फूलना, स्तनों में भारीपन महसूस होना, स्त्राव का काम मात्रा में तथा गाढ़ा होना, थोड़ा सा भी हिलने-डुलने पर तेज दर्द होना, रज:स्त्राव के बदले प्रदर स्त्राव होना जैसे लक्षणों में **काक्युलस 30, 200** लाभकारी औषधि है।

- स्त्राव का रंग काले, भूरे तथा जमे रक्त के जैसा होना, स्त्राव का दुर्गन्ध युक्त होना, योनि द्वार में अत्यधिक दबाव लगाने पर स्त्राव का कम मात्रा में होना, चेहरा पीला पड़ जाना, सिर में दर्द होना, पेट में सुई छेदने के समान दर्द होना जैसे लक्षणों में **क्रोकस 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु के पहले जरायु में भार महसूस होना, ऋतु स्त्राव का बहुत जल्दी-जल्दी होना, छाती में भार का अनुभव होना, कमजोरी महसूस होना एवं स्नायविक दुर्बलता आदि लक्षणों में **चायना 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु स्त्राव का समय से पहले और अल्प मात्रा में होना, स्त्राव का रंग भूरा होना, स्त्राव आने से पहले बहुत घबराहट होना, अकेले रहने पर डर लगना, ऋतुकाल के समय बायीं छाती में दर्द होना, हाथ पैरों का ठंडा पड़ जाना, शरीर पर छोटी-छोटी फुंसियों का ऊग आना आदि लक्षणों में **कोनियम 30** लाभदायक औषधि है।

❑ ऋतु स्त्राव का बहुत देर से होना एवं बहुत कम दिनों तक रहना तथा बहुत कम मात्रा में होना, स्त्राव का रंग लाल न होकर हल्के भूरे रंग का होना, ऋतु के आने से पहले योनि मार्ग से पानी की तरह प्रदर का निकलना, योनि में खुजली होना, स्त्री का गंभीर कब्ज रोग से ग्रसित होना, ऋतु स्त्राव के समय दोनों जांघों के बीच तकलीफ होना, पतले दस्त आना, सिर में तीव्र वेदना होना, स्त्री को एकांत में रहने से हमेशा मृत्यु का भय लगना जैसे लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 30, 200** लाभदायंक औषधि है।

❑ रजोरोध से ग्रसित स्त्री को ऋतु स्त्राव दिन के समय काले रंग का होना एवं रात्रि के समय स्त्राव बिल्कुल न होना और स्त्राव के समय बिल्कुल भी दर्द न होना, कभी-कभी पतले दस्त आना आदि लक्षणों में अनियमित स्त्राव वाली स्त्री के लिए **हेमामेलिस क्यू** लाभदायक औषधि है।

❑ ऋतु स्त्राव के समय स्त्री को जरायु पर दबाव महसूस होना, स्त्राव समय से पहले और दुर्गन्धयुक्त होना, स्त्राव के समय नाभि के आसपास दर्द होना, श्वास लेने में कष्ट होना, चेहरा पीला पड़ जाना, हर समय उल्टी होते रहना, रात-दिन आराम से सोते रहने की इच्छा होना, भूख न लगना जैसे लक्षणों में **इपिकाक 30** लाभदायक औषधि है।

❑ स्त्री को स्त्राव से पहले प्रसव की भांति भयंकर पीड़ा होना, मवाद की तरह गाढ़ा श्वेतप्रदर होना, डिंबाशय का स्नायु संबंधी रोग से ग्रसित हो जाना, स्त्री का स्वाभाव चिंता-युक्त होना, हृदय की धड़कनें तेज होना, ऋतुकाल के समय सिर में तेज दर्द होना तथा भार मालूम पड़ना जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया 30, 200** लाभकारी औषधि है।

❑ ऋतु स्त्राव कभी समय से पहले होना एवं कभी समय के बाद होना, स्त्राव का कम समय तक रहना तथा कम मात्रा में होना, सीढ़ी चढ़ने में अत्यधिक थकान महसूस होना, पखाना करते समय या उसके बाद ऋतु स्त्राव का बढ़ जाना, पेट में काटने के समान दर्द होना जैसे लक्षणों में **आयोडिनम 30, 200** लाभदायक औषधि है।

❑ मासिक धर्म रूक-रूक कर समय पर होना, रज:स्त्राव का थोड़ी मात्रा में होना, रज:स्त्राव दुर्गन्धित एवं काले रंग का होना, योनि में उत्तेजना महसूस होना, स्त्राव के समय तीव्र वेदना होना एवं स्त्री को ऐसा महसूस होना

जैसे कि योनि में से आंतरिक भाग बाहर आ जायेगें, बायें डिंबाशय में दर्द महसूस होना, मासिक धर्म में या उसके बाद मूर्च्छा आ जाना जैसे लक्षणों में **लेकेसिस 30, 200** लाभकारी औषधि है।

- मासिक धर्म शीघ्र तथा अधिक मात्रा में होना, स्तनों के नीचे डंक मारने या सुई चुभने के समान दर्द होना, रात्रि के समय पेट में अधिक दर्द होना, हाथ तथा पैरों का ठंडा पड़ जाना, सिर के अग्र भाग में असहनीय पीड़ा होना जैसे लक्षणों में **लारोसिरेसस 30** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु स्त्राव जल्दी-जल्दी आना एवं लंबे समय तक बने रहना, तलपेट में अकड़न होना, जरायु में खिंचाव महसूस होना, थक्केदार स्त्राव होना, स्त्री को एकांत में रहने की इच्छा होना, सिर में दर्द होना, सुबह उठते ही जी मचलाना या वमन होना, पीठ में इतना दर्द होना जैसे कोई पीठ में हथौड़े से मार रहा हो, स्त्री का हमेशा सुस्त रहना, पेट का कब्ज रोग से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- स्त्री का ऋतु स्त्राव अनियमित होना, स्त्राव देर से तथा बहुत ज्यादा मात्रा में होना, स्त्राव पहले पीले रंग का होना तथा बाद में मटमैले रंग का होना, जरायु और योनि में अकड़न जैसा दर्द होना, स्त्राव के समय योनि में फुंसी निकलने की अनुभूति होना, डिंबकोष में दर्द होना, ऋतुकाल के समय भोजन करते समय दाँतों में दर्द होना आदि लक्षणों में **स्टैफिसेग्रिया 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- स्त्री का जरा सा भी परिश्रम करने के बाद स्त्राव आरंभ हो जाना, स्त्राव समय से पहले और अधिक मात्रा में होना, थोड़ा सा भी हिलने-डुलने पर ऐसा महसूस होना कि रक्त का फब्बारा छूट रहा हो, आँखों से धुंधला दिखाई देना, सांस लेने में कष्ट होना, रक्त की कमी के कारण स्त्राव का पीला पड़ जाना जैसे लक्षणों में **ट्रीलियम 30, 200, 6** लाभदायक औषधि है।

- स्त्राव का दो-तीन महिने में एक बार होना, स्त्राव बहुत कम मात्रा में होना, स्त्राव के समय योनि मार्ग में जलन होना और स्त्राव का दुर्गन्धित होना, ऋतु स्त्राव के पहले दूध के समान प्रदर स्त्राव होना, गर्भस्त्राव की आशंका होना जैसे लक्षणों में **सिलिका 30, 6, 200** लाभदायक औषधि है।

- मासिक स्त्राव का जल्दी-जल्दी होना तथा बहुत अधिक मात्रा में होना, डिंबाशय में दर्द होना, स्नायविक दुर्ब़लता, जरा सा भी चलने-फिरने में भयंकर दर्द होना, रात्रि में चौंक कर उठना, हिस्टीरिया के लक्षण प्रकट होना जैसे लक्षणों में **जेन्थकसाइलम 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु स्त्राव का स्थाई होना, रज:स्त्राव का अधिक मात्रा में होना, स्त्राव का कभी पीला होना तथा कभी काला होना, नींद न आना, अत्यधिक थकान एवं उदर में दुर्बलता मालूम होना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 30, 200** लाभदायक औषधि है।

अनुकल्प रजःस्त्राव

कई बार स्त्रियों में योनि मार्ग से रजःस्त्राव न होकर या योनि मार्ग से थोड़ा सा रजःस्त्राव होने के बाद गुदा, नाक इत्यादि से रक्त स्त्राव होने लगता है ऐसी स्थिति को अनुकल्प रजःस्त्राव कहते हैं।

औषधियां :

- योनि मार्ग से रजःस्त्राव न होकर नाक, गुदा इत्यादि से रजःस्त्राव होने जैसे लक्षणों में **हेमामेलिस** 1×, 6 लाभदायक औषधि है।
- योनि मार्ग से रजःस्त्राव न होकर उसका मलद्वार से स्त्रावित होना, गुदाद्वार में अत्यधिक दर्द महसूस होना एवं मस्सों का बाहर की तरफ निकल आना जैसे लक्षणों में **कालिंसोनिया 30** लाभदायक औषधि है।
- जरायु के बदले केवल नाक से ही रक्त का लाल फब्बारा निकलने की स्थिति में **इपिकाक** 30 लाभकारी औषधि है।
- नाक और कान से रक्त निकलने के साथ-साथ स्तनों में भारीपन एवं टपकन-युक्त दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला** 6 लाभदायक औषधि है।

अतिरज :

मासिक धर्म के समय सामान्य से अधिक मात्रा में रक्त का निकलना, मासिक धर्म कई दिनों तक चलते रहना, मासिक धर्म का सप्ताह में दो या इससे ज्यादा बार होना अतिरज: के लक्षण हैं। अत्यधिक मैथुन, बहुत अधिक मानसिक चिंता, अश्लील और कामुक साहित्य का उपयोग करना, गरिष्ठ भोजन, मांसाहार, मद्यपान, कई बार गर्भपात होना, अप्राकृतिक मैथुन, स्नायु रोग, योनि एवं गर्भाशय का ढीला पड़ जाना अतिरज: स्त्राव के कारण हो सकते हैं। अतिरज: स्त्राव के कारण स्त्रियों के शरीर में दर्द, जोड़ों का दुखना, तलुओं का ठंडा पड़ जाना, आँखों का धस जाना, शरीर में रक्त की कमी आ जाना, किसी काम में मन न लगना, दृष्टि-क्षीणता एवं बेहोशी इत्यादि जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

औषधियां :

- स्त्रियों के जरायु में ट्यूमर हो जाने के कारण उन्हें रज:स्त्राव काफी लंबे समय तक होते रहता है। जरायु में ट्यूमर होने के कारण अतिरज: में **हाइड्रैस्टिक क्यू** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

- कान में हमेशा आवाजें आते रहना, रज:स्त्राव के साथ काले रंग के थक्के निकलना, कमजोरी महसूस होना, रोगी का दुबला-पतला या कृष्काय होना जैसे लक्षणों में **चायना 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- किसी बाहरी चोट के कारण अधिक स्त्राव होने की स्थिति में रोगिणी को **हेमामेलिस 3×** का सेवन करना चाहिए।

- अतिरज: से ग्रसित स्त्री जिसका शरीर थुलथुला एवं मोटा हो, सिर में पसीना आता हो, हाथों की हथेलियों एवं पाँव के तलुओं में हमेशा चिपचिपाहट बनी रहना, पसीने से खट्टी बदबू आना, ऋतुकाल के समय योनि में अत्यधिक खुजली होना जैसे लक्षणों में **कल्केरिया कार्ब 6, 200** हितकर औषधि है।

- ऋतु स्त्राव से पहले पेट संबंधी बीमारियों का बढ़ जाना जैसे कि खाना न पचना, पेट में ऐंठन पड़ना इत्यादि लक्षणों में **बोरेक्स 6** हितकर औषधि है।
- रोगिणी का कोमल तथा कमजोर होना, शरीर में रक्त की कमी होना जैसे लक्षणों में **फेरम मेट 6** हितकर औषधि है।
- प्रसव के बाद आकस्मिक राज:स्त्राव में **इपिकाक 30** लाभकरी औषधि है।
- यदि किसी मानसिक आघात के कारण रज:स्त्राव में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है तो **केमोमिला 12, 30, 200** लाभप्रद औषधि है।
- रोगिणी के खड़े हो जाने पर रज:स्त्राव बंद हो जाना परंतु बैठते ही या लेटते वक्त रक्त स्त्राव पुन: प्रांरभ हो जाना जैसे लक्षणों में **मेग्नेशिया कार्ब 6, 30** लाभदायक औषधि है।
- रज:स्त्राव से पहले प्रसव वेदना जैसा दर्द महसूस होने पर **केमोमिला 30** लाभदायक औषधि है।
- अतिरज: की पुरानी बीमारी में **आर्सेनिक आयोड 30** हितकर औषधि है।
- शीत प्रधान रोगिणी जिसे रज:स्त्राव समय के पूर्व ही प्रारंभ हो जाता हो और निरंतर कई दिनों तक जारी रहता है जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** हितकर औषधि है।
- प्रसव के बाद अचानक रज:स्त्राव, मूत्र एवं गुदा मार्ग में प्रदाह जैसे लक्षणों में **इरिंजिन 3×** सर्वोत्तम औषधि है।
- दुर्गन्ध-युक्त अतिरज: स्त्राव, थोड़ा सा चलने-फिरने में रज:स्त्राव का बढ़ जाना, योनि पर दबाव पड़ना, थक्केदार काला रज:स्त्राव जैसे लक्षणों में **क्रोकस सैटाइवा 3** लाभदायक औषधि है।
- चोट लगने के कारण जरायु से अत्यधिक रज:स्त्राव की स्थिति में **अर्निका 2×** लाभकारी औषधि है।
- यदि अधिक रज:स्त्राव के कारण पेशाब में कष्ट एवं धातु संबंधी विकार दिखाई पड़ने पर **अशोका क्यू** की 5--10 बूंदें नियमित रूप से लेना चाहिए।
- अत्यधिक रज:स्त्राव होने पर **फ्यूकस रोली ज्योसा 1×** लाभदायक औषधि है।

- योनि से निकलने वाला रज:स्त्राव का गरम मालूम होना, स्त्राव का रंग लाल चमकीला होना, वेग और दर्द के साथ स्त्राव का निकलना, सिर में भारी पन महसूस होना, पीठ में दर्द होना, चेहरे और आँखों का लाल दिखाई देना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- रज:स्त्राव का रंग गहरा लाल होना, ओंठ और मुख का सूख जाना, भोजन के बाद बिस्तर पर लेटते ही हल्की सी मूर्च्छा या कमजोरी आ जाना, प्यास अधिक लगना, शौंच करते समय मल का अधिक कठोर होना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- वृद्ध स्त्रियों को अत्यधिक रज:स्त्राव होना, रात को सोते समय रज:स्त्राव का बढ़ जाना, पेशाब की बीमारियों से ग्रसित होना, हिस्टीरिया के लक्षण प्रकट होना जैसे लक्षणों में **मेग्नेशिया म्यूर 30, 200** लाभकारी औषधि है।
- रज:स्त्राव के साथ खून के कतरे निकलना, अत्यधिक सहवास की इच्छा होना, जरायु में प्रदाह होना, पुट्ठे में दर्द होना, योनि में अत्यधिक तेज दर्द होना, स्त्री को ऐसा महसूस होना जैसे कि पेट के समस्त अंग योनि मार्ग से बाहार निकल आयेंगे। उपरोक्त लक्षणों में **प्लैटिना 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- पुराना रोग होने के कारण राज:स्त्राव का बार-बार होना, बार-बार रज:स्त्राव होने के कारण स्त्री का शरीर अत्यधिक क्षीण हो जाना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।
- रज:स्त्राव का समय से पहले होना, स्त्राव का रंग काला होना, रज:स्त्राव का कुछ दिन में बंद होकर पुन: शुरू हो जाना, ऋतुकाल के समय स्त्री को कमर में तेज दर्द होना, पेट में ऐंठन होना, कब्ज रोग से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **सिमिसिफ्यूगा 30, 200** लाभकारी औषधि है।
- स्त्री को मूत्र नली एवं गुदाद्वार में दर्द होना, रूक-रूक कर काला और चमकीला स्त्राव निकलना, नाभि में दर्द होना, वमन की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **एरिजिरेन 30** लाभदायक औषधि है।
- अत्यंत दुर्गन्धयुक्त रज:स्त्राव होना, रज:स्त्राव के साथ बड़े-बड़े थक्के निकलना जैसे लक्षणों में **विनकामाइनर 30, 200** लाभदायक औषधि है।

ऋतुशूल

रज:स्त्राव में गड़बड़ी के कारण स्त्रियों के शरीर का निचला हिस्सा जैसे कमर, पेट, योनि द्वार, जंघायें, तलुए, घुटनों के जोड़ इत्यादि में एक प्रकार का प्रदाह एवं दर्द हमेशा महसूस होते रहता है जिसे ऋतुशूल कहते हैं। यह रोग सामान्यत: जरायु का अपने स्थान से सरक जाने, जरायु में प्रदाह, श्वेतप्रदर, अत्यधिक मैथुन इत्यादि के कारण उत्पन्न होता है। वात, हिस्टीरिया इत्यादि से ग्रसित स्त्रियों में यह कष्ट अधिक होता है। इस रोग के कारण कई बार बुखार, संपूर्ण शरीर में दर्द, कब्ज, सिर में चक्कर, आलस्य, कमजोरी, वमन इत्यादि जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

ऋतुशूल की अवस्था में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का सेवन करना चाहिए।

- ❑ ऋतु स्त्राव के समय पेट का बेहद फूल जाना एवं खट्टी डकारें आना, चलते समय टांगों का लड़खड़ाना, पेट में ऐंठन, सीने में भारीपन एवं श्वास लेने में कष्ट होना जैसे लक्षणो में **काक्युलस** 6, 30 लाभदायक औषधि है।
- ❑ ऋतुशूल के समय थोड़ी थोड़ी देर में दर्द के स्थान का बदलते रहना, रोगिणी को ठंड लगके ज्वर आना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला** 30 लाभदायक औषधि है।
- ❑ ऋतुशुल के साथ बार बार पेशाब जाने की इच्छा होना, रोगिणी का पित्त प्रधान एवं उग्र स्वभाव का होना जैसे लक्षणों में **केमोमिला** 12 हितकर औषधि है।
- ❑ गुदाद्वार एवं जरायु में ऐंठन के साथ ऋतुशूल होना, सिकाई करने से रोगिणी को आराम मिलना जैसे लक्षणों में **मेग्नेशिया** 6, 30 सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- ❑ तलपेट से जंघाओं तक ज्वर के साथ तीव्र वेदना होने जैसे लक्षणों में **जेन्थक्साइलम** 3× लाभकारी औषधि है।

- ऋतुकाल में मल त्याग करते समय अत्यधिक कष्ट होना, मस्तिष्क में रक्त संचय एवं कनपटी में दर्द, आँख, नाक एवं मुँह का लाल हो जाना, छाती से पसीना आना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।

- पेट में बायीं ओर दर्द रहने जैसे लक्षण में **बोरेक्स** 1× लाभदायक औषधि है।

- अत्यधिक रज:स्त्राव के कारण आँखों के चारों ओर चकते या धब्बे पड़ जाना, प्रात:काल ऋतुशूल का बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** लाभदायक औषधि है।

- संपूर्ण शरीर में ऐंठन होना, रोगिणी का दर्द के मारे चीख उठना जैसे लक्षणों में **क्यूप्रम मेट** 30 लाभदायक औषधि है।

- हिस्टीरिया की बीमारी से ग्रसित रोगिणी के लिए **कोलाफाइलम** 1× ऋतुशूल में सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

- योनि द्वार में अकड़न हो जाना, गर्दन में ऐंठन पड़ना एवं ज्वर रहने की स्थिति में **जेल्सीमियम** 1× लाभदायक औषधि है।

- डिंबकोष में मधुमक्खी के काटने जैसा दर्द महसूस होना, दर्द के मारे रोगिणी का छटपटा उठना जैसे लक्षणों में **एपिस मेल 6, 30** लाभकारी औषधि है।

- मूत्राशय एवं मलाशय में काटने जैसा दर्द होना, दुर्गन्ध-युक्त स्त्राव होना, पेट में अत्यधिक दर्द के कारण ऐसा महसूस होना जैसे कि अतड़ियाँ योनि भाग से बाहर निकल पड़ेंगी। उपरोक्त लक्षणों में **सिकेली कोर** 6 लाभकारी औषधि है।

- ऋतुशूल में कब्ज रहना एवं स्त्राव के साथ श्लेष्मिक झिल्ली के टुकड़ों का निकलना जैसे लक्षणों में **कालिन्सोनिया** 1× लाभदायक औषधि है।

- ऋतुशूल के कारण रोगिणी का अत्यधिक व्यथित हो जाना एवं उसका रूदन करते रहना जैसे लक्षणों में **केक्टस 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु स्त्राव के समय जरायु में अधिक दर्द होना, कमर में दर्द होना, शरीर

में अकड़न आ जाना जैसे लक्षणों में **बाइबर्नम ओपुलस 6** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु स्त्राव के समय जरायु में अकड़न जैसा दर्द होना, स्त्राव जल्दी जल्दी होना, मूत्र त्यागने में कष्ट होना, बार बार गर्भ स्त्राव होना, योनि प्रदेश में अत्यंत खुजली महसूस होना, ऋतु स्त्राव के बदले श्वेतप्रदर का होना, पीठ में अत्यधिक तेज दर्द होना जैसे लक्षणों में **सेवाइना 6, 30** लाभप्रद औषधि है।

- ऋतु स्त्राव के साथ काले रंग के टुकड़े निकलना, स्त्राव का दुर्गन्ध युक्त होना, जरायु का अपने स्थान से हट जाना, पेट फ़ूलना, स्त्री को वमन की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **क्रियोजेट 12** लाभकारी औषधि है।

- स्त्राव का रंग काला तथा स्त्राव का जमा हुआ होना, योनि में भार महसूस होना, रोगिणी का गंभीर कब्ज रोग से ग्रसित होना, ऋतु काल से पूर्व प्रसव के समान वेदना होना, स्त्राव का जल्दी होना तथा बहुत दिनों तक जारी रहना जैसे लक्षणों में **प्लैटिनम 30** लाभदायक औषधि है।

- स्त्राव का अधिक मात्रा में होना, स्त्राव के समय तलपेट में तेज दर्द होना, स्त्राव के समय योनि में सुरसुराहट महसूस होना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 30** लाभदायक औषधि है।

- स्त्राव का समय से बहुत पहले आ जाना, स्त्राव के साथ बड़े टुकडे निकलना, तलपेट में अकड़न के जैसा दर्द होना, रोगिणी का स्वाभाव उग्र हो जाना, हमेशा एकांत में रहने की इच्छा होना, पेट में गैस बनना, मिचली आना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु स्त्राव से पूर्व सिर में दर्द होना, स्तनों में भारीपन महसूस होना, स्त्राव निकलते समय तेज दर्द होना जैसे लक्षणों में **कोलोफाइलम क्यू, 3, 6** लाभदायक औषधि है।

- दो ऋतु स्त्राव के बीच के समय गाढ़ा, काला, पीला तथा दुर्गन्ध युक्त स्त्राव होना। स्त्राव के समय ऐंठन के समान दर्द होना जिसके कारण रोगिणी अपने तलपेट को तकिया इत्यादि से दबाये रखती है अथवा कोई कड़ा

पदार्थ कसकर पकड़ रखती है। उपरोक्त लक्षणों में **कोलोसिन्थ 30** लाभकारी औषधि है।

- स्त्राव का पानी जैसा पतला होना, स्त्राव बहुत विलंब से होना, योनि मार्ग में अधिक खुजली होना, घुटने तथा पुट्ठों में भार का अनुभव होना, स्त्राव के समय पीठ में दर्द होना जैसे लक्षणों में **केलि कार्ब 30** सर्वोत्तम औषधि है।

- जरायु पेशियों का कमजोर होने के कारण शिथिल पड़ जाना, स्त्राव का समय से पहले तथा स्थाई होना, थोड़ी सी भी उत्तेजना के कारण रक्त स्त्राव होना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभकारी औषधि है।

- मासिक स्त्राव अल्प मात्रा में होना, स्त्राव के समय प्रसव के समान वेदना होना, श्वेतप्रदर से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **लेकेसिस 30, 200** लाभकारी औषधि है।

- ऋतु स्त्राव देर से होना तथा अधिक मात्रा में होना, कभी कभी ऋतु स्त्राव एकदम से बंद हो जाना तथा थोड़ा भी चलने फिरने से स्त्राव का अल्प मात्रा में निकलना, ऋतु से पूर्व सिर में भारीपन महसूस होना, नाक से रक्त निकलना, श्वेतप्रदर से ग्रसित होना, अत्यधिक बेचैनी महसूस होना, पेशाब करते समय जलन होना, स्त्राव का रंग काला होना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30, 200** लाभप्रद औषधि है।

रजोनिवृत्ति

हमारे देश में वातावरण के मुताबिक स्त्रियों में रज:स्त्राव 12 से 13 वर्ष की अवस्था में शुरू हो जाता है एवं समान्यत: 40 से 45 वर्ष की उम्र में स्त्रियां रजोनिवृत्त हो जाती हैं। रजोनिवृत्ति का तात्पर्य यह है कि स्त्री में संतान उत्पन्न करने की क्षमता समाप्त हो जाना। ठंडे देशों की अपेक्षा गर्म देशों में स्त्रियां अधिक समय तक रज:स्वला रहती हैं यही कारण है कि गर्म देशों में प्रजनन दर ठंडे देशों की अपेक्षा ज्यादा होती है। गर्म देशों में स्त्री ठंडे देशों की अपेक्षा जल्दी गर्भ धारण करती हैं। रजोनिवृत्ति के समय जरायु का आकार छोटा हो जाता है। स्त्री में डिंबग्रंथियां अक्रियाशील हो जाती है और डिंब का बनना बंद हो जाता है। डिंब का बनना एवं स्त्री का रज:स्वला होना एक साथ ही होता है। 40 50 वर्ष की उम्र में अगर स्त्री का मासिक धर्म स्वयं ही बंद हो जाए और उसे कोई उपसर्ग व्याधि न हो तो यह एक सामान्य अवस्था है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि रजोनिवृत्ति से पूर्व स्त्री की मानसिक और शारीरिक स्थिति में असामान्य परिवर्तन आ जाता है जैसे कि स्नायविक उग्रता, हिस्टीरिया, शरीर में गर्मी का प्रवेश होना, चेहरे से चिनगारी निकलना महसूस होना, रक्त चाप का बढ़ जाना, रक्त का मस्तिष्क की तरफ अत्यधिक दबाव बनाना, हृदय का तेजी से धड़कना, स्वभाव में चिड़चिड़ाहट, अति संवेदनशील हो जाना, अत्यधिक पसीना आना इत्यादि। उपरोक्त लक्षणों में उचित औषधि लेकर निदान कराना चाहिए।

रजोनिवृत्ति काल में असमानता आ जाने कि स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- चेहरे का लाल हो जाना, रक्त के दाब का शरीर के ऊपरी हिस्से की तरफ ज्यादा हो जाना, दोपहर के वक्त शरीर में कमजोरी महसूस होना, पाँव में ठंडक पड़ जाना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।
- रजोनिवृत्ति काल में शरीर के तापमान का बढ़ा हुआ महसूस होना, अत्यधिक पसीना आना, सिर में दर्द बने रहना एवं रात्रि के समय इन सब लक्षणों में वृद्धि हो जाने की स्थिति में **लेकेसिस 30** लाभकारी औषधि है।

- शारीरिक अंगों का निम्तेज हो जाना, श्वास नलिका में अटकन महसूस होना, उग्र स्नायविक लक्षण एवं कब्ज बने रहना जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया 200** लाभदायक औषधि है।

- रजोनिवृत्ति काल में आये दिन सिर में दर्द रहना, हथेली तथा पाँव के तल के अग्र भाग में गर्मी महसूस होना, चेहरे से हल्का पसीना आना एवं चेहरे की लालिमा बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **सेग्युनेरिया 3×** सर्वोत्तम औषधि है।

- दुबले-पतले कृष्काय शरीर वाली स्त्री जिसकी प्रकृति शीत प्रधान हो उसे रजोनिवृत्ति काल में अत्यधिक शारीरिक कमजोरी महसूस होना, अचानक मूर्च्छा आ जाना एवं मानसिक रूप से उदासीन रहना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** लाभदायक औषधि है।

- रजोनिवृत्ति काल से पहले अत्यधिक रज:स्त्राव होना, दो मासिक स्त्राव के बीच पीला एवं दुर्गन्ध युक्त प्रदर स्त्राव होना जैसे लक्षणों में **क्रियोजेट 200** हितकर औषधि है।

- रजोनिवृत्ति काल में ब्लड प्रेशर का बढ़ जाना जैसे लक्षण में **ग्लोनाइन 30** लाभदायक औषधि है।

- रोगिणी के स्वभाव में बेचैनी, जोड़ों में दर्द, जरायु में चुभन, माथे पर दाग पड़ जाना जैसे लक्षणों में **कोलोफाइलम 3** लाभदायक औषधि है।

- रजोनिवृत्ति काल में थक्केदार रज:स्त्राव होना, सिर में रक्त संचय, आँखों में पीलापन, चेहरे पर सूजन जैसे लक्षणों में **चायना 30** लाभप्रद औषधि है।

- पित्त की प्राधनता एवं भूख की कमी महसूस होना जैसे लक्षणों में **केलि कार्ब 30** हितकर औषधि है।

- पाक स्थली में खालीपन महसूस होना जैसे लक्षण में **एकोनाइट 3** हितकर औषधि है।

- रजोनिवृत्ति काल में अनिद्रा जैसे लक्षण में **बेलेरियाना 3** लाभदायक औषधि है।

- स्त्राव का दुर्गन्धित होना, स्त्राव के समय जलन नहीं होना, आधे सिर में दर्द होना, श्वेतप्रदर से ग्रसित होना, स्त्री का स्वभाव कोमल प्रकृति का होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- रजोनिवृत्ति के कारण अथवा अनेक प्रसवों के कारण जरायु में शिथिलता आना, कमर में हमेशा दर्द बना रहना, रोगिणी को अधिक नींद आना जैसे लक्षणों में **कैलिस पैटेनिस 30** लाभदायक औषधि है।

अध्याय--19

हरित रोग

स्त्री के अंदर रक्त की कमी या खून में लाल कणों की न्यूनता के कारण शरीर में एक निर्जिवता सी आ जाती है एवं शरीर का रंग सामान्य अवस्था से हटकर हल्का मटमैला सा प्रतीत होता है और शरीर का आभा-मंडल हल्का सा हरा महसूस होता है इस विकार को हरित रोग कहते हैं।

शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी आ जाने से वयस्क लड़कियों में कभी-कभी मासिक धर्म बिल्कुल नहीं होता या बहुत न्यून मात्रा में होता है। हीमोग्लोबिन की कमी के कारण वयस्क लड़कियों में आलस्य, किसी काम में मन न लगना, आँखों के चारों ओर काले धब्बे पड़ जाना, कब्ज के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता आ जाती है। विवाहित स्त्रियों में इस रोग के कारण एक अजीब सा ठंडापन आ जाता है एवं काम के प्रति इच्छा बिल्कुल न्यून हो जाती है या कभी कभी खत्म हो जाती है। हरित रोग से ग्रसित होने के कारण स्त्री संभोग के बाद अत्यधिक कमजोरी महसूस करती है। इस रोग के कारण शरीर का तापमान सामान्य से कम हो जाता है एवं हाथ की हथेलियों एवं तलुओं से चिपचिपा पसीना निरंतर आता रहता है। किसी भी बीमारी का शरीर से संक्रमण शीघ्र ही हो जाता है एवं शरीर के अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। 80 प्रतिशत गर्भपात हरित रोग के कारण ही होता है। ऋतु संबंधी गड़बड़ियों का मुख्य कारण हरित रोग है। युवावस्था में हरित रोग से ग्रसित लड़कियों में चेहरे पर मुँहासे अक्सर देखे गये हैं एवं युवावस्था में इस रोग से स्तनों का उभार और वक्ष-स्थल का विकास नहीं हो पाता। न ही विवाहिता स्त्री शिशु को दुग्धपान कराने के योग्य रह जाती है। थोड़े से परिश्रम या संभोग के बाद नाड़ी की गति 120 से 140 बार धड़कने लगती है एवं हृदय की धड़कन भी अत्यधिक तेज हो जाती है।

यह रोग ऋतु की गड़बड़ी, उचित संयमित भोजन न करना, हस्थ-मैथुन, अत्यधिक मानसिक क्लेश, पेट में कब्ज, भोजन के प्रति अरूचि इत्यादि के कारण हो सकता है।

हरित रोग से ग्रसित होने की अवस्था में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन लाभप्रद होता है।

- **फेरम रेडेक्टम 3×** इस रोग की सर्वश्रेष्ठ औषधि है। इसका सेवन दिन में दो या तीन बार किया जा सकता है।
- **फेरम मेटेलिकम 2×** उन स्त्रियों के लिए अत्यधिक लाभदायक है जिन्हें संभोग के बाद अत्यधिक कमजोरी महसूस होती है, कान में आवाजें सुनाई देती हैं एवं उनकी प्रकृति शीत प्रधान होती है साथ ही वे रजोरोध से ग्रसित होती हैं।
- हरित रोग से ग्रसित स्त्री जिसकी त्वचा पर थोड़ा सा दबाव पड़ने पर निशान बन जाता है, पेट में अम्ल का अत्यधिक मात्रा में बनना, अत्यधिक संवेदनशील होना और मासिक धर्म के समय स्त्राव अत्यधिक न्यून मात्रा में होता है। इन सब लक्षणों में **फेरम म्यूर 3×** भोजन के बाद लेना हितकर होता है।
- छोटी उम्र की लडकियां जो कि स्नायविक दुर्बलता के कारण बेचैनी, सिर में दर्द महसूस करती हों और हरित रोग के कारण जिनकी शारीरिक बनावट में वृद्धि देर से हो रही हो उनके लिए **कल्केरिया फॉस 3×** लाभकारी औषधि है।
- वह रोगिणी जो हरित रोग के साथ हिस्टीरिया रोग से भी ग्रसित हो तो उसके लिए **बेलेरियाना क्यू** लाभप्रद औषधि है।
- वो स्त्रियां जो हरित रोग से काफी लंबे समय से ग्रसित हैं एवं जिनमें कि यह बीमारी क्रानिक हो गयी हो उनके लिए **नेट्रम म्यूर 30** लाभदायक औषधि है।
- ऋतु स्त्राव का बिल्कुल न होना, शरीर में अत्यधिक ठंडक महसूस होना, रोगिणी का अत्यधिक दुबला पतला एवं कृशकाय होना, उसका श्वेतप्रदर से ग्रसित होना इत्यादि जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 3×, 30** लाभदायक औषधि है।
- हाथ पाँव के तलुओं में गर्मी महसूस होना, रात्रि के समय अत्यधिक बेचैनी महसूस होना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- **सल्फर 30** के सेवन के कुछ समय पश्चात रोगिणी को केल्केरिया **कार्ब 30** का सेवन कराने से वह पूर्णतः स्वस्थ्य हो जाती है। मुख्य रूप से **पल्सेटिला, सल्फर, केल्केरिया कार्ब** हरित रोग की मुख्य औषधियां मानी जाती हैं। **केल्केरिया कार्ब** किशोर अवस्था (12 13 वर्ष की उम्र) की लड़कियों के लिए अत्यधिक लाभदायक औषधि है।

हरित रोग से ग्रसित स्त्री को संतुलित भोजन लेना चाहिए। दूध से बनी वस्तुएं, दही, मट्ठा, पनीर, हरी सब्जियां विशेषकर पालक, पके हुए ताजे फलों के रस का सेवन लाभदायक होता है।

हरित रोग से ग्रसित स्त्री के लिए ठंडे पानी या नदी इत्यादि में स्नान करना, धूप में बैठना तथा कपड़े उतारकर संपूर्ण शरीर को सूर्य स्नान कराना लाभदायक होता है।

- अत्यधिक कमजोरी के कारण संभोग के बाद वमन की इच्छा या मूर्च्छा आ जाना पेट में दर्द होना जैसे लक्षणों में **अर्जेण्टम नाइट्रिकम 30** लाभदायक औषधि है।

- हरित रोग के कारण गर्भपात हो जाना, शरीर का फूल जाना, त्वचा का शुष्क पड़ जाना जैसे लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 3×** लाभदायक औषधि है।

- हरित रोग से ग्रसित स्त्री जिसे निष्कासन करते समय अधिक जोर लगाना पड़ता हो, मल सूखा एवं कई बार में होता हो, अक्सर सिर के आधे हिस्से में दर्द बना रहता हो, प्रदर के साथ श्लेष्मा निकलना, रजोरोध से ग्रसित होना, मासिक स्त्राव लाल रंग का न होकर पीले अथवा हरे रंग का होता हो इन सब लक्षणों में **सीपिया 12** लाभदायक औषधि है।

- किसी चोट या बीमारी के कारण अधिक मात्रा में रक्त स्त्राव हो जाने के कारण रोगी के कमजोर हो जाने पर **आर्सेनिक 30** लाभदायक औषधि है।

- हरित रोग के कारण जरायु में अकड़न, सिर में चक्कर आना, तलपेट का भारी महसूस होना, अत्यधिक उत्तेजना, कब्ज रोग से ग्रसित होना, रोगिणी को हमेशा मृत्यु भय लगना जैसे लक्षणों में **प्लैटिना 30** लाभकारी औषधि है।

- हरित रोग के लक्षण बाल्यावस्था में प्रकट हो जाना, रात्रि में सोते समय माथे से पसीना आना जिसके कारण तकिये का भीग जाना, पाँव का ठंडा पड़ जाना, पकाशय में अम्ल अधिक बनना, मेरूदंड को सिकोड़कर लेटने से आराम महसूस होना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।

- मस्तिष्क तथा छाती में रक्त का संचार अधिक बढ़ जाना, पेट में भार का अनुभव होना, पाँव का सुन्न पड़ जाना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** सर्वोत्तम औषधि है।

- हरित रोग से ग्रसित स्त्री को जरायु प्रदेश में दवाव पड़ने के कारण अत्यधिक दर्द होना, स्त्री को टांग के ऊपर टांग रखकर बैठने की प्रवृत्ति होना, शौच जाते समय जोर लगाने पर भी मल का न निकलना, पेट में अधिक गैस बनना जैसे लक्षणों में **सिरिया 30** लाभदायक औषधि है।

- हाथ पाँव का भारी हो जाना, भोजन के बाद वमन की इच्छा होना, यकृत में सुई चुभने के समान तेज दर्द होना, प्यास अधिक लगना, स्तनों में भारीपन महसूस होना, अकारण ही रोने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **कोनियम मेकुलेटम 30** लाभदायक औषधि है।

- हरित रोग के कारण पेट में अकड़न महसूस होना, पाँव के तलुओं का फूल जाना, श्वास लेने में कष्ट होना, अत्यधिक कमजोरी महसूस होना जैसे लक्षणों में **प्लम्बम मेटालिकम 30** लाभदायक औषधि है।

- अकारण ही ऋतु स्त्राव का बंद हो जाना, स्वास्थ्य में क्षीणता आ जाना, जरायु में अकड़न महसूस होना, गर्म तथा चटपटी वस्तुएं खाने की इच्छा होना, वमन की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **काक्युलस इण्डिका 30** लाभदायक औषधि है।

- रज:स्त्राव का योनि के बदले नाक, कान, मुख इत्यादि से निकलना, कफ के साथ खून निकलना, कमर में दर्द होना, सिर में चक्कर आना, हृदय का तेज धड़कना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 12, 30** लाभदायक औषधि है।

- स्त्री को चूना, मिट्टी, चाक इत्यादि खाने की इच्छा होना, भोजन के बाद सुस्ती महसूस होना, रात्रि में सोते समय अचानक ही चौंककर उठ जाना जैसे लक्षणों में **एसिड नाइट्रिक 30** लाभदायक औषधि है।

- हरित रोग से ग्रसित स्त्री को खट्टी डकारें आना, योनि से वायु निकलना, जननांगों में अत्यधिक खुजली होना, मानसिक कष्ट होना जैसे लक्षणों में **लायकोपोडियम 30, 200** लाभदायक औषधि है।

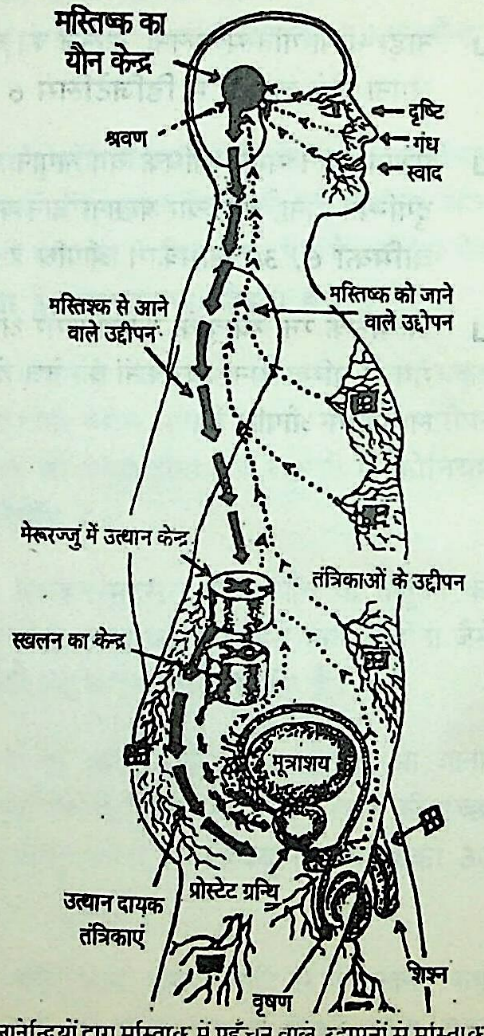
- नाड़ी धीमी गति से चलना, कलेजे का बहुत जोर से धड़कना, हमेशा सुस्ती लगना जैसे लक्षणों में **डिजिटेलिस 6** लाभदायक औषधि है।

- पेशाब करते समय अधिक वेग लगाने पर थोड़ी मात्रा में होना, पेशाब का दुर्गन्धित होना, बार बार पखाना जाने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 6, 30** लाभकारी औषधि है।

- अत्यधिक रक्त स्राव के कारण शरीर क्षीण हो जाना, पेट का फूलना, कब्ज रोग से ग्रसित होना, धड़कनों का तेज हो जाना जैसे लक्षणों में **चायना 30** लाभकारी औषधि है।

कामोन्माद

संभोग की अत्यधिक बढ़ी हुई आकांक्षा को कामोन्माद कहते हैं। इस बीमारी से ग्रसित स्त्री के अंदर हमेशा काम की अत्यधिक इच्छा बनी रहती है एवं एक बार संभोग हो जाने के बाद भी उसमें तृप्ति नहीं आती है। उसका मन, मस्तिष्क हर समय काम क्रीड़ा के बारे में ही सोचता रहता है। सामान्यत: संभोग की चरम स्थिति पर पहुँचकर स्त्री स्खलित हो जाती है परंतु ठीक इसके विपरीत स्खलित हो जाने के बाद भी कामोन्माद से ग्रसित स्त्री अपने आपको अतृप्त महसूस करती है। उसके मन मस्तिष्क से काम के भाव किसी भी क्षण के लिए विलोपित नहीं होते हैं। कई बार उसका चैतन्य मस्तिष्क भी उसके अवचेतन में चलने वाले काम के भाव को नहीं रोक पाता और वह अपने मनोभाव को छुपाने में भी असमर्थ हो जाती है। सामान्यत: यह बीमारी युवावस्था में अधिक पायी जाती है। ऐसा भी देखा गया है कि रजोनिवृत्ति काल में स्त्रियां अत्यधिक कामुक हो



ज्ञानेन्द्रियों द्वारा मस्तिष्क में पहुँचने वाले उद्दीपनों से मस्तिष्क में स्थित यौन केन्द्र उत्तेजित होकर उद्दीपनों को मेरूरज्जु में स्थित उत्थान केन्द्र में और फिर स्खलन केन्द्र में भेजता है जिसमें लिंगोत्थान होने के पश्चात् वीर्यपात है।

जाती हैं। कामोन्माद से ग्रसित स्त्री कई बार बहुपुरूष गामी एवं अप्राकृतिक मैथुन जैसी प्रवृत्ति से ग्रसित हो जाती है। इस रोग में स्त्री के मन मस्तिष्क में निरंतर अश्लील विचार चलते रहते हैं एवं उसका मानसिक चिंतन काम क्रीड़ा के आसपास ही घूमता रहता है। उसकी योनि मार्ग में हमेशा स्पंदन एवं एक प्रकार की खुजली चलती रहती है। इस रोग में स्त्री के स्तनों एवं गुप्तांगों में रक्त का प्रवाह अत्यधिक बढ़ जाता है एवं उसके गुप्तांग बहुत अधिक क्रियाशील और संवेदनशील हो जाते हैं। मस्तिष्क की ग्रंथियों में कई बार काम जनित हार्मोन्स की अधिकता के कारण भी यह रोग हो जाता है। इस रोग से ग्रसित युवती किसी भी पुरूष के संसर्ग में आने के बाद उसे लेकर अपने मन के अंदर तरह तरह की अश्लील कल्पनाएं करने लगती है। किसी भी पुरूष को देखकर कामोन्माद से पीड़ित स्त्री के मनोभाव असामान्य हो जाते हैं एवं वह उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए किसी भी सीमा को पार करने लग जाती है। जिन स्त्रियों में मांस पेशियां मजबूत होती हैं एवं शरीर में बालों की अधिकता, मुख गह्वर बड़ा, होंट मोटे हों तो उनमें लंबे समय तक काम की भावना प्रबल होती है। कई बार असामान्य रूप से काम की भावना को दबाने या सामाजिक कारणों से स्त्री का पुरूष से दूरी बनाये रखने की स्थिति में स्त्रियां कामोन्माद से ग्रसित हो जाती हैं। विशेषकर विधवा स्त्रियां भी इस बीमारी से ग्रसित हो जाती हैं। योनि मार्ग में खुजली, योनि मार्ग का किसी गुप्त रोग जैसे सिफिलिस, सूजाक इत्यादि से संक्रमित होना भी इस रोग के कारण बन सकते हैं। अत्यधिक अश्लील साहित्य का पठन करना, अश्लील फिल्में देखना, मांसाहार एवं गर्म मसालों का सेवन करना, मद्यपान करना, विलासिता एवं कामोत्तेजन वातावरण में रहना, पति के प्रमेह आदि रोग से ग्रसित होना जिसके कारण कि वह लंबे समय तक स्त्री को संतुष्ट न कर पाये भी स्त्री को कामोन्माद का रोगी बना सकते हैं। कामोन्माद से ग्रसित स्त्री को नित्य ठंडे पानी से सोते वक्त स्नान करना चाहिए। भोजन सात्विक लेना चाहिए। गर्म औषधियों का सेवन नहीं करना चाहिए। मादक एवं नशीले पदार्थों का सेवन वर्जित रखना चाहिए। कामुक एवं अश्लील विचारों से ग्रसित स्त्रियों में नहीं रहना चाहिए।

कामोन्माद से ग्रसित स्त्री को निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

❑ स्त्री के अंदर कामोन्माद में अत्यधिक वृद्धि, उसका अपने ऊपर धैर्य न

रख पाना, योनि मार्ग में कामोत्तेजक खुजली जैसे लक्षणों में **लिलियमटिग** 30 हितकर औषधि है।

- कम आयु की लड़कियों में कामोत्तेजना का अत्यधिक बढ़ जाना, प्रत्येक पुरूष को देखकर उससे संभोग की परिकल्पना करने लगना, संभोग के समय योनि का अत्यधिक असंवेदनशील हो जाना जिसके कारण लंबे समय तक वीर्य स्खलित न होना और अत्यधिक मैथुन के कारण बेहोश हो जाना इन सब लक्षणों में **प्लेटिना 3×, 30** लाभदायक औषधि है। यदि गर्भावस्था या प्रसव के बाद स्त्रियों में कामोन्माद बढ़ जाता है तो उपरोक्त औषधि हितकर है।

- हिस्टीरिया के कारण कामोन्माद से ग्रसित होना, पेशाब करते वक्त योनि मार्ग में खुजली महसूस होना, हमेशा योनि मार्ग को खुजलाते रहना या रगड़ते रहना जैसे लक्षणों में **एम्बाग्रेसिया 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- योनि मार्ग में कृमि के कारण कामोत्तेजना पैदा होना, रोगिणी का अत्यधिक अप्राकृतिक मैथुन करना, अप्राकृतिक मैथुन के कारण योनि मार्ग में सूजन आ जाना, पेशाब में जलन एवं रक्त स्त्राव जैसे लक्षणों में **केलेडियम 30** लाभदायक औषधि है।

- जननेन्द्रियों में अत्यधिक संवेदनशीलता आ जाना, स्तनों में कड़ापन एवं दर्द महसूस होना, रात्रि के समय कामोन्माद के कारण नींद का बार-बार खुल जाना एवं पेशाब करते समय कष्ट और सूजन महसूस होना इन सब लक्षणों में **केन्थिस 30, 200** हितकर औषधि है।

- रोगिणी को बहुत अधिक मात्रा में रजःस्त्राव होना, शरीर में कम्पन महसूस होना जैसे लक्षणों में **केनाबिस सैटाइवा 6, 30** कामोन्माद की विशेष औषधि है।

- रोगिणी में मासिक आने से पूर्व कामोत्तेजक का अत्यधिक बढ़ जाना, योनि मार्ग पर दबाव महसूस होना, योनि मार्ग में स्पंदन महसूस होना, रोगिणी का अप्राकृतिक मैथुन का अभ्यस्त होना, अश्लील बात एवं अश्लील साहित्य का रुचिकर लगना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया फॉस 30, 200** लाभकारी औषधि है।

- योनि मार्ग में अत्यधिक खुजली होना, खुजली के साथ योनि मार्ग की त्वचा का दाद से ग्रसित होना, खुजलाने के बाद दर्द महसूस होना, रोगिणी की इच्छा हमेशा कृत्रिम मैथुन करने की होना जैसे लक्षणों में **डल्कामारा 30** सर्वोत्तम औषधि है।

- भगोष्ठों में खुजली होना एवं खुजली वाले स्थान को बार-बार रगड़ने की इच्छा होना, वीर्य स्खलन के बाद चिंता ग्रस्त हो जाना जैसे लक्षणों में **काफिया 3** लाभदायक औषधि है।

- रोगिणी का हमेशा अश्लील बातें करते रहना, व्यवहार में निर्लजता एवं योनि में कामोत्तेजक खुजली होते रहना जैसे लक्षणों में **लिलियमटिग 30** लाभकारी औषधि है।

- रोगिणी को निवस्त्र होना अच्छा लगना, योनि प्रदर्शन करने की प्रवृत्ति होना एवं दिन में कई बार संभोग करने की प्रवृत्ति जैसे लक्षणों में **हायोसियामस 30** लाभदायक औषधि हैं।

- अत्यधिक कामोत्तेजना के कारण रोगिणी के अंदर ज्ञान एवं विवेक का पूर्ण लोप हो जाना, किसी भी पुरूष या स्त्री के संसर्ग में आते ही उसके अंदर तीव्र कामेच्छा जाग्रत हो जाना और उसकी पूर्ति के लिए उसका किसी भी हद तक गिर जाना जैसे लक्षणों में **मयूरेक्स 30** लाभदायक औषधि है।

- प्रथम मासिक धर्म शुरू होने से पहले कामोन्माद अत्यधिक बढ़ जाना, रज:स्त्राव से पशुओं की पेशाब के समान दुर्गन्ध आना, ऋतु स्त्राव के बाद चेहरा उतर जाना, उदासी आ जाना जैसे लक्षणों में **स्ट्रेमोनियम 30** लाभदायक औषधि है।

- माथे और पेट पर ठंडक महसूस होना, गरम पदार्थों के सेवन से स्नायविक विकारों का बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **ग्रेटिऔला 3** लाभदायक औषधि है।

- अत्यधिक उत्तेजना के कारण सहवास करने की तीव्र इच्छा होना, सहवास के बाद वमन होना, पेशाब में गाढ़ापन जैसे लक्षणों में **मास्कस 30** लाभकारी औषधि है।

- बिना स्वप्न आये नींद में वीर्य स्त्राव हो जाना, वीर्य स्त्राव के बाद अत्यधिक कमजोरी महसूस होना, संभोग करने की तीव्र इच्छा होना जैसे लक्षणों में **पिकरिक ऐसिड 30** लाभप्रद औषधि है।

- सूजाक जैसे रोग के कारण लिगेंन्द्रिय का कठोर हो जाना, अत्यधिक संभोग करने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **सैलिक्स नाइग्रा क्यू** लाभदायक औषधि है

- अत्यधिक उत्तेजना होना, कब्ज रोग से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **सिड्रन 30** लाभदायक औषधि है।

अध्याय-21

श्वेतप्रदर

मासिक धर्म के अलावा स्त्री की योनि से किसी आंतरिक गड़बड़ी या विकृति के कारण होने वाले सफेद रंग के स्त्राव को श्वेतप्रदर कहते हैं।

स्त्रियों में मासिक स्त्राव का संबंध उसके डिंब से होता है और महिने में 4 या 5 दिन सामान्यत: स्त्रियों को मासिक स्त्राव होता है परंतु श्वेतप्रदर का स्त्री के डिंबग्रंथि, डिंब का बनना अथवा उसके रज:स्त्राव होने से कोई संबंध नहीं है न ही इसकी मासिक धर्म के समान कोई निश्चित अवधि है। मुख्य रूप से ये रोग स्त्री के आंतरिक यौन अंगों में विकार से उत्पन्न होता है। कभी-कभी इस स्त्राव का रंग पानी के समान सफेद, दूधिया या पीला, लाल, नीला, गुलाबी, इत्यादि भी हो सकता है। श्वेतप्रदर के साथ कई बार श्लेष्मिक झिल्लियों के टुकड़े या खून के काले थक्के भी योनि मार्ग से निकलते हैं। प्रदर का रंग देखकर यह निश्चिय किया जाता है कि बीमारी का स्थान कौन सा है। इस रोग के मुख्य कारण जरायु, योनि, भगोष्ठ, गर्भाशय इत्यादि जैसे स्थानों का सर्दी से प्रभावित हो जाना, गण्डमाला, धातुदोष, लसिका-ग्रंथि की बीमारी, स्त्री का तामसिक प्रवृत्ति का होना, अत्यधिक कामुक एवं उत्तेजक साहित्य पढ़ना, मादक पदार्थों का सेवन, मांसाहार, गरिष्ठ भोजन, आलस्य, अप्राकृतिक मैथुन, बहुमैथुन, गुप्त रोग जैसे (सूजाक, सिफिलिस इत्यादि) से ग्रसित होना, बहुत ज्यादा मानसिक तनाव एवं मानसिक भवनाओं को अत्यधिक दबाना, योनि मार्ग की स्वच्छता में कमी इत्यादि हैं। स्त्री में धातु-क्षय, चेहरे पर श्रीहीनता, शारीरिक अंगों का कृष्काय हो जाना, वक्ष-स्थलों में सपाटता आ जाना, भूख न लगना, कमजोरी महसूस होना, जंघाओं एवं योनि मार्ग की त्वचा का संक्रमित हो जाना, योनि मार्ग में अत्यधिक खुजली चलना इत्यादि जैसे लक्षण श्वेतप्रदर के कारण ही होते हैं। मुख्य रूप से यह रोग स्त्रियों में किशोरावस्था से युवावस्था के बीच अधिक देखने को मिलता है। इस रोग का स्त्री के गर्भ धारण करने से भी कोई संबंध नहीं है। गर्भावस्था में भी स्त्रियों को श्वेतप्रदर का रोग हो सकता है। रजोनिवृत्ति काल के बाद भी श्वेतप्रदर स्त्रियों में देखा गया है। प्रारंभ में श्वेतप्रदर बूंद-बूंद होता है परंतु इस पर उचित ध्यान या समुचित चिकित्सा न लेने के कारण

यह रोग बढ़ जाता है और निरंतर ही स्त्राव होते रहता है। यहां तक कि स्त्री के रज:स्वला होने के समय भी रज:स्त्राव के साथ श्वेतप्रदर बना रहता है जिससे कि योनि मार्ग में किसी भी यौन जनित रोग का संक्रमण हो सकता है। कई बार श्वेतप्रदर एक तीखी दुर्गन्ध लिए हुए होता है इससे स्त्री को हमेशा अपने आंतरिक वस्त्रों के अंदर सेनेटरी नेपकीन लेनी पड़ती है। अत्यधिक गर्भ-निरोधक गोलियां, कॉपरटी, बार-बार गर्भपात होना, गर्भाशय का अपनी जगह से सरक जाना, गर्भाशय में किसी ट्यूमर या गाठान का हो जाना, प्रसव के बाद योनि द्वार का फैल जाना इत्यादि जैसे कई कारणों से भी श्वेतप्रदर हो सकता है। इस रोग के कारण स्त्री में आलस्य, आँखों के नीचे की त्वचा का काला पड़ जाना, कमर के निचले हिस्से में शूल रहना, चेहरे में रक्त की कमी महसूस होना आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं।

श्वेतप्रदर से ग्रसित होने पर स्त्रियों को निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- दही के समान प्रदर का होना, प्रदर के समय मूत्र मार्ग में गर्मी की अनुभूति होना, जरायु द्वार में झिल्ली आ जाने से या मासिक धर्म में कष्ट जैसे लक्षणों में **बोरेक्स 3×** लाभदायक औषधि है।
- कम उम्र की लड़कियों का श्वेतप्रदर से ग्रसित होना एवं श्वेतप्रदर के कारण चेहरे पर दाग धब्बे आ जाना जैसे लक्षणों में **कोलोफाइलम क्यू** लाभदायक औषधि है।
- श्वेतप्रदर का प्रचुर मात्रा में होना, चमड़ी का शुष्क एवं खुरदरा हो जाना, योनि मार्ग एवं जंघाओं की चमड़ी का संक्रमित हो जाना, पेशाब में जलन आदि लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 200** अत्यंत लाभकारी औषधि है।
- श्वेतप्रदर का रजोधर्म के बाद बढ़ जाना एवं रोगिणी का शारीरिक रूप से स्वस्थ्य होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** लाभदायक औषधि है।
- रोगिणी का टांग पर टांग रखकर बैठना, स्त्राव का दुर्गन्ध-युक्त होना, योनि से पतला एवं दूधिया श्वेतप्रदर होना, स्त्राव के कारण जंघाओं की त्वचा का छिल जाना एवं योनि मार्ग में खुजली होते रहना, रोगिणी का दुबला-पतला होना एवं वात प्रधान स्त्रियों के लिए **सीपिया 200** विशेष लाभकारी औषधि है।

- श्वेतप्रदर से अन्न के समान दुर्गन्ध आना, कपड़े पर नीले दाग का पड़ जाना, मासिक धर्म रूक-रूक कर आना, पेशाब में गंदलापन होना जैसे लक्षणों में **क्रियोजेट 30** लाभदायक औषधि है।

- प्रदर का दूध के समान सफेद होना, विशेषकर अविवाहित लड़कियों में श्वेतप्रदर होना, ऋतु काल में पाँव का ठंडा पड़ जाना एवं सोते समय शरीर के ऊपरी हिस्से में पसीना आना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 200** लाभकारी औषधि है।

- प्रदर सफेद मवाद के जैसा होना, स्त्राव होते समय योनि में ज़लन महसूस होना, कभी कम मात्रा में होना तो कभी अधिक मात्रा में होना, गंभीर कब्ज रोग से ग्रसित होना, अत्यधिक कामोत्तेजित होना जैसे लक्षणों में **एल्युमिना 30** लाभदायक औषधि है।

- ऋतु स्त्राव से पूर्व प्रदर स्त्राव होना, रोगिणी का कामोन्मादी होना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया फॉस 30** लाभदायक औषधि है।

- योनि से पानी के समान प्रदर स्त्राव होना स्त्राव के कारण कपड़े पर सफेद दाग पड़ जाना, रोगिणी का स्वभाव चिड़चिड़ा होना, स्नायविक संबंधी गड़बड़ी होना जैसे लक्षणों में **केमोमिला 12** लाभदायक औषधि है।

- दूध के समान लसदार प्रदर स्त्राव होना, अप्राकृतिक मैथुन का अभ्यस्त होना, ऋतु स्त्राव के बदले प्रदर स्त्राव होना, योनि में जलन महसूस होना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 30** लाभदायक औषधि है।

- मासिक धर्म के समय प्रदर स्त्राव होना, प्रदर का गाढ़ा होना, धातु विकृति के कारण आयी दुर्बलता जैसे लक्षणों में **आयोडिनम 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- प्रदर स्त्राव के समय जरायु ग्रीवा में डंक मारने जैसा दर्द होना, जरायु मुख में कड़ापन आ जाना, जरायु की स्थान च्युति हो जाना जैसे लक्षणों में **कोनियम 30** लाभकारी औषधि है।

- प्रदर स्त्राव का दुर्गन्ध-युक्त होना, तलपेट में भार का अनुभव होना, योनि की स्थान च्युति होना, बार-बार पेशाब जाने की इच्छा होना, योनि मुख

का फूल जाना, कब्ज रोग से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभदायक औषधि है।

- प्रदर स्त्राव का अधिक मात्रा में होना, गुप्तांगों में चींटी काटने के समान दर्द होना, रोगिणी का पाँव पर पाँव रखकर बैठना, जरायु में जख्म हो जाना जैसे लक्षणों में **जिंकम 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- मूत्र त्याग करने के बाद श्वेतप्रदर का स्त्राव होना, स्त्राव का रंग हरा होना, तलपेट में चींटी काटने के जैसा दर्द महसूस होना, कब्ज रोग से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **ऐमोन म्यूर 6** लाभदायक औषधि है।
- ऋतु के पहले अथवा बाद में प्रदर स्त्राव होना, स्त्राव गाढ़ा तथा दुर्गन्धित होना, जरायु ग्रीवा में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **चायना 6** लाभकारी औषधि है।
- ऋतु के कुछ दिन पूर्व प्रदर स्त्राव थक्केदार तथा जमा हुआ होना, स्त्राव का रंग पीला होना जैसे लक्षणों में **बोबिस्टा 6** लाभदायक औषधि है।
- जरायु ग्रीवा से प्रदाह निकलना, प्रातःकाल स्त्राव का अत्यधिक मात्रा में होना; रोगिणी को ऐसा महसूस होना जैसे उसकी योनि से सभी चीजें बाहर निकल आयेंगी जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 6, 30** लाभदायक औषधि है।
- जरायु की भीतरी झिल्ली से प्रदाह निकलना, रजःस्त्राव अत्यधिक मात्रा में होना, स्त्राव का रंग पीला तथा गाढ़ा होना, स्त्राव के समय योनि मार्ग में जलन महसूस होना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक 6, 30** लाभकारी औषधि है।
- श्वेतप्रदर से ग्रसित रोगिणी के तलपेट में अकड़न जैसा दर्द होना, प्रदर स्त्राव गाढ़ा तथा अधिक मात्रा में होना जैसे लक्षणों में **बाइबर्नम 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- प्रदर स्त्राव के समय योनि में अधिक कष्ट तथा जलन महसूस होना, धड़कनों का तेज हो जाना, सहवास के समय कष्ट होना जैसे लक्षणों में **प्लैटिनम 30** लाभदायक औषधि है।
- ऋतु स्त्राव होने के दो सप्ताह बाद प्रदर स्त्राव आरंभ हो जाना, शौच जाते

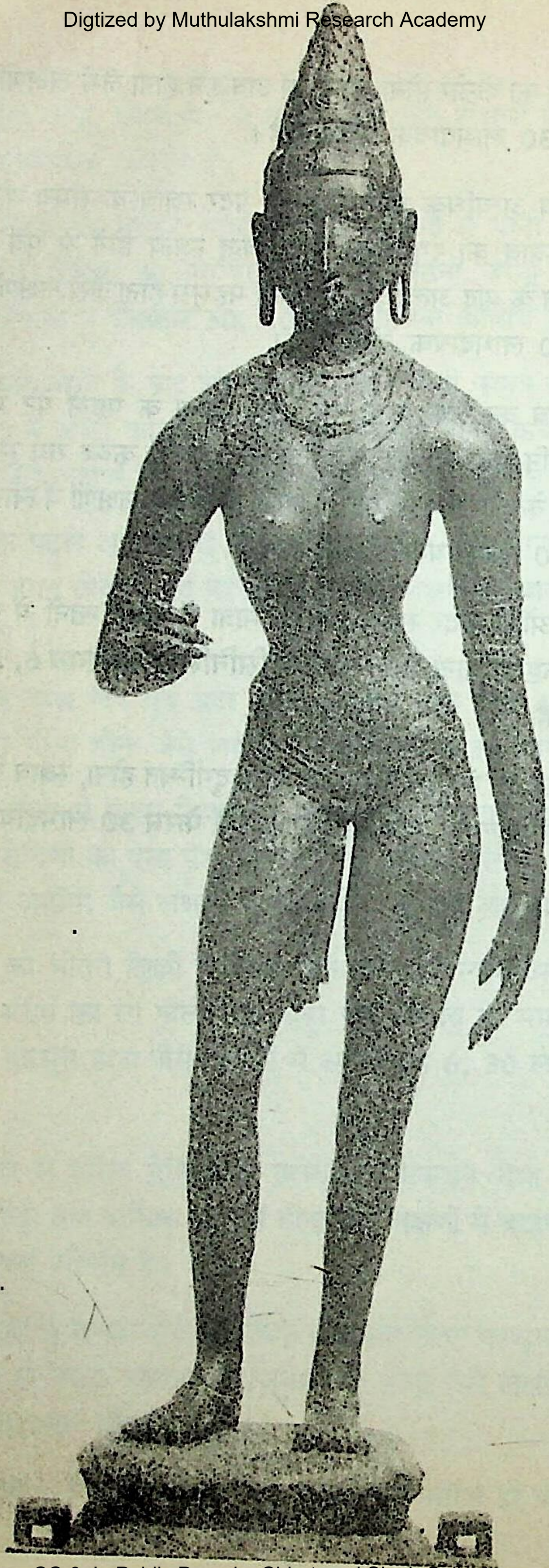
समय मल का कठोर होना, जरायु में अकड़न होना जैसे लक्षणों में **मेग्नेशिया म्यूर 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- प्रदर स्त्राव अत्यधिक मात्रा में होना, प्रदर स्त्राव के समय योनि में खुजली चलना, स्त्राव का रंग पीला होना, ऋतु स्त्राव होने से पूर्व मूर्च्छा आना, प्रदर स्त्राव के बाद अत्यधिक कमजोरी महसूस होना जैसे लक्षणों में **लेकेसिस 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- प्रदर स्त्राव का रूक-रूक कर होना, स्त्राव के पहले पेट में अधिक दर्द होना, योनि मार्ग से वायु का निकलना, गंभीर कब्ज रोग से ग्रसित होना, श्वेतप्रदर के कारण योनि मार्ग में जख्म होना जैसे लक्षणों में **लायकोपोडियम 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- बालिकाओं में प्रदर स्त्राव अधिक मात्रा में होना, स्तनों में दर्द होना, मूत्र संबंधी कष्ट हो जाना जैसे लक्षणों में **सिनिसियों ओरियस 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- प्रदर स्त्राव का रंग दूध जैसा तथा गाढ़ा दुर्गन्धित होना, स्त्राव के बाद रोगिणी का चेहरा लाल हो जाना जैसे लक्षणों में **फेरम 30** लाभदायक औषधि है।

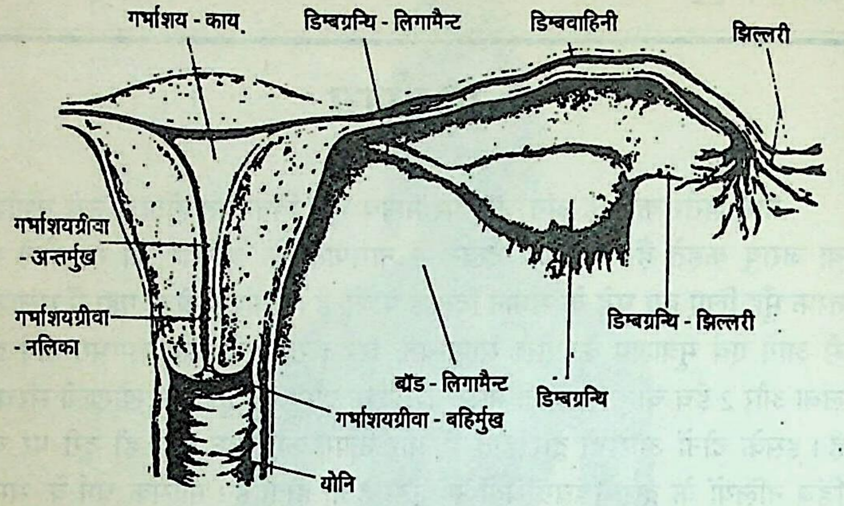


अध्याय-22

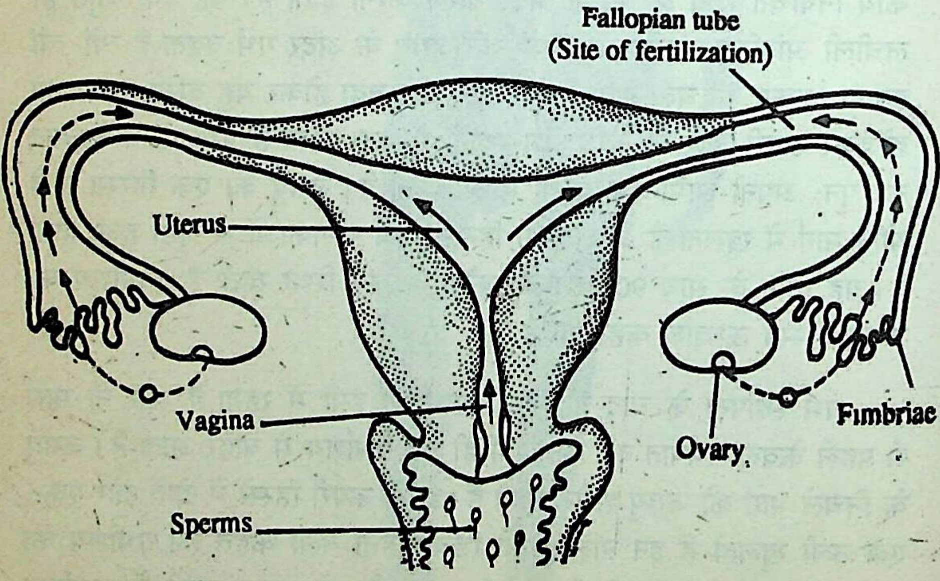
गर्भाशय

नारी शरीर का वह अंग जहां पर मानव भ्रूण विकसित होता है उसे गर्भाशय या जरायु कहते हैं। गर्भाशय देखने में नासपाती के आकार का या नीचे की तरफ मुँह लिए हुए घड़े के समान दिखाई पड़ता है। गर्भाशय श्रेणी गुहा में मलाशय से आगे एवं मूत्राशय के पीछे सामान्यत: स्थित रहता है। यह लगभग तीन इंच लंबा और 2 इंच चौड़ा लचीली मांस पेशियों के द्वारा बनी हुई एक खोखली संरचना है। इसके दोनों और दो द्वार होते हैं और ऊपर की तरफ कुछ ही दूरी पर यह डिंब नलियों के द्वारा डिंबग्रंथियों से जुड़ा हुआ होता है। मासिक धर्म के समय जब डिंब पूरी तरह पक जाता है तो वह डिंब नलियों के द्वारा गर्भाशय में प्रविष्ट करता है। देखने में गर्भाशय कुछ चपटा सा दिखाई देता है एवं इसका आंतरिक भाग जो कि श्लेष्मिक झिल्ली-युक्त होता है लगभग एक इंच के आसपास मोटा होता है। गर्भाशय का वजन 35 से 50 ग्राम तक होता है एवं गर्भाशय का मुख्य कार्य निषेचित डिंब को अपने अंदर धारण करना होता है। यह एक बहुत ही लचीली आंतरिक संरचना है। ज्यों-ज्यों जरायु के अंदर गर्भ बढ़ता है त्यों-त्यों इसका आकार भी बढ़ जाता है एवं धीरे-धीरे बढ़ा होकर यह बस्ति गह्वर को छोड़कर ऊपरी उदर के अधिकांश स्थानों में फैल जाता है परंतु प्रसव के बाद यह पुन: अपनी सामान्य अवस्था में आ जाता है। जरायु का एक हिस्सा नीचे योनि मार्ग में खुलता है और ऊपरी हिस्सा डिंब नलिकाओं से जुड़ा हुआ होता है। यह योनि के साथ 90 अंश का कोण बनाकर स्थिर रहता है। गर्भाशय का ऊपरी हिस्सा ऊर्ध्वांश कहलाता है।

गर्भ स्थापना के बाद नौ मास तक शिशु इसी में रहता है और नौ मास से पहले केवल गर्भपात की स्थिति में ही वह गर्भाशय से बाहर आता है। जरायु के निचले भाग को जरायु शरीर कहते हैं। इसके ऊपरी हिस्से में दोनों ओर एक-एक नली खुलती हैं इन नलियों को डिंबवाहिनी नली कहते हैं। गर्भाशय का वह भाग जहां पर डिंबवाहिनी नलियां खुलती है उसे फंडस कहते हैं। गर्भाशय का अंतिम भाग गर्भाशय ग्रीवा कहलाता है। यह कुछ गोल गर्दन की तरह दिखने वाली संरचना है। इसका कुछ भाग योनि से भी जुड़ा रहता है एवं योनि में खुलने



गर्भाशय एवं उसके उपांग



Reproductive organ of female human body

वाले हिस्से को बहिर मुख कहते हैं। गर्भाशय ग्रीवा और गर्भाशय शरीर के बीच का तंग भाग इस्थमस कहलाता है। यह लगभग आधा सेमी. चौड़ा होता है एवं इसके नीचे गर्भाशय ग्रीवा का अंतर्मुख स्थित होता है। गर्भाशय ग्रीवा के अंतर्मुख और बाह्य मुख में खुलने वाली नलिका को गर्भाशय नलिका कहते हैं। युवा स्त्रियों में गर्भाशय ग्रीवा का बाहरी मुख कुछ गोलाई लिए हुए होता है परंतु जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है यह लंबा होता जाता है। यदि योनि के बाहरी मुख में अंगुली डाली जाए तो गर्भाशय ग्रीवा को छुआ जा सकता है। गर्भाशय ग्रीवा के चारों और के खोखले स्थान को योनि कोण कहते हैं। बस्ति गह्वर में गर्भाशय बिल्कुल सीधा नहीं रहता यह आगे की ओर कुछ झुका सा स्थित रहता है।

गर्भाशय भीतर से खोखला होता है एवं इसकी अगली पिछली दीवारें आपस में मिली रहती हैं जिसके कारण यह स्त्री के गर्भवती न होने की दशा में अधिक स्थान नहीं घेरता। इसकी चौड़ाई उसी दशा में बढ़ती है जब स्त्री का गर्भ बढ़ रहा होता है। गर्भाशय की दीवार तीन परतों में होती है। सबसे बाहरी परत को पेरीमीट्रियम कहते हैं। यह एक पतली परत होती है जो कि संपूर्ण गर्भाशय के ऊपर नहीं होती। गर्भाशय का कुछ हिस्सा भी इसके द्वारा ढका हुआ नहीं रहता। बीच की परत को मायोमीट्रियम कहते हैं। यह गर्भाशय दीवार की सबसे मोटी परत है। यह लगभग 2 सेमी. मोटी अनैच्छिक पेशी की परत होती है। इस परत के लचीलेपन के कारण गर्भाशय, गर्भावस्था के अंतिम चरण में अपने आकार से 24 गुना ज्यादा बड़ा हो जाता है। गर्भाशय दीवार की सबसे अंदर की परत को एंडोमीट्रियम कहते हैं। यह लगभग 3 से 4 मिली. मी. मोटाई लिए हुए होती है तथा बहुत सी ग्रंथियां इसी परत के ऊपर होती है। मासिक धर्म आने के पूर्व यह परत मोटी होने लगती है एवं मासिक धर्म शुरू होते ही इससे जुड़ी श्लेष्मिक झिल्ली कट-कटकर गिरने लगती है और रक्त स्त्राव के साथ बाहर निकल जाती है।

जरायु प्रदाह

जरायु में प्रदाह सामान्यत: जरायु ग्रीवा और जरायु शरीर पर रोगों के आक्रमण के कारण होता है। जरायु प्रदाह होने पर निम्नलिखित लक्षण प्रकट होते हैं जैसे कि- जरायु ग्रीवा पर सूजन आ जाना, जरायु में दर्द का अनुभव होना एवं जरायु में टपकन के साथ गर्मी महसूस होना, जरायु से श्लेष्मा-युक्त रक्त स्त्राव होना इत्यादि।

जरायु प्रदाह के कारण तलपेट में अत्यधिक दर्द महसूस होना, दबाने पर दर्द की अनुभूति होना, कमर से निचले हिस्से में ऐंठन युक्त दर्द महसूस होना, पेशाब जाते समय जलन एवं कष्ट महसूस होना, पेट में कब्ज रहना, सिर में दर्द एवं आँखों की दृष्टि प्रभावित होना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। इसके अतिरिक्त जांघों, पुट्ठों, तलुओं एवं घुटने में दर्द महसूस होना, पाँव में ऐंठन पड़ना, थकान, मूर्च्छा, वमन की इच्छा होना, नाड़ी की तीव्रता एवं ज्वर आदि लक्षण भी प्रकट हो सकते हैं।

जरायु प्रदाह से ग्रसित स्त्री दर्द के मारे सीधी भी नहीं सो सकती एवं प्राय: वह घुटने मोड़कर सोती है। यह रोग अत्यधिक मैथुन, गलत तरीके से मैथुन करने के कारण, जरायु में सूजन, स्त्रियों के जरायु में चोट लगने, बार-बार गर्भपात कराने से, गर्भपात के बाद जरायु में जख्म हो जाना, जरायु प्रदेश में ठंड लग जाने से, ऋतुरोध, पेट में कृमि होने से, शौच करते समय अत्यधिक जोर लगाने से, जरायु की स्थान भ्रष्टता एवं योनि में पिचकारी डालने अथवा अप्राकृतिक मैथुन के कारण उत्पन्न हो सकता है।

कई बार पुरूषों में वीर्य प्रदूषित होने से भी जरायु में सूजन आ सकती है। सूजाक एवं अन्य गुप्त रागों के कारण भी जरायु में प्रदाह उत्पन्न हो जाता है। प्रसव-कालीन चोट, डिंबकोष में उत्तेजना, रक्त संचरण में वैष्मय के कारण भी जरायु में प्रदाह उत्पन्न हो सकता है। अत्यधिक गर्भ निरोधक गोलियां या गर्भ निरोधक संसाधनों का उपयोग करने से या गर्भपात करवाने के कारण भी स्त्रियों के जरायु में प्रदाह उत्पन्न हो जाता है। इस रोग में जरायु प्रदेश में थोड़ा

सा दबाव पड़ने पर टपकन या चुभने जैसा दर्द महसूस होने लगता है। रोगिणी को प्यास अधिक लगती है एवं वमन भी हो सकती है। रोगिणी को चित्त होकर सोने में आराम मिलता है और बैठने में उसका दर्द बढ़ जाता है। लंबे समय तक जरायु प्रदाह के उचित इलाज न हो पाने के कारण धीरे-धीरे यह रोग पुराना हो जाता है। जिसके कारण जरायु ग्रीवा या जरायु प्रदेश धीरे-धीरे कड़ा और बढ़ा हो जाता है एवं प्रसव के पश्चात जरायु ठीक से संकुचित नहीं हो पाता है।

पुराने जरायु प्रदाह के कारण पेट में हमेशा भार महसूस होना, स्तनों एवं कमर में हमेशा दर्द बना रहना, अनियमित ऋतु स्त्राव होना, संभोग के बाद दर्द महसूस होना एवं हिस्टीरिया आदि के लक्षण प्रकट होते हैं।

जरायु प्रदाह से ग्रसित होने की अवस्था में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

❑ रोगिणी को तीव्र बुखार आना, अत्यधिक प्यास लगना, पेट पर हाथ रखने पर दर्द बढ़ जाना, त्वचा का शुष्क हो जाना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभदायक औषधि है।

❑ **बेलाडोना** जरायु प्रदाह की मुख्य औषधि है। तलपेट का अत्यधिक फूल जाना, छूने से तलपेट का गरम मालूम होना, जरायु के अंदर चींटी काटने सा दर्द महसूस होना, रोगिणी को तेज ज्वर आना जैसे लक्षणों में इस औषधि का सेवन अत्यंत लाभकारी होता है।

❑ ठंडे पानी से रोग का बढ़ जाना, पेट में असहनीय पीड़ा होना, बार-बार पानी पीने की इच्छा होना, दाँतों में दाग पड़ना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक 30** लाभदायक औषधि है।

❑ प्रसव के बाद जरायु प्रदाह होना, थक्केदार काले रंग का अत्यधिक मात्रा में रक्त स्त्राव होना, चेहरे का लाल पड़ जाना, प्रदाह में प्रसव वेदना के समान दर्द होना, निरंतर पतले दस्त होना, रोगिणी का स्वभाव चिड़चिड़ा एवं व्याकुल हो जाना जैसे लक्षणों में **केमोमिला 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- जरायु में डंक मारने जैसा दर्द होना, प्यास का बिल्कुल न लगना, बार-बार पेशाब जाने की इच्छा होना परंतु पेशाब का कम आना, नींद से चौंककर उठ जाना जैसे लक्षणों में **ऐपिस 30** लाभकारी औषधि है।

- हिलने-डुलने में दर्द का बढ़ जाना, सदा एक ही स्थान पर बैठे रहने की इच्छा होना, होंठों और मुँह का सूख जाना, थोड़ा सा कार्य करने पर चक्कर एवं मूर्च्छा आना, बार-बार वमन की इच्छा महसूस होना, डिंबकोष में सुई चुभने जैसा दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया 30** लाभकारी औषधि है।

- रोगिणी के तलपेट में असहनीय दर्द होना और उसे ऐसा महसूस होना कि जरायु योनि द्वार से बाहर निकल जाएगा, जरायु की गर्दन पर सूजन आ जाना, पेशाब के साथ खून की कुछ बूंदें निकल आना जैसे लक्षणों में **केन्थिरस 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- जरायु प्रदाह के कारण रोगिणी का मानसिक रूप से अति व्याकुल हो जाना, रोगिणी को शरीर पर कोई भी वस्त्र न पहनने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **हायोसियामस 30** सर्वोत्तम औषधि है।

- जरायु का मुख खुला होना, ऋतु स्त्राव का बंद हो जाना, मानसिक उद्वेग, जरायु में अकड़न जैसे लक्षणों में **लेकेसिस 30** लाभदायक औषधि है।

- रोगिणी का लगातार कांखना, योनि से पीब आना, पानी पीने की अधिक इच्छा होना, रात्रि के समय रोग का बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **मरक्यूरिस सोल 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- प्रसव के बाद जरायु की सफाई न हो पाने के कारण जरायु प्रदाह होना, मुख का स्वाद बिगड़ जाना, अत्यधिक सर्दी महसूस होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 200, 30** लाभकारी औषधि है।

- जरायु में भार मालूम होना, बार-बार पेशाब जाने की इच्छा होना, नींद में अत्यधिक स्वप्न देखना, हमेशा कब्ज बने रहना आदि लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** उपयुक्त औषधि है।

- जरायु के आतंरिक भाग में सूजन आना, जांघों में दर्द एवं ऐंठन होना, स्त्राव से बदबू आना, हमेशा बुखार बने रहना, जिह्वा का सूख जाना, रात्रि के

वक्त सुखदायक नींद न आना एवं रोगिणी का करवटें बदलते रहना और घुटन महसूस करना जैसे लक्षणों में **रस टॉक्स 30** उपयुक्त औषधि है।

- जरायु प्रदाह से ग्रस्त रोगिणी के लिए **सीपिया 30** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- अत्यधिक मात्रा में साफ सुथरा रक्त स्त्राव होना, तलपेट में दर्द बना रहना जैसे लक्षणों में **सेबाइना 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- जरायु प्रदाह अधिक मात्रा में होना, अधिक रज:स्त्राव होने के कारण पाँव की ऐड़ियों में सुरसुराहट महसूस होना, जरायु प्रदाह का दुर्गन्धित होना, स्त्राव का रंग काला होना जैसे लक्षणों में **सिकेल कारनुटम 30** लाभदायक औषधि है।
- जरायु प्रदेश में अकड़न महसूस होना, रोगिणी को गरम पसीना आना, प्रसव के उपरांत जरायु प्रदाह का उत्पन्न हो जाना जैसे लक्षणों में **टिलिया 30** लाभकारी औषधि है।
- जरायु स्थान में कड़ापन महसूस होना, अत्यधिक मात्रा में काले रंग का गाढ़ा स्त्राव होना, गुह्य द्वार एवं सरला यंत्र में मल का लगा रहना, कलेजे की धड़कन तेज हो जाना जैसे लक्षणों में **प्लैटिनम 30** लाभदायक औषधि है।
- जरायु प्रदाह के साथ पेट में गड़गड़ाहट होना, तलपेट में अकड़न महसूस होना, प्रदाह का दुर्गन्ध-युक्त होना, प्रदाह के समय प्रसव की भांति दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **ओपियम 6, 30** लाभदायक औषधि है।
- जरायु प्रदाह के समय जलन महसूस होना, जरायु में दबाने जैसा दर्द बार-बार थोड़ा-थोड़ा होना, बेचैनी महसूस होना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक 30** लाभदायक औषधि है।

सामान्यत: ऐसा देखा गया है कि स्त्रियों में प्रसव या गर्भ स्त्राव के बाद जरायु का दर्द बढ़ जाता है। स्त्रियों को प्रसव या गर्भस्त्राव के बाद अपने शरीर के निचले हिस्से विशेषकर गर्भाशय वाली जगह को ठंड से बचाना चाहिए। अत्यधिक भार उठाने से भी बचना चाहिए। गर्भाशय वाली जगह की सिकाई करने से स्त्रियों को जरायु प्रदाह में बहुत लाभ मिल सकता

है। जननेन्द्रियों की सफाई गर्म पानी से दो तीन बार प्रसव और ऋतु स्त्राव के बाद कर लेना चाहिए। अगर ऋतु स्त्राव और जरायु प्रदाह के बाद किसी भी प्रकार की पीब अथवा जलन महसूस होती हैं तो स्त्रियों को फिटकरी के पानी या किसी अन्य उपयोगी दवा को पिचकारी के द्वारा योनि मार्ग से लेकर जरायु और जननेन्द्रिय की साफाई कर लेना चाहिए। जिन स्त्रियों को अक्सर जरायु प्रदाह हो जाता है और पेट में दर्द बना रहता है उन्हें प्यास लगने पर गुनगुना पानी लेने से भी लाभ मिल सकता है।

जरायु की स्थान भ्रष्टता

स्त्री शरीर में जरायु एक बहुत ही कोमल एवं संवदेनशील रचना है। जरायु बस्ति गह्वर के अंदर मूत्राशय के सामने और मलाशय के पीछे आगे की ओर कुछ झुका हुआ सा स्थित रहता है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि स्त्रियों द्वारा अधिक मेहनत करने के कारण या भारी वजन उठाने से, बहुत देर तक गलत आसन में बैठने से, कब्ज रहने वाली स्त्रियों में शौच करते वक्त जोर लगाने से, गलत व्यायाम करने के कारण, नियमित रूप से जुलाब का सेवन, खेलकूद या चोट लगने के कारण अविवाहित स्त्रियों में जरायु स्थान भ्रष्ट हो जाता है अथवा यह अपने सामान्य स्थान से हटकर बस्ति गह्वर के अंदर सीधा हो जाता है या दूसरी दिशा में मुड़ जाता है। कभी-कभी यह नीचे की तरफ भी लटक जाता है। विवाहित स्त्रियों में कई बार अप्राकृतिक मैथुन, बहुत अधिक संभोग, वेग के साथ गलत आसनों में मैथुन करना, बार-बार गर्भपात करवाना इत्यादि कारणों से यह अपनी जगह से हट जाता है। जरायु परिवर्तन की अनेक स्थिति हो सकती है जैसे कि इसका पीछे की ओर जाना, सामने की ओर जाना, नीचे की ओर टेड़ा हो जाना, ऊपर की ओर उलट जाना। कई बार स्त्रियों में जरायु अत्यधिक कसे कपड़े पहनने से भी अपनी जगह से हट जाता है। जरायु में किसी बीमारी का हो जाना, जरायु में अत्यधिक रक्त संचार होना, जरायु में ट्यूमर हो जाना, स्नायविक दुर्बलता या जरायु की असामान्य बनावट इत्यादि भी जरायु का अपने स्थान से हटने का कारण बन सकते हैं। जरायु के पीछे की ओर झुक जाने से स्त्रियों में ऐसा महसूस होता है जैसे कि उनके भीतरी अंग योनि द्वार से बाहर निकल पड़ेंगें। निरंतर कमर में दर्द बना रहना, जननांगों के ऊपर दबाव महसूस होना, श्वेतप्रदर एवं रक्त स्त्राव लगातार होते रहने से उनका जीना दुभर हो जाता है एवं जरायु का पीछे की ओर झुक जाने की स्थिति में स्त्रियों में गर्भ ठहरना लगभग असंभव हो जाता है।

जरायु के सामने की ओर स्थान परिवर्तन को एंटीवर्सन कहते हैं। पीछे की ओर स्थान च्युति को रेट्रोवेशन कहते हैं एवं जरायु के उलट जाने को इनवर्सन आफ द यूट्रस कहते हैं तथा पीछे की ओर स्थान भ्रष्टता को न्यूब्ज रेट्रोवर्शन

कहते हैं जरायु के योनि मार्ग की तरफ निकल आने को प्रोलाप्स एवं ऊपर उठ जाने को एसेंट कहते हैं। कई बार जरायु योनि के बाहरी भाग में निकल पड़ता है। सामान्यत: ऐसी स्थिति गर्भपात या प्रसव के बाद देखी जाती है। जरायु की स्थान भ्रष्टता के कारण स्त्री को लगतार ठंड लगकर बुखार आता है एवं पेशाब में कष्ट महसूस होता है। चित्त लेटने और सोने से कुछ आराम मिलता है परंतु भोजन पचने में अत्यधिक कठिनाई होती है।

जरायु के स्थान भ्रष्ट हो जाने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- ❑ महिलाओं के यौन रोग में **सीपिया 30** एक सर्वोत्तम औषधि है। विशेषकर जरायु का नीचे की ओर सरक जाना और भार का अनुभव होना जैसी स्थिति में यह अत्यधिक लाभदायक औषधि है। रोगिणी का अपनी जांघों को हमेशा सटाकर रखना, पीबदार स्त्राव होते रहना, कब्ज एवं श्वास संबंधी कष्ट जैसे लक्षणों में उपरोक्त औषधि लाभकारी है।

- ❑ योनि द्वार का सूखा रहना, पीठ में अत्यधिक दर्द बने रहना, गर्मी का अनुभव होना, मासिक धर्म का दुर्गन्धित होना एवं रोगिणी के अंदर ऐसा महसूस होना मानो की उसके जननेन्द्रिय यंत्र योनि मार्ग से बाहर निकल पड़ेंगे जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- ❑ जरायु मुख के चारों ओर कड़ापन आ जाना, जरायु का अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाना, सिर दर्द बने रहना, स्त्राव से पहले कड़ापन एवं दर्द महसूस होना इन लक्षणों में **कोनियम 30, 200** जरायु भ्रष्टता की सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

- ❑ रोगिणी को लेटने पर अधिक कष्ट मालूम होना, शौच ठीक से न होना, तलपेट में हमेशा दबाव बना रहना, जरायु प्रदेश में अत्यधिक तकलीफ बने रहना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- ❑ जरायु में सूजन आ जाना, अंतिम या ऋतु स्त्राव बंद होने पर जरायु का अपने स्थान से हट जाने पर **लेकेसिस 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ रोगिणी के पैरों में जलन, माथे के ऊपरी हिस्से में जलन और गर्मी महसूस

होना, योनि द्वार में जलन के कारण छटपटाना इत्यादि लक्षणों में **सल्फर 30** लाभकारी औषधि है।

- चोट लगने के कारण, ऊँची-नीची जगह पर चलने अथवा घुड़सवारी के कारण जरायु का स्थान भ्रष्ट हो जाना, मैथुन के समय रक्त स्त्राव, मल त्याग के समय जननेन्द्रियों पर भार का अनुभव होना जैसे लक्षणों में **अर्निका 30** लाभप्रद औषधि है।
- जरायु मुख का अपने स्थान से हट जाना साथ ही मुख के चारों ओर एवं योनि द्वार पर घाव हो जाना, पीला रंग लिए हुए प्रदर स्त्राव होना एवं सहवास की प्रबल इच्छा होना जैसे लक्षणों में **हाइड्रैस्टिक 30** सर्वोत्तम औषधि है।
- जरायु मुख का योनि द्वार से बाहर आ जाना, जरायु मुख के चारों ओर घाव हो जाना एवं दुर्गन्धित काले रंग का स्त्राव होना जैसे लक्षणों में **हैलिनियास 30** लाभदायक औषधि है।
- योनि के भीतरी अंग में दबाव का अनुभव होना साथ ही पेशाब करते समय मल त्याग हो जाना, जरायु का सामने की ओर झुक जाना एवं योनि में अत्यधिक खुजली महसूस होना जैसे लक्षणों में **लिलियम ट्रिग्निकम 30, 200** दिन में एक बार तथा उच्च शक्ति 15 दिन में एक बार देना चाहिए।
- जरायु के स्थान च्युति के साथ अगर गुदा भ्रंश भी हो तो **पोडोफाइलम 3** अति उत्तम औषधि है।
- बार-बार थोड़ा-थोड़ा मल त्याग होना एवं ऋतु स्त्राव के समय पेट में दर्द होना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभकारी औषधि है।
- भय एवं मानसिक तनाव के कारण जरायु का स्थान च्युति एवं किसी औषधि के गुण प्रकट न हों तो **ओपियम 30** लाभदायक औषधि है।
- जरायु ग्रीवा में कड़ापन और प्रदाह होना, जरायु में कैंसर जैसे जख्म, शरीर के निचले हिस्से में अकड़न होना, अचानक किसी अंग में सुन्नता एवं मानसिक स्थिति अवसादपूर्ण होना जैसे लक्षणों में **कर्बोऐनि 30, 12** अत्यंत लाभदायक औषधि है।
- जरायु मुख का खुला रहना, जरायु का उलट जाना, जरायु शरीर का फूलना,

योनि में कैंसर का जख्म होना, सोते समय दर्द का बढ़ जाना एवं हमेशा श्वेतप्रदर होते रहना जैसे लक्षणों में **क्रियोजेट 12** लाभदायक औषधि है।

- शारीरिक श्रम के कारण जरायु का स्थान च्युति होना, योनि में ऐंठन पड़ना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।
- मलमूत्र त्याग के समय जरायु का नीचे की ओर उतर जाना, ऋतु परिवर्तन के समय पाँव में अकड़न आदि लक्षणों में **केल्केरिया फॉस 30** लाभकारी औषधि है।
- जरायु की स्थिति में टेढ़ापन आना, मैथुन के समय अत्यधिक कष्ट होना, एक निश्चित समय तक स्नायुशूल होना इन लक्षणों में **कोलोफाइलम 30** हितकर औषधि है।
- प्रसव के बाद जरायु की यथा स्थिति न ग्रहण करना, उसमें असंपूर्ण संकुचन होना, जरायु में रजोरोध होना जैसे लक्षणों में **केलि हाइड्रायेट 6, 30** लाभकारी औषधि है।
- रजोरोध हो जाने के कारण जरायु का योनि मार्ग से बाहर आ जाना, जरायु का स्नायुशूल, जरायु में गड़गड़ाहट की ध्वनि आना जैसे लक्षणों में **काक्युलस 30** लाभदायक औषधि है।
- जरायु का सामने की ओर झूल पड़ना, तलपेट में खिंचाव हो जाना जैसे लक्षणों में **जेल्सीमियम 6** लाभदायक औषधि है।
- उपदंश विष के कारण जरायु मुख पर जख्म हो जाना, सहवास करते समय अत्यधिक पीड़ा होना, बस्ति-गह्वर के अंदर जरायु का अनुभव होना जैसे लक्षणों में **थूजा 30** लाभकारी औषधि है।
- योनि तथा जरायु का अपने स्थान से हट जाना, संभोग करते समय अत्यधिक पीड़ा होना, ऋतु स्त्राव से पूर्व प्रसव जैसा दर्द होना, दूध के समान गाढ़ा प्रदर स्त्राव होना, जरायु प्रदेश में दर्द होना जैसे लक्षणों में **फेरम 30** लाभकारी औषधि है।
- अत्यधिक दुर्बलता आ जाने के कारण डिंबाधार तथा जरायु का प्रदाह होना, जरायु में जख्म हो जाना, जरायु का झूल जाना, पाँव के तलुओं में दर्द होना जैसे लक्षणों में **फास्फोरिक एसिड 30** लाभदायक औषधि है।

- जरायु में कैंसर का घाव उत्पन्न हो जाना, जरायु ग्रीवा से दुर्गन्धित स्त्राव होना, ऋतु से पूर्व जरायु से प्रदाह होना जैसे लक्षणों में **ब्यफो 6** लाभदायक औषधि है।

- डिंबकोष की बायीं तरफ हल्का दर्द बने रहना, जरायु का कड़ा पड़ जाना, जरायु का लगभग दो इंच लटक जाना, सिर में चक्कर आना, योनि से वायु का निष्कासन होना, संभोग करते समय आनंद की अनुभूति न होना जैसे लक्षणों में **ब्रोमियम 6, 30** लाभप्रद औषधि है।

- जरायु में जख्म होने के कारण जलन होना, एल्ब्युमिन के समान प्रदर स्त्राव होना जैसे लक्षणों में **मेजेरियम 30** लाभकारी औषधि है।

- जरायु की स्थान भ्रष्टता के कारण बायीं ओर दर्द होना, स्तनों में दर्द होना, जरायु में स्नायुशूल होना जैसे लक्षणों में **म्यूरेक्स 12, 30** लाभप्रद औषधि है।

- जरायु की स्थान भ्रष्टता हो जाना, जरायु में अर्बुद हो जाना, बार-बार मूत्र त्याग करने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **लेडम 30** लाभदायक औषधि है।

- योनि में बायीं ओर दबाव की अनुभूति होना, जरायु से गाढ़ा अथवा लाल रंग का दुर्गन्धित स्त्राव होना, योनि कपाट में सुई चुभने के समान दर्द होना, प्रसवोपरान्त जरायु की अपनी स्वाभाविक स्थिति में न आना, बार-बार मूत्र त्यागने की इच्छा होते रहना जैसे लक्षणों में **सैबाइना 30** लाभदायक औषधि है।

अध्याय-25

जरायु में रक्त संचय

कई बार स्त्रियों में जरायु की आवरण झिल्ली से रक्त या जल अत्यधिक मात्रा में स्त्रावित होकर जरायु में इक्ट्ठा हो जाता है। इससे स्त्री के बिना गर्भ धारण किए ही जरायु का आकार बढ़ने लगता है एवं ऐसा लगता है कि स्त्री गर्भवती है। इनका मुख्य कारण जरायु की आवरण झिल्ली से अत्यधिक मात्रा में स्त्राव होना और साथ में ही जरायु मुख का किसी जख्म के कारण बंद हो जाना, जरायु के मुख का शुष्क पड़ जाना इत्यादि हो सकते हैं।

जरायु के रक्त संचय से ग्रसित होने की अवस्था में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना हितकर है।

- ❑ अत्यधिक स्त्राव एवं इंद्रिय परिचालन के आधिक्य से जरायु का स्थान च्युति होना, स्नायुशूल जैसे लक्षणों में **चायना 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ जरायु में जल संचय के साथ-साथ डंक मारने जैसा दर्द महसूस होता है तो **एपिस 30** लाभदायक औषाध है।

- ❑ जरायु में रक्त संचय के साथ योनि से दुर्गन्धित स्त्राव एवं बदबूदार मल और वायु निकलना जैसे लक्षणों में **कार्बोवेज 30** उपयुक्त औषधि है।

- ❑ जरायु में जल संचय के कारण इतनी सूजन आ जाना कि उसे स्पर्श करने में भी दर्द महसूस होना जैसे लक्षधों में **लेकेसिस 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ जरायु के अंदर वायु का संचय हो जाने के कारण उसका गुब्बारे के समान फूल जाना और समय-समय पर योनि मार्ग से वायु का स्वर के साथ निकलना जैसे लक्षणों में **ब्रोमियम 30** उपयुक्त औषधि है। ऐसी स्थिति में **बेलाडोना 3×** एवं **लायकोपोडियम 30** भी हितकर औषधि है।

जरायु में अर्बुद

लंबे समय तक विवाहित स्त्रियों के गर्भ न धारण करने के कारण, गर्भ निरोधक दवाओं के उपयोग के कारण, अत्यधिक मानसिक तनाव या सिफिलिस दोष के कारण कभी-कभी जरायु के आंतरिक भाग में या जरायु मुख पर मस्से, मांस के पिंड या छोटी बड़ी फुंसियां हो जाती हैं। इनका आकार दाल के एक दाने के बराबर से लेकर गेंद के आकार का भी हो सकता है। कुछ स्त्रियों में ये एक से ज्यादा संख्या में भी हो सकते हैं। इनमें से अक्सर रक्त स्त्राव एवं पीब इत्यादि निकलती रहती है परंतु कई बार अर्बुद केवल मांस पिंड ही होते हैं एवं इनमें से किसी भी प्रकार का दूषित स्त्राव नहीं होता पर इनके कारण स्त्रियों में जरायु शूल उत्पन्न हो जाता है। स्त्रियों में बांझपन का एक कारण जरायु में अर्बुद होना है। इन अर्बुदों के लंबें समय तक बने रहने के कारण या आकार में बढ़ जाने के कारण कई बार स्त्रियों को अपना जरायु भी निकलवाना पड़ जाता है।



गर्भाशय तान्तव

औषधियां :

- ❑ **केल्केरिया आयोड 3×** किसी भी प्रकार के जरायु अर्बुद की श्रेष्ठ औषधि है।
- ❑ मस्से के साथ अर्बुद, जरायु की गर्दन का फूलना जैसे लक्षणों में **नाइट्रिक एसिड 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ जरायु में फूलगोभी के समान अर्बुद, संभोग के समय दर्द महसूस होना, पेशाब करते समय खुजली होना इत्यादि लक्षणों में **थूजा 30** एवं **ग्रेफाइटिस 30** लाभकारी औषधि है।

- ❑ जरायु में अर्बुद हो जाने के कारण मासिक धर्म का स्थायी हो जाना, पेट में कतरने के समान दर्द होना, श्वेतप्रदर से ग्रसित हो जाना, जरायु में कड़ापन आ जाना जैसे लक्षणों में **सिकेलि कोर 30** लाभदायक औषधि है।

अध्याय-27

जरायु में रक्त स्त्राव

मासिक धर्म के अलावा जरायु प्रदेश से होने वाले रक्त स्त्राव को जरायु स्त्राव कहते हैं। जरायु स्त्राव का मासिक धर्म से कोई सबंध नहीं है। जरायु स्त्राव लाल रंग से लेकर काले रंग का भी हो सकता है। यदि लाल रंग का स्त्राव होता है तो उसे धमनी का रक्त स्त्राव कहते हैं एवं काला और बैंगनी स्त्राव होने पर उसे शिरा से स्त्राव कहते हैं। जरायु में रक्त स्त्राव के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं जैसे कि जरायु में अर्बुद हो जाना, जरायु प्रदेश एवं जरायु ग्रीवा में जख्म और मस्से हो जाना, जरायु भ्रंश हो जना, अत्यधिक मैथुन, अप्राकृतिक मैथुन, बार-बार गर्भपात कराना, प्रसव के बाद गर्भाशय का संकुचित न होना, जरायु प्रदेश की श्लेष्मिक झिल्ली में अत्यधिक रक्त स्त्राव होना, जरायु का चोट ग्रस्त हो जाना इत्यादि।

औषधियां :

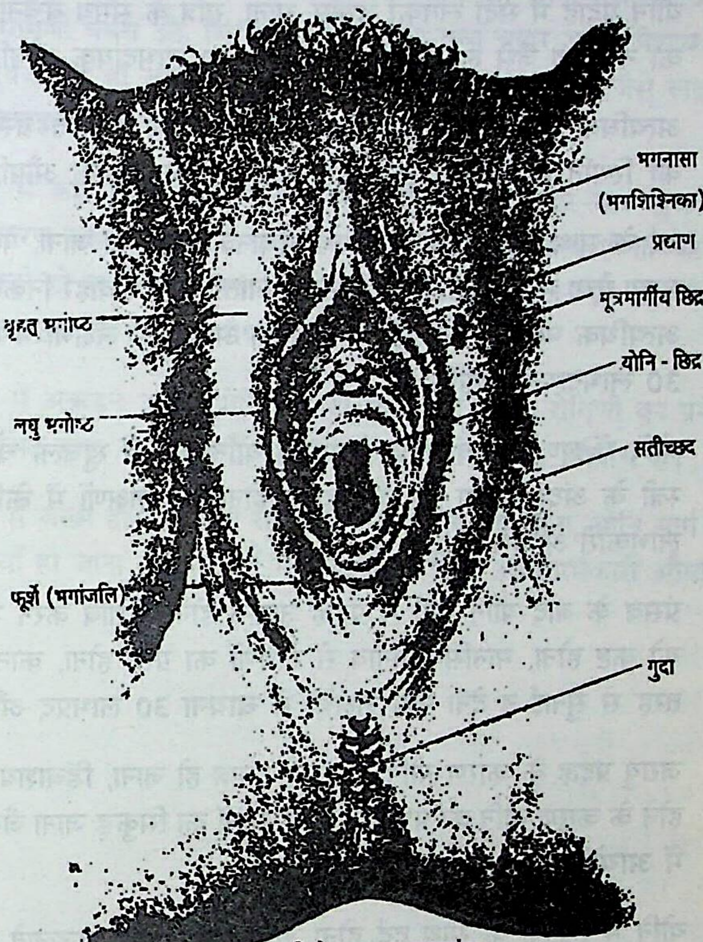
- **सेबाइना 30** लाल एवं चमकीला स्त्राव होने पर रोगिणी के लिए हितकर औषधि है।
- बिना दर्द वाले स्त्राव के लिए **हेमामेलिस 30** का प्रयोग करना हितकर होता है।
- प्रसव के बाद होने वाले प्रदर में रोगिणी के लिए **सिकेली 3** लाभकारी औषधि है।
- यदि स्त्राव का कारण चोट है तो **अर्निका 3×** लाभदायक औषधि है।
- रजोनिवृत्ति के बाद स्त्राव होने पर **लिकामाईनर 3** लाभकारी औषधि है।
- अगर स्त्राव का रंग काला है तो **केमोमिला 3** लाभदायक औषधि है।

अध्याय-28

योनि प्रदाह

योनि प्रदाह किसी एक कारण से होने वाली बीमारी नहीं है। कई बार साफ सफाई के अभाव में या किन्हीं अन्य रोगों के कारण स्त्री की योनि में प्रदाह हो सकता है। कभी-कभी योनि प्रदाह कुछ समय के लिए ही होता है परंतु उचित इलाज एवं साफ-सफाई के अभाव में यह बीमारी पुरानी और घातक हो जाती है। स्त्रियों में योनि प्रदाह के मुख्य कारण योनि मार्ग एवं उसके बाहरी भाग की साफ-सफाई न रखना, अत्यधिक श्वेतप्रदर का होना, गर्भाशय की बीमारियों से ग्रसित होना, गर्भाशय का अपने स्थान से हट जाना, शरीर में बहुत ज्यादा अम्ल का बनना, अत्यधिक संभोग, बलात्कार, स्त्री का सूजाक एवं सिफिलिस जैसे रोगों से पीड़ित होना, योनि मार्ग के बाहरी भाग में फोड़े फुंसी होना, योनि मार्ग की बाहरी त्वचा का रोगों से संक्रमित होना, (जैसे कि एक्जिमा, खुजली इत्यादि), गर्भपात हो जाना, बार-बार संतान उत्पत्ति होना, प्रमेह रोग से ग्रसित होना, अप्राकृतिक एवं हस्थ-मैथुन के कारण योनि का चोट ग्रस्त एवं क्षति-ग्रस्त हो जाना, गुदा मैथुन, संतोनोत्पत्ति के बाद योनि एवं मलद्वार के बीच की दूरी कम हो जाना, योनि मार्ग को ढककर न रखना जिसके कारण उसमें कृमि का प्रवेश कर जाना इत्यादि हो सकते हैं। योनि प्रदाह में रोगिणी की योनि से पीब एवं मवाद के समान स्त्राव होते रहता है। योनि की त्वचा पर छोटे-छोटे फोड़े फुंसी ऊग आते हैं और रोगिणी हमेशा अपनी योनि को खुजलाती रहती है। योनि मार्ग पर ऊगे बालों की उचित साफ-सफाई न करने से भी वहां की त्वचा विभिन्न प्राकर के संक्रमित रोग से ग्रसित हो जाती है।

कई बार ठीक तरीके से प्रसव न होने के कारण योनि चोट ग्रस्त हो जाती है। योनि मार्ग में सर्दी लग जाने के कारण भी योनि में प्रदाह हो सकता है। सामान्यत: इस रोग के प्रारंभ में योनि की बाहरी त्वचा लाल रंग की हो जाती है एवं योनि के बाहरी भागों में सूजन आ जाती है और दबाने पर दर्द बना रहता है। रोगिणी को इस भाग में गर्मी महसूस होती है एवं वह निरंतर बाहरी त्वचा को खुजलाती रहती है। रोगिणी को पेशाब करने में जलन एवं दर्द महसूस होता है एवं नये प्रदाह में जाड़े के साथ बुखार आना, कमर तथा उससे निचले



स्त्री के बाह्य जननांग

हिस्से में दर्द महसूस होना, नितम्बों में भारीपन तथा योनि से श्लेष्मा निकलने जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

पुराने प्रदाह में योनि का रंग नीला और लाल हो जाता है तथा पीला या गंदला स्त्राव योनि से निकलता है। योनि के भीतर छोटे-छोटे दाने या ऊतक हो जाते हैं जिनमें निरंतर खुजली चलती रहती है और योनि शिथिल पड़ जाती है।

स्त्रियों में योनि प्रदाह की समस्या आने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- योनि प्रदाह में सर्दी लगकर बुखार आना, रात्रि के समय बेचैनी और नींद का न आना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभदायक औषधि है।

- अत्यधिक संभोग या किसी अन्य कारणों से योनि के क्षति-ग्रस्त हो जाने की स्थिति में **अर्निका 30** योनि प्रदाह की लाभदायक औषधि है।

- दर्द के साथ योनि प्रदाह होना एवं अचानक पेशाब हो जाना, पेशाब करते समय ऐसा महसूस होना कि योनि का आंतरिक भाग बाहर निकल जाएगा, अत्यधिक प्यास लगना, मुँह में सूखापन आना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।

- योनि में शुष्कता एवं प्रदाह के समय योनि मार्ग में खुजली चलना और स्त्री के अंदर संभोग की तीव्र इच्छा होना जैसे लक्षणों में **केन्थ्रिस 30** लाभकारी औषधि है।

- प्रसव के बाद योनि मार्ग में प्रदाह उत्पन्न होना, पेशाब करने में रोगिणी को कष्ट होना, मानसिक तनाव से रोगिणी का ग्रस्त होना, कान से ठीक तरह से सुनाई न देना जैसे लक्षणों में **चायना 30** लाभप्रद औषधि है।

- जरायु प्रदाह के कारण योनि में प्रदाह उत्पन्न हो जाना, डिंबाशय में प्रदाह होने के कारण योनि का प्रभावित होना, स्तनों का सिकुड़ जाना जैसे लक्षणों में **आयोडिनम 30** लाभकारी औषधि है।

- योनि में चिनक के साथ दर्द होना, निरंतर योनि को खुजलाते रहने की इच्छा होना, पेशाब का बार-बार आना जैसे लक्षणों में **क्रियोजेट 30** अति उत्तम औषधि है।

- सर्दी लग जाने के कारण रूक-रूककर ऋतु स्त्राव आना जिसके कारण योनि में प्रदाह उत्पन्न हो जाना, सफेद रंग का थक्केदार गाढ़ा स्त्राव होना, रोगिणी का सदैव दुखी रहना, योनि प्रदाह के साथ तलपेट में दर्द बने रहना, काम वासना का अत्यधिक बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **प्लैटिनम 30, 200** लाभदायक औषधि हैं।

- योनि से बदबूदार स्त्राव होना, रोगिणी को रूक-रूककर ऋतु स्त्राव आना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30, 6** अत्यंत लाभदायक औषधि है।

- रोगिणी में ऋतु स्त्राव की अधिकता एवं स्त्राव का इतना तेजी से आना कि रोगिणी घबरा उठे, सिर में भारीपन रहना तथा चक्कर आना, पेशाब का यकायक बंद हो जाना, बार-बार शौच जाने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **सेबाइना 30** योनि प्रदाह की सर्वोत्तम औषधि है

- योनि में कष्ट कारक खुजली का निरंतर चलते रहना, बार-बार खुजलाने के कारण जख्म पड़ जाना एवं पीब और मवाद का स्त्राव होना, पेट में गड़बड़ी हो जाना तथा अचानक पेट में दर्द उत्पन्न होना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- योनि में अकड़न आना, योनि द्वार का शुष्क पड़ जाना, रोगिणी का प्रमेह से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** लाभदायक औषधि है।

- योनि में जख्म हो जाना एवं रोगिणी में पारा-दोष आ जाना, योनि मार्ग में फुंसियाँ हो जाना जैसे लक्षणों में **नाइट्रिक ऐसिड 30** लाभकारी औषधि है।

अध्याय-29

योनि में खुजली

स्त्रियों में जननांग संबंधी किसी भी रोग के कारण योनि द्वार या उसके चारों ओर की त्वचा और आंतरिक भाग संक्रमित एवं प्रदाहित हो सकते हैं। जिसके कारण योनि की बाहरी त्वचा, भगोष्ठ एवं आंतरिक भाग में कष्ट-कारक खुजली उत्पन्न हो सकती है। इसे योनि कण्डू अथवा भगोष्ठों की खुजली कहा जाता है। कई बार यह खुजली अत्यधिक गंभीर होती है जिसके कारण सामाजिक जीवन में स्त्री को एक अजीब सी परिस्थिति का सामना करना पड़ता है। हमेशा उसका ध्यान योनि भाग पर जाता है और कई बार तो वह लोगों के बीच में भी योनि मार्ग को खुजलाने लगती है जिससे कि उसकी समाज में हास्यास्पद स्थिति बन जाती है। इस रोग के कारण रोगिणी एकांत वासी होने लगती है। योनि की खुजली के कई कारण हो सकते हैं। निदान से पहले यह जान लेना अति आवश्यक है कि रोगिणी में खुजली कब और कैसे पैदा हुई एवं उसका मासिक धर्म सें क्या संबंध है इत्यादि। इलाज से पहले रोगिणी के योनि स्त्राव, गर्भाशय-ग्रीवा स्त्राव, मूत्र मार्ग स्त्राव, भग में स्थित ग्रंथियों के स्त्राव का प्रयोगशाला में परीक्षण करवाकर एवं खुजली के वास्तविक रोगाणुओं का पता लगाकर ही उचित निदान करना चाहिए। रोगिणी का रक्त परीक्षण करवाकर भी देखना चाहिए। कई बार सूजाक के जीवाणु गोनोकाकस के द्वारा निकलने वाले स्त्राव के कारण भी भग पर खुजली हो जाती है। रजोनिवृत्ति के बाद ऐसा देखा गया है कि स्त्रियों के योनि मार्ग में खुजली उत्पन्न हो जाती है। पस बनाने वाले जीवाणु जैसे कि स्ट्रेप्टोकोकाई, स्टेफिलोकोकाई आदि से योनि शोथ हो जाता है जिसके कारण योनि मार्ग से निरंतर स्त्राव होते रहता है और योनि पर खुजली उत्पत्र हो जाती है। कम उम्र की बालिकाओं में उचित साफ-सफाई के अभाव में भी योनि में खुजली उत्पत्र हो जाती है। कुछ स्त्रियों में मूत्र अनियंत्रित रूप से निकलता रहता है जिसके कारण योनि हमेशा गीली रहती है और योनि मार्ग में खुजली उत्पत्र हो जाती है। योनि मार्ग की त्वचा अत्यधिक संवेदनशील रहती है एवं शरीर में किसी भी प्रकार के त्वचा रोग जैसे कि खुजली, दाद, एक्जिमा, सैऊआ इत्यादि के संक्रमण होने पर योनि के आसपास की त्वचा सबसे पहले संक्रमित

हो जाती है। गंदले एवं श्लेष्मा-युक्त श्वेतप्रदर बने रहने के कारण योनि मार्ग की त्वचा छिल सी जाती है और वहां पर खुजली उत्पन्न होने लगती है।

गंदे आंतरिक वस्त्र पहनने के कारण भी योनि मार्ग की त्वचा संक्रमित हो सकती है। पेशाब में अत्यधिक अम्लता का बढ़ जाना, मदिरा पान या अन्य कामोत्तेजक और नशीली दवाओं के सेवन से भी योनि मार्ग की त्वचा संक्रमित हो सकती है। मधुमेह के रोगियों को योनि मार्ग की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गर्भ-निरोधक गोलियां, जेली, किसी प्रकार की क्रीम या अन्य औषधि के उपयोग से भी योनि मार्ग की त्वचा संक्रमित हो सकती है। स्त्री का जननांग चारो ओर से बालों के द्वारा ढका हुआ होता है एवं इसकी बाहरी त्वचा तैलीय होती है। कभी-कभी ऋतु स्त्राव के समय एक ही कपड़े का उपयोग करते रहने से या बालों के टूट जाने के कारण यहां पर खुजली और बाल तोड़ जैसे फोड़े हो सकते हैं।

योनि मार्ग में खुजली से प्रदाहित होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- ❑ जलन उत्पन्न करने वाली असहनीय खुजली, योनि में फंसियां हो जाना एवं गर्मी का अनुभव होना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ योनि में पानी भरी फुंसियां हो जाना तथा उनमें सड़ान्ध उत्पन्न होना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक 30, 6** लाभकारी औषधि है।
- ❑ गर्भावस्था के समय योनि में खुजली होना तथा रोगिणी को गुदा में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **कालिंसोनिया 3** लाभप्रद औषधि है।
- ❑ योनि में सूजन आ जाना, सूखी खुजली चलना, रात्रि के समय खुजली में वृद्धि हो जाना, रोगिणी का कमला, कब्ज एवं दस्त से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **डॉलिकस 6** लाभदायक औषधि है।
- ❑ अगर रोगिणी बवासीर से भी ग्रसित हो तो **कालिंसोनिया 3, 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ योनि में अत्यधिक खुजली होना जिसके कारण स्त्री हस्थ-मैथुन करने के

लिए बाध्य हो जाए ऐसी स्थिति में **जिंकम मेट 6** लाभदायक औषधि है।

- योनि में खुजली के साथ-साथ डंक मारने जैसा दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **अर्टिका यूरेंस क्यू, 3** लाभदायक औषधि है।
- किसी भी प्रकार की खुजली में **कलेन्डुला क्यू (मदर टिंचर)** को पानी में डालकर नित्य दिन में दो या तीन बार योनि को धोने से हर प्रकार की खुजली में लाभ मिलता है।
- योनि द्वार के साथ-साथ मलद्वार में भी खुजली होना जैसे लक्षणों में **कार्बोवेज 30** उपयुक्त औषधि है।
- योनि द्वार का फोड़े फुंसियों से ग्रस्त होना साथ-साथ जरायु का अपने स्थान से नीचे आ जाना, मासिक धर्म में असमानता, रूक-रूककर पेशाब होना आदि लक्षणों में **कोनियम 30** लाभकारी औषधि है।
- ग्रसित स्थान में सूखापन, मासिक धर्म के समय और बाद में खुजली का अधिक होना, पेट का असाधारण रूप से फूल जाना, रात के समय खुजली का अत्यधिक बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **लायकोपोडियम 30** लाभदायक औषधि है।
- योनि द्वार में अत्यधिक खुजली होना, वहां पर बालों का गिर जाना जैसे लक्षणों में **नेट्रम म्यूर 30** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- पेशाब निकलते ही योनि द्वार पर खुजली होने लगना, हरे रंग के बदबूदार प्रदर का योनि से निकलना, मुख से हमेशा लार गिरते रहना, बोलते समय मुख से थूक निकलना जैसे लक्षणों में **मरक्यूरस 30** लाभप्रद औषधि है।
- गर्भावस्था की स्थिति में योनि द्वार में खुजली एवं अकड़न, भगोष्ठों में सूजन आ जाना, खांसी के साथ डकार आ जाना जैसे लक्षणों में **एम्ब्राग्रेसिया 30** का सेवन करना हितकर होता है।

योनि भ्रंश

जरायु का अपने स्थान से सरककर योनि मार्ग में आ जाने के कारण योनि अपने स्थान से हट जाती है। योनि का बाहर की ओर निकलकर लटक जाने की अवस्था को योनि भ्रंश कहते हैं। मूत्राशय में सूजन के कारण या पेट में कब्ज रहने के कारण अत्यधिक दबाव बनने से भी योनि की स्थान च्युति हो जाती है। ठीक इसी प्रकार प्रसव के समय असामान्य स्थिति या शल्यक्रिया के द्वारा प्रसव होने के कारण भी योनि की स्थान च्युति हो जाती है। कई बार अप्राकृतिक मैथुन इत्यादि के कारण भी योनि की स्थान च्युति होने की संभावना बनी रहती है।

योनि भ्रंश हो जाने की स्थिति में स्त्रियों को निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- **स्ट्रैनम** 6 इस रोग की मुख्य औषधि है। पेट में निरंतर कब्ज बने रहना एवं कठोर मल होने के कारण होने वाले योनि भ्रंश में यह औषधि बहुत लाभकारी होती है।
- योनि भ्रंश अगर अपने साथ अत्यधिक खुजली लिए हुए हो और साथ में स्त्री में अत्यधिक कमोत्तेजना हो तो उपरोक्त लक्षणों में **क्रियोजेट 6** लाभप्रद औषधि है।
- बलात्कार, अत्यधिक सहवास या हस्थ-मैथुन एवं अप्राकृतिक मैथुन के आघात से योनि भ्रंश हुई हो तो **अर्निका 30** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- मलद्वार में भार का अनुभव तथा पखाना जाते समय योनि मार्ग से आतंरिक भागों के बाहर आने जैसा महसूस होना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** लाभकारी औषधि है।
- संपूर्ण योनि का भगद्वार से बाहर निकल जाने जैसे लक्षण में **ओसिमस कैनम** 6, 30 लाभदायक औषधि है।

- योनि भ्रंश के साथ अगर डंक मारने जैसा दर्द महसूस हो तो **एपिस 6, 30** लाभकारी और्षधि है।
- ऊपर चढ़ने या भारी चीज उठाने के कारण जरायु का स्थान च्युति होना एवं उसके कारण योनि भ्रंश उत्पन्न हो जाना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 6, 30** लाभदायक औषधि है।

स्त्रियों में ठंडापन

स्त्रियों का संभोग के प्रति कोई आकर्षण न होना एवं कामोत्तेजना का सर्वथा अभाव, संभोग के समय पुरूप को सहयोग न करना, संभोग में अरुचि होना इत्यादि स्त्रियों में ठंडापन या संढत्व कहलाता है। कुछ स्त्रियों में कामेच्छा एवं कामोत्तेजना के होते हुए भी उनका किसी कारण वश स्खलित न होना भी ठंडापन की श्रेणी में आता है। स्त्रियों में ठंडापन के कई कारण हो सकते हैं। कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि स्त्रियों में कामेच्छा एवं कामोत्तेजना का पूर्ण अभाव होता है और वे संभोग के नाम से ही घृणा करती हैं। उनके मन मस्तिष्क में पुरूप का संपर्क, स्पर्श, चुंबन, आलिंगन तथा अन्य यौन क्रीड़ाओं के बारे में घृणा के भाव होते हैं। विवाह के उपरांत वे पुरूष को संभोग में बिल्कुल भी सहयोग नहीं देती एवं हमेशा संभोग की स्थिति से बचती रहती हैं। वे क्षद्म रूप से बीमारी का बहाना बनाकर या किसी अन्य कारणों से अपने आपको पुरूष से दूर रखने की चेष्टा करती हैं। इस तरह की स्थिति में संभोग एक तरफा होता है और कुछ समय उपरांत पुरूष को भी संभोग से विरक्ति होने लगती हैं। ऐसी स्त्रियां संभोग को मात्र संतानोत्पत्ति करने का साधन समझती हैं। उनके लिए स्खलित होकर चरम आनंद प्राप्त करने की कोई उपयोगिता नहीं रहती। दूसरी श्रेणी में कामेच्छा होते हुए भी किसी कारण वश जैसे कि मन पसंद पुरूष का न होना, संभोग के समय पुरूष का शीध्रपतन हो जाना, संभोग के समय पुरूष का अत्यधिक क्रूर व्यवहार, स्त्री की योनि का अत्यधिक संकुचित होना इत्यादि कारणों से स्त्री संभोग के समय स्खलित नहीं हो पाती या कई अन्य मनोवैज्ञानिक कारणों से संभोग में संपूर्ण रूप से सहयोग नहीं करती। ऐसी स्त्रियां भी कामशीलता की श्रेणी में आती हैं। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि सामान्य परिस्थिति में कुछ स्त्रियां संभोग के प्रति पूर्ण उदासीन होती हैं परंतु असामान्य यौन क्रीड़ाओं समलैंगिक, अप्राकृतिक मैथुन, मादक पदार्थों के सेवन इत्यादि करने से उनमें कमोत्तेजना बढ़ जाती है और वे चरम सुख की प्राप्ति करती हैं। कुछ स्त्रियों के मन में बहुत ज्यादा धार्मिक ग्रंथो के पढ़ने या अध्यात्मवाद के कारण संभोग के प्रति एक प्रकार के विषाद पूर्ण भाव बन जाते हैं। वे कामशीलता

को उच्चतम चरित्र का मापदंड मान बैठती हैं और संभोग क्रिया को अधम समझने लगती हैं। इस प्रकार की मनोवृत्ति बन जाने के बाद धीरे-धीरे उनमें ठंडापन आ जाता है और वे पुरूष संसर्ग एवं संभोग को घृणित कार्य मानने लग जाती हैं। उपरोक्त विचार उनके कम पढ़ा लिखा होने के कारण या अत्यधिक धर्मभीरु परिवार में रहने के कारण बाल्यावस्था में ही स्त्रियों के अवचेतन मस्तिष्क में बैठ जाते हैं जिसके कारण उनके व्यवहार में पुरूष के प्रति ठंडापन आ जाता है।

कुछ स्त्रियों में भय के कारण ठंडापन आ जाता है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि प्रथम रात्रि के समय पुरूष के लिंग का आकार पहली बार देखने के कारण नवविवाहित स्त्री में एक प्रकार का भय उत्पन्न हो जाता है। पुरूष द्वारा स्त्री के प्रति क्रूर एवं जोर जबरदस्ती से किए गये संभोग के कारण स्त्री के मन मस्तिष्क पर संभोग की एक गलत छवि बैठ जाती है जिसके कारण उसमें संभोग के प्रति अरुचि हो जाती है। स्त्री की इच्छा के बिना किये गये संभोग से भी स्त्री में ठंडापन आ जाता है। संभोग के बाद गर्भवती हो जाने के भय से बहुत सी स्त्रियां संभोग से निरंतर बचती रहती हैं और अधिक समय तक ऐसी स्थिति बने रहने पर उनमें ठंडापन आ जाता है। बाल्यावस्था में बलात्कार एवं परिवार में किसी के साथ संभोग के समय बेरहमी करते देख लेना भी स्त्रियों के अंदर ठंडापन का कारण बन सकता है। स्त्री का पुरूष के प्रति पूर्ण विश्वास न होना एवं पुरूष का अपनी पत्नी के अलावा अन्य जगह भी शारीरिक संबंध होना स्त्रियों में ठंडेपन का कारण बन जाता है। कुछ स्त्रियां लंबे समय तक समलैंगिकता में लिप्त रहने के कारण पुरूषों को पसंद नहीं करती। संभोग के समय एकांत वास न होना, संयुक्त परिवार में बुजुर्गों के सानिध्य में निरंतर रहना, स्त्री को संभोग का ज्ञान न होना भी ठंडेपन का कारण बन सकते हैं। प्रसव के बाद स्त्री की योनि भ्रंश हो जाना, उसे किसी भी प्रकार के संसर्ग की अनुभूति न होना, यौनांगों में गुप्त रोग हो जाना, शारीरिक कमजोरी, यौनांगों मे स्त्राव होते रहना, यौनांगों में सूजन, ट्यूमर, रसोली इत्यादि का हो जाना, संभोग के बाद अत्यधिक दर्द महसूस होना, पुरूष का स्त्री मे सामन्जस्य स्थापित न हो पाना, पुरूष का स्त्री से उम्र में अधिक बड़ा होना, स्त्री में कामोत्तेजक हर्मोन का अभाव, अत्यधिक शारीरिक श्रम इत्यादि कई ऐसे कारण हैं जो स्त्री में ठंडापन उत्पन्न कर सकते हैं। पुरूष के लिंग की मौटाई की तुलना में स्त्री की योनि

में गहरापन न होना एवं लिंग का योनि में पूर्ण रूप से प्रविष्ट न हो पाना, संभोग के समय वेदना युक्त दर्द महसूस होना जैसे कारण भी स्त्री में ठंडापन ला सकते हैं।

स्त्रियों में ठंडेपन के लक्षण दिखाई देने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना हितकर है।

- संभोग के समय योनि की मांस पेशियों के सिकुड़ जाने की स्थिति में **केक्टस मूल अर्क, 3** का सेवन करना हितकर होता है।
- मैथुन के पहले या बाद योनि में अत्यंत तीव्र जलन होना, योनि का खुस्क रहना, जांघों में भारीपन महसूस होना मानो कि ऋतु स्त्राव होने वाला है जैसे लक्षणों में **लायकोपोडियम 30** लाभदायक औषधि है।
- संभोग के बाद स्त्री के स्वर यंत्र से कंपन युक्त ध्वनि निकलना या बोलते समय हकलाने लगना जैसी स्थिति में **सेड्रन मूल अर्क, 3** लाभदायक औषधि है।
- योनि का असंवदेनशील हो जाना, मैथुन के दौरान उसमें किसी भी प्रकार की संवेदना न रहना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस** 30 लाभदायक औषधि है।
- संभोग के बाद श्वास का भारी हो जाना जैसी स्थिति में रोगिणी के लिए **स्टेफिसेग्रिया** 30 लाभदायक औषधि है।
- मैथुन के समय रोगिणी को कष्ट होना एवं सहवास के बाद योनि मार्ग से रक्त का आना और काटता हुआ दर्द महसूस होने पर **क्रियोजेट 30** लाभदायक औषधि है।
- संभोग के समय एवं बाद में स्त्री के जननांगों में दर्द होने पर **क्रियोजेट** 30 लाभदायक औषधि है।
- मैथुन काल में दर्द, जरायु का मुख छिल जाना एवं मैथुन के बाद रुधिर का आने लगना जैसे लक्षणों में **अर्जेण्टम नाइट्रिकम** 30 लाभदायक औषधि है।

- रोगिणी के जरायु का अत्यधिक संवेदनशील होना, रोगिणी को हमेशा मैथुन के समय जरायु में दर्द होते रहने की अनुभूति होना जैसे लक्षणों में **हाइड्रोफोटिन 30** लाभकारी औषधि है।

- मैथुन के समय असहनीय पीड़ा होना एवं प्रदर होते रहना जैसे लक्षणों में **सीपिया 200** का सेवन करना लाभदायक होता है।

- सहवास में आनंद की अनुभति का सर्वथा अभाव, रोगिणी का पथरी जैसी बीमारी से ग्रसित होना, यौन संबंधों के बाद जननांग से लेकर जांघों तक काटता हुआ दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **बर्बेरिस बल्ग मूल अर्क** लाभदायक औषधि है।

- रोगिणी को संभोग से अरुचि एवं घृणा होना, पुरूष को संभोग के समय सहयोग न करना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** लाभकारी औषधि है।

- रोगिणी के अंदर यौन इच्छा का अत्यंत कम होना जिसके कारण उसे सहवास में आनंद की अनुभूति न होना जैसे लक्षणों में **कास्टिकम 30** लाभप्रद औषधि है।

- मैथुन के समय रोगिणी का दमा बढ़ जाना या उभर आना जैसे लक्षणों में **एम्ब्राग्रेसिया 2, 30** लाभकारी औषधि है।

- सहवास के समय रोगिणी की श्वास तेज हो जाना, रक्त का दबाव बढ़ जाना:, बेचैनी एवं घुटन महसूस होना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभकारी औषधि है।

- सहवास के नाम से ही रोगिणी के अंदर असाधारण भय की वृद्धि हो जाना, उसका रोना एवं चिल्लाने लगना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभकारी औषधि है।

- स्त्री का एकांत से भयभीत रहना एवं पति के साथ एकांत में रहने पर बेचैनी महसूस करना जैसे लक्षणों में **केलि कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।

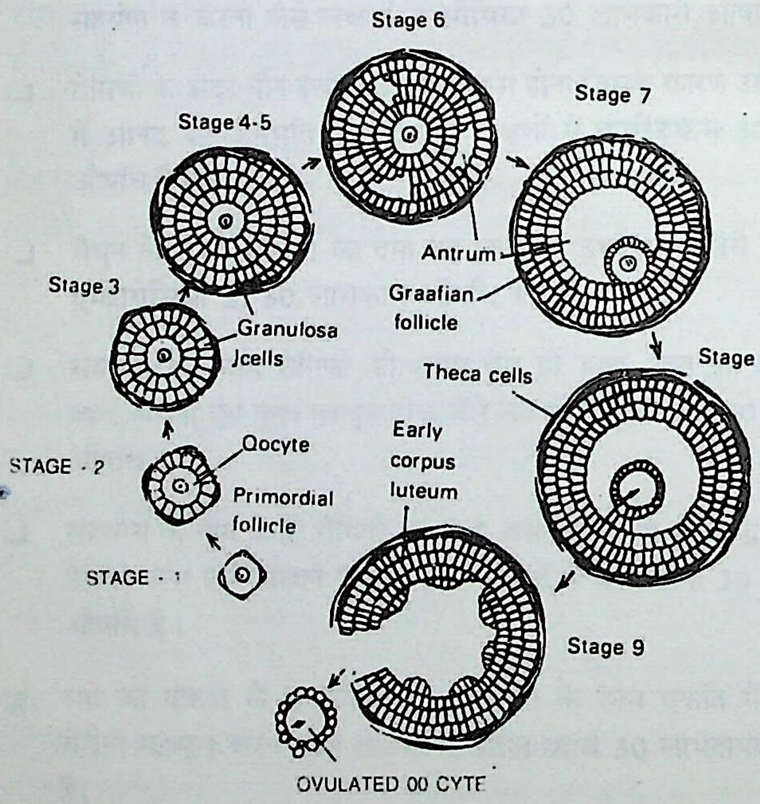
- परिवार में किसी मृत्यु या अत्यधिक शोकाकुल होने से स्त्री का संभोग

से पूरी तरह उदासीन हो जाना एवं हर समय शोकाकुल रहने जैसे लक्षणों में **प्लैटिना 30** लाभदायक औषधि है।

- स्त्री में बलात्कार एवं जोर जबरदस्ती के व्यवहार के कारण ठंडापन आ जाना जैसे लक्षणों में **हायोसियामस 30** लाभदायक औषधि है।
- स्त्री में प्रथम रात्रि के समय संभोग से अत्यधिक भयभीत हो जाना एवं भय के कारण बार-बार पसीना एवं दस्त आना जैसे लक्षणों में **ओपियम 30** लाभदायक औषधि है।

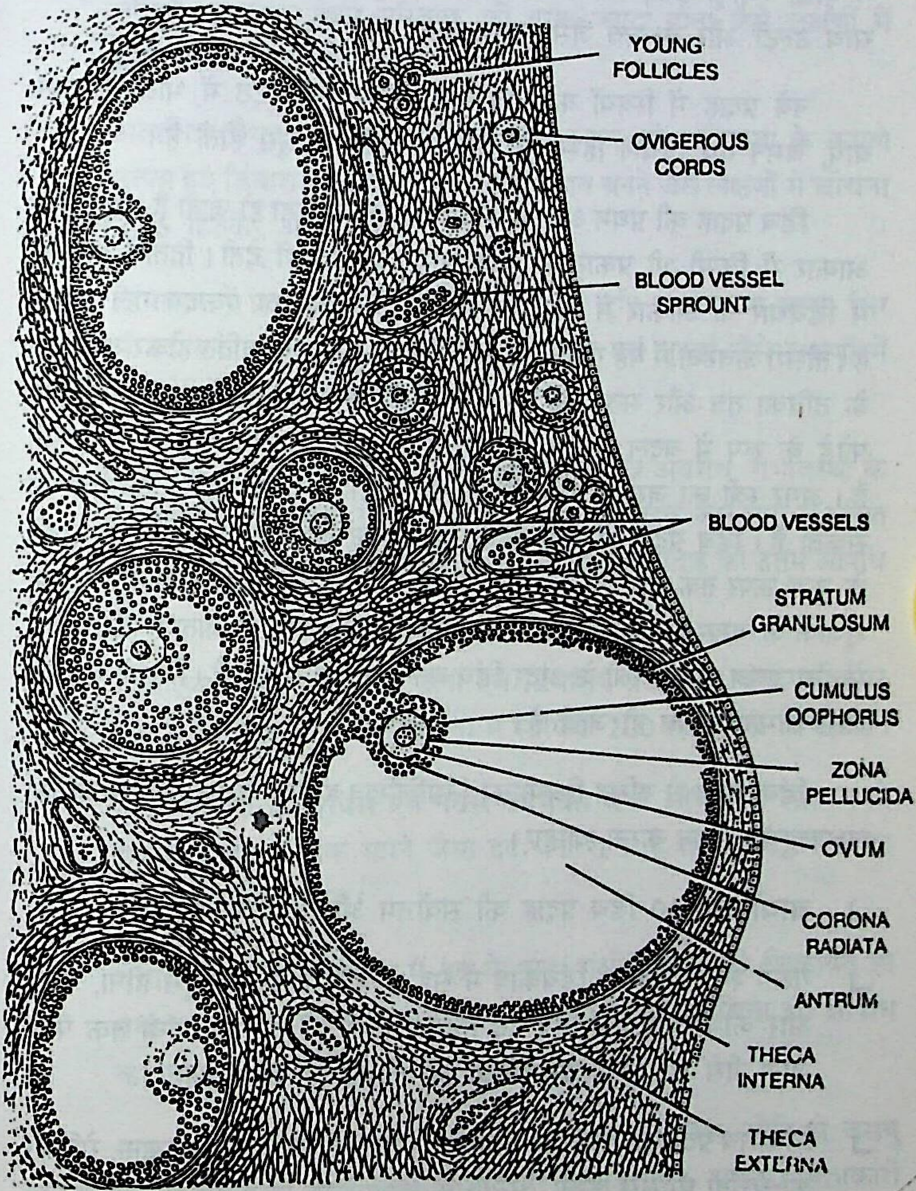
डिंब प्रदाह

सामान्यत: स्त्रियों में डिंब प्रदाह किन्हीं विशेष परिस्थिति में अस्थाई तौर पर हो जाता है एवं उचित चिकित्सा लेने से यह प्रदाह कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है परंतु चिकित्सा में लापरवाही या उचित औषधि न लेने से यह प्रदाह काफी पुराना और गंभीर हो जाता है। ऋतु स्त्राव के समय स्त्रियों द्वारा अपने शरीर के निचले हिस्से का ठीक से रख रखाव न करना एवं कमर से निचले हिस्से में ठंड लग जाने के कारण भी डिंब प्रदाह हो जाता है। स्त्रियों द्वारा अत्यधिक मद्यपान, ऋतु स्त्राव का नियमित न होना, ऋतु स्त्राव के समय संभोग करने से, स्त्रियों में अत्यधिक कामोन्माद एवं गलत आसनों में मैथुन करने से, कृत्रिम



Diagrammatic representation of Follicular growth

मैथुन, जरायु का किसी बीमारी से ग्रसित होने से, योनि मार्ग में यौन रोगों का संक्रमण एवं इन रोगों के संक्रमण से मूत्राशय, गर्भाशय और डिंबवाहिनी नलियों के संक्रमित हो जाने से भी डिंब प्रदाह हो जाता है। स्त्रियों द्वारा कृत्रिम गर्भपात कराने से भी डिंब प्रदाह हो सकता है।



T.S. Manmmalian ovary

स्त्री के निचले हिस्से में चोट लग जाने से या अधिक वजन उठाने से, नीचे झुककर लंबे समय तक काम करने से भी डिंब प्रदाह हो सकता है। डिंब प्रदाह के समय उरूसंधी के कुछ ऊपर दर्द, कनकनाहट, हिलने- डुलने से दर्द में वृद्धि, रज:कृच्छता, स्नायविक शूल, मल-मूत्र के त्याग में कष्ट और ज्वर के साथ उल्टी और बंध्यत्व जैसे लक्षण प्रकट होते हैं।

नये प्रदाह में स्त्रियों को तीव्र ज्वर, कमर तथा पुट्ठे में भारीपन, गुल्म वायु, वमन एवं निचले हिस्से में अकड़न आदि महसूस होती है।

डिंब प्रदाह की प्रथम अवस्था में डिंबधार कुछ कड़ा हो जाता है परंतु इसके आकार में किसी भी प्रकार की कोई वृद्धि दिखाई नहीं देती। द्वितीय अवस्था में डिंबधार के आकार में वृद्धि भी हो सकती है या वह एकदम गल सकता है। तीसरी अवस्था में यह गला हुआ अंश पीब के रूप में परिवर्तित होकर आसपास के तंत्रिका तंत्र और सतह को प्रभावित कर सकता है। चौथी अवस्था में यह फोड़े के रूप में बदल सकता है और इसके फूटने के बाद पीब फैल सकती है। अगर स्त्री का जरायु किसी रोग से ग्रसित हो तो डिंबाशय भी संक्रमित हो सकता है। डिंब प्रदाह में रोगिणी के घुटनों तक दर्द उतर आता है एवं पुट्ठे के कुछ ऊपर तक दर्द बना रहता है। जरायु के मुख पर कई बार उपदंश अथवा सूजाक के जख्म हो जाने से भी डिंबकोषों में प्रदाह उत्पन्न हो जाता है। डिंबाशय में दोष उत्पन्न होने से स्त्री के अंदर डिंब बनना बंद हो सकता है। जिससे बंध्यत्व जैसी बीमारी उत्पन्न हो जाती है।

डिंब प्रदाह से ग्रसित स्त्रियों को निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- ❑ **ब्रायोनिया 30** डिंब प्रदाह की सर्वोत्तम औषधि में से एक है।
- ❑ गहरी श्वास लेने पर डिंबकोष में सुई भेदने जैसा दर्द महसूस होना, बायीं और की डिंबग्रंथि में तीव्र दर्द महसूस होना एवं दर्द्र का जांघों तक फैल जाना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ डिंबाशय प्रदाह के साथ-साथ रोगिणी में पित्त की अधिकता हो जाना, रोगिणी का बेचैनी महसूस करना, अत्यधिक कामोत्तेजना के कारण पाँव में कम्पन होना एवं नींद न आना, प्रदाह के रहते रोगिणी का बार-बार वमन करना,

ऋतु स्त्राव का रूक जाना जैसे लक्षणों में **कोलोसिन्थिस 30** लाभकारी औषधि है।

- रक्त स्त्राव की अधिकता एवं सूतिका ज्वर के कारण डिंबाशय में प्रदाह, रोगिणी का ब्लड प्रेशर मस्तिष्क की तरफ ज्यादा होना जैसे लक्षणों में **क्रोटेलस 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- अत्यधिक मैथुन, अप्राकृतिक मैथुन, रक्त स्त्राव की अधिकता के कारण उत्पन्न हुए डिंबाशय प्रदाह एवं गुदाद्वार में दबाव बनने जैसे लक्षणों में **चायना 3, 6** हितकर औषधि है।

- डिंबाशय में प्रदाह के साथ-साथ रोगिणी की दृष्टि में दोष आ जाना, सिर में दर्द बना रहना, पाँव में अकड़न आ जाना एवं मूर्च्छा जैसे लक्षणों में **जेल्सीमियम 6** लाभदायक औषधि है।

- डिंबाशय में रक्त की अधिकता व ऋतुकाल में मूत्र अवरोध, गर्भावस्था के समय डिंबाशय प्रदाह, रोगिणी का प्रमेह अथवा सूजाक जैसे रोगों से ग्रसित होना। उपरोक्त लक्षणों में **हेमामेलिस 3×, 6** डिंबाशय प्रदाह की उत्तम औषधि है।

- डिंबाशय में रक्त संचय हो जाना एवं डिंबाशय प्रदाह का पीठ एवं कमर क्षेत्र में भी फैल जाना जैसे लक्षणों में **सीपिया 200** लाभकारी औषधि है।

- अगर रोगिणी को **ऐपिस** एवं **नक्स वोमिका** जैसी औषधि से लाभ न हो एवं डिंबाशय में डंक मारने जैसा दर्द बना रहता है तो **ऐब्रोटेनम 6** का उपयोग करना चाहिए।

- रोगिणी के बायें डिंबाशय में दर्द के साथ गंभीर कब्ज की शिकायत हो तथा पुट्ठों के समीप असहनीय वेदना महसूस होने पर **एलूमिना 30** औषधि का उपयोग करना हितकर सिद्ध होता है।

- अस्त्र चुभने जैसा डिंबाशय में दर्द, टपकन महसूस होना, योनि से जरायु का निकल जाने जैसी अनुभूति होने पर **बेलाडोना 6 या 30** लाभकारी औषधि है।

- ब्रायोनिया 30 के सेवन से रोगिणी को आराम न मिलना. दर्द एवं बेचैनी के कारण अत्यधिक व्याकुल हो उठना, पीड़ा वाले स्थान को दबाने से रोगिणी को आराम महसूस होना। उपरोक्त लक्षणों में **कोलोसिन्थ 30** लाभकारी औषधि है।

- रोगिणी के दायीं डिंबग्रंथि में सूजन एवं जलन महसूस होना, डिंबग्रंथि वाली जगह में डंक मारने जैसे दर्द होने पर **एपिस 30, 6** लाभदायक औषधि है।

- सर्दी लग जाने के कारण ऋतुरोध हो जाना, पेशाब जाते समय कष्ट महसूस होना एवं डिंब प्रदाह हो जाने जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभदायक औषधि है।

- डिंबग्रंथियों में मवाद आने की स्थिति में **हिपर सल्फ 30** का सेवन करना हितकर है।

- रोगिणी की डिंबग्रंथि में पस पड़ जाने पर **लेकेसिस** और **हिपर सल्फ** जैसी औषधियों से लाभ न हो तो **प्लैटिनम 6× या 30** उपयोगी औषधि सिद्ध होगी। इस औषधि के लक्षणों में रोगिणी अपनी टांगों को चौड़ी करके सोती है साथ ही उसमें अत्यधिक कमोत्तेजना होती है।

- रोगिणी को रूक-रूककर प्यास लगना, डिंबग्रथि के प्रदाह और सूजन में सिकाई के बाद आराम महसूस होना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक 30** लाभदायक औषधि है।

- बायीं डिंबग्रंथि में सूजन एवं प्रदाह की स्थिति साथ ही डिंबग्रंथि में मवाद आ जाना एवं रोगिणी में स्पर्श असहिष्णुता जैसे लक्षणों में **लेकेसिस 30** लाभदायक औषधि है।

- डिंबकोष में हल्का-हल्का दर्द महसूस होना, डिंबकोष में संकुचन आ जाना, बस्ति-गह्वर में भार महसूस होना, सिर में दर्द बना रहना, योनि में अत्यधिक खुजली चलना, पकाशय में दर्द होना जैसे लक्षणों में **टेरेण्टुला 30** लाभदायक औषधि है।

- रोगिणी के बायीं ओर के डिंबाशय में लगातार सुई छेदने के समान दर्द होना, श्वेतप्रदर से ग्रसित होना, ऋतु काल के समय डिंबाशय में तेज दर्द होना, बंध्यत्व, स्त्रियों के डिंबाशय में प्रदाह उत्पन्न होना जैसे लक्षणों में **ब्रोमियम 12** लाभदायक औषधि है।

पुराना प्रदाह

- डिंबकोष में कड़ापन किन्तु पीब न बनना, स्त्री में बांझपन आ जाना जैसे लक्षणों में **कोनियम 3** लाभदायक औषधि है।
- अगर उपरोक्त लक्षणों में **कोनियम 3** से लाभ न हो तो **प्लेटिना 6** एवं **ग्रेफाइटिस 30** में से किसी एक औषधि का प्रयोग करना हितकर होगा।
- उपरोक्त लक्षणों में अगर **कोनियम** से भी रोगिणी को फायदा नहीं होता हो एवं बायीं ओर के डिंबकोष में प्रदाह एवं कड़ापन महसूस होता है तो **थूजा 6** लाभदायक औषधि है।
- डिंबकोष में मवाद आ जाने जैसे लक्षण में **लेकेसिस 6** अत्यंत लाभकारी औषधि है।
- रोगिणी के डिंबाशय में पीब की उत्पत्ति न होने पर एवं उसके पैदा होने की आशंका में **मर्क कोर 6** का प्रयोग करना हितकर होता है।
- बायें डिंबाशय में दर्द, ऋतुकाल में डिंबाशय के दर्द में अत्यधिक वृद्धि होना, रोगिणी को हमेशा श्वेतप्रदर होते रहना एवं अत्यधिक सहवास में लिप्त होना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- डिंबाशय के प्रदाह के साथ-साथ बायें स्तन में दर्द होना, रात्रि के समय दर्द में वृद्धि हो जाना, दुर्गन्ध-युक्त श्वेतप्रदर होना जैसे लक्षणों में रोगिणी के लिए **लिलियमटिग 30** औषधि का सेवन करना हितकर होता है।
- रोगिणी का अप्राकृतिक एवं कृत्रिम मैथुन का अभ्यस्त होने से डिंब प्रदाह का उत्पन्न होना एवं मानसिक रूप से संभोग के प्रति उदासीन होना, योनि मार्ग में जलन एवं दर्द के साथ सूजन होना जैसे लक्षणों में **स्टैफिसेग्रिया 6, 30** लाभकारी औषधि है।

- रोगिणी का श्वेतप्रदर से पीड़ित होना एवं डिंबाशय में रक्त संचय हो जाना, दायीं ओर के डिंबाशय का प्रदाह से ग्रसित होना, प्रमेह का जरायु तक फैल जाना, पीले रंग का प्रदर स्त्राव एवं पीठ में दर्द बने रहना जैसे लक्षणों में **आयोडिनम 6, 30** लाभकारी औषधि है।

- लंबे समय से डिंबाशय में मवाद आने के कारण रोगिणी की शारीरिक दशा में क्षीणता आ जाना एवं बंध्यत्व की स्थिति बने रहना जेसे लक्षणों में **चायना 6** एवं **फास्फोरिक एसिड 6** औषधि का उपयोग करना हितकर होता है।

डिंबाशय की स्थान च्युति

औषधियां :

- डिंबाशय का नीचे की ओर आ जाना एवं बायीं ओर के डिंबाशय में ज्यादा दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **लिलियम 30** लाभकारी औषधि है।
- डिंबाशय में चोट लग जाना जिसके कारण डिंबाशय का स्थान च्युति हो जाना जैसे लक्षण में **अर्निका 30** लाभप्रद औषधि है।
- डिंबाशय का अचानक अपने स्थान से हट जाना एवं असहनीय पीड़ा के कारण चलने-फिरने में पीड़ा होना जैसे लक्षणों में **एमोन म्यूर 30** लाभकारी औषधि है।
- जरायु में गड़बड़ी एवं कठोरता आ जाना, जरायु तथा डिंबधार में भार का अनुभव होना, डिंबाशय में जलन एवं ऐंठन महसूस होना, डिंबाशय का संकुचित हो जाना, पीठ में तेज दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **कोनायम 30** लाभकारी औषधि है।
- जरायु में अत्यधिक दर्द होना, डिंबाशय में अकड़न तथा सुई चुभने जैसा दर्द होना जो पुट्ठे की ओर फैल जाता है। डिंबाशय का नीचे की ओर झूल जाना जैसे लक्षणों में **ब्यूफोराना 30** लाभकारी औषधि है।
- जरायु प्रदेश में रक्त अधिक बनना, डंक मारने जैसा दर्द होना, पूरे शरीर में चोट लगने के समान दर्द होना जैसे लक्षणों में **सिपिया 30** लाभकारी औषधि है।

डिंबाशय का अर्बुद

डिंबकोष में तरल पदार्थ भर जाने को डिंबाशय का शोथ तथा इसी तरल पदार्थ से भरे हुए किसी तंतु विधान का बन जाना डिंबाशय का अर्बुद कहलाता है। डिंबाशय में अर्बुद आकार में बेल के समान दिखाई देते हैं एवं इसके कारण डिंबकोष में अत्यधिक दर्द, प्रदर एवं ज्वर के साथ पेट बढ़ जाना जैसे लक्षण दिखाई पड़ते हैं। अर्बुद के कारण स्त्रियों के जरायु पर दबाव बढ़ जाता है जिसके कारण जरायु की स्थान च्युति भी देखने में आती है। यह एक गंभीर बीमारी है जिसका उचित इलाज न होने पर रोगिणी की मृत्यु भी हो सकती है। डिंबकोष में अर्बुद के कारण रोगिणी का मूत्र मार्ग भी प्रभावित हो जाता है। उसे बार-बार पेशाब जाने के साथ कब्ज के भी लक्षण प्रकट होते हैं। कुछ अर्बुदों में धीरे-धीरे वृद्धि होती है एवं कभी-कभी यह बहुत तेजी से भी बढ़ जाते हैं। ऐसा भी देखने में आया है कि डिंबाशय के अर्बुद कई वर्षों तक एक ही अवस्था में पड़े रहते है न ही इनके आकार में वृद्धि होती है और न ही ये समाप्त होते हैं।

डिंबाशय में अर्बुद हो जाने के कारण रोगिणी के संपूर्ण पाचन तंत्र पर विपरीत असर पड़ता है जिसके कारण उसे ठीक से भूख भी नहीं लगती एवं भोजन के उपरांत अत्यधिक बेचैनी और कष्ट महसूस होता है।

डिंबाशय में अर्बुद हो जाने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन हितकर है।

- ❑ डिंबकोष में फूलगोभी की आकृति का अर्बुद हो जाना, रोगिणी का गंभीर यौन रोगों से ग्रसित होना एवं बदबूदार प्रदर स्त्राव होना जैसे लक्षणों **थूजा 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ डिंबाशय में अर्बुद हो जाने की स्थिति में रोगिणी को **आयोडिनम 30** प्रति चार घंटे के अंतर से सेवन करना हितकर होता है।
- ❑ डिंबाशय में अर्बुद होने पर रोगिणी को रूक-रूककर डंक मारने जैसा दर्द महसूस होने पर **एपिस 3×** औषधि का सेवन करना हितकर है।
- ❑ डिंबाशय में अर्बुद के साथ-साथ रोगिणी के पेट में अत्यधिक दर्द होना जैसे लक्षणों में **कोलोसिन्थ 3 या 30** आठ आठ घंटे के अंतर से देना हितकर होता है।

स्त्रियों में बांझपन

जिस प्रकार पुरूषों में शुक्रकीट पैदा करने वाली दो शुक्र ग्रंथियां होती हैं ठीक उसी प्रकार स्त्रियों में इनके स्थान पर दो डिंब संरचनायें होती हैं इनको डिंबाशय या डिंबग्रंथियां कहा जाता है। डिंबग्रंथियां पेट के निचले हिस्से में गर्भाशय के दोनों ओर भूरे रंग की चपटी एवं बादाम के आकार की संरचनाएं होती हैं। डिबंग्रथियां पर्शिवक बंधन के पीछे की ओर स्थित होती है। बस्ति-गह्वर में ये डिंबग्रंथियां बगल की दीवार की ओर होती हैं एवं इनमें से एक गर्भाशय के दाहिनी ओर तथा दूसरी गर्भाशय के बायीं ओर स्थित होती है। डिंबग्रंथयों की लंबाई एक से पोने दो इंच एवं चौड़ाई पौन से लेकर एक इंच के लगभग होती है तथा इनकी मोटाई लगभग आधा इंच तक होती है।

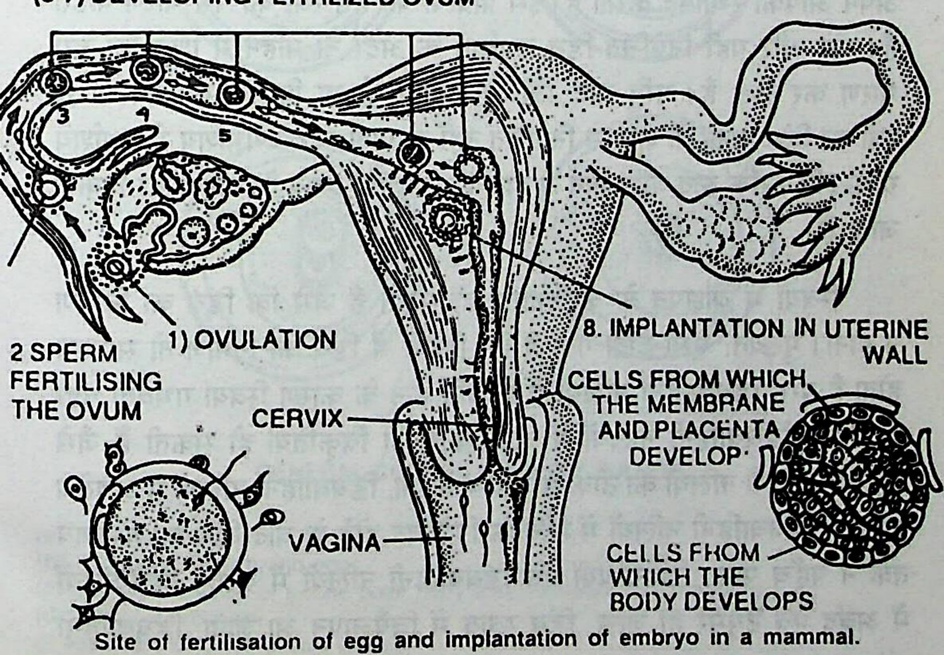
प्रत्येक डिंबग्रंथि के दो सिरे होते हैं इसका ऊपरी सिरा ऊर्ध्व ध्रुव कहलाता है एवं निचला सिरा निम्न ध्रुव कहलाता है। डिंबग्रंथियों का ऊपरी सिरा गर्भाशय के ऊर्ध्व कोण से जुड़ा होता है एवं निचला सिरा अंडवाही नली के रेशेदार अंश से जुड़ा रहता है। युवावस्था में डिंबग्रंथयों का बाहरी तल चिकना होता है परंतु जैसे-जैसे स्त्रियों की उम्र बढ़ती जाती है इसके तल में गड्ढे दिखाई देने लगते हैं। जिसका तात्पर्य यह है कि डिंबकोष कई बार फट चुके हैं और उनमें से डिंब का निष्कासन हो चुका है।

डिंबाशय में डिंब के अलावा आर्तव का भी निर्माण होता है। 40-45 वर्ष की उम्र में जैसे ही स्त्रियों में रजोनिवृत्ति आती है डिंबग्रंथियों में डिंब एवं आर्तव का निर्माण बंद हो जाता है और तदुपरांत स्त्री के अंदर संतानोत्पत्ति की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है। परंतु कभी-कभी अनुवांशिक कारणों से स्त्री 50 से 55 वर्ष की अवस्था तक भी संतान उत्पत्ति करने में समर्थ रहती है। डिंबग्रंथियों में किसी अनुवांशिक या डिंबग्रंथियों से संबंधित बीमारी के कारण या यौन रोगों के फलस्वरूप युवावस्था में भी डिंबग्रंथियों के अंदर डिंब के निर्माण की प्रक्रिया अवरोधित या बंद हो जाती है जिसके फलस्वरूप स्त्री संतनोत्पत्ति करने में असमर्थ हो जाती है। हमारे शरीर में बहुत सी अंत:स्त्रावी ग्रंथियां होती हैं और डिंबग्रंथियां

इन्हीं के अतंर्गत आती हैं। डिंबग्रंथियों में डिंब के अलावा ईस्ट्रोजेन, प्रोजेस्टेरोन नामक नारी हार्मोन का भी निर्माण होता है। डिंबग्रंथियों को सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखने पर ये छोटी-छोटी पेशियों से ढकी हुई दिखाई पड़ती हैं। इन्हें हम डिंबग्रंथियों का बाहरी त्वचा कोष कहते हैं एवं इनके भीतर गोल आकार के कई कोष होते हैं जिन्हें हम डिंब का आदि रूप भी कह सकते हैं।

डिंबाशय का केन्द्र भाग कुछ कड़ा होता है एवं बाकी भाग पिलपिला और नरम होता है। केन्द्र भाग के बीच में पके हुए डिंब कोष होते हैं और जब ये पककर तैयार हो जाते हैं तब इनके बाहर निकलने का समय आ जाता है। स्त्री के रजोकाल के दौरान ये स्वत: ही सतह पर आ पहुँचते हैं। सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखने पर पका हुआ डिंब एक बिंदू के सामन दिखाई पड़ता है। सामान्यत: डिंब स्त्रियों के ऋतुकाल में ही पकते हैं एवं ऋतुकाल के समाप्त होते ही ये डिंब पककर डिंबवाहिनी नलियों में चले जाते हैं। सामान्य अवस्था में एक महिने में एक ही डिंबग्रंथि सक्रिय रहती है एवं उसी से डिंब निकलता है। दूसरे महिने में दूसरी डिंबग्रंथि सक्रिय हो जाती है एवं पहली डिंबग्रंथि निष्क्रिय रहती है। एक साथ दोनों डिंबग्रंथियों का सक्रिय होना असामान्य स्थिति है एवं इस समस्या का उचित निदान आवश्यक है। गर्भाशय के ऊपरी भाग में दोनों और लगभग

(3-7) DEVELOPING FERTILIZED OVUM



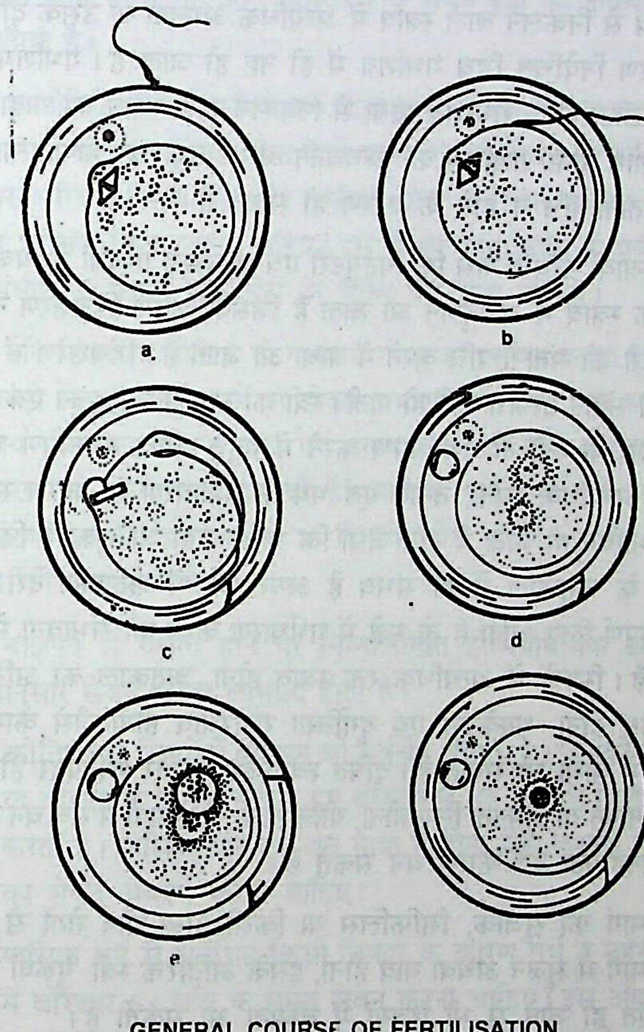
Site of fertilisation of egg and implantation of embryo in a mammal.

10 से 12 सेमी. लंबी एवं लगभग 1 सेमी. चौड़ी नलीदार संरचनाऐं होती हैं जो कि डिंबग्रंथियों से जुड़ी होती है। इन्हें हम डिंबवाहिनियां कहते हैं। डिंबवाहिनी नली का वह हिस्सा जो गर्भाशय के अंदर जुड़ा हुआ होता है अंतरालित भाग कहलाता है।

डिंबवाहिनी का सबसे चौड़ा झालीदार सिरा डिंबग्रंथियों से जुड़ा हुआ होता है। यह हिस्सा देखने में पीब या फनल के समान दिखाई देता है एवं इसे तुम्बिका कहते हैं। तुम्बिका और अंतरालिका भाग के बीच का हिस्सा इस्थमस कहलाता है। इस्थमस की लंबाई लगभग 35 मि.मी. होती है एवं तुम्बिका की चौड़ाई या झालीदार सिरा लगभग 60 से 75 मि.मी. तक चौड़ा होता है। तुम्बिका देखने में लहरदार झालर के समान दिखाई पड़ता है एवं इन्हीं झालरों में से एक लंबी झालर डिंबग्रंथि तक पहुँचती है। प्रति माह स्त्री के किसी न किसी डिंबग्रंथि में जब एक डिंब परिपक्व होता है तो वह डिंबग्रंथि से निकलकर डिंबवाहिनी नली की झालीदार संरचना के सहारे डिंबवाहिनी नली के बीचो-बीच इस्थमस में जा पहुँचता है। यहीं पर पुरूष वीर्य के एक शुक्राणु से स्त्री के डिंब का निषेचन होता है और फिर निषेचित डिंबवाहिनी-नलिका से होता हुआ गर्भाशय में जा पहुँचता है जहां पर यह निषेचित डिंब गर्भाशय की दीवार को छेदकर अपने आपको स्थापित करता है। इस प्रक्रिया को हम स्त्री का गर्भ धारण कहते हैं। धीरे-धीरे यही निषेचित डिंब गर्भाशय के अंदर नौ महिने में शिशु का रूप धारण कर लेता है। परंतु यदि स्त्री अविवाहित है या किसी अन्य कारणों से स्त्री का डिंब पुरूष के शुक्र से निषेचित नहीं हो पाता तो वह गर्भाशय से गर्भाशय ग्रीवा और उसके बाद योनि मार्ग से होता हुआ आर्तव स्त्राव के साथ बहार निकल जाता है।

स्त्रियों में बांझपन के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि डिंब का निर्माण न होना। मुख्यत: ऐसा देखा गया है कि स्त्रियों में डिंब का निर्माण तो सामान्य होता है परंतु डिंबवाहिनी नलियों में विकृति होने के कारण स्त्रियां गर्भवती नहीं हो पाती। डिंबवाहिनी नलियों में कई प्रकार की विकृतियां हो सकती हैं जैसे कि डिंबवाहिनी नलियों का ठीक से कार्य न करना, डिंबवाहिनी नलियों में अवरोध होना या डिंबवाहिनी नलियों में डिंब के निषेचित होने के बाद डिंब का गर्भाशय तक न पहुँच पाना, डिंबग्रंथियों एवं डिंबवाहिनी नलियों में प्रदाह, डिंबग्रंथियों में अर्बुद एवं ट्यूमर हो जाना, डिंब स्त्राव में विषैलापन आ जाना, डिंबवाहिनी

नलिकाओं का सिकुड़ जाना, डिंबग्रंथियों में सर्दी बैठ जाना इत्यादि। कुछ स्त्रियों का योनि मार्ग अत्यंत संकुचित एवं उथला होता है जिसके कारण पुरूष को संभोग करने में अत्यधिक कष्ट महसूस होता है और इसी कारण से पुरूष के वीर्य में उपस्थित शुक्रकीट डिंबवाहिनी नलियों तक नहीं पहुँच पाते।



GENERAL COURSE OF FERTILISATION

(a) Approach of sperm.
(b) Fusion of Sperm and egg.
(c) and (d) Emission of sicone polar body and Formation of Pronocleus
(d) Union of prounclei.
(f) Assembly of chromosome groups.

गर्भाशय का पूर्ण रूप से विकसित न होना, गर्भाशय की संरचना में अनुवांशिक दोष होना, गर्भाशय का अपने स्थान से विमुख हो जाना, गर्भाशय के अंदर अर्बुद एवं ट्यूमर इत्यादि हो जाना एवं गर्भाशय का अत्यधिक छोटा होना जैसे कारणों से भी निषेचित डिंब गर्भाशय में स्थापित नहीं हो पाता।

गर्भाशय से निकलने वाले स्त्राव में अत्यधिक अम्लता या उसके दूषित हो जाने के कारण निषेचित डिंब गर्भाशय में ही नष्ट हो जाता है। गर्भाशय ग्रीवा के मुख का छोटा होना, गर्भाशय ग्रीवा से निकलने वाले स्त्राव का गाढ़ा होना, गर्भाशय में शोथ होना, गर्भाशय का पश्चवर्तन और अग्रकुश्चन होना इत्यादि भी स्त्रियों में संतानोत्पत्ति न होने के कारण हो सकते हैं।

अंत:स्त्रावी ग्रंथियां जैसे कि पिट्यूटरी एवं थाइराइड ग्रंथियों में विकार आ जाने से इनके स्त्राव में असंतुलन आ जाता है जिसके कारण डिंबक्षरण नहीं हो पाता और स्त्री को संतानोत्पत्ति करने में बाधा आ जाती है। डिंबक्षरण में संभोग न होने से भी संतान उत्पत्ति नहीं हो पाती। स्त्री का मानसिक संतुलन एवं उसकी मानसिक दशा भी स्त्री के गर्भ धारण करने में बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अत्यधिक चिंता, तनाव एवं भय के वातावरण के कारण स्त्री का ऋतुकाल प्रभावित हो जाता है और जैसा कि पहले कहा जा चुका है डिंबों का पकना स्त्री के ऋतुकाल में ही संभव है अगर स्त्री में ऋतुकाल देरी से या अनियमिततापूर्ण लिए आता है तो स्त्री में गर्भधारण करने की संभावना में कमी आ सकती है। स्त्रियों में अत्यधिक रक्त स्त्राव होना, ऋतुकाल का अनियमित होना, ऋतुरोध होना, थक्केदार एवं दुर्गन्धित रज:स्त्राव होना जैसे कारण भी संतानोत्पत्ति में बाधा ला सकते हैं। दूषित श्वेतप्रदर, निरंतर श्वेतप्रदर होना एवं श्वेतप्रदर पीलापन या अम्लता लिए होना, योनि शोथ, योनि मार्ग में संकुचन इत्यादि स्त्री में संतानहीनता का कारण बन सकते हैं।

योनि मार्ग का सूजाक, सिफिलिस या किसी अन्य यौन रोगों से ग्रसित होना, योनि मार्ग में सूजन अथवा घाव होना, इसके अतिरिक्त स्त्री-पुरूषों के रक्त वर्गों में संगति हो जाने से भी स्त्रियों में बंध्यता आ सकती है।

सर्वप्रथम स्त्रियों में संतानहीनता के लक्षण पाये जाने पर चिकित्सक को नैदानिक परिक्षणों के द्वारा यह मालूम करना चाहिए कि स्त्रियों में संतानहीनता का मूलभूत कारण क्या है ? तदुपरांत उचित होमियोपैथिक औषधि के सेवन से इलाज आसान हो जाता है।

सर्वप्रथम स्त्री का सार्वदैहिक परीक्षण करना चाहिए एवं उसके बाद स्त्री के मासिक धर्म से संबंधित रोगों का परीक्षण अत्यधिक आवश्यक है। डिंबवाहिनी नलियों में अवरूद्धता एवं गर्भाशय और डिंबग्रंथियों का परीक्षण सोनोग्राफी या एक्स-रे के द्वारा किया जा सकता है। जिससे यह मालूम हो सके कि डिंबक्षरण प्रतिमाह होता भी है या नहीं। डिंबक्षरण के समय स्त्री का तापमान परीक्षण भी आवश्यक है।

एण्डोमिट्रियम बायोप्सी के द्वारा डिंबक्षरण के विषय में पता लगाया जा सकता है। मासिक धर्म शुरू होने से कुछ दिनों पहले एण्डोमिट्रियम के छोटे-छोटे टुकड़ों के द्वारा परीक्षण किया जाता है। गर्भाशय ग्रीवा में स्थित श्लेष्मा का संभोग के पश्चात परीक्षण किया जाना चाहिए। इसे सिम्म टेस्ट कहते हैं एवं इस परीक्षण को संभोग के पश्चात पांच घंटों के भीतर कर लेना चाहिए।

यदि डिंबक्षरण होता है तो गर्भाशय ग्रीवा का श्लेष्मा पतला एवं साफ रहता है जिससे कि शुक्राणु उसमें से होकर गर्भाशय में प्रवेश कर सकें परंतु यदि गर्भाशय ग्रीवा का श्लेष्मा गाढ़ा एवं अस्वच्छ हो तो ऐसा समझा जाता है कि डिंबक्षरण की क्रिया नहीं हो रही है। मासिक धर्म शुरू होने के 14 वें दिन डिंबक्षरण होता है। अत: 12 से 16 दिन के बीच प्रतिदिन संभोग करने से गर्भ ठहरने की स्थिति बनती है।

बांझपन से ग्रसित होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना लाभप्रद होता है।

- **कोनियम 3** स्त्रियों में बांझपन की सर्वश्रेष्ठ औषधि है। डिंबकोष की कमजोरी या क्षीणता के कारण उत्पन्न हुए बंध्यत्व में यह औषधि विशेष लाभ प्रदान करती है। मासिक धर्म का न्यून मात्रा में होना जैसे लक्षणों में इस औषधि का सेवन अवश्य करना चाहिए।
- मासिक धर्म से संबंधित किसी विकार के कारण गर्भ न ठहरने की स्थिति में **बोरेक्स** 6× रात्रि के समय सेवन करना चाहिए। इस औषधि के सेवन से गर्भाशय संबंधी विकार नष्ट हो जाते हैं एवं स्त्री गर्भ धारण करने में समर्थ हो जाती है। श्वेतप्रदर का निरंतर होते रहना एवं जरायु में श्लेष्मिक झिल्ली के बढ़ जाने पर मासिक धर्म में कष्ट जैसे लक्षणों में उपरोक्त औषधि हितकर है।

- बंध्यत्व से ग्रसित स्त्री के शरीर का दुबला-पतला होना, मासिक धर्म अनियमित होना तथा प्रदर एवं कब्ज से ग्रसित होना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30, 200** लाभकारी औषधि है।
- डिंबग्रंथियों में सूजन होना एवं अत्यधिक कामेच्छा इत्यादि कारणों से गर्भ धारण न करने की स्थिति में **प्लैटिना 30** का सेवन हितकर होता है।
- प्रदर के कारण बांझपन होना, शरीर पर मस्से ऊगने की प्रवृत्ति होना, जननेन्द्रियों से दुर्गन्धित स्त्राव होना एवं शरीर के ऊपर बालों की अधिकता- इन सब लक्षणों में **थूजा 30** का सेवन हितकर होता है।
- प्रात:काल जरायु में दर्द महसूस होना, ऋतुकाल के पहले ओर बाद में प्रदर स्त्राव होना, रक्त स्त्राव का अधिक मात्रा में होना- इन लक्षणों में **थ्लैस्पि बर्सा पेस्टोरिस क्यू** की पांच बूंदें एक गिलास स्वच्छ जल में डालकर प्रतिदिन सेवन करने से जरायु संबंधी विकार नष्ट हो जाते हैं एवं स्त्री गर्भ धारण करने योग्य हो जाती है।
- रोगिणी का शरीरिक रूप से कमजोर एवं रक्तहीन होना, स्वभाव से चिड़चिड़ी एवं हमेशा दु:खी रहना, योनि मार्ग में सूखापन होना, प्रदर स्त्राव पनीला एवं लगने वाला होना एवं गर्भाशय का स्थान च्युत होना- उपरोक्त लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 30** के सेवन से बंध्यत्व की स्थिति समाप्त हो जाती है।
- डिंबकोष के क्षय अथवा सिकुड़ने के कारण उत्पन्न हुए बंध्यत्व में **आयोडिनम 30** का सेवन हितकर है। उपरोक्त औषधि के प्रति संवेदनशील स्त्री का वक्ष-स्थल अविकसित अवस्था में होता है।
- रज:स्त्राव का लंबे समय तक चलते रहना, दो रज:स्त्रावों के बीच का अंतराल कम होना एवं अत्यधिक मात्रा में रज:स्त्राव होना- इन लक्षणों में उत्पन्न हुए बांझपन में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभकारी औषधि है।
- स्त्री में ठंडापन आ जाना एवं गर्भ ठहरने की स्थिति के प्रति उदासीनता जैसे लक्षणों में **ओनोस्मोडियम** अति उच्च शक्ति में देने से विशेष लाभ मिलता है।
- ऋतु स्त्राव का बिल्कुल न होना या अल्प मात्रा में होना, जरायु में लम्बे समय से सूजन बनी होना, जरायु ग्रीवा एवं योनि मार्ग में जख्म होना, जरायु का स्थान च्युत होना- जैसे लक्षणों में **आरम म्यूर 30** बांझपन की सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

- गर्भाशय का कमजोर होना, अत्यधिक मात्रा में रज:स्त्राव होना एवं रज:स्त्राव के समय स्त्री का पीड़ा के कारण मूर्च्छित हो जाना जैसे लक्षणों में **ऐलीट्रिस फेरिनोजा क्यू** का सेवन हितकर हैं।
- योनि भ्रंश हो जाने के साथ-साथ अत्यधिक खुजली महसूस होना, स्वभाव से अत्यधिक कामुक होना एवं बंध्यत्व से ग्रसित होना- इन लक्षणों में **क्रियोजेट** 30 का सेवन लाभकारी हैं।
- जरायु के मुख में कड़ापन आ जाना, जरायु मुख का टेड़ा पड़ जाना, संभोग के बाद योनि से बहुत अधिक मात्रा में बदबूदार श्लेष्मा-युक्त स्त्राव होना- इन लक्षणों में **नैट्रम कार्ब** 30 का सेवन करने से गर्भ ठहर जाता है।
- अत्यधिक रक्त स्त्राव होने के कारण बंध्यत्व की स्थिति में **मरक्यूरिस सोल** 30 लाभदायक औषधि है।
- रोगिणी का लंबे समय से जरायु प्रदाह से ग्रसित होने के कारण गर्भ न ठहरने की स्थिति में **हायोसियामस** 30 का सेवन हितकर होता है।
- अंडाशय में ट्यूमर हो जाने के कारण बंध्यत्व की स्थिति में **ऐपिस** 200 का सेवन हितकर होता है।
- गर्भाशय का फाइब्रायड ट्यूमर से भरा हुआ होना, हमेशा थकावट महसूस होते रहना एवं पैरों में गर्मी और जलन महसूस होना- इन लक्षणों में बंध्यत्व की स्थिति होने पर **केलि आयोड** 200 का सेवन हितकर होता है।
- गर्भाशय में दानेदार अल्सर हो जाने की स्थिति में गर्भ न ठहरने पर **हाइड्रोकोटाइल** 30 का सेवन लाभप्रद है। इस दवा के प्रति सुग्राही स्त्री के योनि मार्ग में निरंतर जलन एवं तीव्र खुजली चलती रहती है।
- जरायु के आंतरिक भाग में सूजन आ जाने के कारण स्त्री को गर्भ न ठहरने की स्थिति में **रस टॉक्स** 30 का सेवन करना चाहिए।
- जरायु में रक्त संचय हो जाना, योनि से दुर्गन्धित स्त्राव होते रहना- इन लक्षणों में गर्भ ठहरने की स्थिति में **कर्बोवेज** 30 का सेवन करना चाहिए।
- बंध्यत्व के साथ-साथ स्त्री का अत्यधिक कमोन्मादी होना एवं संभोग के समय पागलों के समान व्यवहार करना जैसे लक्षणों में **एम्ब्राग्रेसिया** 30 का सेवन हितकर है।

- योनि से अम्लीय स्त्राव निकलने के कारण वीर्य के शुक्राणु नष्ट हो जाने से संतानोत्पत्ति न होती हो तो **नैट्रम फॉस** 6× या 12× दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- डिंबकोष से गर्भाशय तक की नली के अंदर मवाद व जल इकट्ठा हो जाना एवं गर्भाशय में ट्यूमर हो जाना- इन लक्षणों में **साइलीशिया 30×** का सेवन दिन में चार बार करने से बंध्यत्व की स्थिति में लाभ मिलता है।

- पेशाब या मल त्याग करते समय गर्भाशय की स्थान च्युति हो जाना एवं गर्भाशय का योनि में उतर आना, स्त्री में खून की कमी होना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया फॉस** 6× या 12× का सेवन करने से बंध्यत्व की समस्या का निवारण होता है।

- संभोग के समय योनि की मांस पेशियों का सिकुड़ जाना, संभोग के समय भयावह दर्द महसूस होना, पेशाब करते समय योनि से गाढ़े खून के टुकड़े निकलना, मासिक धर्म का समय से पहले होना, रज:स्त्राव का अत्यधिक काला एवं गाढ़ा होना- इन लक्षणों में बंध्यत्व की स्थिति होने पर **काकस केक्टाई 30** का सेवन हितकर है।

गर्भपात

स्त्री-पुरूष में संभोग के पश्चात डिंब का पुरूष के वीर्य में उपस्थित किसी एक शुक्र कीट से निषेचित हो जाना एवं निषेचित डिंब का गर्भाशय की दीवार में छेद कर के अपने आपको स्थापित करना स्त्रियों में गर्भ धारण करना कहलाता है।

गर्भ ठहर जाने का सबसे पहला एवं मुख्य लक्षण स्त्रियों में मासिक धर्म का रूक जाना होता है परंतु इस लक्षण पर चिकित्सक को बहुत अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि कई बार अनेक कारणों से बिना स्त्री के गर्भधारण किये ही रजोरोध हो जाता है। स्त्रियों में मासिक धर्म रूक जाने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि उनका जरायु रोग से ग्रसित होना, डिंबकोष में ठंड लग जाना या डिंबकोष एवं जरायु में अर्बुद हो जाना इत्यादि। कभी-कभी रक्त न्यूनता के कारण भी स्त्रियों में मासिक धर्म अचानक बंद हो जाता है। स्त्री की मानसिक स्थिति का ठीक न होना, अचानक किसी भय या शोक के कारण भी मासिक धर्म में अनियमितता आ सकती है।

जैसे-जैसे स्त्री के अंदर गर्भ बढ़ता जाता है उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति में आसाधारण परिवर्तन दिखाई देने लगता है।

भ्रूण के विकास के साथ-साथ स्त्री के उदर का आकार भी धीरे-धीरे बढ़ने लगता है। शिशु के गर्भस्थ होते ही स्त्री की स्तन ग्रंथियां जो कि स्तन के नीचे स्थित होती हैं उनमें भी बढ़ोत्तरी होने लगती है। स्त्री को अपने पैरों में भार सा महसूस होने लगता है एवं गर्भ ठहरने के एक दो महिने के अंदर थोड़ा सा भी भोजन या पानी लेते ही गर्भिणी को मिचली तथा उल्टी महसूस होने लगती है। रात्रि के समय अनियंत्रित रूप से मुँह से लार बहने लगती है। स्तन की घुण्डी के चारों और काले रंग का घेरा बन जाता है। स्तनों में टपकन, भारीपन तथा स्पर्शशीलता आ जाती है। गर्भस्थ शिशु जब 5 वे महिने में प्रविष्ट करता है तो वह हिलना- डुलना प्रारंभ कर देता है एवं उसकी आवाज भी स्थैटस-स्कोप लगाकर सुनी जा सकती है।

प्रसव काल ज्यों-ज्यों नजदीक आता है वैसे-वैसे स्त्री की पिंडलियों में ऐंठन पैदा होने लगती है। गर्भकाल के दौरान कई बार स्त्रियों के स्वभाव में कुछ चिड़चिड़ापन आ जाता है। वह बात-बात पर बिगड़ उठती है या फिर उन्हें अधिक बोलना पसंद नहीं लगता। गर्भावस्था के दौरान स्त्रियों को नींद भी बहुत कम आती है और एक प्रकार की सुस्ती उनके अंदर बनी रहती है। कई बार कंठ नली में पतलापन या आवाज में भारीपन भी आ जाता है।

गर्भावस्था के दौरान सहवास का पूर्ण परित्याग कर देना चाहिए एवं गर्भिणी स्त्री को मद्यपान, नशीली दवायें, अत्यधिक शीत, धूप एवं भारी वजन उठाने से बचना चाहिए।

सामान्यत: गर्भावस्था की अवधि 280 दिन निश्चित की गई है। परंतु किसी कारण वश गर्भ का समय से पूर्व ही बाहार आ जाना गर्भपात या गर्भस्त्राव कहलाता है।

गर्भ में स्थित भ्रूण यदि 4-5 माह के भीतर ही बाहर आ जाए तो उसे गर्भ स्त्राव कहते हैं परंतु यदि गर्भ में पल रहा शिशु 7-8 महिने के बाद गिर जाता है तो उसे गर्भपात कहते हैं। यदि गर्भपात की अवस्था में रोगिणी का उचित तरीके से उपचार और देखभाल नहीं की जाती तो रोगिणी की जान को खतरा भी हो सकता है। गर्भ स्त्राव या गर्भपात के लक्षणों में कमर तथा तलपेट में दर्द होना एवं योनि मार्ग से रक्त अथवा श्लेष्मा का स्त्राव होना प्रमुख है। गर्भपात कई कारणों से हो सकता है जैसे कि गर्भावस्था में गर्भिणी का भारी वस्तु उठाना, दौड़ धूप करना, बार-बार सीढ़ियों से ऊपर नीचे चढ़ना एवं उतरना, कपड़े कसकर पहनना, गर्भवस्था के दौरान मैथुन करना, अचानक गर्भिणी को पतले दस्त होने लगना, गर्भ के अंदर पल रहे भ्रूण या शिशु की गर्भावस्था में किसी कारण वश मृत्यु हो जाना, गर्भिणी का संक्रमित बीमारी से ग्रसित हो जाना (जैसे कि हैजा, उपदंश, काला ज्वर इत्यादि), योनि मार्ग में दर्द, योनि भ्रंश हो जाना, जरायु का अपने स्थान से सरक जाना एवं जरायु मुख का योनि मार्ग में आ जाना इत्यादि। वे स्त्रियां जिनमें अधिक मात्रा में श्वेतप्रदर या जरायु प्रदर की शिकायत होती हैं उनमें गर्भपात की संभावना भी अधिक होती है। कई बार शराब इत्यादि जैसे नशीले एवं मादक पदार्थों के सेवन से या फिर गर्म औषधियों के सेवन से भी गर्भपात की संभावना हो जाती है। जिस स्त्रीं का किसी कारण वंश एक बार गर्भपात हो चुका है या स्वयं उसने किसी सामाजिक या व्यक्तिगत परिस्थिति

के कारण गर्भपात करवाया है तो दूसरी बार उसे गर्भपात होने की संभावना अन्य स्त्रियों के मुकाबले ज्यादा होती है। गर्भावस्था के दौरान स्त्रियों को कठिन एवं दुष्कर यात्राऐं, मानसिक अवसाद या शोकाकुल वातावरण और भयभीत कर देने वाली स्थितियों से बचना चाहिए। ऐसा भी देखा गया है कि एकाकी रहने पर अचानक किसी आंतरिक भय से ग्रसित होकर स्त्री का गर्भपात हो जाता है।

कुछ स्त्रियों में अत्यधिक स्नायविक दुर्बलता होती है एवं उनकी मांस पेशियों में खिंचाव नहीं होता जिसके कारण भी गर्भपात होने की संभावना बनी रहती है। स्त्री के गर्भाशय का विकृतिपूर्ण होना, योनि मार्ग में उथालापन एवं स्त्रियों की शारीरिक लंबाई का कम होना भी गर्भपात का कारण बन जाता है। गर्भपात या गर्भ स्त्राव में गर्भिणी के पेट में एकाएक दर्द होता है। यह पीड़ा प्रसव वेदना के समान ही होती है और अचानक ही गर्भ गिर जाता है। गर्भ स्त्राव से पूर्व योनि से रक्त आने लगता है और कई बार तो यह रक्त कई घंटों तक आता रहता है। कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि गर्भपात के कई दिनों तक गर्भिणी की योनि से रक्त प्रदर जारी रहता है। गर्भपात की स्थिति में गर्भिणी को एकदम लिटाकर रखना चाहिए एवं उसे पूर्ण विश्राम की सलाह देनी चाहिए।

गर्भपात होने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- **बाइबर्नम क्यू** गर्भपात की आशंका होने की स्थिति में सर्वश्रेष्ठ औषधि है। अगर गर्भिणी को पीठ के पीछे से दर्द प्रारंभ हुआ हो एवं वह कमर से चक्कर काटकर पेट के निचले भाग तक पहुँचता है तो ऐसी स्थिति में उपरोक्त औषधि लाभकारी है।
- गर्भावस्था के पहले 3 महिने में गर्भपात कि आशंका होने पर **सेबाइना 3×, 30** लाभदायक औषधि है। इस औषधि को देने के लक्षण में भी रोगिणी को पीठ के भीतर से दर्द की शुरूआत होती है और दर्द पीठ से होकर पेट तक पहुँचता है।
- रोगिणी का तीसरे मास में गर्भपात होने की आशंका होना, स्पर्श एवं ध्वनि के प्रति अत्यधिक संवेदनशील-होना, स्पर्श होते ही रोगिणी का विचलित हो जाना, तीव्र प्रकाश एवं करकस ध्वनि सहन नहीं कर पाना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।

- रोगिणी को पानी की तरह पतला एवं काला रंग लिए हुए प्रदर होना, बाहरी शरीर का बर्फ के सामन ठंडा महसूस होना एवं उसे किसी भी प्रकार के वस्त्रों का उपयोग अच्छा न लगना जैसे लक्षणों में **सिकेली कोर 30** सर्वोत्तम औषधि है।

- गर्भिणी के शरीर के विभिन्न भागों में सूजन आ जाना एवं डंक मारने या चुभने जैसा दर्द महसूस होना, गर्भिणी का गर्मी बिल्कुल भी सहन न कर पाना साथ ही उसे प्यास न लगना एवं तीसरे महिने में गर्भपात की आशंका बनी रहना जैसे लक्षणों में **ऐपिस 200** लाभकारी औषधि है।

- स्त्री का अत्यधिक संवेदनशील होने के साथ-साथ कोमल मनोवृत्ति का होना, गर्भावस्था के दौरान अत्यधिक भावुक हो जाना, थोड़ी-थोड़ी सी बातों पर विचलित होकर रोने लगना, मित्रों एवं संबंधियों के प्रति विरक्ति के भाव आ जाना, गर्भावस्था के दौरान चेहरे का पीला पड़ जाना एवं चेहरे पर धब्बे आ जाना, शारीरिक रूप से दुबली-पतली होना जैसे लक्षणों में पांचवे और सातवे महिने में गर्भपात होने की आशंका पर **सीपिया 30** लाभदायक औषधि है।

- रोगिणी का किसी दुर्घटना एवं चोट अथवा मार खाने या भारी वस्तु उठाने के कारण गर्भपात की आशंका बनने पर **अर्निका 3** हितकर औषधि है।

- गर्भिणी के मन में अज्ञात भय हमेशा बने रहना, गर्भावस्था के दौरान उसे मृत्यु हो जाने की आशंका सताना, छोटी-छोटी बातों पर क्रोध आना, रात्रि के समय अचानक बेचैनी, घबराहट होना, गले में खुस्की बने रहना। इन सब लक्षणों के कारण अगर गर्भपात होने की संभवाना बनी रहती है तो **एकोनाईट 3, 6** लाभकारी औषधि है।

- अत्यधिक मानसिक उत्तेजना और क्रोध के कारण गर्भपात होने जैसे स्थिति बनने पर **केमोमिला 6** रोगिणी के लिए हितकर औषधि है।

- यदि लंबे समय तक रक्त स्त्राव होने के कारण रोगिणी अत्यधिक कमजोर हो गई हो तो उसे **चायना 200** लाभकारी औषधि है।

- यदि किसी कारण वश गर्भिणी को गर्भपात हमेशा हो जाता है तो ऐसी स्थिति में गर्भिणी को गर्भाशय पूरी तरह से साफ करवा लेना चाहिए। आज के

आधुनिक युग में लगभग प्रत्येक बड़े अस्पताल में इस तरह की सेवाऐं योग्य नर्सों एवं डॉक्टरों द्वारा दी जाती है साथ ही आज के युग में विभिन्न प्रकार की मशीनों के द्वारा भी आसानी से गर्भपात किया जा सकता है। इसके लिए विशेष कक्षों की भी व्यवस्था होती है परंतु यदि गर्भ गिरने में देरी हो रही हो तो **पल्सेटिला 30** या **सिकेलि 200** औषधि का प्रयोग किया जा सकता है।

- गर्भपात अगर स्त्री-पुरूष में से किसी एक के उपदंश से पीड़ित होने के कारण होता है तो गर्भिणी को प्रति सप्ताह **मर्क कोर 6** औषधि का सेवन करते रहना चाहिए।

- यदि रोगिणी को एक बार गर्भपात हो चुका है और दूसरी बार गर्भधारण करने के बाद गर्भपात की स्थिति से बचने के लिए उसे प्रारंभ में ही उचित दवाइयों का सेवन करना चाहिए। जैसे कि यदि रोगिणी का गर्भपात जरायु की किसी गड़बड़ी के कारण हुआ हो तो **एपिस 30, 200** देना चाहिए।

- स्त्री-पुरूष में से किसी एक के यक्षमा रोग से ग्रसित होने पर गर्भिणी स्त्री को **बेसिलिनम 30** का महिने में एक बार सेवन करना चाहिए। उपरोक्त औषधि के सेवन से यक्षमा रोग के कारण गर्भपात होने की संभावना खत्म हो जाती है।

सामान्यत: ऐसा देखा गया है कि गर्भिणी स्त्री को हमेशा कमर में दर्द और वजन महसूस होता है। प्रथम बार गर्भ धारण करने वाली स्त्रियां कई बार दर्द को दबाने के लिए तेज दर्द निवारक औषधियों का सेवन कर लेती हैं जिससे कि गर्भपात की संभावना बन जाती है या कई बार वे अयोग्य व्यक्तियों से कमर और पेट की मालिश करवा लेती हैं जिससे भी गर्भपात होने की आशंका बनी रहती है। गर्भावस्था के दौरान निम्न **औषधियों** के सेवन से कमर में दर्द और उसके भार से आराम मिल सकता है।

- गर्भिणी के कमर में तीव्र दर्द रहना, कमर का अकड़ जाना एवं जननांग के आंतरिक भाग पर भार का अनुभव महसूस होना, दर्द के कारण उसे चलने-फिरने में तकलीफ होना, हमेशा लेटे रहने की इच्छा बने रहना जैसे लक्षणों में **केलि कार्ब 30** और **1 एम.** की शक्ति हफ्ते में एक बार लेना चाहिए।

- किसी गलत आसन में बैठने अथवा लेटने के कारण या फिर चोट लग जाने के कारण, अत्यधिक श्रम अथवा मार खाने के कारण गर्भावस्था के दौरान कमर में दर्द महसूस होना जैसी स्थिति में **अर्निका 1 एम.** उच्च शक्ति में प्रयोग करने पर अत्यधिक लाभदायक औषधि है।

- पेट के ऊपर हल्के भूरे रंग के दागों का उभर आना एवं योनि मार्ग से आंतरिक भागों का निकल जाने जैसा महसूस होने पर **सीपिया 30, 200** का प्रयोग करना हितकर होता है।

- गर्भावस्था के दौरान अगर अत्यधिक परिश्रम करने से रोगिणी की पीठ में दर्द उत्पन्न हो गया हो तो **अर्निका 3** लाभदायक औषधि है।

- अत्यधिक कमर दर्द के कारण रोगिणी का चलना-फिरना मुश्किल हो जाना और दर्द का आंतरिक भागों एवं गुदाद्वार तक पहुँच जाना जैसे लक्षणों में **बेल्लिस परेन्निस 3** लाभदायक औषधि है।

- पीठ तथा कमर में ऐंठन महसूस होने पर **क्यूप्रम 6** लाभकारी औषधि है।

- पीठ में अकड़न एवं सिर में दर्द महसूस होने पर **नक्स वोमिका 6** लाभदायक औषधि है।

- तलपेट में प्रसव वेदना के समान दर्द एवं पीठ में दर्द महसूस होने पर **सिकेली 3** लाभदायक औषधि है।

अध्याय-38

गर्भावस्था के दौरान स्नायविक दुर्बलता

गर्भावस्था के दौरान कुछ स्त्रियां स्नायविक दुर्बलता का शिकार हो जाती हैं एवं गर्भ में पल रहे शिशु के कारण अंग प्रत्यंगों पर रक्त का दबाव बढ़ जाता है जिसके कारण गर्भावस्था के दौरान उन्हें अचानक मूर्च्छा आ जाती है।

गर्भावस्था के दौरान मूर्च्छा आ जाने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियां** हितकर सिद्ध होती हैं।

- ❑ गर्भावस्था के दौरान मूर्च्छा आ जाने पर गर्भिणी के मुँह और आँखों पर सर्वप्रथम ठंडे पानी के छींटे मारने चाहिए साथ ही उसे **केम्फर** या **मास्कस** सुंघाने से भी मूर्च्छा जाती रहती है।
- ❑ स्नायविक दुर्बलता के कारण आयी मूर्च्छा में **ऐसिड फॉस 30** देने से मूर्च्छा खत्म हो जाती है।
- ❑ अगर रोगिणी के अंदर मूर्च्छा का कारण अधिक रक्त स्त्राव हो तो **चायना 30** मूर्च्छा हटाने की सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- ❑ ज्वर एवं मानसिक व्याकुलता के कारण आयी मूर्च्छा में गर्भिणी को **एकोनाइट 30** देना हितकर होता है।
- ❑ गर्भावस्था के दौरान किसी चोट या अत्यधिक शारीरिक श्रम के कारण आयी मूर्च्छा में **अर्निका 200** या **30** का सेवन करना चाहिए।
- ❑ अत्यधिक दु:ख, मानसिक आवेश के परिणाम स्वरूप मूर्च्छित स्त्री के लिए **इग्नेशिया 200** का सेवन करना हितकर होता है।
- ❑ गर्भिणी के गुल्म वायु एवं हिस्टीरिया जैसे रोग से ग्रसित होने पर गर्भकाल के दौरान आयी मूर्च्छा में **इग्नेशिया 30, 200** लाभदायक औषधि है।

गर्भावस्था के दौरान मूत्र कष्ट

गर्भावस्था के दौरान गर्भ में ज्यों-ज्यों शिशु बड़ा होता है वैसे-वैसे गर्भिणी के मूत्र संस्थान एवं योनि भाग पर अधिक दबाव पड़ता जाता है जिसके कारण कई बार रोगिणी को मूत्र कष्ट हो जाते हैं। गर्भावस्था के दौरान होने वाले अस्थाई मूत्र कष्ट जो कि स्त्री के गर्भधारण करने के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होता है वह निम्नलिखित **औषधियों** के प्रयोग से ठीक किये जा सकते हैं।

- ❑ गर्भावस्था के दौरान अपने आप बूंद-बूंद पेशाब होने लगना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ गर्भावस्था के दौरान पेशाब करते समय अत्यधिक जलन महसूस होना एवं पेशाब का रूक जाना जैसे लक्षणों में **केन्थिस 30** का सेवन करना हितकर होता है।
- ❑ अचानक किसी भी समय मूत्र निकल पड़ना, गर्भिणी का उसे न रोक पाना जैसे लक्षणों में **कास्टिकम 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ रोगिणी का गर्भकाल के दौरान बार-बार पेशाब जाने की इच्छा होना एवं पेशाब न होना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ गर्भावस्था में पेशाब के साथ एल्ब्युमिन मिश्रित रक्त आने की स्थिति में **टेरेविन्थिना 6×** हितकर औषधि है।
- ❑ मूत्र त्याग के बाद मूत्राशय में ऐंठन एवं दर्द महसूस होना, अचानक खाँसने, जोर से हँसने एवं चलते-फिरते समय पेशाब की कुछ बूंद निकल आना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ गर्भावस्था के दौरान पेशाब का अत्यधिक गाढ़ा हो जाना एवं उसमें थक्केदार श्लेष्मा का निकलना साथ ही अधिक मात्रा में पेशाब होना जैसे लक्षणों में **एसिड फॉस 1×, 3×** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

- मूत्र त्याग करने में कष्ट महसूस होना, काले रंग का एल्ब्युमिन युक्त मूत्र होना जैसे लक्षणों में **प्लम्बम मेटेलिकम 30** उपयुक्त औषधि है।

- गर्भावस्था के दौरान मूत्राशय में मरोड़, बूंद-बूंद पेशाब एवं पेशाब के साथ कभी-कभी खून आ जाना जैसे लक्षणों में **टेरिविन्थना 6×** लाभकारी औषधि है।

- गर्भावस्था के दौरान गर्भस्थ शिशु के पेट में हिलने-डुलने के कारण भी स्त्री को कष्ट होने लगता है ऐसी स्थिति में **अर्निका** लाभकारी औषधि है।

गर्भावस्था के दौरान कब्ज

गर्भावस्था के दौरान कब्ज होना स्त्रियों में गर्भपात की समस्या का एक मुख्य कारण है। अत्यधिक कब्ज से ग्रसित होने के कारण शौच जाते वक्त ज्यादा दबाव बनाने के कारण भी गर्भपात की आशंका बनी रहती है।

ऐसा भी देखा गया है कि कुछ स्त्रियों में मानसिक वाचालता आ जाने के कारण वे अस्थाई रूप से कब्ज से ग्रसित हो जाती हैं।

औषधियां :

❏ आँतो की श्लेष्मिक झिल्लियों में गर्भावस्था के दौरान खुस्की आ जाना एवं मल का बहुत सख्त और खुस्क हो जाना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया 30** का इस्तेमाल करना हितकर होता है। गर्भावस्था के दौरान कई बार स्त्रियों में अस्थाई तौर पर कब्ज हो जाती है।

❏ गर्भावस्था के दौरान आँतों में शिथिलता आ जाना एवं पेट में कब्ज हो जाना जैसे लक्षणों में **ओपियम 200** गर्भिणी के लिए हितकर औषधि है।

❏ गर्भिणी को कई दिनों तक शौच न होना एवं उसकी इच्छा मिट्टी, चॉक और कोयला खाने की बार-बार होना जैसे लक्षणों में भी **ओपियम 30** लाभकारी औषधि है।

❏ अचानक कब्ज बढ़ जाना और अचानक ही दस्त होने लगना साथ ही पेट में वायु संचय हो जाना जैसे लक्षणों में गर्भिणी के लिए **लायकोपोडियम 30** हितकर औषधि है।

❏ शौच से आने के बाद भी पेट साफ न होने की अनुभूति बने रहना एवं बार-बार मल त्याग की इच्छा होते रहना जैसे लक्षणों में रोगिणी को **नक्स वोमिका 30** औषधि का सेवन करना चाहिए। इस औषधि की रोगिणी स्वभाव से अधीर एवं थोड़ी-थोड़ी बातों में क्रोधित हो जाने वाली होती है।

❏ शौच की इच्छा महसूस होने पर भी शौच न आना एवं गुदा मार्ग से हवा निकलना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30, 200** अत्यंत लाभकारी औषधि है।

गर्भावस्था के दौरान दस्त लगना

सामान्य अवस्था में भी दस्त बार-बार लगने से रोगिणी के अंदर अत्यधिक कमजोरी आ जाती है एवं उसके शरीर में पानी के साथ-साथ लवणों एवं खनिज पदार्थों का क्षय होने लगता है। उपरोक्त स्थिति में उसे तुरंत उचित उपचार न मिलने पर रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।

गर्भावस्था के दौरान अगर गर्भिणी किसी कारण-वश दस्त से ग्रसित हो जाए तो उसके अंदर पल रहे गर्भस्थ शिशु के स्वास्थ्य पर भी अत्यंत गंभीर और विपरीत असर पड़ सकता है साथ ही गर्भपात का खतरा भी बन जाता है। ऐसी स्थिति में दस्त को रोकना अत्यंत आवश्यक है। गर्भावस्था के दौरान दस्त लगने पर निम्नलिखित **औषधियों** का सेवन करना हितकर होता है।

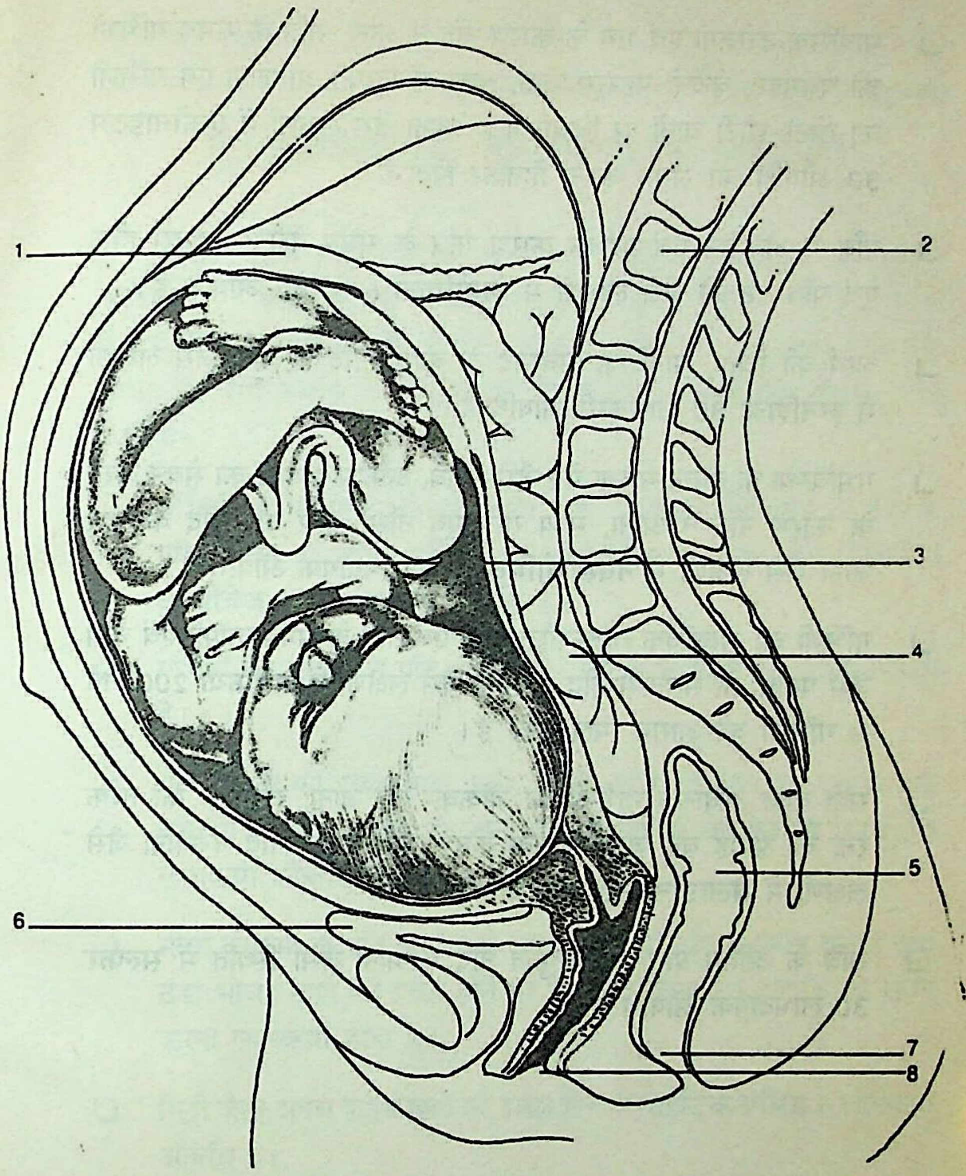
- मल के साथ आँव और खून आना जैसे लक्षणों में **मर्क सोल 30, 200** गर्भिणी के लिए श्रेष्ठ औषधि है।
- हैजे जैसी स्थिति बन जाना एवं थोड़ी-थोड़ी देर में बिना दर्द के पतले दस्त आना जैसे लक्षणों में **पोडोफाइलम 30** लाभदायक औषधि है।
- अनजाने में ही शौच हो जाना, खाना खाते या पानी पीते ही पतले दस्त होने लगना जैसे लक्षणों में गर्भिणी के **लिए एलो 3, 6** औषधि का सेवन हितकर है।
- गर्भिणी को हरे रंग के दस्त आना एवं रात्रि के समय बार-बार दस्त लगना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** लाभदायक औषधि है।
- दर्द एवं दुर्गन्ध-रहित पतले दस्त आना एवं रोगिणी को कमजोरी महसूस न होना जैसे लक्षणों में **ऐसिड फॉस 30** लाभदायक औषधि है।
- हमेशा शौच जाने की इच्छा बने रहना एवं शौच से आने के बाद पुनः दस्त लग आना जैसी स्थिति में **नक्स वोमिका 30** का सेवन करना हितकर होता है।

गर्भावस्था के दौरान नींद न आना

गर्भावस्था के दौरान स्त्रियों का पेट सामान्य से अधिक बढ़ जाता है जिसके कारण पेट के ऊपर की चमड़ी फैल जाती है और उसमें खिंचाव के साथ-साथ चरमराहट भी महसूस होती है। गर्भावस्था के दौरान आये इन खिंचावों के कारण पेट और स्तन की चमड़ी में खुजली चलने लगती है। गर्भिणी के बार-बार खुजलाने से वहां की त्वचा छिल जाती है या फिर उसके संक्रमित होने की आशंका बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में गर्भिणी को स्तन और पेट की त्वचा पर नारियल के तेल या किसी अन्य लोशन से हल्की मालिश करनी चाहिए एवं **बेलाडोना 6** और **नक्स वोमिका 6** का सेवन करने से उसे त्वचा में आये खिंचाव के कारण होने वाली खुजली से आराम मिल जाता है।

गर्भावस्था के दौरान गर्भिणी की शारीरिक स्थिति के साथ-साथ मानसिक स्थिति भी असामान्य हो जाती है जिसके कारण वह कई बार अनिद्रा से भी ग्रसित हो जाती है। गर्भावस्था के दौरान आराम एवं संपूर्ण नींद गर्भिणी और उसके गर्भ में पल रहे शिशु के लिए अत्यधिक आवश्यक है।

किसी भी प्रकार का मानसिक तनाव, क्लेश, भय, दु:ख हो जाने पर गर्भिणी के लिए गर्भकाल के 240 दिन काटना मुश्किल हो जाते हैं। असंतुलित मानसिक स्थिति एवं शरीर के साथ मस्तिष्क को भी उचित आराम न मिलने की दशा में गर्भिणी को किसी भी प्रकार की बीमारी से ग्रसित होने की आशंका बनी रहती है। अत: स्वस्थ्य शिशु को जन्म देने के लिए गर्भिणी का मानसिक एवं शारीरिक संतुलन बनाये रखना अत्यधिक आवश्यक है। गर्भाशय के दौरान नींद न आने की स्थिति में निम्नलिखित **औषधियों** का सेवन करना चाहिए।



बढ़ता हुआ भ्रूण

(1) गर्भाशय	(2) मेरू
(3) बढ़ता हुआ भ्रूण	(4) छोटी आँत
(5) मलाशय	(6) मूत्राशय
(7) मलद्वार	(8) योनि

- मानसिक उत्तेजना एवं भय के कारण नींद न आना, रात्रि के समय गर्भिणी को घबराहट, बेचैनी महसूस होना, त्वचा में खुस्की आ जाना एवं गर्भिणी का छोटी-छोटी बातों पर विचलित हो जाना जैसे लक्षणों में **एकोनाइटम 30** औषधि का सेवन करना हितकर होता है।

- पाँव में अकड़न एवं दर्द के कारण रात्रि के समय बेचैनी महसूस होना एवं पाँव पटकने जैसे लक्षणों में **केमोमिला 6** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

- व्यर्थ की चिंता, मानसिक अवसाद के कारण नींद न आना जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया 30** लाभकारी औषधि है।

- गर्भावस्था के दौरान मादक पेय जैसे शराब, अफीम इत्यादि का सेवन करने के कारण नींद न आना, मध्य रात्रि एवं तीसरे प्रहर तक नींद का उड़ जाना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभदायक औषधि है।

- गर्भिणी का अत्यधिक चिंतनशील होना एवं रात्रि के समय कॉफी एवं चाय जैसे पदार्थों के सेवन से नींद न आना जैसे लक्षणों में **काफिया 200** लेने से गर्भिणी को आराम मिल जाता है।

- सोते वक्त अचानक गर्भिणी का चौंककर उठ जाना, मस्तिष्क की तरफ रक्त का प्रवाह बढ़ जाना जिसके कारण गर्भिणी को नींद न आना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** हितकर औषधि है।

- रात्रि के अंतिम प्रहर में बिल्कुल नींद न आना जैसी स्थिति में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

गर्भावस्था के दौरान रुचि विकार

गर्भावस्था के समय स्त्री की सामान्य रुचि के ठीक विपरीत उसकी इच्छा कई प्रकार के अभक्ष पदार्थों के सेवन करने की होने लगती है एवं कुछ स्त्रियों में गर्भावस्था के दौरान मिट्टी, कोयला, चाक इत्यादि खाने की प्रबल इच्छा होने लगती है। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियां** हितकर सिद्ध होती हैं।

- गर्भिणी की कोयला खाने की इच्छा होना, मांसाहारी होते हुए भी मांस के प्रति अरुचि हो जाना, गर्भिणी को भूख प्यास न लगना जैसे लक्षणों में **कार्बोवेज 30** लाभदायक औषधि है।

- गर्भिणी की भोजन के प्रति अरुचि हो जाने पर **सीपिया 30** उत्तम औषधि है।

- गर्भिणी स्त्री की इच्छा चाक, चूना, पेंसिल खाने की होना एवं दूध से बनी वस्तुओं के प्रति अरुचि हो जाना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभकारी औषधि है।

- मीठी वस्तुओ के प्रति अरुचि हो जाना एवं खट्टी और नमकीन वस्तुऐं तथा ठंडा भोजन खाने की इच्छा होने पर **वेरेट्रम ऐल्बम 30** औषधि का सेवन करना लाभकारी होता है।

- मिट्टी जैसा अपच पदार्थ खाने की इच्छा होने पर **नाईट्रिक एसिड 6** लाभकारी औषधि है।

- अत्यधिक नमकीन या दिन भर नमक की डली चाटने की इच्छा होने पर गर्भिणी को **नेट्रम म्यूर 30** सेवन करना चाहिए।

- गर्भावस्था में कई स्त्रियों को हमेशा पनीर खाते रहने की इच्छा होते रहना। उपरोक्त लक्षण में **अर्जेण्टम नाइट्रिकम 30** लाभकारी औषधि है।

- हमेशा गरम पेय लेते रहने की तीव्र इच्छा में गर्भिणी को **चेलिडोनियम 6** लाभकारी औषधि है।

- अधिक मात्रा में अचार व चटनी जैसी वस्तुओं का सेवन करने की इच्छा होना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- गर्भावस्था के दौरान मानसिक दुर्बलता, गर्भिणी का हृदय संबंधी रोगों से ग्रसित होना, सर्दी लग जाना या फिर खांसी इत्यादि से ग्रसित होने के कारण अचानक ही श्वास लेने में कष्ट होने लगता है एवं रात्रि के समय अचानक श्वास कष्ट के बढ़ जाने के कारण गर्भिणी को गर्भपात होने की आशंका बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में **नक्स वोमिका 30** लाभदायक औषधि है।

गर्भावस्था के दौरान ऐंठन होना

गर्भावस्था के दौरान स्त्रियों के पाँव में ऐंठन व मरोड़ पड़ना एक आम समस्या है। पाँवों में ऐंठन और मरोड़ पड़ने के कारण गर्भिणी स्त्री बेचैनी के साथ-साथ सारी रात पाँव पटकती रहती है जिसके कारण वह रात्रि में ठीक से सो नहीं पाती। पाँव में ऐंठन पड़ने के कारण काफी समय तक एक स्थान पर बैठे रहना भी संभव नहीं हो पाता। पाँवों के अत्यधिक संचालन के कारण जरायु पर विपरीत असर पड़ता है जिसके कारण गर्भपात होने की आशंका बनी रहती है।

औषधियां :

- पाँवों में ऐंठन के साथ तेज दर्द होना, दर्द का रात्रि के समय बढ़ जाना, टांगों में भारीपन महसूस होना जैसे लक्षणों में **कोलोसिन्थिस 6×, 30** का सेवन करना हितकर होता है।
- टांगों में धब्बे पड़ जाना एवं धब्बे वाले स्थानों पर चोट के समान दर्द महसूस होने पर **अर्निका 30** लाभदायक औषधि है।
- पिंडलियों में हमेशा ऐंठन पड़ते रहना, बैठे-बैठे अचानक टांगों का सुन्न हो जाना तथा घुटने, पाँव के जोड़ों एवं कूल्हों का स्थान च्युत हो जाना जैसी अनुभूति में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।
- पाँव में अत्यधिक दर्द और भारीपन महसूस होना साथ ही पेट में भी ऐंठन और दर्द महसूस होना,नाभि-स्थल के पास तीव्र दर्द होना, गर्भिणी को कमजोरी महसूस होना, शरीर का ठंडा पड़ जाना एवं सिर के ऊपर पसीना आना जैसे लक्षणों में **वेरेट्रम एल्बम् 30** लाभदायक औषधि है।
- नाभि-स्थल पर दर्द बना रहने जैसे लक्षण में **बेलाडोना 30** लाभकारी औषधि है।

- घुटनों में दर्द एवं ऐंठन महसूस होना तथा चलने-फिरने में घुटनों में आवाज आने लगना जैसे लक्षणों में **केमोलिया 30** का सेवन करना हितकर होता है।

- पाँव के तलुओं में जलन एवं खिंचाव के साथ ऐंठन पड़ने पर **क्यूप्रम 6** लाभकारी औषधि है।

- टांगों का सिकुड़ जाना, घुटनों के जोड़ों में अकड़न आ जाना, पेट का फूल जाना तथा ऐंठन के समान दर्द होना जैसे लक्षणों में **हायोसियामस 30** लाभदायक औषधि है।

अध्याय–45

गर्भावस्था के दौरान शिराओं का फूलना

गर्भावस्था के दौरान ज्यों-ज्यों शिशु का विकास होता है वैसे-वैसे योनि तथा अन्य अंगों की शिराओं पर रक्त का दबाव सामान्य से ज्यादा हो जाता है जिसके कारण शिरायें अक्सर फूल जाती हैं या फिर उनमें गठान पड़ जाने की संभावना बन जाती है। शिराओं में गठान पड़ जाने जैसी स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का उपयोग करना चाहिए।

❑ गर्भिणी स्त्री में शिराऐं फूल जाने की स्थिति में **हेमामेलिस 3** का मूल अर्क पानी के साथ सेवन करना चाहिए एवं जिस स्थान पर शिराऐं प्रभावित हो गयी हैं वहां पर **हेमामेलिस 3** से भीगी पट्टी को बांधना चाहिए।

❑ शिराओं के फूलने की पुरानी बीमारी होने पर गर्भिणी को **फ्लोरिक एसिड 6** का सेवन करना हितकर होता है।

❑ शिराओं में अत्यधिक दर्द होने की अवस्था में **पल्सेटिला 3** लाभदायक औषधि है।

❑ चलते समय पाँव में दर्द महसूस होना, टांगों का सख्त और भारी हो जाना जैसे लक्षणों में **फेरम मेटालिकम 6** लाभदायक औषधि है।

❑ गर्भावस्था के दौरान पाँव का फूल जाना एवं उनमें खून भर जाना, कड़ापन आ जाना तथा टांगों में हर समय थकान का अनुभव होने पर **आर्सेनिक 30** लाभदायक औषधि है।

❑ सूजन वाली लगह का फूल जाना तथा उस जगह का मोम के समान मुलायम पड़ जाना, पाँव की अंगुलियों का सुन्न हो जाना जैसे लक्षणों में **एपिस 3** लाभदायक औषधि है।

❑ गर्भिणी को सोकर उठते ही चक्कर आना जैसे लक्षण में **लेकेसिस 30** लाभकारी औषधि है।

- ❑ गर्भावस्था के दौरान चक्कर आना, सिर में सुरसुराहट महसूस होना जैसे लक्षणों में **जेल्सीमियम 30** सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

- ❑ सिर को हिलाने-डुलाने पर चक्कर आने जैसे लक्षण में **ब्रायोनिया 30** लाभकारी औषधि है।

- ❑ लेटते समय गर्भिणी को अगर कमरा घूमता हुआ नजर आये तो **नेट्रम म्यूर 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ अनिद्रा एवं वाहन की सवारी करने के कारण चक्कर आने जैसी स्थिति में रोगिणी को **काक्युलस 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ गर्भिणी का बैठकर खड़ा होने पर सिर में चक्कर आना जैसे लक्षण में **पेट्रोलियम 3, 30** का सेवन करना चाहिए।

- ❑ ऊँचे स्थान पर चढ़ने एवं ऊपर देखने पर आने वाले चक्कर में **केल्केरिया कार्ब 30** का सेवन करना हितकर होता है।

- ❑ सीढ़ियां उतरते समय चक्कर आने जैसी स्थिति में **बोरेक्स** 3× उपयोगी औषधि सिद्ध होती है।

- ❑ ऊपर देखते समय चक्कर आने पर **पल्सेटिला 30** और **माइलिस 30** लाभकारी औषधि है।

गर्भावस्था के दौरान मानसिक कष्ट

गर्भावस्था के दौरान कुछ स्त्रियों की मानसिक स्थिति बड़ी ही विचित्र और असामान्य हो जाती है। वह अपनी शारीरिक और मानसिक संरचना के अनुसार कई बार थोड़ी-थोड़ी बातों पर व्याकुल एवं अधीर हो जाती है। कुछ स्त्रियों का स्वभाव गर्भावस्था के दौरान अत्यधिक उग्र एवं हिंसात्मक हो जाता है एवं कुछ स्त्रियों में मनोवेग बहुत ही तीव्र हो जाता है वे छोटी-छोटी बातों पर अधीर और भावुक होकर रोने लगती हैं। गर्भावस्था के दौरान स्त्री का स्वभाव से चिड़चिड़ा एवं एकाकी हो जाना एक आम बात है। कुछ स्त्रियों में उनके अवचेतन मस्तिष्क में दबा अज्ञात भय गर्भावस्था के दौरान बहुत ही बढ़ जाता है। वे अकेला रहने से डरने लगती हैं और हमेशा भीड़-भाड़ या भरे पूरे परिवार में रहना पसंद करती हैं। कुल मिलाकर विभिन्न प्रकार की असामान्य मानसिक स्थितियों में निम्नलिखित **औषधियों** के सेवन से स्त्रियां गर्भावस्था-काल में सामान्य जीवन जी सकती हैं।

- गर्भिणी का मानसिक रूप से हमेशा दु:खी रहना एवं उसका प्रसव के समय होने वाले कष्टों को लेकर भयाक्रांत हो जाना जैसे लक्षणों में **सिमिसिफ्युगा 30** का उपयोग करना हितकर होता है।

- गर्भिणी का विक्षिप्त व्यवहार करना, अकारण ही ऊल-जलूल बातें बकना, अचानक हँसना एवं रोने लगना जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया 6** उसके चित्त को शांति प्रदान करती हैं।

- स्त्री का गर्भावस्था के समय अत्यधिक संवेदनशील हो जाना, अकारण ही रोने लगना एवं थोड़ी-थोड़ी बातों पर क्रोधित हो जाना, लोगों का अपने प्रति सहानुभूति-पूर्व व्यवहार की अभिलाषा रखना, रात्रि के समय अर्त्याधिक बेचैनी महसूस होना, अधीर होकर इधर-उधर घूमते फिरने जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** के सेवन से उसे राहत मिल सकती है।

- प्रसव के समय मृत्यु भय से गर्भिणी के अंदर अधीरता एवं व्याकुलता बढ़

जाना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभदायक औषधि है।

- गर्भिणी का किसी कारण वश दिल टूट जाना, पूर्ण रूप से हतोत्साहित हो जाना एवं क्रोधी स्वभाव का हो जाना जैसे लक्षणों में **केमोमिला 12** का सेवन करना हितकर होता है।

- गर्भिणी का अंधेरे से भयभीत होना, दूसरे के प्रति अपेक्षा एवं उदासीनता के भाव आ जाना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 30** लाभदायक औषधि है।

- गर्भावस्था के दौरान आत्महत्या करने की इच्छा बार-बार मन में आना जैसे लक्षण में **आरम मेट 30** अत्यंत लाभकारी औषधि है।

- गर्भिणी का हमेशा एकांत में बैठे रहना, किसी कार्य में मन न लगना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** अत्यंत लाभकारी औषधि है।

अध्याय-47

गर्भावस्था के दौरान योनि में खुजली होना

जैसा कि पहले कहा जा चुका है गर्भावस्था के दौरान स्त्री को अपने योनि मार्ग की साफ-सफाई पर नियमित रूप से ध्यान देना चाहिए। योनि के आसपास ऊगे बालों को काटते या साफ करते रहना चाहिए।

गर्भावस्था के दौरान स्त्री को हमेशा स्वच्छ कपड़ा या सेनटरी नेपकीन का उपयोग करते रहना चाहिए जिससे की योनि से निकलने वाला प्रदर जांघों और योनि की त्वचा को संक्रमित न कर सके। स्त्री को हमेशा स्वच्छ आतंरिक वस्त्रों का उपयोग करना चाहिए। इन सब के अभाव में गर्भिणी की योनि एवं उसके आसपास की त्वचा किसी भी संक्रमण से प्रभावित हो सकती है एवं जिसके कारण वहां पर खुजली और सूजन भी आ सकती है।

औषधियां

- गर्भावस्था के दौरान स्त्री की योनि पर खुजली, सूजन या जलन महसूस होना जैसे लक्षणों में **बोरेक्स 3, 30** लाभदायक औषधि है।
- खुजली का जांघों एवं घुटनों तक फैल जाना एवं योनि मार्ग में इतनी अधिक खुजली होना जिसके कारण गर्भिणी की इच्छा हस्त-मैथुन या अप्राकृतिक मैथुन करने की होने लगना जैसे लक्षणों में **जिंकम मेट 6** लाभकारी औषधि है।
- योनि के बाहरी हिस्से में खुजली के साथ आंतरिक हिस्से में भी खुजली होना जैसे लक्षणों में गर्भिणी को **केलेडियम 30** का सेवन करना हितकर होगा।
- गर्भिणी का बवासीर से ग्रसित होने पर गुदा मार्ग में अत्यधिक खुजली चलने की स्थिति में **कालिन्सोनिया 3, 30** लाभदायक औषधि है।
- रात्रि के समय जननांग में अत्यधिक खुजली चलना एवं गर्मी महसूस होना जैसे लक्षणों में **डोलीकोस 30** लाभदायक औषधि है।
- योनि में खुजली के साथ-साथ जलन महसूस होना, खुजलाने पर उस स्थान का फूल जाना जैसे लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 30** लाभकारी औषधि है।

गर्भावस्था के दौरान मूर्च्छा आना

गर्भावस्था में रोगिणी को मूर्च्छा आ जाने जैसी स्थिति अत्यंत विषमकारी होती है। मूर्च्छा आ जाने पर रोगिणी के स्नायविक संस्थान का उसके गर्भ में पल रहे शिशु पर से बंधन हट जाता है और मूर्च्छा के समय शरीर में आने वाली निस्तेजना एवं ढीलेपन के कारण गर्भपात हो जाने की आशंका बनी रहती है।

गर्भावस्था के दौरान मूर्च्छा आ जाने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि किसी बाहरी आघात के कारण मूर्च्छा आ जाना, शारीरिक कमजोरी के कारण मूर्च्छा आ जाना, अत्यधिक मानसिक श्रम के कारण भी गर्भावस्था में मूर्च्छा आ सकती है। गर्भिणी में रक्त की कमी हो जाना, गर्भिणी का हिस्टीरिया रोग से ग्रसित होना, किसी मानसिक आघात से गर्भिणी का ग्रसित हो जाना, गर्भिणी का भयभीत हो जाना, नशीले एवं मादक पदार्थो का सेवन करने से गर्भावस्था के दौरान गर्भिणी को मूर्च्छा आ सकती है। हिस्टीरिया रोग से ग्रसित स्त्रियों में गर्भावस्था के दौरान मूर्च्छा आ जाने की संभावना अधिक होती है।

औषधियां :

- ❑ गर्भिणी के अंदर हिस्टीरिया के कारण आयी मूर्च्छा के लिए **मास्कस 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ योनि मार्ग से अचानक हुए रक्त स्त्राव के कारण आयी मूर्च्छा में **चायना 30, 3×** लाभकारी औषधि है।
- ❑ बाहरी चोट या दुर्बलता के कारण आयी मूर्च्छा में **अर्निका 3×** का सेवन करना लाभदायक होता है।
- ❑ किसी शोक संदेश या दुखकारी घटना के कारण आयी मूर्च्छा में **इग्नेशिया 6** अत्यंत लाभकारी औषधि है।
- ❑ अकारण भयभीत हो जाने के कारण आयी मूर्च्छा में **ओपियम 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ स्नायविक दुर्बलता के कारण आयी बेहोशी में **डिजिटेलिस 6** का सेवन करना लाभदायक होता है।

गर्भावस्था के दौरान हिस्टीरिया

वे स्त्रियां जिनकी शारीरिक संरचना वायु प्रधान होती है उन्हें गर्भावस्था के दौरान हिस्टीरिया रोग होने की संभावना अधिक होती है। हिस्टीरिया रोग के कारण रोगिणी के शरीर में अत्यधिक अकड़न आ जाती है जिससे कि गर्भपात होने का खतरा बन जाता है। इस रोग से रोगिणी को ऐसा महसूस होता है कि उसके गले में ऐंठन हो रही है और वह अपनी मुटठियों को कसकर भींच लेती है। उसके दांत भिंच जाते हैं, मुँह से फैन आने लगता है और होश होते हुए भी वह बोल नहीं पाती। कई बार वह व्याकुल होकर इतना रोने लगती है कि उसे शांत करना असंभव हो जाता है एवं कभी-कभी वह स्वयं अपने हाथों से अपना गला जोर से दबाने लगती है।

औषधियां :

- गर्भिणी के विभिन्न अंगों में पारस्परिक असहयोग एवं माथे पर कांटे गड़ने जैसा दर्द होना, गर्भिणी का अत्यंत उग्र एवं अधैर्य होना,गर्भिणी को अत्यधिक पेशाब हो जाने के बाद होश आना जैसे लक्षणों में **इग्लेशिया 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- गर्भिणी के अंदर हिस्टीरिया का दौरा पड़ने पर कपड़े फाड़ना एवं नग्न हो जाना, मूर्खता-पूर्ण एवं हास्यास्पद काम करने लगना जैसे लक्षणों में **हायोसियामस 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- गर्भिणी का उत्तेजक पदार्थों का सेवन कर लेने पर हिस्टीरिया का दौरा पड़ना, उसका कब्ज से ग्रसित रहना एवं रात्रि के प्रथम प्रहर में नींद न आना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभदायक औषधि है।

- गर्भिणी का अत्यधिक कमोत्तेजित होना, तीव्र संभोग एवं प्रेमोन्माद की स्थिति में आ जाना, हिस्टीरिया के दौरे के कारण कस-कसकर हँसना एवं चिल्लाने लगना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 30** हितकर औषधि है।

प्रसव के कष्ट

सामान्यत: ऐसा देखा गया है कि विलासिता-पूर्ण, आलस्यमय जीवन बिताने वाली युवतियों में प्रसव जैसी सामान्य प्रक्रिया भी अत्यंत दु:खदायी एवं कष्टप्रद हो जाती है। ठीक इसके विपरीत कठिन परिश्रम एवं शारीरिक कार्य करने वाली स्त्रियों में प्रसव आसानी से हो जाता है। प्रसव स्त्रियों के जीवन में एक सामान्य एवं सहज प्रक्रिया है। जो स्त्रियां प्रसव को सरलता से लेती हैं उन्हें प्रसव समय पर एवं कष्ट रहित होता है। ऐसा देखा गया है कि जन-जातियों एवं गाँवों की महिलाओं में सामन्यत: प्रसव शहरी वर्ग की महिलाओं की अपेक्षा ज्यादा सामान्य एवं सहज होता है। स्त्रियों का विभिन्न प्रकार की मानसिक ग्रंथियों से ग्रसित होने के कारण ही प्रसव तकलीफदेह एवं कष्टप्रद होता है। प्रसव को लेकर मन में एक अज्ञात भय पाल लेना अत्यंत ही हानिकारक है। अक्सर ऐसा देखने में आया है कि धनोपार्जन की लालसा में कुछ चिकित्सालयों में सामान्य प्रसव जो कि आसानी से हो सकता है उसे शल्यक्रिया के द्वारा कृत्रिम रूप से करवाया जाता है। शल्यक्रिया के द्वारा हुए प्रसव के कई दुष्परिणाम हैं। इसके कारण स्त्री का योनि मार्ग अपनी पुरानी अवस्था में नहीं आ पाता एवं एक या दो बच्चे होने के बाद स्त्री-पुरूष का वैवाहिक एवं यौन जीवन लगभग समाप्त हो जाता है। शल्यक्रिया के द्वारा कराये गये प्रसव में स्त्रियों के योनि मार्ग एवं गुदा मार्ग के बीच का अंतर समाप्त हो जाने की संभावना बनी रहती है। आज के युग में जितनी नई-नई तकनीकें एवं औषधियां विकसित होती जा रही हैं उतना ही प्रसव जैसी सहज प्रक्रिया स्त्रियों में कष्टप्रद एवं दु:खदायी होती जा रही हैं।

प्रसव वेदना शुरू होने के पूर्व गर्भिणी को सामान्यत: पतले दस्त एवं बार-बार पेशाब जाने की इच्छा होती है। योनि मार्ग से लाल रंग लिए हुए श्लेष्मा का निकलना भी शुरू हो जाता है। सर्वप्रथम प्रसव पीड़ा तलपेट में शुरू होती है उसके बाद पुन: प्रसव पीड़ा पीठ की तरफ से उत्पन्न होकर कमर तक फैल जाती है। जैसे-जैसे प्रसव का समय नजदीक आता है वैसे-वैसे गर्भिणी के अंदर दर्द के साथ ऐसा महसूस होता है कि मानों कोई वस्तु योनि मार्ग की तरफ सरक रही है। यह दर्द प्रसव से कुछ क्षण पूर्व इतना बढ़ जाता है कि स्त्री

कांपने लगती है और फिर संतान योनि मार्ग सें धीरे-धीरे बाहर आने लगती है।

अगर किसी कारण वश प्रसव पीड़ा शुरू हो जाने के काफी समय तक बच्चा गर्भ से बाहर नहीं आ जाता तो दवाओं का उपयोग करना चाहिए एवं अंत में स्थिति की गंभीरता को देखते हुए शल्यक्रिया के द्वारा भी बच्चे का जन्म कराया जा सकता है।

प्रसव होने के कुछ महिने पहले निम्नलिखित होमियोपैथी **औषधियों** का सेवन करने पर स्त्री प्रसव के कारण उत्पन्न हुए कष्ट एवं बीमारी का निदान दूर किया जा सकता है एवं प्रसव को सामान्य बनाया जा सकता है।

औषधियां :

❑ स्त्री को पूर्व में कभी मृत एवं असामान्य संतान उत्पन्न हुई हो तो ऐसी स्थिति में **सिमिसिफ्यूगा 30, 200** का गर्भ ठहरने के तीन महिने के बाद से सेवन करना चाहिए।

सिमिसिफ्यूगा 30, 200 के सेवन से मिथ्या-प्रसव पीड़ा एवं जरायु मुख के संक्रमित हो जाने पर उत्पन्न हुई पीड़ा से निजात मिलती है।

❑ गर्भावस्था के दौरान 8 वे महिने में होने वाली प्रसव पीड़ा एवं जरायु मुख की कठोरता के कारण प्रसव विलोपित होना जैसे लक्षणों में **कोलोफाइलम** 6, 30 का सेवन करने से प्रसव कष्ट रहित होता है।

❑ गर्भिणी स्त्री का शारीरिक रूप से कमजोर एवं दुर्बल होने पर **केलि सल्फ** 6, 200 के सेवन से प्रसव सुरक्षित एवं कष्ट रहित हो जाता है। उपरोक्त औषधि को गर्भ ठहरने के 6 मास बाद शुरू करना हितकर है।

❑ बच्चे की अस्वाभाविक स्थिति एवं जरायु का जड़ हो जाना जिसके कारण प्रसव का विलंबित हो जाना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30, 200** लाभकारी औषधि है।

❑ गर्भिणी का जरायु विकार एवं जरायु दुर्बलता से ग्रसित होना, पाँचवे महिने से रूक-रूककर अनियमित रूप से प्रसव वेदना जैसा दर्द महसूस होना एवं प्रसव का विलंबित होना जैसे लक्षणों में **सिकेली 6, 30** हितकर औषधि है।

- बच्चे का जरायु में अड़ जाना जिसके कारण प्रसव होने में तकलीफ होना एवं गर्भिणी का प्रसव के समय अत्यधिक कष्ट एवं वेदना से ग्रसित होकर छटपटाने लगना, प्रसव से पूर्व अत्यधिक रक्त स्त्राव होना, स्त्री के मुँह में छाले आ जाना जैसे लक्षणों में **अर्निका 30** के उपयोग से बिना किसी यांत्रिक सहायता से प्रसव शीघ्र हो जाता है।

- गर्भिणी को श्वास लेने में कष्ट महसूस होना, जरायु मार्ग का सूखा होना, प्रसव के समय अज्ञात भय से भयभीत होकर निरंतर प्रलाप एवं बेचैनी महसूस करना जैसे उपसर्गों में **एकोन 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- अधिक आयु में गर्भ धारण करना एवं जरायु का मुख का अस्वाभाविक होना, शरीर में गर्मी के झले आ जाना एवं रह-रहकर तीव्र प्रसव वेदना होना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30, 200** से प्रसव आसान हो जाता है।

- प्रसव का समय नजदीक आने पर अत्यधिक तीव्र दर्द एवं स्त्री का अति संवेदनशील हो जाना, दर्द सहन करने की क्षमता का ह्रास हो जाना, मानसिक रूप से बेचैन होकर गर्भिणी के मन में मृत्यु कामना एवं आत्महत्या के विचार आना जैसे लक्षणों में **आरम मेट 6, 30** सेवन करना हितकर है।

- प्रसव वेदना के कारण पाँव में अकड़न आ जाने की दशा में **मेग फॉस 6, 3×** का सेवन करना हितकर होता है।

- प्रसव के समय बायीं ओर अत्यधिक दर्द बने रहने की स्थिति में **पल्सेटिला 30** लाभकारी औषधि है।

- प्रसव वेदना के कारण गर्भिणी का मूर्च्छित हो जाना एवं मूर्च्छित अवस्था में मल-मूत्र निकलने लगना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- प्रसव वेदना का नीचे से उठकर ऊपर की ओर जाना एवं हमेशा गर्मी महसूस होना, भ्रूण जरायु में नीचे उतरने की अपेक्षा ऊपर की ओर चढ़ रहा हो महसूस होना जैसे लक्षणों मे **जेल्सीमियम 3, 200** का इस्तेमाल करना लाभदायक होता है।

- प्रसव वेदना के कारण गर्भिणी की आँखें ऊपर की ओर चढ़ने लगना, अर्ध

निद्रित अवस्था में आ जाना जैसे लक्षणों में **ओपियम 30** का सेवन करना हितकर होता है।

- ❑ दर्द के मारे गर्भिणी का छटपटाना एवं ऐसा महसूस होना जैसे कि कमर से निचला हिस्सा टूटकर अलग हो जाएगा, संपूर्ण पेट में दर्द एवं ऐंठन महसूस होना जैसे लक्षणों में **क्लोरोफार्म 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ मोटी एवं थुलथुली स्त्रियों में प्रसव वेदना अत्यधिक बढ़ जाने की स्थिति में **केलि कार्ब 30** औषधि का सेवन करना लाभदायक होता है।
- ❑ दर्द का नाभि से शुरू होकर पैरों में फैल जाना एवं जरायु में अकड़न आ जाने के कारण बार-बार सफेद रंग लिए हुए पेशाब होना, रोगिणी का अत्यधिक व्याकुल होकर रोने एवं चीखने चिल्लाने लगना जैसे लक्षणों में **केमोमिला 6, 30** लाभदायक औषधि है।

अध्याय–51

प्रसव के समय शरीर में अकड़न एवं आक्षेप

प्रसव के समय अत्यधिक तीव्रता लिए हुए दर्द के कारण गर्भिणी को संपूर्ण शरीर में अकड़न एवं नस नाड़ियों और मांस पेशियों में एक अनचाहा खिंचाव लगने लगता है जिसके कारण गर्भपात की आशंका बढ़ जाती है। मांस पेशियों एवं शरीर में आये खिंचाव एवं आक्षेप के कारण प्रसव सामान्य ढंग से नहीं हो पाता जिसके कारण होने वाले बच्चे और गर्भिणी के जीवन को गंभीर खतरा उत्पन्न हो जाता है।

औषधियां :

- प्रसव के समय गर्भिणी के अंग-प्रत्यंग एवं मांस पेशियों में ऐंठन के साथ दर्द महसूस होना, दर्द के मारे गर्भिणी का जोर-जोर से रूदन करना एवं मूर्च्छित हो जाना जैसे लक्षणों में **हायोसियामस 30** लाभदायक औषधि है। उपरोक्त औषधि को 15-15 मिनिट के अंतर से देने से गर्भिणी को आराम मिलता है।
- प्रसव के समय पीठ में जबरदस्त अकड़न एवं शरीर का पीछे की तरफ मुड़ जाना जैसे लक्षणों में **सिक्युटा 6, 30** लाभकारी औषधि है।
- प्रसव के समय आक्षेप तथा अकड़न के कारण गले में जकड़न महसूस होने पर **इग्नेशिया 200** लाभकारी औषधि है।
- प्रसव के समय मस्तिष्क की तरफ रक्त संचार का बढ़ जाना एवं चेहरे का रक्त संचय के कारण लाल एवं फूल जाना, गर्भिणी का पसीने से तर-बतर हो जाना, पैरों के नीचे भार का महसूस होना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।
- प्रसव के समय सभी अंगों में कम्पन होना जैसे लक्षण में **स्ट्रेमोनियम 30** लाभकारी औषधि है।

- प्रसव के समय चेहरे एवं जबड़े का भिंच जाना जैसे लक्षणों में **हाइड्रोसाइनिक एसिड** 15-15 मिनिट के अंतर से सेवन करना चाहिए।

- प्रसव के समय शरीर में कम्पन के साथ गर्भिणी को पेट में ऐंठन तथा सिर घूमता हुआ महसूस होने पर **जेल्सीमियम 30** लाभदायक औषधि है।

- प्रसव के समय अत्यधिक दर्द होना एवं गालों का लाल होना जैसे लक्षणों में **केमोमिला 30** हितकर औषधि हे।

अध्याय-52

प्रसव के बाद गर्भिणी के कष्ट

औषधियां :

- प्रसवोपरांत गर्भिणी को पुनः प्रसव वेदना जैसा कष्ट महसूस होने पर **काफिया** 30 का सेवन करना हितकर है।
- प्रसव के बाद योनि मार्ग एवं जरायु का छिल जाना या प्रभावित हो जाना जैसे लक्षणों में **अर्निका 30, 200** का सेवन करने से शीघ्र लाभ मिलता है साथ ही गर्भिणी को केलेन्डुला मदर टिंचर का डूस लेकर योनि मार्ग की साफ-सफाई करते रहना चाहिए।
- प्रसवोपरांत मूत्राशय तथा गुदा प्रदेश पर अत्यधिक दबाव एवं दर्द महसूस होने जैसे लक्षणों में **अर्निका** 30 लाभदायक औषधि है।
- यदि गर्भिणी का प्रसव शल्यक्रिया के द्वारा करवाया गया है एवं उस शल्यक्रिया के स्थान पर लक्षण ठीक नहीं हों तो **स्ट्रेफिसेग्रिया** 30 लाभकारी औषधि है।
- प्रसवोपरांत गर्भिणी के स्वभाव में चिड़चिड़ाहट महसूस होने पर **कोलोफाइलम** 1×, 3× लाभदायक औषधि है।
- चोट ग्रस्त स्थानों पर उठने वाले दर्द के प्रभाव को कम करने के लिए **अर्निका** 30, 200 का इस्तेमाल करना चाहिए।
- प्रसवोपरांत गर्भिणी को बेचैनी एवं घबराहट महसूस होना तथा छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित एवं चीखने चिल्लाने लगना जैसे लक्षणों में **केमोमिला** 30 लाभदायक औषधि है।
- शल्यक्रिया के दौरान गर्भिणी को अत्यधिक रक्त स्त्राव हो जाना एवं उसका शक्तिहीन महसूस करना जैसे लक्षणों में **स्ट्रोडियाना कार्ब** 3×, 30 लाभकारी औषधि है।
- प्रसव के बाद जांघों एवं उसके जोड़ो में होने वाले दर्द के लिए **सिमिसिफयुगा** 3, 30 का सेवन करना हितकर होता है।

अध्याय-53

नाल काटना

जन्म लेने के बाद शिशु जैसे ही रोना प्रारंभ कर देता है वैसे ही समझ लेना चाहिए कि उसने बाहरी वातावरण में श्वास लेने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है। यह एक अच्छा लक्षण है। अगर किसी कारण वश जन्म लेने वाला शिशु रोता नहीं है तो उससे लिपटी नाल को काटना नहीं चाहिए। नाल काटते समय डॉक्टर या नर्स को अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए। नाल काटने वाले शस्त्र पूर्ण रूप से कीटाणु रहित होना चाहिए एवं नाल का मुख जो कि बच्चे के पेट से लगा हो करीब तीन-चार अंगुल छोड़कर काटना चाहिए और उस स्थान को किसी धागे से बांध देना चाहिए। नाल को ऊपरी सिरे से एक अंगुल जगह छोड़कर दो गठानें बांध देना चाहिए। इस तरह शिशु एवं माँ दोनों के बीच बंधन हो जाता है। इसके बाद नाल को ठीक बीचों-बीच से काटकर अलग कर देना चाहिए। यदि किसी कारण वश नाल बेल निकलने में विलंब होता है तो निम्नलिखित **औषधियों** का प्रयोग गर्भिणी स्त्री को करना चाहिए।

- गर्भिणी का शारीरिक रूप से मोटा एवं थुलथुला होना एवं स्वभाव से शांत और मधुर होना जैसे लक्षणों में यदि नालबेल निकलने में देरी हो रही हो तो **पल्सेटिला** 30 का सेवन हितकर होता है।
- नाल काटने के कारण गर्भिणी को सेप्टिक हो जाना एवं उसे तीव्र ज्वर आ जाना जैसे लक्षणों में **बेप्टेशिया 30** लाभदायक औषधि है।
- गर्भिणी का शारीरिक रूप से दुबला-पतला होना एवं स्वभाव से ईर्ष्यालू, क्रोधी और झगड़ालू होना जैसे लक्षणों में प्रसव के बाद नालबेल निकलने में तकलीफ होने पर **सिकेली 6, 3, 30** लाभदायक औषधि है।

अध्याय-54

प्रसव के बाद मैला स्त्राव न निकलना

प्रसव के समय शिशु के साथ-साथ जरायु से गंदा मैला स्त्राव काफी मात्रा में निकलता है परंतु किसी कारण वश जैसे कि जरायु मुख का कड़ा पड़ जाना या सूजन आ जाने के कारण कभी-कभी यह गंदा एवं मैला स्त्राव जरायु में ही रह जाता है। जिसके कारण स्त्री को विभिन्न प्रकार की जरायु सबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है जैसे कि जरायु में ऐंठन पड़ना, जरायु का फूल जाना, जरायु का पुनः सामान्य न होना इत्यादि।

औषधियां :

- गर्भावस्था के दौरान गर्भिणी को ठंड लग जाने के कारण प्रसव के समय मैला पदार्थ बाहर न निकल पाना एवं प्रसवोपरांत उसे बार-बार पेशाब जाने की इच्छा महसूस होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** का सेवन करना हितकर होता है।

- गर्भावस्था के अंतिम चरण में गर्भिणी का भीग जाने के कारण प्रसव के समय गंदे पानी का बाहर न निकल पाना जैसी स्थिति में **डल्कामारा 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- मैला पानी रूक जाने के कारण प्रसवोपरांत स्त्री की त्वचा में खुस्की आ जाना, ज्वर से ग्रसित हो जाना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभकारी औषधि है।

प्रसव के बाद का स्त्राव

प्रसव के समय जैसे ही शिशु बाहर निकलने लगता है योनि द्वार पर अत्यधिक दबाव बन जाता है। जिसके कारण सामान्य अवस्था में भी योनि द्वार की मांस पेशियां एवं त्वचा कुछ न कुछ क्षति-ग्रस्त हो जाती हैं। कई बार शिशु का आकार बड़ा होने के कारण योनि भ्रंश होने की संभवनाऐं भी बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में यदि गुदाद्वार की रक्षा न की जाए तो वह भी फट सकती है। योनि द्वार के ज्यादा फट जाने के कारण कभी-कभी गुदाद्वार और योनि द्वार के बीच का अंतर बहुत कम हो जाता है या अंतर बिल्कुल भी समाप्त हो सकता है।

गुदाद्वार और योनि द्वार के एक हो जाने की स्थिति में शल्यक्रिया के द्वारा इन दोनों के बीच पुनः अंतर बनाना पड़ता है। प्रसव के बाद केलेन्डुला मदर टिंचर की 15-20 बूंदे एक गिलास स्वच्छ पानी में मिलाकर घोल तैयार कर लेना चाहिए और फिर इसे किसी स्वच्छ कपड़े या रुई के द्वारा प्रसव के समय क्षति-ग्रस्त हुए स्थान पर नियमित रूप से कुछ दिनों तक लगाते रहने से आराम मिलता है एवं फटी हुई जगह पुनः अपनी वास्तविक स्थिति में लौट आती है।

सामान्यतः ऐसा देखा गया है कि प्रसव के बाद 15-20 दिन तक स्त्री के जरायु से थोड़ा-थोड़ा रक्त स्त्राव होता रहता है। प्रारंभ में यह स्त्राव गहरे लाल रंग का होता है और फिर धीरे-धीरे यह स्त्राव पीला या पानी के समान निकलता रहता है। सामान्यतः यह स्त्राव 10 से 15 दिन तक होता रहता है परंतु अगर इसके बाद भी स्त्री में यह स्त्राव बंद नहीं होता तो उसे उचित चिकित्सा एवं निम्नलिखित **औषधियों** का लक्षण युक्त सेवन करना चाहिए।

- ❑ प्रसव के उपरांत स्त्री को लंबे समय तक काले रंग के थक्कों के साथ स्त्राव होने पर **क्रोकस 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ यदि रक्त स्त्राव के साथ-साथ दुर्गन्ध भी आती हो तो **बेलाडोना 30** अत्यंत लाभकारी औषधि है।
- ❑ नाभि प्रदेश में भार के साथ-साथ पीले रंग का रक्त मिश्रित स्त्राव लंबे समय

तक निकलने की स्थिति में **चायना 30** लाभदायक औषधि है।

- यदि स्त्राव सामान्य समय से पहले ही बंद हो जाए तो **एकोनाईट 3×** लाभदायक औषधि है।
- बहुत दिनों तक लाल रंग लिए हुए रक्त स्त्राव में **सेबाइना 3×** का सेवन करना लाभदायक होता है।
- केवल पीले रंग का स्त्राव लंबे समय तक होते रहना एवं उसके साथ थक्के न आना जैसे लक्षणों में **सिकेलि 3, 30** का सेवन करना हितकर है।
- प्रसव के बाद रक्त स्त्राव के साथ सिर में दर्द रहने की दशा में **फेरम 6** लाभदायक औषधि है।
- कई बार रोगिणी को प्रसव के बाद अचानक ही तेज रक्त स्त्राव होने लगता है एवं इसका कोई विशेष कारण नहीं होता ऐसी स्थिति में **अर्निका 30, 200** लाभदायक औषधि है।
- प्रसव के बाद निरंतर रक्त स्त्राव होते रहना, शरीर का ठंडा पड़ जाना एवं स्त्री को दर्द के साथ उल्टी आना जैसे लक्षणों में **इपिकाक 30** लाभदायक औषधि है।
- प्रसव के बाद अत्यधिक रक्त स्त्राव हो जाना, स्त्री के अंदर रक्त की कमी आ जाना जिसके कारण उसे मूर्च्छा आने लगे जैसे लक्षणों में **चायना 6, 30** लाभकारी औषधि है।

प्रसव के बाद जरायु की स्थान च्युति

प्रसव के बाद जरायु की स्थान च्युति हो जाने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि प्रसव के समय जरायु से अत्यधिक रक्त स्त्राव हो जाना, जरायु के अंदर दूषित एवं गंदे पानी का भर जाना, गर्भावस्था के दौरान शिशु का जरायु के अंदर अव्यवस्थित हो जाना, जरायु का पुनः सामान्य अवस्था में न आ पाना, ठीक से प्रसव न कराने के कारण इत्यादि।

जरायु की स्थान च्युति हो जाने के कारण प्रसूता को तलपेट में अत्यधिक दर्द महसूस होता है एवं वह ठीक से चल फिर नहीं पाती। जरायु की स्थान च्युति हो जाने पर प्रसूता को शौच और पेशाब जाने में कष्ट के साथ-साथ श्वेतप्रदर, प्रदाह एवं बंध्यत्व के लक्षण प्रकट हो जाते हैं।

औषधियां :

- प्रसव के समय अत्यधिक रक्त स्त्राव के कारण जरायु का अपने स्थान से हट जाना एवं तीव्र जरायु प्रदाह होना जैसे लक्षणों में **एल्युमिना 200** लाभदायक औषधि है।
- जरायु का प्रसव के बाद स्थान च्युति होने पर **सीपिया 30** का सेवन करना हितकर होता है।
- प्रसव के बाद जरायु का स्थान च्युति हो जाना, योनि एवं गुदा पर भार महसूस होना, प्रसूता को पतले दस्त होना, दस्त होने का प्रसूता को भान न होना जैसे लक्षणों में **एलो 30** लाभदायक औषधि है।
- प्रसव के बाद जरायु के आकार में वृद्धि हो जाना एवं जरायु की स्थान च्युति हो जाना, तलपेट एवं योनि मार्ग पर भार महसूस होना जैसे लक्षणों में **फेक्सीनस अमेरिकाना क्यू** की कुछ बूंदे हल्के गर्म पानी के साथ लेने से लाभ मिलता है। प्रसव के बाद मल त्याग करने के लिए थोड़ा सा भी जोर लगाने पर प्रोलेप्सस की स्थिति आ जाने पर **रूटा 6** लाभकारी औषधि है।
- प्रसव के बाद मल त्याग, पेशाब या थोड़ा सा भी चलने-फिरने के कारण जरायु की स्थान च्युति हो जाना, जरायु का योनि मार्ग में निकल आना जैसे लक्षणों में **पोडोफाइलम् क्यू 6×** हितकर औषधि है।

प्रसव के बाद मूर्च्छा

प्रसव के समय गर्भिणी को कई कारणों से मूर्च्छा आ सकती है जैसे कि प्रथम बार प्रसव होने पर मूर्च्छा आना, प्रसव के समय अत्यधिक रक्त स्त्राव हो जाना जिसके कारण शरीर में रक्त की कमी हो जाना, अत्यधिक प्रसव वेदना होना एवं शल्यक्रिया के द्वारा प्रसव कराये जाने की स्थिति में भी मूर्च्छा आ सकती है।

औषधियां :

- प्रसूता को थोड़े-थोड़े अंतराल में बेहोशी आना जैसे लक्षणों में **स्ट्रैनम 30** लाभकारी औषधि है।
- प्रसव के समय किसी चोट या शल्यक्रिया के कारण आयी बेहोशी में **अर्निका** 3×, 200 लाभदायक औषधि है।
- गर्भिणी के मन से किसी अज्ञात भय, चिंता के कारण आयी बेहोशी में **एकोनाइट** 3×, **काफिया** 6 का सेवन करना हितकर होता है।
- प्रसव के बाद प्रसूता के मस्तिष्क में किसी भी प्रकार की विकृति या उसके हाव-भाव में न्यूनता आयी हो तो उसे ओपियम 30 औषधि का सेवन करना लाभकारी होगा।
- प्रसव के बाद प्रसूता की नाड़ी का तेज होना एवं उसका प्रलाप करने लगना जैसे लक्षणों में **वेरेट्रम एल्ब** 30 औषधि का सेवन करना लाभकारी है।
- प्रसव के बाद अत्यधिक मात्रा में रक्त का निकलना जिसके कारण प्रसूता को कमजोरी आ जाना और उसका बेहोश हो जाना जैसे लक्षणों में **चायना** 30 का सेवन करना हितकर होता है।
- प्रसूता के थोड़े से भी हिलने-डुलने पर मूर्च्छित हो जाना, सोते समय सिर में ठंडा पसीना आना जैसे लक्षणों में **केम्फर** 30 का सेवन करना हितकर होता है।

- प्रसव के बाद प्रसूता का शारीरिक रूप से कमजोर हो जाना एवं चलने-फिरने पर भी मूर्च्छा आना जैसे लक्षणों में **अर्निका 30** लाभकारी औषधि है।

अगर किसी कारण वश प्रसूता औषधि नहीं ले सकती है तो उसका मुख खोलकर औषधि को मदर टिंचर के रूप में उसके मुँह में डाल देना चाहिए। इससे उसे तुरंत लाभ मिलेगा।

प्रसव के बाद आक्षेप

प्रसव के बाद स्त्रियों में विभिन्न प्रकार की असामान्य स्थितियां एवं लक्षण प्रकट हो सकते हैं जैसे कि सिर में दर्द रहना, आँखें कमजोर हो जाना, आँखों की पुतलियों का ऊपर की ओर चढ़ जाना, प्रसव दर्द के कारण आँखें फटी-फटी लगना, आँखों में तिरछापन एवं भेंगापन आ जाना, मुख का टेड़ा हो जाना, जीभ का बाहर निकल जाना, बार-बार मूर्च्छा आना, दाँतों का भिंच जाना, हाथ पाँव में ऐंठन पड़ना, हमेशा नींद आना, मुख से शब्द न निकलना, जबान का लड़खड़ाना, शरीर का धनुषाकार में अकड़ जाना इत्यादि।

उपरोक्त वर्णित खराब लक्षणों के दिखाई पड़ने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करने से प्रसूता को तुरंत लाभ मिलता है।

- ❑ प्रसव के बाद प्रसूता को अनिद्रा का रोग हो जाना जैसी स्थिति में **काफिया** 6 लाभदायक औषधि है।
- ❑ प्रसव के बाद प्रसूता को अगर 10 से 12 घंटों तक पेशाब न आये तो **ऐकोनाइट 3×** आधे-आधे घंटों से देना हितकर है।
- ❑ प्रसव के बाद पेट का लिजलिजा हो जाना एवं झूल जाना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 200 या सिलिका 30** महिने में एक बार इस्तेमाल करना लाभकारी होता है।
- ❑ प्रसव के बाद प्रसूता को शौच न होना, पेट का फूल जाना, पेट में गैस बनने लगना जैसे लक्षणों में **कालिंसोनिया 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ शल्यक्रिया के दुष्परिणामों से बचने के लिए **फेरम फॉस 200, केल्केरिया कार्ब 200, मेग्नेशिया कार्ब 200** एक हफ्ते के अंतराल से लेने से शल्यक्रिया संबंधित दुष्परिणाम दूर हो जाते हैं।
- ❑ प्रसव के बाद किंसी दिमागी गड़बड़ी के लक्षण दिखाई देने पर **ओपियम 30** लाभकारी औषधि है।

- प्रसव के बाद प्रसूता को हाथ पाँव की अंगुलियों में अकड़न आ जाना, पसीने से खट्टी बदबू आना जैसे लक्षणों में **क्यूप्रम 30** लाभदायक औषधि है।
- अत्यधिक शोक या मानसिक आवेग के कारण रोग उत्पन्न हो जाना, प्रसूता का जोर-जोर से चीखना और चिल्लाने लगना, गर्दन में अकड़न आ जाना, चेहरे का नीला पड़ जाना, शरीर दुर्बल हो जाना जैसे लक्षणों में **लेकेसिस 30** लाभकारी औषधि है।
- प्रसूता के मुख से झाग आना, तेजी के साथ शरीर का अकड़ जाना, हाथ पाँव का टेढ़ा पड़ जाना, श्वास लेने में कष्ट महसूस होना जैसे लक्षणों में **सिक्यूटा 30** लाभकारी औषधि है।
- आक्षेप आने के बाद प्रसूता का चेहरा डरावना हो जाना, दाँतो का किटकिटाने लगना जैसे लक्षणों में **स्ट्रेमोनियम 30** लाभकारी औषधि है।
- गंभीर कब्ज रोग से ग्रसित होना, मद्यपान का आदी हो जाना, कभी-कभी बहुत उत्तेजित हो जाना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभदायक औषधि है।
- हिस्टीरिया रोग से ग्रसित हो जाना, अचानक चिल्लाने के साथ मुख से झाग निकलने लगना, अकड़न के बाद तथा पहले कष्ट होना जैसे लक्षणों में **नक्स मस्केटा 30** लाभकारी औषधि है।
- प्रसूता की मांस पेशियों में अकड़न आ जाना, आक्षेप के बाद नींद आ जाना, चेहरे का लाल तथा चमकदार हो जाना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।
- आक्षेप के कारण प्रसूता को अनजाने में ही पेशाब हो जाना, अधिक प्रलाप करते रहना, लज्जाहीनता के भाव आ जाना जैसे लक्षणों में **हायोसियामस 30** लाभकारी औषधि है।
- आक्षेप के कारण प्रसूता के जरायु में कठोरता आ जाना, आक्षेप के बाद अधिक थकान महसूस होना, थोड़ी-थोड़ी देर में पेशाब जाने की इच्छा होते रहना, जरायु ग्रीवा का फैल जाना जैसे लक्षणों में **जेल्सीमियम 30, 200** लाभदायक औषधि है।

हिस्टीरिया

हिस्टीरिया एक प्रकार की मानसिक बीमारी है जो कि सामान्यतः स्त्रियों में अधिक देखी जा सकती है। प्रायः अविवाहित एवं नवयुवतियां इस बीमारी से अधिक ग्रसित देखी गयी हैं। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में वयस्क स्त्रियों में भी इस बीमारी के लक्षण देखे जा सकते हैं। आयुर्वेद में इस बीमारी को गुल्म वायु या मूर्च्छा वायु कहते हैं। हिस्टीरिया एक प्रकार की स्नायविक समस्या है एवं मुख्य रूप से यह बीमारी मस्तिष्क में उठने वाली असाधारण विद्युत तरंगों के कारण होती है। हिस्टीरिया की बीमारी होने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि स्त्री के मन में लंबे समय तक काम वासना की तीव्र लालसा एवं काम वासना का तृप्त न हो पाना, स्त्री का स्वभाव कामोन्मादी होना एवं निरंतर उसके मन में काम वासना के प्रति चिंतन चलते रहना, परिवार में अचानक शोक संदेश आ जाना, किसी नजदीकी व्यक्ति से वियोग हो जाना, अचानक भारी दुःखों से घिर जाना, मस्तिष्क में निरंतर चिंता बने रहना इत्यादि।

स्त्रियों में यौन संबंधित शारीरिक समस्याऐं जैसे कि जरायु या डिंबग्रंथि की गड़बड़ी एवं प्रदाह, मासिक धर्म का रूक जाना, अधिक मात्रा में रजःस्त्राव होना, जरायु की स्थान च्युति इत्यादि भी हिस्टीरिया के कारण हो सकते हैं।

युवा बालिकाओं में मासिक धर्म के समय हिस्टीरिया के लक्षण अक्सर देखने को मिलते हैं। सामान्यतः इस रोग से ग्रसित स्त्रियां स्वभाव से ईर्ष्यालू, मन ही मन कुढ़ने वाली, आलसी एवं विलासिता-पूर्ण जीवन जीने वाली होती हैं।

आज के सामाजिक वातावरण में अश्लील फिल्मों को देखना, हस्त-मैथुन या अप्राकृतिक मैथुन की प्रवृत्ति, अत्यधिक प्रेम संबंधी नाटक या नृत्य देखना एवं मद्यपान और मादक वस्तुओं का सेवन इस बीमारी के मुख्य उत्तेजक माने जाते हैं। इस बीमारी से ग्रसित स्त्रियों के पेट में सर्वप्रथम वायु का एक गोला सा ऊपर की तरफ उठता हुआ प्रतीत होता है और धीरे-धीरे यह वायु गोला गले तक पहुँच जाता है जिसके कारण स्त्री में स्वर भंग, स्वर लोप एवं श्वास

लेने में तीव्र कष्ट महसूस होता है। हिस्टीरिया का दौरा पड़ते ही अचानक पेशाब बंद हो जाती है एवं पेट और सिर में अत्यधिक दर्द महसूस होता है साथ ही जोर-जोर से हिचकी आने लगती है। कंठ के नीचे कोई भी वस्तु उतरती हुई नहीं प्रतीत होती। यहां तक कि हिस्टीरिया का दौरा पड़ने पर रोगिणी को ऐसा लगता है कि मानों उसके गले में कुछ अटक गया हो एवं वह जोर-जोर की आवाजों के साथ श्वास लेती है और छोड़ती है। इस दौरान स्त्री का पेट वायु की अधिकता के कारण फूल जाता है और दर्द के कारण बुरी तरह छटपटाने लगती है।

यह रोग प्राय: दौरों के रूप में अचानक दिखाई पड़ता है। हिस्टीरिया का दौरा पड़ते ही स्त्री के हाथ पाँव में अचानक ऐंठन पड़ने लगती है एवं शरीर धनुष के आकार में आ जाता है। कई बार रोगिणी की आँखें ऊपर की ओर चढ़ जाती हैं एवं वह चाहते हुए भी कुछ बोल नहीं पाती और मुँह से सिर्फ आवाजें ही सुनाई देती हैं। हिस्टीरिया का दौरा पड़ने पर स्त्री मूर्च्छित भी हो सकती है या फिर वह पागलों के समान जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने या रोने, हँसने लगती है। कई बार इस दौरान स्त्रियां अत्यधिक भावावेश में आकार हिंसक हो जाती हैं। हिस्टीरिया का दौरा पड़ने पर स्त्रियों में मनोवेग इतने बढ़ जाते हैं कि रोगिणी का अपने आप पर काबू नहीं रह पाता वे जोर-जोर से गाने लगती हैं और उल्टी सीधी बातें करने लगती हैं एवं कई बार स्वयं के कपड़े फाड़कर नग्न हो जाने के साथ-साथ अश्लील हरकतें करने लगती हैं। हिस्टीरिया एक प्रकार की अनुवांशिक बीमारी है अगर माता-पिता या परिवार में किसी व्यक्ति को हिस्टीरिया के दौरे पड़ते हैं तो उनसे उत्पन्न होने वाली संतानों में भी इस बीमारी के होने की संभवनाऐं बनी रहती हैं।

स्त्री का अत्यधिक संवेदनशील होना, अचानक किसी प्रेम संबंध में असफलता, बहुत ज्यादा मानसिक दबाव, लंबे समय तक अध्ययनरत रहना एवं परीक्षा के समय इस बीमारी के दौरे छोटी उम्र की लड़कियों में अक्सर देखे गये हैं। यह रोग अस्थाई रूप से होता है कुछ समय बाद उचित इलाज या औषधि लेने के बाद स्त्री पुन: अपनी सामान्य अवस्था में आ जाती है एवं उसे याद भी नहीं रहता कि उसने अज्ञानवश किस तरह की हरकतें की हैं।

हिस्टीरिया के दौरे पड़ने पर स्त्री के शरीर में नीले या काले रंग के धब्बे पड़ सकते हैं। अचानक हिस्टीरिया का दौरा पड़ने पर स्त्री का बाथरूम या अन्य

किसी निर्जन स्थान पर अचेत या गिर जाने के कारण अन्य दुर्घटनायें संभावित हो सकती हैं। इस बीमारी से ग्रसित स्त्रियां सामान्यतः अपने आस-पास रहने वाले लोगों की संवेदना और ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहती हैं। हिस्टीरिया का दौरा बार-बार पड़ने के कारण स्त्रियों में निम्नलिखित उपसर्ग दिखाई पड़ सकते हैं जैसे कि देखने सुनने की शक्ति का ह्रास हो जाना, हड्डियों में दर्द महसूस होना, शरीर के बायें हिस्से में दर्द का अनुभव होना, पेशियों में अकड़न के साथ-साथ छींक आना, स्वप्न दिखाई देना, खांसी चलना इत्यादि। यह बीमारी मिर्गी के रोग से कुछ मिलती-जुलती प्रतीत होती है परंतु इसमें पेशाब का वेग धारण करने की क्षमता रहती है। मूर्च्छा टूटने के बाद इस बीमारी से ग्रसित स्त्री को अत्यधिक पेशाब होना इस बीमारी का मुख्य लक्षण है। मिर्गी रोग से ग्रसित स्त्री के मुख से झाग या फैन आता है और रोगिणी को बिल्कुल भी होश नहीं रहता परंतु हिस्टीरिया में अज्ञानता आ भी सकती है और नहीं भी आ सकती अथवा क्रमशः आ सकती है।

हिस्टीरिया के लक्षण दिखाई पड़ने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- हिस्टीरिया से ग्रसित स्त्री के बेहोश हो जाने पर **केम्फर क्यू, मास्कस क्यू,** 3 औषधि का सेवन कराने से रोगिणी होश में आ जाती है।

- हिस्टीरिया से ग्रसित स्त्री के चेहरे के एक हिस्से का गरम तथा दूसरे हिस्से का सर्द होना साथ ही एक हिस्से का रंग लाल हो जाना, दूसरे का पीला पड़ जाना, पेट में से उठने वाले वायु गोलों का कंठ में सरक आना, रोगिणी का निरंतर हँसते रहना एवं अचानक ही बेहोश हो जाना, बेहोशी के समय शरीर का ठंडा पड़ जाना, ठंड के मौसम में हिस्टीरिया के दौरों का अधिक पड़ना जैसे लक्षणों में **मास्कस** 1, 3, 30 लाभदायक औषधि है।

- हिस्टीरिया से ग्रसित स्त्री का मानसिक रूप से अति संवेदनशील होना, अचानक किसी प्रेम संबंधी विफलता, घर में किसी की मृत्यु इत्यादि के कारण अत्यधिक शोकाकुल माहौल उत्पन्न हो जाने पर हिस्टीरिया के दौरे पड़ना, ग्रसित स्त्री का दौरे के समय अत्यधिक बेचैनी महसूस करना, जोर-जोर से हँसना या रोने लगना, गले में कुछ अटकता हुआ सा महसूस होना जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया मूल अर्क** की उच्च शक्ति के प्रयोग से अत्यधिक

लाभ होता है। **इग्नेशिया** के प्रति संवेदनशील स्त्री का व्यवहार दौरे के समय परस्पर विरोधी होता है और रुग्णा स्वभाव से अपना मनोभाव छिपाने वाली होती है।

- ऐसी स्त्रियां जो स्वभाव से बहुत ज्यादा चंचल और अशांत चित्त वाली होती हैं हर समय पलक झपकाते रहना, एक ही स्थान पर थोड़ी देर तक न बैठना, हर समय पाँव हिलाते रहना एवं बात करते समय सारे शरीर के अंग प्रत्यंगों का संचालन करने जैसे लक्षणों में हिस्टीरिया से ग्रसित स्त्री को **जिंकम बेलेरियेनम 1×, 2×** औषधि का सेवन करना हितकर होता है।

- रात्रि में नींद न आना, मल त्याग करते समय बार-बार जोर लगाने पर भी मल का बाहर न निकलना, हमेशा कब्ज बने रहना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभदायक औषधि है।

- अर्ध निद्रित अवस्था में सिर चकराना, स्तनों में भारीपन एवं वृद्धि महसूस करना, रुग्णा स्त्री को नमकीन एवं खट्टी वस्तुओं का सेवन करने की लालसा होना जैसे लक्षणों में **कोनायम 30** लाभदायक औषधि है।

- हिस्टीरिया से ग्रसित स्त्री को सभी वस्तुऐं छोटी-छोटी दिखाई देने लगना, सगे संबंधी एवं निवास स्थान का अपरिचित लगने लगना, मृत्यु भय से ग्रसित होना, तीव्र यौन उत्तेजना के कारण किसी को भी आलिंगन करने लगना, गर्भावस्था में रक्त संचय हो जाना जैसे लक्षणों में **प्लैमिन 6×, 30** का प्रयोग करने से लाभ होता है। इस औषधि के प्रति सुग्राही स्त्रियां हमेशा अपने आपको कष्ट में महसूस करती हैं और अपने कष्ट का दूसरे के प्रति बखान करने में आनंद प्राप्त करती हैं।

- सामान्य मौसम में भी ऊनी वस्त्रों का इस्तेमाल करना, शरीर के बायें हिस्से में विशेषकर स्तन के अंदर दर्द बने रहना, रुग्णा का हमेशा बोलते रहना, जननांग में दर्द की शिकायत होना, ऋतु स्त्राव में गड़बड़ी होना, ऋतु स्त्राव के समय हिस्टीरिया का दौरा पड़ना, भविष्य के प्रति निराशा के भाव और जीवन में घोर अंधकार महसूस होना जैसे लक्षणों वाली स्त्री के शरीर में दौरा पड़ने पर **सिमिसिफ्यूगा 30** लाभदायक औषधि है।

- किसी विशेष व्यक्ति को देखकर स्त्री का पागलों की तरह व्यवहार करने लगना, उत्तेजित हो जाना, किसी विशेष ध्वनि को सुनने या विशेष जगह जाते ही स्त्री में पागलपन के दौरे पड़ने लगना जैसे लक्षणों में **टेरेन्टुला** लाभदायक औषधि है।

- हिस्टीरिया के दौरे पड़ते ही रोगिणी में दृष्टिदोष आ जाना, उसे हर वस्तु आकार में लंबी महसूस होने लगना, स्वयं के शरीर एवं अंग प्रत्यंगों का लंबा महसूस होते दिखाई देना जैसे लक्षणों में **नक्स वोमिका 30** लाभकारी औषधि है।

- आलसी स्वभाव की स्त्रियों का काम करने में मन न लगना एवं अध्ययन से अरुचि हो जाना, छाती में संकुचन महसूस होना, मस्तिष्क का भारी होना जैसे लक्षणों में **ब्रोमियम 30** लाभप्रद औषधि है।

- हिस्टीरिया से ग्रसित स्त्री का संपूर्ण कपड़े उतारकर फेंक देना, नग्न होकर ऊट-पटांग के नृत्य करने लगना, त्वचा में अत्यधिक संवेदनशीलता आ जाना, जरायु की गड़बड़ी एवं ऋतु स्त्राव का बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **हायोसियामस 30, 200** लाभदायक औषधि है।

- हिस्टीरिया का दौरा पड़ने के कारण खाने पीने की इच्छा खत्म हो जाना, पिंडलियों में ऐंठन महसूस होना, कानों में विचित्र ध्वनि सुनाई देना एवं विचित्र-विचित्र आकृतियां दिखाई देना जैसे लक्षणों में **काक्युलस 30** लाभदायक औषधि है।

- गुदा स्थल में भार की अनुभूति होना, हिस्टीरिया के समय जीभ में कड़ापन आ जाना, पेशाब दुर्गन्ध-युक्त होना, हाथ-पाँव का ठंडा पड़ जाना, होश होते हुए भी बेहोशी की हालत में रहना, अपने आप ही हँसना और रोने लगना, श्वास लेने में कष्ट होना, सिर में दर्द बने रहना जैसे लक्षणों में **सीपिया 200, 30** लाभदायक औषधि है।

- दिन में कुछ समय के अंतराल से कई दौरे पड़ जाना, दौरों के समय शरीर में कपकपी होना, पाँव के तलुओं का ऐंठन के साथ ठंडा पड़ जाना, कामोन्माद का अत्यधिक होना, जननेन्द्रिय में अकड़न आ जाना, संपूर्ण शरीर में खुजली होना, मस्तिष्क के एक हिस्से में बर्फ के समान ठंडक महसूस होना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।

- कामेच्छा का अत्यधिक बढ़ जाना, पेट खाली रहने पर वायु प्रकोप बढ़ जाना, वायु का ऊपर की ओर चढ़ना, अत्यधिक प्रेम प्रदर्शन करने की प्रवृत्ति होना, हिस्टीरिया के दौरे पड़ते समय हँसना और रोने लगना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस 30** लाभकारी औषधि है।

- जरायु में कतरने जैसा दर्द होना, रात्रि के समय हिस्टीरिया के लक्षणों में वृद्धि होना, प्रात:काल में मुँह का स्वाद खराब होना एवं श्लेष्मा-युक्त उल्टियां होना, घी, तेल आदि खाद्य पदार्थों के सेवन से पकाशय में गड़बड़ी होना, अत्यधिक पेशाब होना एवं प्यास न लगना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** हिस्टीरिया की लाभदायक औषधि है।

- जरायु दोष, डिंब दोष एवं मूत्र तंत्र में विकार के कारण ऋतु स्त्राव के समय तीव्र वेदना के साथ हिस्टीरिया के दौरे पड़ने पर **कोलोफाइलम 30** लाभदायक औषधि है।

- सुगंध के स्थान पर दुर्गन्ध को पसंद करना, श्वास लेने में कष्ट एवं कलेजे की धड़कन का किसी कारण वश बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **बायोला ओडोरेटा 30** लाभदायक औषधि है।

- वे स्त्रियां जिनकी स्वप्न में चलने की आदत हो तथा छींकने या घूमते फिरते ही अचानक पेशाब हो जाती है। ऋतु स्त्राव होने के बाद स्वत: ही हिस्टीरिया रोग के लक्षणों का कम हो जाना, स्वभाव से चंचल, हमेशा बैठते समय पाँव हिलाते रहना जैसे लक्षणों में **जिंकम मेटालिकम 30** लाभकारी औषधि है।

- हिस्टीरिया का दौरा खत्म होने के बाद रुग्णा स्त्री को आनंद की अनुभूति होना, धार्मिक विषयों का हमेशा चिंतन करते रहना, अत्यधिक मूत्र त्याग की प्रवृत्ति एवं पाँव के तलुओं में जलन महसूस होना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30, 200** लाभदायक औषधि है।

अध्याय–60

गुदा रोग

गुदा, मलद्वार का वह अंतिम हिस्सा है जहां से मानव मल शरीर से निष्कासित होता है। किन्हीं विशेष कारणों से गुदाद्वार की मांस पेशियों और स्नायविक तंत्रों में सूजन, गठान पड़ जाना, कड़ापन आ जाना एवं फूल जाना जैसे लक्षणों को औषधि विज्ञान में बवासीर नामक रोग से जाना जाता है।

प्रारंभ में मलद्वार की शिराओं में सूजन लालिमा लिए हुए रहती है परंतु धीरे-धीरे यह सूजन सख्त होकर मटर के दाने के आकार में गठान के रूप में परिवर्तित हो जाती है एवं इस गठान को मस्सा कहा जाता है। गुदाद्वार की फूली हुई शिराऐं लंबे समय तक क्षति-ग्रस्त रहने के कारण अंगूर के गुच्छे के समान गठानों से भर जाती हैं। बवासीर के कुछ रोगियों में गुदाद्वार में सिर्फ एक ही मस्सा होता है परंतु धीरे-धीरे उचित इलाज न होने के कारण, रोगी द्वारा बार-बार मस्से को खुजलाने, तोड़ने या खरोंचने के कारण एक मस्सा कई मस्सों में परिवर्तित हो जाता है एवं देखने में यह किसी गुच्छेदार पुष्प के सामन दिखाई पड़ने लगता है।

बवासीर का मस्सा जब गुदाद्वार के बाहरी हिस्से में होता है तो उसे बहिर बलि कहते हैं एवं इस तरह की विकृति-पूर्ण संरचना अगर गुदाद्वार के आंतरिक भाग में हो तो अंतर्बलि कहलाती है। इन मस्सों को बार-बार खुजलाने या रगड़ने से इनमें से रक्त निकलने लगता है और रक्त के दबाव के कारण ये मस्से फट भी सकते हैं। जिन मस्सों से रक्त स्त्राव होता रहता है उन्हें हम खूनी बवासीर कहते हैं। खूनी बवासीर अत्यंत ही कष्टकारी होती है।

मस्से से अगर खून नही बहता और उनके कारण सिर्फ दर्द, जलन, खुजली जैसे लक्षण प्रकट होते हैं तो उन्हें हम अंधबलि या बादी बवासीर कहते हैं। प्राय: ऐसा देखा गया है कि बादी बवासीर गुदाद्वार के बाहरी हिस्से में पायी जाती है। रोगियों में उनके स्वभाव और प्रकृति के अनुसार कई बार विशेष तंत्रिकाओं और कोशिकाओं में ये मस्से अधिक उपद्रव करते हैं।

लंबे समय तक बवासीर बने रहने पर रोगी को शल्य चिकित्सा भी करवानी पड़ सकती है परंतु रोगी के स्वभाव, प्रकृति और लक्षणों का अध्ययन करने के बाद उचित होमियोपैथी औषधि के सेवन से मस्से स्वत: ही सूखकर गिर जाते हैं और भविष्य में उनका प्रकोप फिर कभी नहीं होता। शल्यक्रिया या किसी अन्य औषधि के सेवन से मस्से एक बार अपनी जगह से तो हटाये जा सकते हैं परंतु इस बात की प्रामाणिकता नहीं हो सकती कि वे फिर से पुनः नहीं ऊग सकते। होमियोपैथी औषधि लेने से रोगी को स्थाई लाभ मिलता है।

बवासीर के कारण मलद्वार के समीप हमेशा कुछ चुभने जैसा प्रतीत होता है एवं बार-बार शौच जाने की इच्छा होती है। बवासीर के कारण रोगी के पेट में हमेशा कब्ज बनी रहती है साथ ही उसका ध्यान हमेशा मलद्वार की तरफ लगा रहता है एवं मलद्वार को बार-बार खुजलाने से उसके आसपास की त्वचा भी संक्रमित हो सकती है।

बवासीर के रोग का प्रकोप ठंड और वर्षा ऋतु में कुछ ज्यादा ही दिखलाई पड़ता है। बवासीर कई कारणो से हो सकती है जैसे कि अत्यधिक गरिष्ठ और मांसाहार भोजन का सेवन करना, नियमित रूप से मदिरापान करना, एक ही आसन में लंबे समय तक बैठे रहना, नितम्बों का भारी हो जाना, पेट में हमेशा कब्ज बने रहना, मल में अधिक मात्रा में अम्ल आना, पेट का निकला हुआ होना, शारीरिक श्रम बिल्कुल न करना, दूध एवं दूध से बने पदार्थों का सेवन करना, भीगी जगह पर या मुलायम गद्दे पर लंबे समय तक बैठे रहना इत्यादि।

जो व्यक्ति नियमित रूप से व्यायाम एवं लंबी दूरी तक पैदल चलने के अभ्यस्त होते हैं उनमें इस बीमारी की संभावना कम पायी जाती है। बवासीर की बीमारी के कई और भी कारण हो सकते हैं जैसे कि व्यक्ति विशेष का हमेशा तनाव ग्रस्त एवं चिंतित रहना, गर्भावस्था के दौरान गुदा भाग पर अत्यधिक दबाव पड़ना, गर्भावस्था के समय निचले हिस्से में कसकर कपड़े पहनना, यकृत की किसी बीमारी से ग्रसित होना, अत्यधिक मैथुन करना, गुदा मैथुन करने का अभ्यस्त होना एवं लंबे समय तक अप्राकृतिक मैथुन करना इत्यादि। अनुवांशिक कारणों से भी बवासीर की बीमारी हो सकती है।

रोगी को खूनी बवासीर होने पर निम्नलिखित होमियोपैथी **औषधियों** का सेवन करना हितकर होता है।

- बवासीर से ग्रसित रोगी को गाढ़े लाल रंग का रक्त स्त्राव होना एवं रक्त स्त्राव के समय गुदाद्वार में गर्मी की झलें आना, चुभन के साथ दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभदायक औषधि है।

- माह में किन्हीं विशेष समय ही बवासीर के मस्सों से रक्त आना बाकी समय मस्सों का सूखा हुआ प्रतीत होना जैसे लक्षणों में **डोलिकोस क्यू** लाभदायक औषधि है।

- रक्त स्त्राव अधिक मात्रा में एवं काला रंग लिए हुए होना, रक्त स्त्राव के समय गुदा में टपकन का अनुभव होना, बवासीर के मस्से का हिलने-डुलने पर रोगी को दुखन महसूस होना जैसे लक्षणों में **हेमामेलिस क्यू** लाभकारी औषधि है।

- शौच आने के बाद खूनी मस्सों से तेज धार में रक्त स्त्राव होना जैसे लक्षण में **फास्फोरस 30** लाभदायक औषधि है।

- गुदाद्वार में रोगी को ऐसा महसूस होना जैसे कि किसी बाहरी वस्तुओं को ठूँस-ठूँसकर भर दिया गया हो, रोगी का गंभीर कब्ज रोग से ग्रसित होना, मल निकासी में उसे अत्यधिक दबाव लगाना पड़ता हो, मल का पत्थर के समान कड़ा और टुकड़ों-टुकड़ों में होना जैसे लक्षणों में **कालिन्सोनिया 30** लाभदायक औषधि है।

- किसी भी प्रकार का बवासीर रोग जैसे कि खूनी अथवा बादी बवासीर में सर्वप्रथम रोगी को महिने में एक बार **सल्फर 1 एम.** तथा **नक्स वोमिका 1 एम.** का तीन डोज देना चाहिए। **सल्फर** औषधि के उपयोग के समय किसी अन्य औषधि का उपयोग वर्जित है।

- प्रात:काल बिना ब्रश किये ठंडे पानी से गरारे करने के बाद रोगी को **सल्फर 30** देने से बवासीर की बीमारी में लाभ मिलता है ठीक इसी प्रकार **नक्स वोमिका 30** का सांय काल में प्रयोग करने से यह बीमारी हमेशा के लिए खत्म हो जाती है।

- गुदाद्वार पर खुस्की बने रहना, बाहरी हिस्से में जलन के साथ दर्द महसूस होना और इसका लंबे समय तक बने रहने पर शिराओं में सूजन आ जाने के कारण मस्सों का निर्माण हो जाना एवं कई बार ज्यादा खुजलाने पर

मस्सों से रक्त स्त्राव होने लगना जैसे लक्षणों में **एसक्यूलस 30** लाभकारी औषधि है।

- ❑ बैठते, सोते और खड़े होते वक्त मस्सों के कारण तकलीफ होना, चलने-फिरने पर दर्द का कम हो जाना, पखाना करते समय रोगी को हमेशा पतले दस्त होते रहना जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया 200** का सेवन करना हितकर होगा।

- ❑ गुदाद्वार की मांस पेशियों पर बोझ बने रहना महसूस होना, रोगी को ऐसा महसूस होना कि कोई वस्तु गुदाद्वार से बाहर निकलने की कोशिश कर रही है, कमर में हमेशा दर्द बना रहना, बवासीर के मस्सों का शौच के समय बाहर की तरफ आ जाना जैसे लक्षणों में **रस टॉक्स 30** अत्यंत लाभदायक औषधि है।

- ❑ नीले रंग के विकृति-जन्य मस्सों का गुच्छों के रूप में होना एवं उनमें हमेशा दर्द बना रहना, सोते वक्त मस्सों में अत्यधिक दर्द होना, गरम पानी के इस्तेमाल से दर्द में कमी महसूस होना जैसे लक्षणों में **मरक्यूरिस एसिड 3** लाभदायक औषधि है।

मस्सों से गीला और चिपचिपा स्त्राव निकलना

गुदाद्वार के बाहरी भाग में ऊगे मस्सों में से गीला और चिपचिपा आँव के समान स्त्राव निकलता रहता है। देखने में ऐसा लगता है कि यह स्त्राव गुदाद्वार से निकल रहा है परंतु वास्तविकता में यह स्त्राव मस्सों में से ही निकलता रहता है। कई बार यह स्त्राव दुर्गन्ध-पूर्ण हो सकता है ऐसी स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथी **औषधियों** का सेवन करना चाहिए।

- ❑ मस्सों का गुदाद्वार से बाहर की तरफ निकल आना, उनमें से निकलने वाले स्त्राव का दुर्गन्ध-युक्त होना, मस्सों का फूल जाना एवं उनमें पस पड़ जाना जैसे लक्षणों में **कार्बोवेज 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ मस्सों के कारण गुदा भाग की कार्य क्षमता का ह्रास हो जाना, रोगी की आँखे कमजोर हो जाना, रोगी का नियमित रूप से जुलाब लेना एवं मल के साथ रक्त का आना जैसे लक्षणों में **एनाकार्डियम 30, 200** लाभकारी औषधि है।

- ❑ गुदाद्वार में मस्से के कारण अत्यधिक खुजली होते रहना, मस्से का छत्ते या गुच्छे के रूप में बने रहना, मस्सों पर थोड़ा सा भी स्पर्श होने से उनमें दर्द होना एवं बवासीर के कारण गुदा भाग में भारीपन महसूस होना जैसे लक्षणों में **एलो 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ मस्सों को गरम पानी से सेंकने पर आराम महसूस होना, मस्सों का बाहर की तरफ निकल आना, अत्यधिक जलन महसूस होना जैसे लक्षणों में **आर्सेनिक 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ बवासीर के कारण गुदा भाग में ऐसा महसूस होना जैसे कांच के टुकड़े गड़ रहे हों, शौच करने के बाद घंटों गुदा प्रदेश में जलन होना, ठंडा पानी लगते ही मस्सों में अत्यधिक कष्ट होना जैसे लक्षणों में **रेटेनियम 6** लाभदायक औषधि है।

- मस्सों का हमेशा गुदा के बाहर लटकते रहना एवं तीव्र चुभन बने रहना जैसे लक्षणों में **एसिड नाइट्रिक 30** लाभकारी औषधि है।

- रोगी का गरिष्ठ भोजन खाने का आदी होना, मादक द्रव्य और शराब इत्यादि का सेवन करना, रोगी का लंबे समय से बवासीर की बीमारी से ग्रसित होना एवं उसे छोटी-छोटी गठान युक्त रक्त से सना हुआ मल होना, अत्यधिक चेष्टा के बाद मल का निष्कासन होना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- मस्से अगर प्याज या अंडे के आकार के हो गये हों एवं जिसके कारण मलद्वार का पूरी तरह से ढक जाना जैसी स्थिति में **लेकेसिस 30, सीपिया 30** का सेवन करना हितकर होता है।

- **हेमामेलिस मदर टिंचर** को पानी में डालकर बाहर निकले हुए मस्सों की धुलाई करने से आराम मिलता है एवं यह उनमें से निकलने वाले रक्त स्त्राव को बंद कर देता है।

- गुदा में मिर्ची के समान जलन होते रहना, काले रंग की आँव का गुदा से पखाने के समय निकलना, रोगी के पेट में मरोड़ होना, पखाना जाने से पहले मरोड़ आना जैसे लक्षणों में **केप्सीकम 3, 6** लाभदायक औषधि है।

- गुदा मार्ग में नुकीली चीज के अटके हुए होने की अनुभूति होना, बवासीर के कारण रोगी के पेट, पीठ, कमर इत्यादि में दर्द होते रहना जैसे लक्षणों में **एसक्यूलस 3** लेने से लाभ मिलता है। उपरोक्त औषधि को लोशन के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

- मस्से का आकार असामान्य होना, मल का अत्यधिक कड़ा एवं देरी से होना, बवासीर के साथ-साथ मलद्वार का फट जाना जैसे लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 30** लाभदायक औषधि है।

- रोगी को पतले दस्त होना, दस्त के साथ मैले एवं काले रंग का स्त्राव होना जैसे लक्षणों में **एलो 30** लाभदायक औषधि है।

- यदि स्त्रियों में मासिक स्त्राव योनि मार्ग से न निकलकर गुदा मार्ग से निकलने लगे तो ऐसी स्थिति में **ऐसिटिक ऐसिड 3, 30** लाभकारी औषधि है।

बवासीर की तकलीफ को कम करने के लिए निम्नलिखित आनुषंगिक चिकित्सा हितकर है।

- सरसों के तेल की गरम पुल्टिस के द्वारा गुदाद्वार की नियमित 5-6 बार सिकाई करने से बवासीर के रोगियों को आराम मिलता है।

- गुदाद्वार में गरम पानी की भाप लेना भी रोगी के लिए अत्यंत लाभकारी होता है। गुनगुने पानी से गुदा मार्ग को धोने से भी लाभ मिलता है। रोगी को हल्का भोजन करना चाहिए एवं बकरी का दूध इस्तेमाल करना चाहिए। प्रातःकाल भीगे हुए कच्चे चने का सेवन करना चाहिए।

- बवासीर से ग्रसित रोगियों में मांसाहार और तली हुई वस्तुओं का सेवन निषेध होता है। अत्यधिक दूध और मादक पदार्थों का सेवन भी निषेध है।

मलद्वार का फटना

सामान्य अवस्था में मानव मल चिकना एवं कम मोटाई लिए होता है जिसके कारण मल की अनुभूति होने पर यह मलद्वार के द्वारा आसानी से निष्कासित हो जाता है परंतु लंबे समय तक कब्ज से ग्रसित रोगियों में मल अत्यधिक कड़ा एवं गांठदार बनने लगता है एवं इसकी मोटाई सामान्य मल से ज्यादा हो जाती है।

गंभीर कब्ज से ग्रसित रोगियों की आँतों में खुस्की आ जाने के कारण मल का निष्कासन बहुत ज्यादा दबाव बनाने पर ही संभव हो पाता है। मलद्वार की मांस पेशियां बहुत ही लचीली और कोमल होती हैं। इन मांस पेशियों पर लंबे समय तक कठोर एवं मोटे मल का दबाव पड़ने से ये फट जाती हैं और इनमें से रक्त का प्रवाह होने लगता है जिसके कारण निकलने वाला मल रक्त से सना हुआ प्रतीत होता है। गुदाद्वार की झिल्ली के फट जाने के कारण वहां पर संक्रमण होने की आशंका बन जाती है। बार-बार गुदाद्वार की झिल्ली फटने के कारण गुदा में किसी भी नुकीली चीज के चुभने की अनुभूति होने लगती है एवं कई बार इन फटी हुई जगहों पर मस्से और गठान ऊग जाती हैं।

औषधियां :

- ❑ रोगी को दस्त के रूप में पखाना होना एवं पखाना करते समय और पखाना करने के बाद गुदा में काटने जैसा दर्द होना, पखाना होने के एक दो घंटे तक रोगी का दर्द के मारे छटपटाते रहना, मल का कड़ा निकलना जैसे लक्षणों में **एसिड नाइट्रिक 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ शौच से आने के बाद गुदाद्वार में काटने जैसा दर्द महसूस होने पर **रैटान्हिया 3, 6** लाभदायक औषधि है।
- ❑ कब्ज प्रधान रोगी को लंबी गांठदार, सूखी शौच होना, गुदा प्रदेश की चमड़ी में एक्जिमा की शिकायत होना जैसे लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 30** लाभकारी औषधि है।

- वह रोगी जिसकी प्रकृति खुस्की लिए हुए हो, गुदाद्वार के अलावा खुस्की के कारण होंठ, मुँह के कोनों का फटना, कानों के पीछे की चमड़ी का फट जाना जैसे लक्षणों में **नेट्रम म्यूर 30** लाभदायक औषधि है।

- गुदा के फट जाने के बाद उससे रक्त स्त्राव होने लगना, गुदाद्वार में खुजली महसूस होना जैसे लक्षणों में रोगी को **पायेओनिया 30** लाभदायक औषधि है।

- गुदाद्वार की चमड़ी और मांस पेशियों के फट जाने पर **केलेन्डुला** का इस्तेमाल करना चाहिए। मलद्वार को गर्म पानी से सफाई के बाद तेल अथवा घी का लेपन करना चाहिए। बवासीर के रोगी को सुपाच्य भोजन, हरी सब्जियां और फलों का सेवन ज्यादा मात्रा में करना चाहिए।

अध्याय-63

भगंदर या नासूर

मलद्वार की मांस पेशियों का लंबे समय तक बवासीर से ग्रसित रहने के कारण या सख्त मल के द्वारा लगातार कटते-फटते रहने से मलद्वार की मांस पेशियों में स्थित स्नायु तंत्र बुरी तरह विकृत हो जाता है। धीरे-धीरे इन स्नायु तंत्रों में जख्म और फोड़े बन जाते हैं। मलद्वार के स्नायु तंत्रों में बने जख्म और फोड़े कुछ समय पश्चात गहरे होते चले जाते हैं एवं इन फोड़ों के कारण मलद्वार की मांस पेशियों के विधान तंतु पूरी तरह संक्रमित हो जाते हैं। फोड़ों की जड़ जब आंतरिक भाग तक पहुँच जाती है तो जख्म गहरा होकर नासूर का रूप ले लेता है। नासूर शरीर के किसी भी भाग में होने वाला वह गंभीर फोड़ा है जिससे कि मवाद, पानी और दुर्गन्ध-युक्त स्त्राव निरंतर होता रहता है। गुदा में हुए नासूर को भगंदर कहते हैं।

गुदा भाग में स्थित नासूर निरंतर मल एवं दूषित पदार्थों के संसर्ग में आते रहने के कारण जल्दी ही विकृत हो जाता है इसीलिए गुदा भाग में स्थित नासूर की साफ-सफाई एवं उचित देख-रेख अत्यंत आवश्यक है। लंबे समय तक गुदा भाग में स्थित नासूर धीरे-धीरे अंदर की ओर उतरकर गुदा भाग में स्थित मांस पेशियों को छेद देता है जिसके कारण गुदा भाग के अलावा एक और स्वतंत्र नाली का निर्माण हो जाता है। इस नाली से निरंतर मल एवं गंदा पानी निकलता रहता है। भगंदर का बाहरी भाग प्रायः मल और गंदे स्त्राव से सना रहता है। यह रोग अत्यंत वेदनाकारी और कष्टप्रद है।

कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि भगंदर का बाहरी मुख बंद होता है जिसके कारण मवाद और मल अंदर ही अंदर इकट्ठा होता रहता है एवं यह आस-पास की त्वचा और मांस पेशियों को भी प्रभावित कर देता है। बंद मुख के भगंदर को अंध भगंदर कहते हैं। लंबे समय तक उचित इलाज न होने के कारण प्रभावित जगह को शल्यक्रिया के द्वारा निकलवाना भी पड़ सकता है।

भगंदर कई कारणों से हो सकता है जैसे कि मानसिक स्थिति का अवसाद-पूर्ण होना, लीवर की ठीक से काम न करना, विलासिता-पूर्ण जीवन जीना, नियमित

रूप से मद्यपान एवं गरिष्ठ भोजन का सेवन करना, गुदा मैथुन, बहुमैथुन का अभ्यस्त होना, लंबे समय तक बवासीर से ग्रसित होना, पेट में गंभीर कब्ज होना, रोगी का समलैंगिक होना इत्यादि।

रोगी को भगंदर रोग से ग्रसित होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षण युक्त सेवन करना चाहिए।

- मल का स्वयं आसानी से बाहर न निकल पाना, मल का गुदा भाग से बाहर निकलकर अंदर लटक जाना, मलद्वार पर खुजली होना, भगंदर का मवाद लिए हुए होना जैसे लक्षणों में **साइलीसिया 30** लाभकारी औषधि है।
- रोगी को बकरी के समान मल होना, मल का गांठदार एवं छोटे-छोटे टुकड़ों में होना, शौच से आने के बाद पुन: शौच जाने की इच्छा होना, गुदा के आस-पास दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **बर्बेरिस 6** लाभकारी औषधि है।
- भगंदर से ग्रसित रोगी को अत्यंत दुर्गन्ध-युक्त पखाना होना, पखाने का त्वचा से स्पर्श होने पर त्वचा का छिल जाना और लाल पड़ जाना जैसे लक्षणों में **नाइट्रिक ऐसिड 30** लाभदायक औषधि है।
- अंध भगंदर से ग्रसित रोगी के लिए **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।
- भगंदर के साथ-साथ संपूर्ण गुदाद्वार का ललामी लिए हुए सूज जाना एवं सिर में दर्द बने रहना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना, मर्क कोर 3×** लाभदायक औषधि है।
- नासूर से हमेशा मवाद बहते रहने की स्थिति में **सिलिका 30** लाभदायक औषधि है।
- गुदाद्वार में हुई फुंसियों का सूखकर पीब युक्त हो जाना जैसे लक्षणों में **हिपर सल्फ 30** लाभदायक औषधि है।
- यक्षमा रोग के भगंदर में **बेसिलिनम 30,** (उच्च शक्ति) सप्ताह में एक बार लेने से पूरी तरह आराम मिल जाता है।
- भगंदर के फोड़ों को **केलेन्डुला मदर टिंचर** से निरंतर साफ करते रहना

चाहिए। भगंदर से ग्रसित जगह की गर्म पानी से निरंतर सिकाई करते रहना चाहिए साथ ही इस रोग से ग्रसित व्यक्तियों को लंबे समय तक एक जगह पर नहीं बैठना चाहिए। साईकिल अथवा घुड़सवारी नहीं करना चाहिए। मल-मूत्र को लंबे समय तक नहीं रोकना चाहिए। अत्यधिक मैथुन से परहेज करना चाहिए। शोकाकुल एवं चिंता के वातावरण से दूर रहना चाहिए। भगंदर से ग्रसित व्यक्तियों के लिए मादक पदार्थ एवं मांसाहार का सेवन निषेध है।

- ❑ **माइरिस्टिका 200** भगंदर में मवाद बनने से रोकता है एवं मवाद के कारण हुए घाव को भरता है। भगंदर में सेप्टिक होने से इस दवा के प्रयोग से शल्यक्रिया से बचा जाता है।

- ❑ भगंदर के साथ-साथ रोगी का खांसी से भी ग्रसित होना एवं प्रातःकाल रोग का बढ़ जाना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया फॉस** 6× दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए।

- ❑ भगंदर वाले हिस्से के चारों ओर कड़ापन आ जाना एवं गाढ़ी मवाद का निकलना- इन लक्षणों मे **केल्केरिया फ्लोर** 6×, 12× दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- ❑ भगंदर से पीले रंग का रक्त मिश्रित मवाद निकलने की दशा में **केल्केरिया सल्फ** 6× दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

- ❑ मलद्वार में घाव वाले स्थान से हरे रंग का पित्त युक्त स्त्राव निकलने की दशा में **नेट्रम सल्फ** 30× दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए।

- ❑ भगंदर के कारण गुदा में असहनीय दर्द होना एवं गरमं सिकाई करने से आराम मिलना जैसे लक्षणों में **मेग्नेशिया फॉस** 6× दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

`अध्याय-64

गुदा भ्रंश या कांच का निकलना

बड़ी आँत का निचला हिस्सा सरला तंत्र अथवा काँच कहलाता है एवं सरला तंत्र का अंतिम निचला हिस्सा गुह्यद्वार या मलद्वार कहलाता है। यदि किसी कारण वश मलद्वार की आंतरिक श्लेष्मिक झिल्ली बाहर की तरफ निकल आये तो उसे गुदाद्वार का बाहर निकलना कहते हैं और यदि मलद्वार की मांस पेशियों से भरी आंतरिक दीवार स्वयं बाहर की ओर निकल आये तो उसे काँच निकलना या सरला तंत्र निर्गमन कहते हैं। काँच कई कारणों से निकल सकती है जैसे कि रोगी का गंभीर कब्ज से ग्रसित होना, पेट में लंबे समय से मल इकट्ठा हो जाना, मलद्वार में भगंदर या बवासीर होना, पेट में कृमि हो जाना, मलद्वार में निरंतर खुजली होते रहना, आँतों में खुस्की आ जाना, नियमित रूप से जुलाब का सेवन करना, शौच जाते समय अत्यधिक दबाव नीचे की ओर लगाना, अमाशय या लीवर का ठीक से काम न करना, पेट में अधिक मात्रा में अम्ल बनना, मूत्राशय में पथरी हो जाना, अफीम का सेवन करना, मांसाहार और शराब का नियमित सेवन करना, रोगी का गुदा मैथुन एवं समलैंगिक मैथुन का अभ्यस्त होना, सरला तंत्र की मांस पेशियों का कमजोर हो जाना, सरला तंत्र की मांस पेशियों की कार्य क्षमता का ह्रास हो जाना, स्त्री का गर्भवती होना इत्यादि।

गुदा भ्रंश हो जाने पर निम्नलिखित **औषधियों** का लक्षण युक्त सेवन करना चाहिए।

❑ मल त्याग करते समय सामान्य जोर लगाने से भी काँच का बाहर निकल आना, मल का पतला होते हुए भी मलद्वार में दर्द महसूस होना, मल निष्कासन करते समय ऐसा महसूस होना कि किसी आंतरिक दबाव के कारण समस्त गुदा यंत्र बाहर की ओर निकल जायेगा जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया 30, 200** लाभकारी औषधि है।

❑ रोगी को रक्त-युक्त मल होना, प्रातःकाल सोकर उठते या भोजन लेने के बाद तुरंत शौच जाने की इच्छा होना और काँच का निकल आना जैसे लक्षणों में **एलो क्यू 3×** लाभदायक औषधि है।

❑ मल निकलने से पूर्व ही या मल के साथ-साथ काँच का निकल आना,

प्रात:काल दुर्गन्ध-युक्त पतला मल होना और झटके के साथ काँच का निकल आना, बच्चों के दाँत निकलते समय काँच निकलने जैसे लक्षणों में **पोडोफाइलम 6** लाभकारी औषधि है।

- स्त्रियों में प्रसव के बाद मल त्याग करते समय काँच का बाहर निकल आना जैसे लक्षणों में **रूटा 6** लाभदायक औषधि है।
- पेशाब करते वक्त या पेशाब करने में जोर लगाने पर काँच निकलने जैसे लक्षणों में **म्यूरियेटिक ऐसिड** लाभदायक औषधि है।
- मलद्वार की पेशियों में संकुचन का ह्रास हो जाना एवं उनमें शिथिलता और ढीलापन आ जाना जिसके कारण गुदा भाग का बाहर की ओर निकल आना और अनजाने में ही मल त्याग होने लगना, रोगी का बवासीर से ग्रसित होना एवं बवासीर के गुच्छों का बाहर की तरफ झूल पड़ना जैसे लक्षणों में **ऐलूमिना 3** लाभदायक औषधि है।
- बाल्यावस्था में काँच निकलने की प्रवृत्ति दिखाई देने पर **फेरम फॉस 6×** आठ-आठ घंटे से देना चाहिए।
- काँच निकलने के साथ पतले दस्त एवं वेग ज्यादा होने पर भी मल का कम निकलना एवं अधिक मात्रा में वायु का निकलना, गुदा भाग में दर्द होना जैसे लक्षणों में **गैम्बोजिया 30** लाभदायक औषधि है।

काँच निकलने की प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों को ऐसे पदार्थों का सेवन नही करना चाहिए जिससे कि शौच में कड़ापन आये। उचित और रेशेदार वस्तुओं के सेवन से शौच जाते वक्त ज्यादा जोर नहीं लगाना पड़ता एवं मल त्याग करने में आसानी होती है। गरिष्ठ और तली हुई वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। कभी-कभी मल त्याग करने से पूर्व हल्का सा जुलाब लेना भी उचित होता है। काँच के बाहर निकल आने पर उसे ठंडे पानी से साफ कर भीतर की तरफ डाल देना चाहिए फिर गुह्य द्वार को साफ कपड़े से कसकर बांध देना चाहिए।

- गुदाद्वार का बाहर की ओर निकल आना एवं गुदा के चारों तरफ कड़ा सा छल्ला महसूस होना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया फ्लोर 12×** दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।
- गुदा भ्रंश के साथ-साथ स्नायविक कमजोरी से भी ग्रसित होने पर **काली फॉस 6×** दिन में चार बार सेवन करना चाहिए।

अध्याय-65

मलद्वार की खुजली

गुदाद्वार की त्वचा शरीर के अन्य अंगों की त्वचा की अपेक्षा ज्यादा संवेदनशील और नाजुक होती है। शरीर पर त्वचा रोग का संक्रमण होने पर सर्वप्रथम जननेन्द्रियों की त्वचा के साथ-साथ गुदाद्वार की त्वचा भी संक्रमित हो जाती है। चूंकि गुदाद्वार से निकलने वाला मल कीटाणु-युक्त होता है इसलिए यहां पर होने वाला त्वचा संबंधी संक्रमण जल्दी ही विकृत रूप ले लेता है। गुदाद्वार की चमड़ी के संक्रमित होने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि लंबे समय तक साफ-सफाई और देख-रेख न होना, लंबे समय तक गंदे जांघियें का उपयोग करना, गीली जगह पर लंबे समय तक बैठे रहना, मल में अम्लता और कीटाणुओं की अधिकता, रोगी का बवासीर, भगंदर, कृमि रोग से ग्रसित होना, मल संचय करने की प्रवृत्ति, रोगी का नियमित रूप से गरिष्ठ एवं तामसिक भोजन करने का आदी होना, स्त्रियों में रजोरोध हो जाना, पेट में गंभीर कब्ज होना, गर्म औषधियों का सेवन करना, शरीर में सिफिलिस का दोष होना, व्यक्ति का गुदा मैथुन या अप्राकृतिक मैथुन करना इत्यादि।

समलैंगिक संभोग की प्रवृत्ति होने पर गुदाद्वार की चमड़ी निरंतर रूप से कटती-फटती रहती है जिसके कारण गुदाद्वार में मस्से, गठानें इत्यादि हो सकते हैं। गुदाद्वार की चमड़ी का संक्रमित हो जाने पर मलद्वार में निरंतर कुटकुटाहट एवं भयंकर खुजली के लक्षण प्रकट होते हैं।

मलद्वार में खुजली होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- ❑ गुदा प्रदेश के साथ-साथ संपूर्ण शरीर की त्वचा में प्रदाह और जलन होने के लक्षणों में **रेडियम ब्रोमाइड** हफ्ते या दस दिन में एक बार देना चाहिए।
- ❑ गुदा प्रदेश के साथ-साथ जननांगों में खुजली मचने पर **एम्ब्राग्रेसिया 3, 6** दिन में एक बार लेने से आराम मिलता है।
- ❑ रात्रि के समय गुदा प्रदेश में चरमराहट और खुजली बढ़ जाने जैसे लक्षणों में **एण्टिम क्रूड 6, 30** लाभकारी औषधि है।

- खुजली के साथ-साथ गुदा प्रदेश में चुभने जैसे लक्षणों में **एलूमिना 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- गुदाद्वार में खुजली के साथ-साथ कीड़े रेंगने जैसी अनुभूति होने पर **इग्नेशिया 30, 200** सर्वश्रेष्ट औषधि है।

- इस तरह के मस्से शरीर के अंदर सूजाक के विष होने के कारण ही होते हैं। इस दोष को होमियोपैथी में सायकोसिस कहते हैं। मस्से की सबसे उपयुक्त औषधि **थूजा 30** है। इसे दिन में दो बार सेवन करना चाहिए और इसके मूल अर्क को मस्सों पर लगाने से धीरे-धीरे मस्से सूखकर झड़ जाते हैं

- शरीर में उपदंश का विष होने के कारण गुदाद्वार में मस्से हो जाना एवं उनका निरंतर आकार में बढ़ते जाना जैसे लक्षणों में **एसिड नाइट्रिक 30** लाभदायक औषधि है।

- मस्सों की संरचना गोभी के समान न होकर नुकीला एवं एकाकी होना जैसे लक्षणों में **कास्टिकम 30** लाभदायक औषधि है।

गुदा प्रदेश की मांस पेशियों में सिकुड़न आने पर निम्नलिखित औषधि का सेवन करना चाहिए।

- गुदा प्रदेश की मांस पेशियों में सिकुड़न आ जाने के साथ-साथ उनका चटक और लटक जाना, जगह-जगह से फटकर छितरा हो जाना जैसे लक्षणों में **नाइट्रिक एसिड 30** लाभकारी औषधि है।

- सिकुड़न के कारण मल त्याग करते समय अत्यधिक जोर लगाने पर मल का निष्कासन होना जैसे लक्षण में **रूटा 30** लाभदायक औषधि है।

आघात एवं बलात्कार

बलात्कार किसी भी स्त्री की इच्छा के विरूद्ध उसके साथ जबरदस्ती एवं बल-पूर्वक स्थापित किया गया शारीरिक संबंध है। बलात्कार होने की दशा में स्त्री पूर्ण रूप से शारीरिक और मानसिक तल पर किसी भी प्रकार का कोई सहयोग पुरूष के साथ नहीं करती। ठीक इसके विपरीत वह अपने साथ हुए इस पतित व्यवहार का शारीरिक एवं मानसिक तौर पर जोरदार प्रतिरोध करती है। स्त्री के इस प्रतिरोध को बलपूर्वक दबाकर उसके साथ इस तरह का अनैतिक कार्य करना बलात्कार कहलाता है।

आज के युग में बलात्कार जैसी अमानवीय घटनाऐं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं परंतु कई बार सामाजिक बंधनों या विवशता के कारण स्त्री इस बात की जानकारी अपने संबंधियों और शुभचिंतकों को नहीं दे पाती जिसके कारण वह मानसिक एवं शारीरिक तौर पर पूरी तरह टूट जाती है एवं कुण्ठा और विवशतावश वह आत्महत्या जैसा घृणित निर्णय ले लेती है।

अपने मन की व्यथा जाहिर न कर पाने के कारण बलात्कार से ग्रसित स्त्री विभिन्न प्रकार के गंभीर मानसिक रोगों से ग्रसित हो जाती है एवं उसका लैंगिक संसर्ग के प्रति जीवन भर के लिए घृणित भाव उसके मन में बैठ जाता है।

बलात्कार से शारीरिक क्षति की अपेक्षा मानसिक क्षति ज्यादा होती है परंतु कई बार ऐसा देखा गया है कि छोटी उम्र में या अविवाहित स्त्रियों के साथ बलात्कार होने के बाद गंभीर शारीरिक क्षति आ सकती है जैसे कि योनि की दीवारों का बुरी तरह फट जाना, योनि मार्ग का कई जगह से क्षति-ग्रस्त हो जाना, योनि में से अत्यधिक मात्रा में रक्त स्त्राव होना इत्यादि।

बलात्कार के कारण योनि के गंभीर रूप से क्षति-ग्रस्त हो जाने पर कई बार शल्यक्रिया के द्वारा योनि को पुनः सुव्यवस्थित भी करना पड़ जाता है। एक से ज्यादा पुरूषों द्वारा किए गये बलात्कार के कारण स्त्री की मृत्यु भी हो सकती

हैं एवं गंभीर मानसिक आघात लगने के कारण स्त्री में हमेशा के लिए विक्षिप्तता, पक्षाघात और पागलपन के दौरे पड़ने जैसी गंभीर स्थिति भी निर्मित हो सकती है।

बलात्कार के कारण स्त्री सूजाक, उपदंश जैसे गंभीर यौन रोगों से भी ग्रसित हो सकती है एवं उसे अनचाहा गर्भ ठहर सकता है। बलात्कार के बाद स्त्री में विभिन्न उपसर्ग दिखाई पड़ सकते हैं जैसे कि योनि से तीव्र स्त्राव होना, योनि शोथ हो जाना, संपूर्ण शरीर में सूजन आ जाना, जगह-जगह नील के निशान एवं खरोंचे आ जाना, योनि का फट जाना एवं मूलाधार भी क्षति-ग्रस्त हो सकता है।

कम उम्र की लड़कियों के साथ बलात्कार होने पर असहनीय पीड़ा एवं श्वास लेने में गतिरोध आ जाने के कारण उनकी मृत्यु भी हो सकती है।

सामान्यत: बलात्कार के कारण शरीर पर पड़ा दुष्प्रभाव अस्थिर होता है परंतु मनोवैज्ञानिक रूप से इसका प्रभाव स्त्री के जीवन पर लंबे समय तक बना रहता है। बलात्कार से ग्रसित स्त्री में विभिन्न प्रकार के मानसिक उपसर्ग दिखाई पड़ सकते हैं जैसे कि उसका लंबे समय तक के लिए स्तब्ध होना, जीवन के प्रति निराशाजनक भाव आ जाना, हमेशा एकाकी रहना पसंद करना, हीन भावनाओं से ग्रसित हो जाना इत्यादि।

अत्यधिक मानसिक तनाव के कारण बलात्कार से ग्रसित स्त्री में हिस्टीरिया के दौरे भी पड़ सकते हैं एवं उसका पागलों के समान अचानक रोने और हँसने लगना जैसे लक्षण भी प्रकट हो सकते हैं। कुछ स्त्रियां बलात्कार के बाद अत्यंत उग्र एवं बदले की भावना से ग्रसित होकर हत्यायें भी कर बैठती हैं।

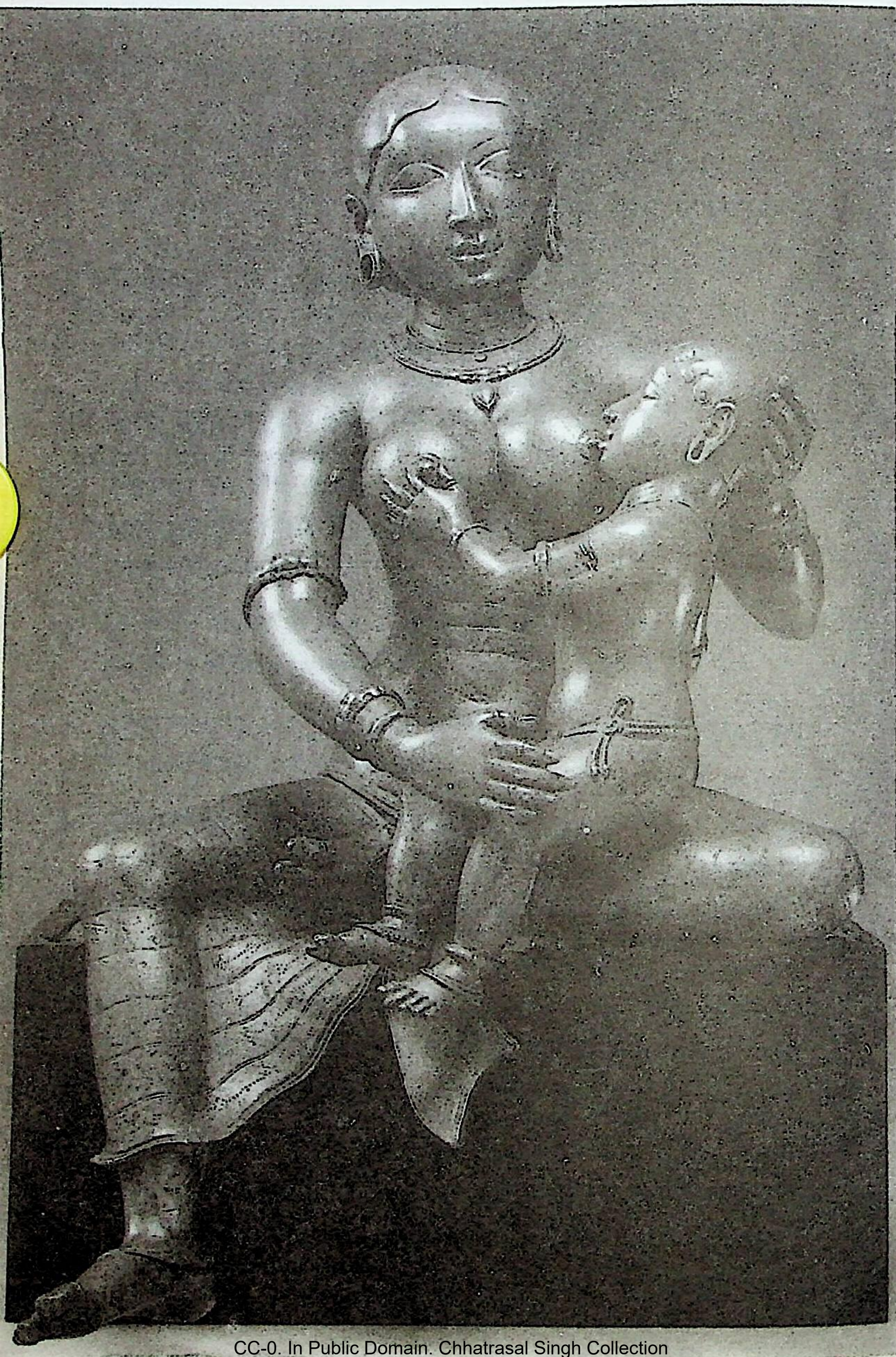
बलात्कार से ग्रसित स्त्री को अत्यंत घरेलू एवं सांत्वना-पूर्ण वातावरण के साथ सहयोग मिलना चाहिए जिसके कारण उसके मन पर पड़े अत्यंत भयानक आघात को जल्द से जल्द दूर किया जा सके। समाज एवं परिवार के असहयोग एवं घृणापूर्ण व्यवहार के कारण बलात्कार से ग्रसित स्त्री की स्थिति बड़ी ही दयनीय हो जाती है।

बलात्कार से ग्रसित स्त्री को सर्वप्रथम उसके सगे संबंधियों, समाज एवं

मित्रों से अत्यंत ही सहयोग एवं दिलासापूर्ण व्यवहार मिलना चाहिए साथ ही उसके प्रति मित्रों एवं सगे संबंधियों का व्यवहार सामान्य एवं ढाढस बढ़ाने वाला होना चाहिए। इसके बाद ही उचित चिकित्सा एवं **औषधियों** के सेवन से बलात्कार से ग्रसित स्त्री को सामान्य अवस्था में लाया जा सकता है।

- ❑ बलात्कार के बाद अत्यंत भयभीत, स्तब्धता, बेचैनी और चिंता जैसे लक्षणों का प्रकट होना, शारीरिक रूप से कमजोरी महसूस करना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ ग्रसित स्त्री के अंदर आत्मविश्वास की कमी होने लगना, नींद न आना एवं एकांत स्थान को देखकर भयभीत हो जाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ बलात्कार से ग्रसित युवती में योनि मार्ग का फट जाना, अत्यधिक रक्त स्त्राव होना एवं छूने में भी दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **अर्निका 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ पुरूषों को देखकर अचानक भयभीत होने लगना, गर्मी सहन न होना जैसे लक्षणों में **अर्जेण्टम नाइट्रिकम 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ बलात्कार के तुरंत बाद एवं इसके कारण उत्पन्न हुए तीव्र मानसिक संकट में **रेसक्यू रेमेडी** सर्वश्रेष्ट औषधि है।
- ❑ ग्रसित स्त्री को बलात्कार के कारण जबरदस्त मानसिक आघात लगना, उसके संपूर्ण शरीर एवं माथे से ठंडा पसीना आते रहना, स्त्री का शांत भाव से चेतना हीन रूप में पड़े रहना जैसे लक्षणों में **वेरेट्रम एल्बम 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ ग्रसित स्त्री के मूत्र मार्ग एवं मूत्राशय में अत्यधिक वेदना युक्त आघात हो जाना, बलात्कार के कारण उसका अत्यधिक क्रोधित अवस्था में आ जाना जैसे लक्षणों में **स्टेफिसेग्रिया 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ बलात्कार का ख्याल आते ही स्त्री का उद्वेग में आ जाना, भविष्य के बारे में सोच-सोचकर परेशान एवं निराशा से भर जाना जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया 200** लाभदायक औषधि है।

- बलात्कार से ग्रसित स्त्री का पागलपन की हालत में जोर-जोर से चिल्लाकर रोना एवं हँसना जैसे लक्षणों में **स्ट्रेमोनियम 30** लाभदायक औषधि है।
- बलात्कार से ग्रसित स्त्री का अपने बारे में सोच-सोचकर दुःखी होते रहना, मानसिक आघात की पीड़ा तथा निराशा एवं चिंता के लक्षणों में **फास्फोरस एसिड 30** लाभकारी औषधि है।
- ग्रसित स्त्री को स्वप्न में अचानक बलात्कार की घटना याद आ जाना जिसके कारण उसके मन में खिन्नता एवं दुःख से बेचैन होकर उठ बैठना जैसे लक्षणों में **जिंकम मेट 6** लाभदायक औषधि है।
- ग्रसित स्त्री का जीवन के प्रति घृणा भाव उत्पन्न हो जाना, हमेशा रोते रहना, आत्मघात की इच्छा बार-बार मन में आना जैसे लक्षणों में **आरम म्यूर 30** लाभदायक औषधि है।



अध्याय-67

स्तनों के रोग

बालिका के यौवन अवस्था में कदम रखते ही सर्वप्रथम बाहरी विकास उसके स्तनों का ही होता है। सामान्यत: बालिका के प्रथम रज:स्त्राव शुरू होने से 2-3 वर्ष पूर्व ही स्तनों में थोड़ा-थोड़ा उभार आने लगता है परंतु प्रथम रज:स्त्राव के बाद स्तनों का विकास तेजी से प्रारंभ हो जाता है और लगभग एक वर्ष के भीतर वे पूरी तरह विकसित हो जाते हैं। यह लक्षण इस बात का द्योतक है कि बालिका अब युवती बन चुकी है एवं वह अब सामान्य परिस्थितियों में माँ भी बन सकती है।

स्तनों का विकास युवती के व्यक्तिगत खान पान, उसकी मानसिक स्थिति, अनुवांशिकता एवं उसके चारों ओर के वातावरण पर निर्भर करता है।

प्रारंभ में स्तनों का अग्र भाग विकासशील होता है। स्तनों के अग्र भाग को चूचुक कहते हैं। शुरू-शुरू में चूचुक के चारों ओर का घेरा गुलाबी रंग लिए हुए होता है परंतु जैसे-जैसे युवती में परिपक्वता आती जाती है यह घेरा धीरे-धीरे काले रंग का हो जाता है। चूचुक एवं स्तनों का रंग युवती की अनुवांशिकता, उसके आस-पास के वातावरण एवं उसके मानसिक स्तर पर निर्भर करता है। इस घेरे के नीचे स्थित ग्रंथिल ऊतकों के बढ़ने के कारण चूचुक बाहर की तरफ निकला हुआ दिखाई पड़ता है। कुछ स्त्रियों में शारीरिक एवं हार्मोनल विकृति या किसी रोग के कारण एक स्तन दूसरे स्तन से ज्यादा विकसित दिखाई पड़ता है। इस तरह की स्थिति अनुवांशिकता के कारण भी निर्मित हो सकती है। कुछ स्त्रियों में एक स्तन से दूध का प्रवाह दूसरे स्तन की अपेक्षा ज्यादा होता दिखाई पड़ता है। कई बार स्त्री के रक्त में ईस्ट्रोजेन का स्त्राव असंतुलित होने पर स्तनों में दर्द और कड़ापन महसूस होने लगता है। लगभग 15 वर्ष की अवस्था में वक्ष-स्थल के नीचे स्थित दुग्ध नलियां विकसित होने लगती हैं। ये दुग्ध नलियां वसा और चर्बी की परतों से ढकी हुई होती हैं एवं 15 से 25 खंडों में विभाजित हो जाती हैं। प्रत्येक खंड में गर्तिकाऐं होती हैं जिससे दूध का उत्पादन करने वाली कोशिकाओं एवं उनकी नलियों का शाखा युक्त प्रबंध रहता है। स्त्री में

दुग्ध का उत्पादन सामान्यत: गर्भावस्था के आठवे या नौवे महिने में प्रारंभ हो जाता है। इस समय ईस्ट्रोजेन एवं प्रोजेस्टोरेन हार्मोन का स्तर सामान्य से नीचे पहुँच जाता है और हाइपोथैलेमस पीयूष ग्रंथि के अग्र खंड को प्रोलेक्टिन नामक हार्मोन स्त्रावित करने हेतु सूचित करने के लिए उत्तेजित होता है।

प्रोलेक्टिन नामक हार्मोन स्त्रियों में दुग्ध उत्पादन के लिए उत्तेजक का कार्य करता है। प्रसव के बाद प्रसूता को सर्वप्रथम होने वाला स्तन स्त्राव अत्यधिक गाढ़ा एवं पीला रंग लिए हुए होता है जिसे कोलोस्ट्रम कहते हैं। नवजात शिशु के लिए कोलोस्ट्रम बहुत ही पोषक एवं महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसके अंदर कुछ ऐसे रक्षक-प्रतिरक्षीयां होती हैं जो कि नवजात शिशु को विभिन्न प्रकार के संक्रमण से बचाने के लिए अत्यधिक आवश्यक होती है। सामान्य अवस्था में प्रसव के बाद कोलोस्ट्रम का उत्पादन प्रसूता में तीन चार दिनों तक होता रहता है उसके बाद ही स्तनों से सामान्य दुग्ध का स्त्राव होता है। सामान्यत: प्रथम प्रसव के बाद स्त्रियों में दुग्ध का उत्पादन लगभग एक हफ्ते के भीतर होता है परंतु दूसरी बार गर्भधारण करने पर यह पहले ही बनने लगता है।

प्रसूता के निपल को जैसे ही शिशु दूध पीने के लिए चूसता है प्रतिक्षेप क्रिया के फलस्वरूप हाइपोथैलेमस के तांत्रिक मार्ग को उत्तेजना मिलती है एवं इस उत्तेजना के कारण पीयूष ग्रंथि से दुग्ध स्त्राव संबंधी हार्मोन्स स्त्रावित होने लगते हैं। आमतौर पर इस पूरी प्रक्रिया में लगभग 20 से 25 सेकेण्ड का समय लगता है।

स्त्री के स्तनों का सीधा संबंध उसके जरायु से होता है। जैसे-जैसे गर्भ में भ्रूण का विकास होता है वैसे-वैसे स्तन के आकार और भार में वृद्धि होती जाती है परंतु स्तनों के आकार और भार का दुग्ध की उत्पादकता से कोई संबंध नहीं है। कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि बाहरी रूप से विकसित दिखने वाले स्तनों में दुग्ध की मात्रा और गुण सामान्य उभार लिए स्तनों से भी कम पायी जाती है। स्त्री का शारीरिक स्वास्थ्य और उसकी मानसिक स्थिति, उसके आसपास का वातावरण एवं अनुवांशिकता दुग्ध उत्पादन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि छोटे स्तन जिनमें वसा कम मात्रा में होता है परंतु उनकी दुग्ध ग्रंथियां अधिक क्रियाशील और विकसित होती हैं।

स्तनों में स्थित वसा की परतों का मुख्य कार्य दुग्ध ग्रंथियों को ढांकने एवं उनकी रक्षा करने का होता है। स्तनों से दुग्ध की मात्रा एवं उत्तमता के लिए वसा की परतें बहुत हद तक उत्तरदायी होती हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि स्तनों का सीधा संबंध स्त्री के गर्भाशय एवं जननांगों से होता है एवं जिस प्रकार प्रत्येक मास गर्भाशय के आंतरिक भागों में परिवर्तन होता है ठीक़ उसी प्रकार स्तनों के अंदर उपस्थित गर्तिकाओं की कोशिकाऐं भी प्रभावित होती रहती हैं।

स्तनों की वृद्धि एवं उभार के लिए वे ही हार्मोन उत्तरदायी होते हैं जिनसे कि गर्भाशय के आंतरिक भाग की कला, योनि की श्लेष्मिक कला, डिंबवाहिनी नलियां इत्यादि नियंत्रित होती हैं। स्त्री के स्तन भी इन्हीं चक्रों के परिवर्तन में भाग लेते हैं। सामान्यतः ऐसा देखा गया है कि स्त्री के रजःस्त्राव शुरू होने से कुछ दिन पहले स्तनों में भारीपन और आकार में वृद्धि हो जाती है परंतु रजःस्त्राव खत्म होने के बाद वे पुनः सामान्य अवस्था में आ जाते हैं। ईस्ट्रोजेन नामक हर्मोन जो कि स्त्रियों में आर्तव चक्र को नियंत्रित करता है उसी से स्तनों में स्थित दुग्ध नलियां भी उत्तेजित होती हैं।

कई बार ऐसा देखा गया है कि जब स्त्री गर्भ निरोधक गोलियां या इससे मिलती-जुलती दवाइयां उपयोग में लाती हैं जिससे कि डिंबोत्सर्जन रूक जाता है तो उसका सीधा प्रभाव स्त्री के स्तनों पर पड़ता है। इन औषधियों के उपयोग से स्त्री के स्तनों में वेदना एवं कष्ट हो जाने की संभावना बढ़ जाती है। विशेषज्ञों की राय के अनुसार स्त्री में दुग्ध स्त्राव की दशा में गर्भ निरोधक औषधियों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे दुग्ध पान कर रहे शिशु के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ सकता है।

स्त्रियों में दुग्धपान कराते समय जननक्षमता एवं डिंबोत्सर्जन की प्रक्रिया निरंतर जारी रहती है। यह धारणा बिल्कुल भ्रांत है कि स्त्री दुग्ध स्त्राव की अवस्था में गर्भवती नहीं हो सकती। कुछ स्त्रियों में दुग्ध उत्पादन जरूरत से ज्यादा होता है परन्तु जब यह दुग्ध बाहर नहीं निकल पाता तो प्रसूता के स्तनों में अत्यधिक भारीपन और दर्द महसूस होने लगता है। ऐसी स्थिति में प्रसूता के स्वभाव में बेचैनी एवं घबराहट बढ़ जाती है। स्तनों में अधिक मात्रा में दुग्ध बनने पर ब्रैस्ट-पंप के सहारे अतिरिक्त दुग्ध को बाहर निकाला जा सकता है। कुछ स्त्रियों में

स्तनों के निपल अत्यधिक छोटे या अविकसित होते हैं जिसके कारण शिशु ठीक से दुग्ध पान नहीं कर पाता एवं स्तनों में अतिरिक्त दुग्ध बचा रह जाता है। किसी कारण वश प्रसूता के स्तनों में स्थित चूचुकों के चोट ग्रस्त हो जाने से, उनमें कठोरता आ जाने से या अति संवेदनशीलता आ जाने से स्तनों में तीव्र वेदना उत्पन्न हो सकती है। अत्यधिक वेदना की स्थिति में दुग्ध स्त्राव रोकना आवश्यक हो जाता है साथ ही स्तनों पर कसकर पट्टी बांधने से वेदना कम की जा सकती है।

अध्याय-68

स्तनों में प्रदाह एवं दर्द

स्तनों में प्रदाह के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि स्तनों में दूध का भर जाना, वक्ष-स्थल में सर्दी बैठ जाना, वक्ष-स्थल का चोट ग्रस्त हो जाना, स्तनों में आवश्यकता से ज्यादा दुग्ध बनने लगना, प्रसूता की मानसिक स्थिति ठीक न होना, मासिक धर्म अनियमित होना, जरायु में प्रदाह होना इत्यादि।

प्रथम बार गर्भधारणं करने वाली स्त्रियों में गर्भावस्था के पांचवे से नौवे महिने के बीच स्तनों में स्थित दुग्ध नलिकाओं में तेजी से विकास होने लगता है जिसके कारण भी स्तनों में प्रदाह हो सकता है। सोते वक्त गलत तरीके से लेटने के कारण स्तनों के दब जाने या कुचल जाने के कारण भी स्तनों में प्रदाह हो सकता है।

किसी कारण वश स्तनों में प्रदाह एवं दर्द उत्पन्न हो जाने की स्थिति में निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का लक्षणानुसार सेवन करना चाहिए।

- स्तनों में दर्द का एकाएक प्रकट होना और फिर गायब हो जाना, स्तनों के हिलने-डुलने पर दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभकारी औषधि है।
- गर्भावस्था के समय स्तनों में दर्द महसूस होना स्त्री का स्वभाव से कोमल एवं संवेदनशील होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** लाभदायक औषधि है।
- गर्भावस्था के दौरान गर्भिणी को अधिक मात्रा में कफ बनना एवं बार-बार खांसते रहने से स्तनों में दर्द होना जैसे लक्षणों में **एकोनाइट 30** लाभकारी औषधि है।
- स्तनों में सुई चुभने के समान या डंक मारने के समान जलन-युक्त दर्द महसूस होना, स्तनों मे अकड़न आ जाना, स्त्री का अल्प मूत्र जैसी बीमारी से ग्रसित होना एवं कम प्यास लगना जैसे लक्षणों में **एपिस मेल 6** लाभकारी औषधि है।

- स्तनों की घुंडी मे सूजन के साथ उनका कई जगह से फट जाने के कारण दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **सीपिया 200** लाभदायक औषधि है।

- स्तनों में सूजन आ जाना एवं चूचुकों में फटने वाले स्थान से चिपचिपाहट लिए हुए गाढ़ा स्त्राव निकलना जैसे लक्षणों में **ग्रेफाइटिस 30, 200** लाभदायक औषधि है **ग्रेफाइटिस** स्तनों में फटन के कारण बने निशानों को मिटाने के लिए हितकर औषधि है।

- स्तनों की त्वचा का सामान्य से ज्यादा मोटा हो जाना, स्तनों की त्वचा में रूखापन आ जाने के कारण कई जगह से फट जाना और इन फटी हुई जगह पर जख्म हो जाना जैसे लक्षणों में **केक्टस 6, 30** लाभदायक औषधि है।

- स्तनों का चोट ग्रस्त हो जाना, गलत तरीके से लेटने या अन्य कारणों से स्तनों पर दबाव पड़ने से उनका कुचल जाना जैसे लक्षणों में **अर्निका 3×** सर्वश्रेष्ट औषधि है।

- स्तनों में हुए जख्म का उपचार **अर्निका 3×** से न हो पाने की स्थिति में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

- स्तनों के ऊपरी भाग में फोड़े फुंसी हो जाना, फोड़े का प्रारंभिक अवस्था में दर्द लिए हुए कठोर होना एवं स्तनों में फोड़े के कारण तनाव आ जाना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया 30** लाभदायक औषधि है। **ब्रायोनिया 30** के प्रयोग से संपूर्ण लाभ न मिल पाने की स्थिति में **फाइटोलका 3** उपरोक्त लक्षणों में हितकर औषधि है।

- स्तनों में हुए फोड़े के कारण ऊपरी त्वचा पर लाल रंग की रेखायें बन जाना, ज्वर के साथ स्तनों में तीव्र दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।

- स्तन में हुए फोड़े का मवाद और पीब से भर जाना जैसी स्थिति में **हिपर सल्फ 6** का सेवन करना हितकर होता है।

- **केलेन्डुला मदर टिंचर** का स्वच्छ पानी के साथ बने हुए घोल से प्रदाहित स्थान को धोते रहने से अत्यधिक लाभ मिलता है।

- स्तनों पर हुए फोड़े के ठीक हो जाने पर जख्म की जगह को जल्दी भरने के लिए **साइलीशिया 30** औषधि का इस्तेमाल हितकर होता है।
- स्तन पर हुए नासूर का फोड़ा बन जाने की स्थिति में **फास्फोरस 6, 30** लाभकारी औषधि है।
- रगड़न के कारण स्तनों पर आयी सूजन में **बेलिलस पेरिलिस क्यू** लाभकारी औषधि है।
- स्तनों का कठोर एवं दृढ़ होना, स्तनों का तापमान शरीर के अन्य भागों से अधिक होना, उसके ऊपर की त्वचा सामान्य रंग की होना, दुग्ध पान कराते समय विशेषकर बायें स्तन में अत्यधिक दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **ब्रायोनिया 30** आधार भूत औषधि है।
- दायीं ओर के स्तन में अधिक दर्द महसूस होना, स्तनों में सामान्य से कम तनाव होना, स्तनों में ढीलापन आ जाना, स्तनों का रंग पीला हो जाना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।
- स्तनों का अत्यधिक कठोर होना, स्तनों में तीव्र दर्द के कारण स्त्री का स्तन पान न करा पाना, स्तनों के ऊपर की त्वचा का अत्यधिक गर्म एवं लाल होना, स्तनों में संवेदनशीलता का अत्यधिक बढ़ जाना, छूते ही दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **बेलाडोना 30** लाभदायक औषधि है।
- स्तनों से हमेशा पसीना आते रहना जैसी स्थिति में **केल्केरिया कार्ब 200** लाभकारी औषधि है।
- स्त्री को कम मात्रा में रज:स्त्राव होना, ऋतु स्त्राव होने से पूर्व स्तनों में कड़ापन आ जाना और दोनों स्तनों में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **कोनायम 30** लाभदायक औषधि है।
- रज:स्त्राव अधिक मात्रा में होना एवं मासिक धर्म शुरू होने के एक हफ्ते पूर्व ही स्तनों में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 6, 200** लाभदायक औषधि है।
- मासिक धर्म शुरू होने से पूर्व स्त्री के दायें स्तन में अत्यधिक दर्द महसूस होना जिसके कारण उसका दायें हाथ उठाने में एवं श्वास लेने में अत्यधिक

कठिनाई महसूस होना जैसे लक्षणों में **सेग्यूनेरिया 3** लाभकारी औषधि है।

- ❑ स्तनों के निचले भाग में दर्द महसूस होना एवं स्त्री को कम मात्रा में मासिक धर्म होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 3, 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ अविवाहित स्त्रियां जिन्हें रज:स्त्राव के समय विशेषकर बायें स्तन में दर्द महसूस होता है उनके लिए **सिमिसिफयूगा 1** लाभदायक औषधि है।
- ❑ वात रोग के कारण स्तनों में दर्द उत्पन्न होने जैसे लक्षण में **रेननक्यूलस 6, 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ शिशु द्वारा गलत तरीके से किए गये दुग्ध पान के कारण स्तनों में दर्द आ जाने की स्थिति में **फिलैन्ड्रियम 6** लाभकारी औषधि है।
- ❑ दुग्ध पान कराने वाली महिलाओं के स्तनों में दर्द का होना एवं धीरे-धीरे दर्द का पीठ के पिछले हिस्से तक पहुँच जाना जैसे लक्षणों में **क्रोटन ट्रिग्लियम 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ स्तनों में दर्द बने रहना एवं रोगिणी का निरंतर प्रदर से ग्रसित रहना जैसे लक्षणों में **सियानोथस** 1×, 2× लाभदायक औषधि है।
- ❑ बायें स्तन तथा बाजू में दर्द महसूस होना, बायें स्तन में अंदर की ओर खिंचावट महसूस होना एवं सूजन आ जाना जैसे लक्षणों में **एस्टेरियस रूबेज 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ स्तन में सूजन के साथ प्रदाह होना एवं दर्द के कारण ज्वर आ जाना जैसे लक्षणों में **फेरम फॉस** 6× या **काली म्यूर** 12× दिन में तीन बार सेवन करना चाहिए। इस औषधि के प्रति संवेदनशील स्त्री के मुख में हमेशा खुस्की बनी रहती है।

अधिक मात्रा में दूध बनना

कुछ स्त्रियों में किन्हीं विशेष कारणों से जैसे कि रक्त में ईस्ट्रोजेन और प्रोजेस्टेरोन हार्मोन्स का असंतुलन हो जाना, शिशु का ठीक से दुग्धपान न कर पाना, स्तनों का क्षति-ग्रस्त हो जाना, चूचुकों से दूध का न निकल पाना इत्यादि कारणों से प्रसूता में सामान्य से अधिक मात्रा में दुग्ध बनने लगता है या वह ठीक से स्त्रावित नहीं हो पाता जिसके कारण प्रसूता के स्तनों में भारीपन एवं प्रदाह उत्पन्न हो जाता है। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित **औषधियों** का लक्षण युक्त सेवन करना हितकर होता है।

- प्रसूता के स्तनों में अधिक मात्रा में दूध बनने लगना, दुग्ध स्त्राव का गाढ़ा होना, स्तन पान के समय विपरीत स्तन में दर्द होना, स्त्री का चिंतित एवं भयभीत रहना, नीचे की तरफ झुकते समय या सीढ़ियों से उतरते समय चक्कर महसूस होना, नीचे की तरफ झुकते समय संतुलन बिगड़ना या सिर चकराना जैसे लक्षणों में **बोरेक्स** लाभदायक औषधि है।

- शारीरिक रूप से प्रसूता का थुलथुला एवं मोटा होना, थोड़ी सी भी गर्मी सहन नहीं कर पाना, थोड़ा सा भी शारीरिक श्रम करने पर पसीना आना एवं थकान महसूस करना, प्रसूता का स्वभाव से आलसी एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन जीने का आदी होना साथ ही स्तनों में अधिक मात्रा में दूध बनना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब** 30 लाभदायक औषधि है।

- प्रसूता का शारीरिक रूप से दुबला-पतला होना, अधिक मात्रा में दुग्ध बनने के कारण कमजोरी महसूस होना, स्वभाव से संवेदनशील और संकोची होना जैसे लक्षणों में **चायना** 30 लाभदायक औषधि है।

- स्तनों में अधिक मात्रा में दूध बनने के साथ-साथ स्तनों में भारीपन एवं गर्मी महसूस होना जैसे लक्षणों में **फास्फोरस** 30 लाभकारी औषधि है।

- वक्ष-स्थल पर वसा एवं रक्त संचार ज्यादा होना, स्तनों में अधिक मात्रा में दुग्ध बनना एवं उनका अत्यधिक संवेदनशील होना, प्रसूता का नमी युक्त

वातावरण सहन नहीं कर पाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम म्यूर 30** लाभकारी औषधि है।

- ❑ स्तनों से अनियमित रूप से दुग्ध स्त्राव होते रहना, अचानक स्तनों में दुग्ध की मात्रा का बढ़ जाना एवं अचानक दुग्ध स्त्राव सामान्य हो जाना, प्रसूता का स्वभाव से संवेदनशील होना एवं हमेशा ठंड लगते रहने की प्रवृत्ति होना जैसे लक्षणों में **पल्सेटिला 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ स्तनों में अधिक मात्रा में दूध बनना जिसके कारण स्तनों में भारीपन एवं गर्मी महसूस होना जैसे लक्षणों में **फास्फारेम 30, 6** लाभदायक औषधि है।
- ❑ अधिक मात्रा में दुग्ध बनने के कारण स्तनों का फूल जाना, स्तनों का संवेदनशील हो जाना एवं उनमें हमेशा खुजली चलते रहना, प्रसूता के संपूर्ण शरीर में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों में **रस टॉक्स 30** लाभकारी औषधि है।

अध्याय-70

कम मात्रा में दूध बनना

प्रसूता स्त्री के स्तनों में दुग्ध की मात्रा का सामान्य से कम हो जाने पर शिशु के स्वास्थ्य पर बहुत ही विपरीत असर पड़ता है। कम मात्रा में दुग्ध पान करने के कारण शिशु का वजन घट सकता है एवं वह विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रसित भी हो सकता है। माँ के दुग्ध में शिशु के लिए अत्यंत आवश्यक पौष्टिक एवं रोग प्रतिरोधक तत्व होते हैं। किसी मजबूरी-वश बाजार में उपलब्ध कृत्रिम एवं रासायनिक दुग्ध शिशु की जीवन रक्षा के लिए उपयोग में तो लाया जा सकता है परंतु वह माँ के दूध की जगह नहीं ले सकता। कुछ स्त्रियों में अपने सौन्दर्य के प्रति अतिरिक्त सजकता होती है जिसके कारण वे ऐसा सोचती हैं कि शिशु को दुग्ध पान कराने से उनका सौन्दर्य नष्ट हो सकता है।

इस तरह की भ्रांत सोच एवं प्रवृत्ति के कारण भी प्रसूता की दुग्ध उत्पादन क्षमता में कमी आ सकती है। प्रसूता के स्तनों में दुग्ध की मात्रा कई कारणों से प्रभावित हो सकती है जैसे कि उसका कुपोषित होना, स्तनों का विकास ठीक से न हो पाना, वक्ष-स्थल का रोग ग्रस्त होना एवं कम दुग्ध उत्पादन की अनुवांशिकता होना इत्यादि।

अचानक मानसिक आघात लगने से, शोकाकुल समाचार पाकर स्तब्ध हो जाने से या शिशु के प्रति निराशाजनक एवं उदासीन व्यवहार के कारण भी प्रसूता की दुग्ध उत्पादन की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि चूषण प्रतिक्षेप क्रिया जो कि दुग्ध उत्पत्ति के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी है किसी विशेष कारणों से शिथिल हो सकती है एवं जिसके कारण प्रसूता में दुग्ध उत्पादन प्रभावित हो सकता है। रक्त में ईस्ट्रोजेन एवं प्रोजेस्टेरोन हार्मोन के असंतुलन के कारण भी दुग्ध उत्पादन भी प्रभावित हो सकता है।

औषधियां :

- प्रसूता में खून की कमी होना, प्रसव के बाद पीला पड़ जाना एवं दुग्ध उत्पादन का दुग्ध स्त्राव के बाद कुछ दिनों बाद ही बंद हो जाना या अत्यधिक कम हो जाना जैसे लक्षणों में **एग्नस कास्ट् 30** लाभदायक औषधि है।

- प्रारंभ से ही स्त्री के अंदर दुग्ध का कम मात्रा में बनना, गर्भावस्था के दौरान उसकी मानसिक स्थिति अवसादपूर्ण होना एवं मन का किसी चिंता से ग्रसित होना, नींद न आना जैसे लक्षणों में **कास्टिकम** 30 लाभकारी औषधि है।
- प्रसूता का वायु विकार, कफ और बलगम से ग्रसित होना, प्रसव के एक हफ्ते बाद दुग्ध उत्पादन में कमी आ जाना या दूध सूख जाना जैसे लक्षणों में **एसाफिटिका** 30 लाभदायक औषधि है।
- प्रसव के बाद दूध का बिल्कुल भी न बनना, स्तन क्षेत्र में डंक मारने जैसा दर्द महसूस होना एवं निरंतर खुजली चलते रहना, स्वभाव से चिड़चिड़ाहाट एवं मानसिक स्थिति अवसादपूर्ण होना जैसे लक्षणों में **अर्टिका यूरेन्स** 30 लाभकारी औषधि है।
- प्रसूता में दुग्ध स्त्राव का अस्थिर होना, कभी दुग्ध स्त्राव का अचानक बढ़ जाना या अचानक कम हो जाना, दुग्ध स्त्राव का अचानक गाढ़ा हो जाना या कभी एकदम पतला हो जाना जैसे परिवर्तनशील लक्षणों में **पल्सेटिला** 30 लाभदायक औषधि है।
- किसी विशेष घटना क्रम के कारण प्रसूता क़ा अत्यधिक उग्र एवं व्याकुल हो जाना जिसके कारण दुग्ध स्त्राव का अचानक बंद हो जाना जैसे लक्षणों में **नैट्रम म्यूर** 30 लाभदायक औषधि है।
- प्रसव के बाद नमी और शीलन भरे वातावरण में रहने के कारण वक्ष-स्थल में ठंड बैठ जाना एवं बरसात के मौसम में अचानक दुग्ध स्त्राव बंद हो जाना जैसे लक्षणों में **डल्कामारा** 30 लाभदायक औषधि है।
- मानसिक सदमा, शोक एवं मृत्यु जैसे संताप के कारण प्रसूता के अंदर दुग्ध स्त्राव अचानक रूक जाना जैसे लक्षणों में **इग्नेशिया** 30 या **फास्फोरिक एसिड** लाभदायक औषधि है।
- स्त्री का अत्यधिक क्रोधावेश में आकर पागलों के समान व्यवहार करने लगना एवं स्वयं पर से काबू हट जाने कि स्थिति में हुए दुग्ध रोध को पुनः ठीक करने के लिए **केमोमिला** 30 लाभकारी औषधि है।
- किसी अज्ञात भय या किसी घटना से भयभीत होकर स्त्री में दुग्ध रोध हो जाने की स्थिति में **एकोनाइट** 30 लाभदायक औषधि है।

अध्याय-71

स्तन पान से घृणा

गर्भावस्था के दौरान चूचुक एवं इसके चारों ओर ललामी या काले रंग लिए हुए घेरे में फटन या संक्रमण को रोकने के लिए स्त्री को निरंतर अपने स्तनों का निरीक्षण करते रहना चाहिए। इन स्थानों की नियमित रूप से मालिश एवं स्वच्छ कपड़े से साफ-सफाई करते रहना चाहिए। हल्के हाथों से स्तनों की घुंडी को खींचने, दबाने या प्रत्येक दिशा में घुमाते रहने से उस स्थान की त्वचा एवं मांस पेशियों में चटक नहीं आती। होमियोपैथिक क्रीम **केलेन्डुला** लगाते रहने से यहां की त्वचा जो कि निरंतर सिकुड़ती और फैलती रहती है फटन एवं कटान से बच जाती है। गंदी एवं कसी हुई चोली के पहनने से या सिन्थेटिक धागों से बनी चोली पहनने से भी स्तन की त्वचा संक्रमित या रगड़ खा सकती है।

स्तन पान शिशु और माँ के बीच एक नैसिर्गिक संबंधों का लक्षण है। स्त्री के अंदर छिपे मातृत्व का सबसे प्रमुख लक्षण स्त्री के द्वारा शिशु को दुग्ध पान कराना ही है। इस प्रक्रिया में स्त्री असीम आनंद की अनुभूति प्राप्त करती है एवं स्तन पान कराते ही स्त्री अपने-आपको भारहीन और मातृत्व से परिपूर्ण, एक पूर्ण स्त्री होने का गर्व महसूस करती है। उसके चेहरे पर एक असीम शांति और संतुष्टि के भाव उत्पन्न होते हैं परंतु आज के आधुनिक एवं आत्म केंद्रित वातावरण में आधुनिक स्त्रियां अपने सौन्दर्य के प्रति अत्यधिक परिगृहित रहती हैं। आजकल ऐसा देखने में आ रहा है कि पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित स्त्रियों में माँ बनने की लालसा दिन प्रतिदिन खत्म होती जा रही है। शिशु को वे अपने जीवन में एक भार और बंधन महसूस करती हैं। उन्हें ऐसा लगने लगा है कि बच्चे को जन्म देने के बाद उनकी स्वच्छंदता के साथ-साथ उनका केरियर खत्म या सीमित हो जायेगा। ऐसी मनः स्थिति में अगर किसी कारण वश स्त्री गर्भवती हो जाती है तो उत्पन्न होने वाली संतान उसके लिए एक संयोग मात्र रह जाती है। इन्हीं सब मनोभाव के चलते कुछ स्त्रियां शिशु को दुग्ध पान कराने में कतराती या घृणा करती हैं।

पाश्चात्य संस्कृति में विवाह जैसे सामाजिक बंधन की मान्यता दिन प्रतिदिन

खत्म होती जा रही है एवं सामाजिक और कानूनी तौर पर बिना विवाह किए संतान उत्पत्ति की अनुमति होने के कारण भी माँ का बच्चे के प्रति लगाव अपेक्षाकृत कम होता है। माँ का शिशु के प्रति लगाव कम होने के कई अन्य कारण भी हो सकते हैं जैसे कि शिशु के जन्म से पूर्व ही पति का देहांत हो जाना, स्त्री को मादक पदार्थों का व्यसन होना, बलात्कार या जोर जबरदस्ती से किए गये संभोग के कारण शिशु का जन्म होना, स्त्री का मानसिक रूप से विक्षिप्त होना इत्यादि। मुख्य रूप से देखा जाए तो यह एक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्या है। जीवन के प्रति स्वस्थ्य चिंतन और आज के युग की अत्यधिक भाग दौड़ वाली व्यस्त जिंदगी में परिवर्तन लाकर ही इस समस्या को जड़मूल से हल किया जा सकता है।

स्त्री के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में स्तनों का महत्व सबसे ज्यादा होता है यही कारण है कि स्त्रियां अपने वक्ष-स्थल के सौन्दर्य के प्रति निरंतर संवेदनशील रहती हैं। स्त्री में स्तनों के आकार प्रकार या सौन्दर्य का कोई निश्चित मापदंड नहीं है।

सामान्यत: गोल, कड़े, उभार लिए एवं छोटे चूचुक वाले स्तन ज्यादा आकर्षित माने जाते हैं परंतु विभिन्न समाजों, सभ्यताओं एवं जन-जातियों में स्तनों की सुन्दरता के भिन्न-भिन्न मापदंड होते हैं। स्तनों का रंग एवं आकार मूलत: अनुवांशिकता पर निर्भर करता है। आज के आधुनिक युग में स्तनों को सुडौल, कड़े एवं बड़े आकार का बनाने के लिए भिन्न-भिन्न औषधियों, क्रीम, लेप एवं उपकरण बाजार में उपलब्ध हैं परंतु इनकी प्रामाणिकता अभी सिद्ध नहीं हुई है। छोटे एवं अविकसित स्तन स्त्री के अंदर हीनता के भाव उत्पन्न करते हैं। कुछ स्त्रियों में रज:काल में कुछ दिन पूर्व स्तनों के आकार प्रकार में असाधारण वृद्धि हो जाती है परंतु रजोकाल के बाद वे पुन: शिथिल और छोटे हो जाते हैं।

आज के युग में स्त्रियों को पुरूषों के समान अत्यधिक शारीरिक और मानसिक श्रम करना पड़ता है जिसके कारण उनके अंदर स्त्रियों से संबंधित हार्मोन्स की कमी आ जाती है एवं उनमें पुरूषत्व के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि बड़े और सुडौल स्तन वाली स्त्री अत्यधिक मानसिक संताप, चिंता, कुपोषण एवं विपरीत परिस्थितियों में रहने के कारण अपने स्तनों का सौन्दर्य खो देती हैं। स्तनों का सौन्दर्य मुख्य रूप से स्त्री की मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है।

आज के युग में विवाह काफी लंबे समय तक नहीं होता जिसके कारण स्त्रियों को पति एवं मातृत्व प्राप्त किए बिना काफी लंबे समय तक एकाकी जीवन व्यतीत करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में स्त्रियों के स्तनों का संपूर्ण विकास नहीं होता।

पाश्चात्य देशों में स्तनों को सुंदर एवं सुडौल बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की कांतिवर्धन विधियां जैसे कि प्लास्टिक सर्जरी या सिलिकॉन ब्रेस्ट का इस्तेमाल किया जाता है परंतु भारत जैसे गर्म देश में यह विधि अक्सर निष्फल एवं खतरनाक साबित हुई है। इस विधि के कारण वक्ष-स्थल में भयंकर उपद्रव और स्तनों में कैंसर जैसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं। सिलिकॉन ब्रेस्ट के कोलेप्स और स्थान भ्रष्टता के कारण उन्हें पुन: स्थापित करने की आवश्यकता पड़ती है अर्थात फिर से चीरा लगाकर दुबारा ऑपरेशन करना पड़ता है। जिसके कारण स्त्रियों के स्तन पर निशान बनने के साथ-साथ संक्रमण होने का खतरा भी बन जाता है। छोटे एवं अविकसित स्तन होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** का सेवन करने से लाभ मिलता है।

- शिशु को दुग्ध पान कराने की इच्छा न होना, स्त्री का स्वभाव से अत्यधिक संवेदनशील एवं स्वच्छंद होना, स्तनों का छोटा एवं अविकसित होना जैसे लक्षणों में **सीपिया 30** लाभदायक औषधि है।
- स्त्री के स्तनों में ग्रंथिल ऊतकों की कमी के कारण उनमें चपटापन हो तो ऐसी स्थिति में **बेराइटा कार्ब** 30 लाभदायक औषधि है।
- किसी प्रकार के जख्म या स्तनों में अत्यधिक संवेदनशीलता आ जाने के कारण स्तनों का आकार घटने पर **कोनियम मेक** 30 स्तनों को सामान्य बनाने की सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- शरीर से दुबली-पतली एवं स्तनों के छोटे होते जाने की प्रवृत्ति होने पर **साइलीशिया 30** लाभदायक औषधि है।
- ग्रंथिल ऊतकों की कमी एवं स्तनों में चपटापन और दर्द रहित होने की स्थिति में **आयोडिनम** 30 लाभदायक औषधि है।
- निरंतर खांसी चलते रहना, छाती में कमजोरी महसूस करना, चेहरे पर पीलापन एवं थोड़े से शारीरिक श्रम के कारण थकान महसूस होना साथ ही स्तन क्षेत्र में वसा कम होना जैसे लक्षणों में **ट्यूबर क्लोनियम 30** लाभदायक औषधि है।

अध्याय-72

स्तनों का काफी बड़ा होना

कुछ स्त्रियों में स्तनों का आकार सामान्य से काफी बड़ा होता है परंतु वे सुडौल न होकर लंबे और नीचे की तरफ लटके हुए होते हैं। स्तनों पर अधिक मात्रा में वसा जमा हो जाने के कारण उनमें जगह-जगह दरारें पड़ जाती हैं और स्तनों के चूचुक सामान्य अवस्था से ज्यादा मोटे, लंबे और विकृत दिखाई देने लगते हैं। स्तनों का ढीलापन लिए हुए होना, सामान्य से काफी बड़ा होना, नीचे की तरफ लटका होना एवं चलने-फिरने में दर्द महसूस होना जैसे लक्षणों के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि शरीर में स्त्रीयोचित हार्मोन्स का असंतुलित हो जाना, थाइराइड ग्रंथि का ठीक से काम न करना, संपूर्ण शरीर पर अत्यधिक चर्बी और वसा चढ़ जाना, स्त्री का स्वभाव से आलसी एवं विलासितापूर्ण जीवन जाने का आदी होना, गरिष्ट एवं मादक पदार्थों का सेवन करना शारीरिक श्रम और व्यायाम के प्रति अरुचि होना इत्यादि।

- ❑ स्तनों का सामान्य से बड़ा एवं लटके हुए होना, कड़ेपन का अभाव होना एवं स्त्री को हमेशा थकान और ठंडक महसूस करना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभकारी औषधि है।

- ❑ संपूर्ण शरीर में तरल पदार्थ का निष्कासन ठहर जाना या रूक-रूककर होना, स्त्री को कम मात्रा में रज:स्त्राव होना, रूक-रूककर पेशाब होना जैसे लक्षणों में **नेट्रम म्यूर 30** लाभकारी औषधि है।

- ❑ ग्रंथिल ऊतकों का अधिक विकास हो जाना जिसके कारण स्तनों में भारीपन आ जाना और उनका लटक जाना, थुलथुलापन लिए स्तनों में वेदना एवं स्पर्शासह्य हो जाना जैसे लक्षणों में **कोनियम 30** लाभदायक औषधि है।

- ❑ स्तनों में सूजन आ जाना साथ ही स्तन क्षेत्र से निरंतर पसीना आना जैसे लक्षणों में **सल्फर 30** लाभदायक औषधि है।

स्तनों में अर्बुद

कभी-कभी स्त्रियों के स्तन भाग पर मांस या तंतुओं का एक छोटा सा पिंड अलग से दिखाई पड़ने लगता है। सामान्यत: यह पुटिका यथा-स्थिति में ही पड़ी रहती है एवं इसका आकर न तो घटता है और न ही बढ़ता है इस पुटिका के कारण स्तन भाग में न ही कोई दर्द और सूजन महसूस होती है। इस पुटिका में कोई तरल पदार्थ भी नहीं होता है एवं इसका संबंध स्त्री के रजोकाल या स्तनपान से भी नहीं होता है।

ऐसी दर्द रहित पुटिका होने पर निम्नलिखित होमियोपैथिक **औषधियों** से उपचार किया जा सकता है।

- ❑ सामान्य वेदना रहित छोटी पुटिका के लिए **बेराइटा कार्ब 30** सर्वश्रेष्ट औषधि है।
- ❑ स्त्री का शारीरिक रूप से थुलथुला एवं मोटा होना, स्तनों का सामान्य से ज्यादा भारी होना एवं नीचे की तरफ लटके हुए होना, स्त्री की प्रकृति शीत प्रधान होना, स्तन पर स्थित साधारण पुटि का किसी शारीरिक प्रक्रिया या अनुवांशिकता के कारण होना जैसे लक्षणों में **केल्केरिया कार्ब 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ पुटि का अत्यधिक स्पर्शासह्य एवं वेदना रहित होने पर **फाइटोलका 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ पुटि का बायें ओर के स्तन पर स्थित होना, पुटि का सख्त एवं अस्थिर होना जैसे लक्षणों में **कोनियम 30** लाभकारी औषधि है।
- ❑ छोटे या सूखे स्तनों पर लंबे समय से रहने वाली पुटि के लिए **साइलीशिया 30** लाभदायक औषधि है।
- ❑ स्तनों का छोटे आकार में होते हुए भी ढीला एवं पिलपिला होना, दुग्ध ग्रंथियों के ऊपर वसा एवं चर्बी का अभाव होना एवं स्तन पर साधारण वेदना रहित पुटि होने जैसे लक्षणों में **आयोडिनम 30, 200** लाभदायक औषधि है।



डॉ. श्रीमती साधना सिंह

यौन रोगों पर चिकित्सीय अनुभव के आधार पर लिखी गयी एक अद्भुत पुस्तक

- लेखिका द्वारा ग्यारह वर्षों के कठोर चिकित्सीय अनुभव [illegible] पर यौन संबंधित समस्याओं के निवारण के लिए लिखी [illegible] अद्वितीय पुस्तक।

- यौन रोगों के उत्पन्न होने के क्या कारण हैं, यौन रोगों का [illegible] समय पर निदान न होने से शरीर में क्या-क्या उपद्रव दिखाई पड़ते हैं, इनका जड़मूल से समाधान कैसे किया जाता है, इन सब विषयों पर इस पुस्तक में विस्तृत रुप से वर्णन किया गया है।

- होमियोपैथिक चिकित्सा एक हानिरहित पद्धति है अतः इस पुस्तक में वर्णित औषधियों का लक्षणानुसार सेवन करके सामान्य जन भी लाभ प्राप्त कर सकता है।

- लेखन शैली स्पष्ट, सटीक एवं आसानी से समझ में आने वाली है।

- लेखिका के पूर्णकालिक होमियोपैथिक चिकित्सक होने के कारण यह पुस्तक निर्विवाद रुप से अत्यंत ही लाभदायक एवं सही मार्ग-दर्शक है।

साधना पब्लिकेशन

शॉप नं. 3, प्लाट नं. 21[illegible]

एम.पी. नगर, भोपाल-46[illegible]

दूरभाष : (0755) 5[illegible]